गंगा

कक्षा 9 के लिए
हिंदी की पाठ्यपुस्तक

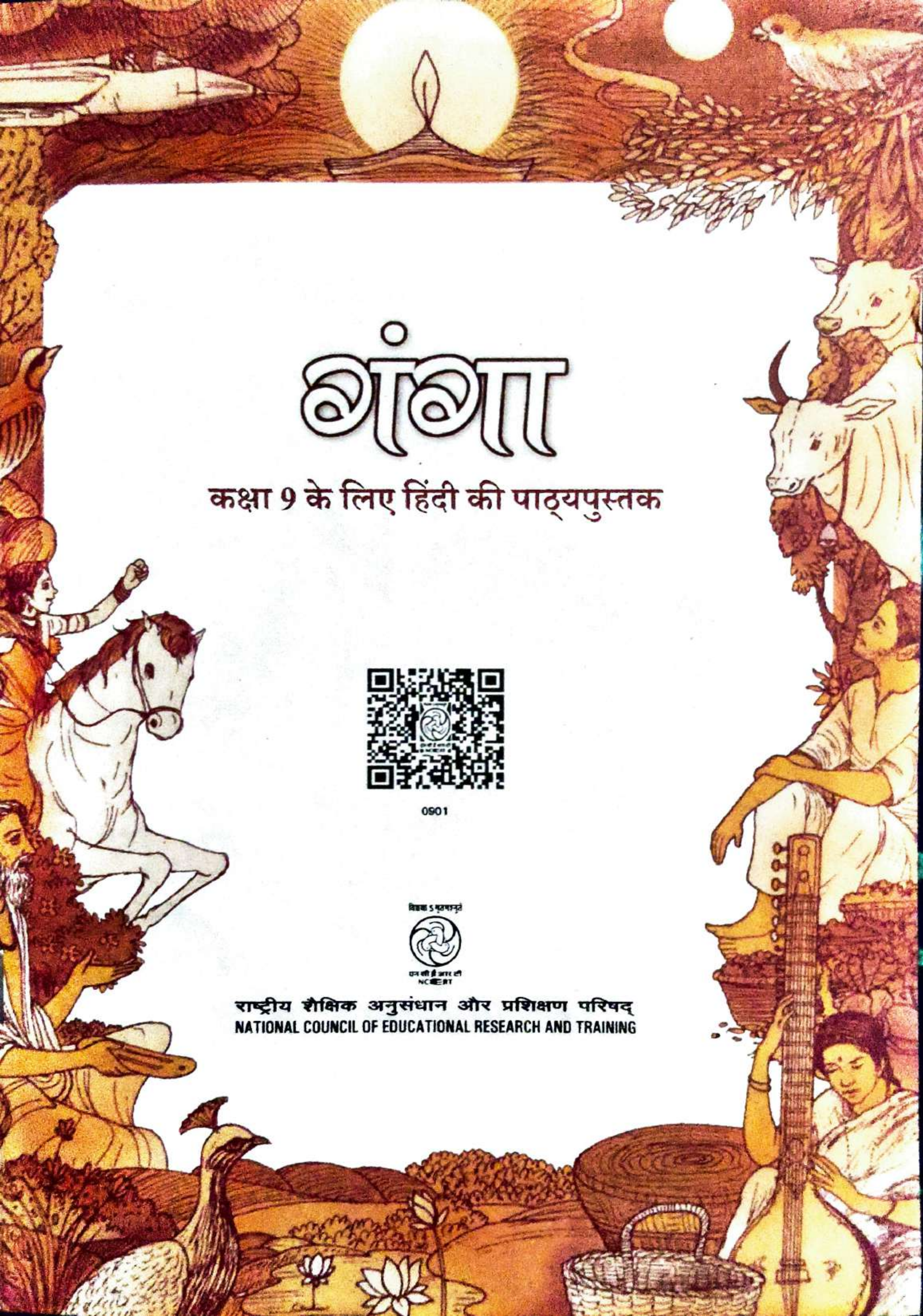

गंगा

कक्षा 9 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

0901

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

0901 – गंगा
कक्षा 9 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5729-873-5

प्रथम संस्करण
मार्च 2026 चैत्र 1948

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरू 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट : धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2676869

PD 1000T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2026

₹ 115.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा सालासर इमेजिंग सिस्टम्स प्राइवेट लिमिटेड, बी-19, सेक्टर-88, नोएडा 201305, उत्तर प्रदेश द्वारा मुद्रित।

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*एम.वी. श्रीनिवासन*
मुख्य संपादक	:	*बिज्ञान सुतार*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*अमिताभ कुमार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	:	*दीपक जैसवाल*
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	*प्रकाश वीर सिंह*

आवरण, चित्रांकन एवं सज्जा
जोएल गिल

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की संकल्पना करती है जो भारत के सभ्यतागत ज्ञान, मूल्यों और नैतिक परंपराओं को अपने में समाहित करती हो। यह शिक्षा प्रणाली हमारे विद्यार्थियों को निरंतर परिवर्तनशील वैश्विक जटिलताओं और संभावनाओं के साथ हमारी समृद्ध बौद्धिक विरासत से सार्थक रूप से जुड़ने में सक्षम बनाती है। विद्यालयी शिक्षा के लिए निर्मित 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023' में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के सुझावों को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों के लिए एक ऐसे सुसंगत पाठ्यक्रम का मार्ग प्रशस्त किया गया है जो विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता व संवेदनशीलता और मौलिकता के साथ-साथ उनमें मूल्यों को विकसित करने की दिशा देता है। यह परस्पर जुड़े हुए वैश्विक समाज में उन्हें उत्तरदायी नागरिक बनाने के लिए आवश्यक है।

बुनियादी, प्रारंभिक और मध्य स्तर पर आगे बढ़ते हुए विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता समग्र रूप से निखरती गई है। अब, वे सोचने, तर्क करने, प्रश्न पूछने और स्वयं को अभिव्यक्त करने की क्षमता के साथ माध्यमिक स्तर में प्रवेश करेंगे। कक्षा 9 से 12 तक विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं, यह विद्यार्थियों के बौद्धिक और व्यक्तिगत विकास के लिए एक महत्वपूर्ण समय होता है। यह उन्हें अमूर्त विचारों, जटिल सामाजिक वास्तविकताओं, नैतिक दुविधाओं और ज्ञान के विस्तृत संसार से जुड़ने के लिए तैयार करता है; साथ ही स्वयं तथा अपने आस-पास के संसार के बारे में उनकी समझ को सारगर्भित भी बनाता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 माध्यमिक स्तर में कक्षा 9-10 के लिए ऐसे कौशल सीखने पर बल देती है जो विद्यार्थियों के लिए जीवन में आगे बढ़ने में सहायक हों ताकि विद्यार्थी इन कौशलों का प्रयोग तर्क, संवाद और प्रभावपूर्ण भाषिक व्यवहार के लिए कर सकें। इसका उद्देश्य उनकी विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक क्षमताओं को बढ़ाना भी है ताकि वे भविष्य में आने वाली चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार हो सकें। यह रूपरेखा बहुआयामी पाठ्यक्रम का सुझाव देती है जिसमें तीन भाषाओं सहित दस विषय शामिल किए गए हैं। भाषाओं के संबंध में यह भी बताया गया है कि तीन में से कम से कम दो भारतीय मूल की भाषाएँ हों। इसके अतिरिक्त विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा और आरोग्य, समाज में व्यक्ति/पर्यावरण शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा को विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रस्तावित किया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में भाषाओं की शिक्षा को महत्व दिया गया है। माध्यमिक स्तर पर भाषा का सिर्फ संप्रेषण/अभिव्यक्ति के माध्यम के तौर पर नहीं बल्कि सृजनात्मक क्षमता, सोचने, समझने, संवाद करने और सौंदर्यबोध के लिए विशेष रूप से महत्व है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की

रूपरेखा 2023 इस बात पर भी बल देती है कि भाषा की पढ़ाई विद्यार्थियों में तार्किक, विश्लेषणात्मक और रचनात्मक क्षमताओं के साथ-साथ अंतरसांस्कृतिक समझ भी बनाए और वे अकादमिक, सामाजिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में आत्मविश्वासपूर्वक भाग लेने में सक्षम बन सकें। इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए कक्षा 9 के लिए हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक *गंगा* को अभिकल्पित किया गया है।

गंगा पाठ्यपुस्तक में हिंदी के ऐसे विविध रूपों, शैलियों से संबंधित रचनाओं को सम्मिलित किया गया है जिनमें सामाजिक-सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधता परिलक्षित होती है। पाठ्यपुस्तक में विषयों का चयन इस प्रकार किया गया है कि विद्यार्थी समाज, पर्यावरण, नैतिक समझ/मूल्यपरक समझ/विवेकसम्मत दृष्टि, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, सामयिक विषयों और मानवीय संबंधों से युक्त अन्य पहलुओं से जुड़ सकें। इससे विद्यार्थी अपने उस परिवेश के बारे में गंभीरता से सोचने के लिए प्रोत्साहित होंगे जिसमें वे रहते हैं। यह पाठ्यपुस्तक भारत की कलात्मक, साहित्यिक और बौद्धिक परंपराओं पर आधारित है, जिसमें भारतीय ज्ञान प्रणालियों और हमारी सांस्कृतिक विरासत के तत्वों को समावेशित किया गया है और उन्हें हमारे समकालीन अनुभवों से सहजता से जोड़ा गया है।

पाठ्यपुस्तकें सीखने का एकमात्र संसाधन नहीं हैं, इस बात को ध्यान में रखते हुए *गंगा* पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों को अन्य पुस्तकों, मीडिया, डिजिटल अभिलेखागार, पुस्तकालय और सामुदायिक ज्ञान के व्यापक धरातल से जुड़ने के लिए प्रेरित करती है। इस स्तर पर पढ़ने, संवाद करने और स्वयं से खोज करने की एक अच्छी संस्कृति को बढ़ावा देने में शिक्षक, माता-पिता और विद्यालय के पुस्तकालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पाठ्यपुस्तक हर पाठ में क्यू.आर. कोड का प्रयोग करके तकनीकी रूप से विद्यार्थियों को अतिरिक्त पठन सामग्री उपलब्ध कराती है, जो उन्हें सृजनात्मक अनुभव से संपृक्त करने में सक्षम है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, पाठ्यपुस्तक के निर्माण में सम्मिलित विषय विशेषज्ञ, शिक्षाशास्त्रियों, शिक्षकों, हितधारकों का आभार व्यक्त करती है। हमें विश्वास है कि *गंगा* पाठकों/विद्यार्थियों को गंभीरता से सोचने, आत्मविश्वास से बात करने और हमारे देश और दुनिया के बौद्धिक और सामाजिक जीवन में सोच-समझकर प्रतिभागिता हेतु प्रेरित करेगी। अगले संस्करण में सुधार के लिए हम इसके सभी हितधारकों से सुझाव और टिप्पणी का भी स्वागत करते हैं जिनसे भावी संशोधनों में सहायता ली जा सकती है।

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

फरवरी 2026
नई दिल्ली

यह पुस्तक

संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया में भाषा का केंद्रीय स्थान है। भाषा की शिक्षा विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और मूल्यों का विकास करती है। नवीं कक्षा के लिए हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक ***गंगा*** आपके सामने है। यह पुस्तक नवीं कक्षा के उन विद्यार्थियों के लिए है जो पहली कक्षा से हिंदी पढ़ते आ रहे हैं और आठ वर्षों तक हिंदी का विधिवत अध्ययन कर चुके हैं। नवीं के ये विद्यार्थी किशोर विद्यार्थी हैं जिनका भाषा और विचार-बोध का एक आधार तैयार हो चुका है। अब उनके भाषिक दायरे और वैचारिक समृद्धि को विकसित करने की आवश्यकता है ताकि वे आगे चलकर अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुरूप हिंदी भाषा और साहित्य की पढ़ाई कर सकें। वे भाषिक रूप से इतने दक्ष हो जाएँ कि हिंदी उनके विमर्श और ज्ञान-विज्ञान की भाषा भी बन सके।

पाठ्यपुस्तक पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम का मूर्त रूप होती है जिसमें पाठ्यक्रम के उद्देश्य बहुत बारीकी से पिरोए जाते हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* तथा *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* में जिन बिंदुओं की ओर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया गया है, उन बिंदुओं को इस पाठ्यपुस्तक में रचनात्मक रूप से समाहित करने की कोशिश की गई है। शिक्षकों और विद्यार्थियों द्वारा पाठ्यपुस्तक के दक्षतापूर्ण उपयोग पर ही उसकी संपूर्णता निर्भर करती है। वर्तमान समय में शिक्षा का शास्त्र और व्यवहार विद्यार्थियों की सहभागिता को ही दक्षता का पर्याय मानता है, इसलिए विद्यार्थियों को केंद्र में रखकर ही इस पुस्तक का ताना-बाना बुना गया है। अतः शिक्षकों द्वारा पाठ्यपुस्तक का दक्षतापूर्ण उपयोग भी तभी संभव है जब उनकी तमाम शिक्षण तकनीकों के केंद्र में विद्यार्थी हों। इस दृष्टि से शिक्षक की भूमिका किसी उपदेशक या एकतरफा ज्ञान प्रदान करने वाले के रूप में नहीं हो सकती। पाठ्यपुस्तक की सामग्री का रचनात्मक उपयोग करने के लिए उसे एक प्रेरक की भूमिका निभानी पड़ेगी। विद्यार्थियों के किशोर मानस को ध्यान में रखकर शिक्षक को अपने तमाम शिक्षण कार्य के दौरान भाषा और साहित्य के अध्ययन-अध्यापन की चली आती परंपरागत पद्धतियों से आगे जाना पड़ेगा ताकि विद्यार्थी आधुनिक जीवन के परिवेश, समकालीन यथार्थ और दिन-प्रतिदिन के बदलते जीवन की चुनौतियों के बीच मानव मूल्यों के प्रति अडिग आस्था बनाए रखने की प्रेरणा प्राप्त कर सकें।

पाठगत बाधाओं को दूर करते हुए विद्यार्थियों की सहभागिता को सही दिशा प्रदान करने का काम शिक्षक ही कर सकता है। शिक्षक पाठ पढ़ाने के साथ पुस्तक में निर्देशित शैक्षिक गतिविधियों को कराते हुए विद्यार्थियों की भाषिक कुशलताओं को बढ़ाता है और जीवन-जगत के संबंध में उनके अनुभव क्षेत्र का विस्तार करता है। विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ने का काम भी भाषा और साहित्य की शिक्षा ही करती है, इसलिए भारत के बहुभाषी परिवेश को शिक्षण पद्धति का हिस्सा बनाना होगा

और उसे एक संसाधन के रूप में शामिल करना होगा। साझी संस्कृति, सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित समाज, बालिकाओं के प्रति समान दृष्टिकोण, शारीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण वर्ग और पर्यावरण एवं शांति जैसे संवेदनशील मुद्दे शिक्षकों से सकारात्मक व्यवहार की माँग करते हैं।

हम सभी जानते हैं कि शिक्षण की कोई एक विधि नहीं होती। हर शिक्षक अपने ढंग से पढ़ता-पढ़ाता है परंतु मौलिकता और सृजनात्मकता द्वारा शिक्षण को रुचिकर बनाया जा सकता है। सहायक सामग्री (संदर्भ से जुड़ी नई पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ, ऑडियो-वीडियो, चित्र आदि) का उपयोग करते हुए शिक्षण को एकरसता और यांत्रिकता से बचाया जा सकता है। शिक्षक अपने कक्षा-अध्यापन को इस तरह व्यवस्थित करें कि विद्यार्थियों को भाषा शिक्षण के सभी कौशलों के विकास का समुचित अवसर मिले, साथ ही विद्यार्थियों के भीतर जो कल्पनाशीलता, विस्मय, कौतूहल, जिज्ञासा एवं सृजनात्मकता है, उसे विकसित किया जा सके।

हम जानते हैं कि साहित्य अंतरविषयी होता है और उसे समझने-समझाने के कोई पूर्व-निर्धारित उपाय भी नहीं होते। अंततः जीवन-जगत की संपूर्णता में ही साहित्य के पढ़ने-पढ़ाने को विस्तार देना चाहिए। विशेष रूप से **कविता** का कथ्य साझेदारी के बिना पूरी तरह समझ में नहीं आ सकता। कविता का अर्थ खंडों में नहीं, समग्र प्रभाव के रूप में ही ग्रहण किया जाता है। शिक्षण में यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि कविताओं का कोई एक निश्चित अर्थ नहीं होता है, इसीलिए विद्यार्थियों को कल्पना करने की पूरी छूट देनी चाहिए। कविता अपनी वाक्य संरचना, शब्दों की स्थिति एवं लय के कारण गद्य से भिन्न होती है। गद्य की भाषा हमारे दैनिक व्यवहार की भाषा के निकट होती है और उसमें विचार प्रधान होता है जबकि कविता की भाषा सामान्यतः संकेतात्मक होती है। हम कह सकते हैं कि कविता जीवन-अनुभवों की कलात्मक अभिव्यक्ति है। वह मनुष्य के भावजगत का विस्तार करती है, उसकी कल्पनाशक्ति को जगाती है और सौंदर्यबोध का विकास करती है।

सभी काल की कविताओं को एक ही पद्धति से नहीं पढ़ाया जा सकता। मध्यकालीन कविताओं में अलंकार, छंद विधान, तुक आदि के प्रति विशेष आग्रह रहा है जबकि आज की कविता में लय और प्रवाह का महत्व है, परंपरागत छंद और तुक आदि का नहीं। शिक्षकों को यह भी ध्यान में रखना होगा कि कवि की काव्य-संवेदना के निर्माण में उसके युग और परिवेश का हाथ होता है, इसलिए कविता पढ़ाते समय कवि की युग-चेतना का बोध और अपने समय के प्रति सजगता दोनों आवश्यक हैं। तभी आज के समय में उस कविता की प्रासंगिकता को ठीक से समझा जा सकता है। संभव हो तो कविताओं की संगीतात्मक प्रस्तुति के ऑडियो-वीडियो उपलब्ध हों तो उसे भी सुनवाएँ। समय-समय पर शैक्षणिक भ्रमण और यात्राओं का आयोजन भी किया जाना चाहिए।

गद्य विधाओं की भी अपनी विशेष संरचना होती है और प्रत्येक विधा को पढ़ने-पढ़ाने की विशिष्ट विधियाँ होती हैं। किसी विधा विशेष की रचना पढ़ाते समय उसकी मूल विशेषता की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए। उदाहरण के लिए निबंध शिक्षण में अर्थ-ग्रहण की योग्यता विकसित करना और भाषा के

अभिव्यक्ति कौशल से विद्यार्थियों को परिचित कराना अपेक्षित है। निबंध में लेखक के दृष्टिकोण का और उसकी भाषा-शैली का विशेष महत्व होता है। उसी प्रकार विद्यार्थियों की कल्पना, उत्सुकता एवं जिज्ञासा के विस्तार के लिए कहानी पढ़ाई जाती है। हम सभी जानते हैं कि एक कहानी में कई कहानियाँ छिपी रहती हैं। शिक्षकों को ऐसे मोड़ों या बिंदुओं को खोजना होगा जहाँ से कहानी किसी भी दिशा में जा सकती है। ऐसी स्थिति से आगे की कल्पना करने (लिखित या मौखिक) के लिए विद्यार्थियों को कहा जा सकता है। साथ ही कहानी के अंतर्गत कई दृश्य-चित्र एवं शिक्षण बिंदु होते हैं। शिक्षकों को इन दृश्य-चित्रों एवं शिक्षण बिंदुओं का अभ्यास-कार्य द्वारा या किसी अन्य विधि से रचनात्मक उपयोग करना चाहिए, तभी कहानी वस्तु एवं शिल्प दोनों रूपों में विद्यार्थियों के ज्ञान का हिस्सा बन पाएगी। कहानी शिक्षण के दौरान शिक्षक प्रायोगिक रूप से कहानी को नाटक में परिवर्तित करने की प्रक्रिया का प्रारंभ भी कर सकते हैं। निबंध, यात्रा-वृत्तांत और साक्षात्कार द्वारा युग विशेष की परिस्थितियों के आकलन के साथ-साथ वैयक्तिक गुणों, क्षमताओं और अनुकूल या प्रतिकूल स्थितियों की चर्चा इस तरह की जाए कि विद्यार्थियों को उनके व्यक्तित्व के विकास में सहायता मिल सके। नाटक या एकांकी को पढ़ते-पढ़ाते समय पठन के साथ-साथ उसके मंचन की ओर भी ध्यान देना चाहिए। इससे विद्यार्थियों को एकांकी में निहित सामाजिक या अन्य परिस्थितियों तथा पात्रों की मनःस्थिति को स्वयं अनुभव करने का अवसर मिलता है। यह प्रक्रिया उन्हें सजग और संवेदनशील मनुष्य बनने की ओर अग्रसर करती है। इस प्रकार विभिन्न साहित्यिक विधाओं के लक्षणों और विशेषताओं को जानकर उनके अध्ययन-अध्यापन को सुगम बनाया जा सकता है।

शिक्षा की दुनिया में प्रायः यह कहा जाता है कि भाषा की कक्षाएँ रोचक और चुनौती भरी नहीं होतीं। आज इस मानसिकता को बदलना आवश्यक है। यह पुस्तक इस ओर एक छोटा-सा प्रयास है। इस पुस्तक को बनाते समय यह कोशिश की गई है कि भाषा की कक्षा विशेषकर 'हिंदी की घंटी' आनंददायी हो और विद्यार्थियों के मानसिक बोझ को हलका करने वाली भी। यहाँ यह भी सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है कि शिक्षा रटने पर आधारित पद्धतियों का त्याग करे।

इस संकलन की रचनाएँ जहाँ एक ओर विद्यार्थियों में साहित्यिक संवेदना पैदा करने वाली हैं तो दूसरी ओर उन्हें जीवन के विविध संदर्भों से भी जोड़ती हैं। इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थी साहित्य की विविध विधाओं से परिचित हो सकें। वे एक ओर साहित्य की समृद्ध परंपरा की पहचान के लिए **मध्यकालीन कविता** का आस्वाद लें और आज के जीवन को जानने के लिए **आधुनिक कविता** का भी बोध प्राप्त करें। भक्तिकाल की व्यापक जनचेतना को रैदास और तुलसीदास की कविताओं तथा स्वतंत्रता आंदोलन, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और मानवीय गरिमा को महत्व देने के लिए हिंदी कविता के विभिन्न कालों का प्रतिनिधित्व करने वाले तीन अन्य कवियों की कविताओं को यहाँ संकलित किया गया है। प्रयास यह किया गया है कि हिंदी कविता की समृद्धि और शक्ति की एक झलक हमारे किशोर विद्यार्थियों को मिल सके। इस पाठ्यपुस्तक में लगभग चौदह रचनाकारों की रचनाएँ सम्मिलित हैं जिनमें सात गद्य रचनाएँ और पाँच कवियों की कविताएँ हैं। इसके साथ ही अतिरिक्त पठन

के रूप में **'साथ-साथ पढ़ें'** के अंतर्गत एक गद्य रचना और एक कविता भी दी गई है। अतिरिक्त पठन के लिए दी गई ये रचनाएँ विविध विषय केंद्रित हैं— पहली वीरगाथा है और दूसरी प्रकृति से संबंधित कविता है। **कविताओं की प्रस्तुति में ऐतिहासिक कालक्रम को ध्यान में रखा गया है।** उद्देश्य यह रहा है कि मध्यकाल और आधुनिक काल की विभिन्न प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाले कवियों की कविताओं के माध्यम से विद्यार्थी हिंदी कविता की विकास-यात्रा से परिचित हो सकें।

गद्य विधाओं के चयन में यह प्रयास रहा है कि विद्यार्थी अधिक से अधिक विधाओं और विविध गद्य शैलियों का आस्वादन कर सकें। कहानी, यात्रा-वृत्तांत, निबंध, साक्षात्कार, एकांकी आदि विधाओं की कुल सात गद्य रचनाएँ पुस्तक में रखी गई हैं। पुस्तक तैयार करते समय इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि रचनाएँ जीवन की बृहत्तर परिधि से जुड़ी हुई हों। वे एक ओर तो साहित्यिक विधाओं का प्रतिनिधित्व कर रही हों तथा दूसरी ओर समाज के विभिन्न वर्गों का भी। हम साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार की विविधताओं के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील रवैये का विकास कर सकें। भारतीय समाज के बहुभाषिक परिवेश को भी ध्यान में रखा गया है। आशा है कि संकलित रचनाएँ विद्यार्थियों को रुचिकर लगेंगी और उन्हें अन्य रचनाएँ पढ़ने के लिए प्रेरित करेंगी।

अभ्यास-प्रश्नों और **आकलन** की दृष्टि से इस पुस्तक की एक प्रमुख विशेषता है उसका नया **प्रस्तुतीकरण।** यह नया प्रस्तुतीकरण अभ्यास-प्रश्नों के माध्यम से किया गया है। पाठ्यपुस्तक में रचनाएँ एक वातावरण निर्मित करती हैं और अभ्यास-प्रश्न उन रचनाओं को परखने और पाठ से गहराई से जुड़ने का अवसर देते हैं। वे विद्यार्थियों को स्वतंत्र और मौलिक रूप से सोचने की प्रेरणा भी देते हैं, इसलिए इस पुस्तक में संदर्भ को फैलाने वाले, कल्पना को विस्तार देने वाले और वैज्ञानिक सोच विकसित करने वाले प्रश्न पूछे गए हैं। पुस्तक में दी गई रचनाओं को समझ के साथ पढ़ने, उन पर तार्किक, रचनात्मक और विश्लेषणात्मक समझ के साथ विचार करने की दृष्टि से अभ्यास-प्रश्नों में विविधता का ध्यान रखा गया है। यह भी ध्यान रखा गया है कि अलग-अलग रुचियों और क्षमताओं के रूप में स्वयं को व्यक्त करने वाले विद्यार्थियों को सीखने के अवसर मिलें। अभ्यास-प्रश्नों की प्रकृति इस प्रकार की है कि हर परिवेश, भाषा और सामाजिक स्तर के विद्यार्थी समाहित हो सकें और उनको चिंतन करके प्रश्नों का उत्तर देने का अवसर मिले। साथ ही यह ध्यान रखा गया है कि वे विशेष शोधपरक दृष्टि से पाठ्यक्रम से परे भी अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित हों (4.43, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*)।

अभ्यास-प्रश्नों को मुख्य रूप से आठ शीर्षकों में बाँटा गया है— रचना से संवाद, विधा से संवाद, विषयों से संवाद, सृजन, भाषा से संवाद, गतिविधियाँ, झरोखे से और खोजबीन।

रचना से संवाद के अंतर्गत रचना से सीधे जुड़े बहुविकल्पीय प्रश्न तथा अनुभव और विचार संबंधी प्रश्नों को समाहित किया गया है। अपेक्षा यह है कि विद्यार्थी को व्यक्तिगत अनुभव और विचार के साथ-साथ सामूहिक अनुभव को प्रस्तुत करने का अवसर मिले।

विधा से संवाद के अंतर्गत रचना की विधा से संबंधित ऐसे अभ्यास-प्रश्न दिए गए हैं जिनके माध्यम से साहित्य की विविध विधाओं की विशेषताओं, उनकी परतों और सौंदर्य से विद्यार्थी न केवल परिचित हों, बल्कि स्वयं उनकी पड़ताल भी कर सकें।

विषयों से संवाद के अंतर्गत साहित्य के अंतरविषयी संबंध से जुड़े प्रश्न दिए गए हैं। साहित्य के अंतर्गत समाज विज्ञान, विज्ञान, कला, कानून, अर्थशास्त्र, प्रकृति-पर्यावरण इत्यादि सभी विषय समाहित होते हैं। साहित्य बहुत से विषयों को समाहित करते हुए निर्मित होता है, लेकिन अंततः वह साहित्य होता है। इसलिए भाषा-साहित्य को पढ़ते हुए उसकी परिधि और व्यापकता में बहुत से अन्य विषयों पर ध्यान दिलाने का प्रयास किया गया है।

सृजन शीर्षक के अंतर्गत साहित्य में लेखन, कला, खेल, कल्पना, चिंतन और स्वयं करके सीखने से संबंधित गतिविधियाँ दी गई हैं जिससे कल्पना और सृजन को विस्तार मिलेगा।

भाषा से संवाद शीर्षक के अंतर्गत पाठों में आए भाषिक संदर्भों (व्याकरण) को आधार बनाते हुए उनके विश्लेषण संबंधी प्रश्नों को समाहित किया गया है। उपसर्ग, प्रत्यय, समास, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, वाक्य विवेचन या बहुभाषिक स्वरूप को जीवंत अनुभवों से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है।

गतिविधियाँ शीर्षक के अंतर्गत पाठ से जोड़ते हुए ऐसी गतिविधियाँ दी गई हैं जिनसे विद्यार्थियों को अन्य साहित्यिक विधाओं, पत्र, विज्ञापन आदि लिखने का अवसर तो मिले ही, उनकी कल्पना और रचनात्मकता भी समृद्ध हो सके। इन्हें 'विद्यालय में कक्षा के अतिरिक्त' भी किया जा सके।

झरोखे से के अंतर्गत पाठ के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए कुछ ऐसी रचनाएँ दी गई हैं जो पाठ के प्रति विद्यार्थियों की रुचि और समझ को और अधिक विस्तार दे सकेंगी। ये रचनाएँ ऐसे झरोखे हैं जिनसे झाँककर विद्यार्थी साहित्य की विशाल दुनिया का आनंद उठा सकेंगे। दूसरी ओर, इन झरोखों के माध्यम से साहित्य तथा सृजन के विविध स्वरूपों से जुड़ सकेंगे।

खोजबीन के अंतर्गत पाठों से जुड़ी कुछ सामग्री (ऑडियो, वीडियो या प्रिंट के रूप में) के लिंक खोजबीन के लिए दिए गए हैं ताकि विद्यार्थियों के पठन का विस्तार हो सके और साथ ही रचनाओं के प्रति उनकी समझ समृद्ध हो।

इस पुस्तक में **'भाषा संगम'** शीर्षक से दो प्रकार की प्रस्तुतियाँ दिखाई पड़ेंगी। एक, पुस्तक के प्रारंभ में भारतीय भाषाओं में से किसी एक भारतीय भाषा की रचना, जैसे इसमें गुजराती भाषा की 'वैष्णव जन तो तेने कहिए' रचना दी गई है। दूसरे, रचना में आए किसी एक केंद्रीय शब्द को भारतीय भाषाओं में अनुवाद के रूप में दिया गया है। अपेक्षा यह है कि इसके माध्यम से विद्यार्थियों का अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति तो झुकाव होगा ही, इसके साथ-साथ बहुत-सी भारतीय भाषाओं को एक साथ रखकर उनकी समानता, सौंदर्य और विशेषता पर कक्षा में विचार करने का अवसर मिलेगा।

अभ्यास-प्रश्नों में जगह-जगह भारतीय भाषाओं से संबंधित गतिविधियाँ भी दी गई हैं।

पुस्तक को रुचिकर और पठनीय बनाने में चित्रों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए लेखकों के परिचय के साथ उनके चित्र भी दिए गए हैं। रचनाओं से जुड़े कुछ चित्र भी पुस्तक में सम्मिलित किए गए हैं। ये चित्र रचना की व्याख्या करते हुए उन्हें समझने में सहायता तो करते ही हैं, उन्हें विस्तार भी देते हैं।

आशा है, विद्यार्थी इस पुस्तक को बिना बोझ का अनुभव किए आनंद के साथ पढ़ेंगे और हिंदी भाषा तथा हिंदी साहित्य के साथ-साथ व्यापक सामाजिक जीवन की चेतना प्राप्त करेंगे।

संध्या सिंह
प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग एवं
संयोजक, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, हिंदी
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति
(एन.एस.टी.सी.)

महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान **(अध्यक्ष)**

मञ्जुल भार्गव, *प्रोफेसर*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी **(सह-अध्यक्ष)**

सुधा मूर्ति, प्रतिष्ठित लेखिका एवं शिक्षाविद

शेखर मांडे, पूर्व *महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं प्रतिष्ठित *प्रोफेसर*, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

सुजाता रामदोरई, *प्रोफेसर*, ब्रिटिश कोलंबिया यूनिवर्सिटी, कनाडा

शंकर महादेवन, संगीत विशेषज्ञ, मुंबई

यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरु

सुरीना राजन, *आई.ए.एस.* (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं पूर्व *महानिदेशक*, एच.आई.पी.ए.

चमू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय

संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

गजानन लोंढे, *प्रमुख*, कार्यक्रम कार्यालय, एन.एस.टी.सी.

रेबिन छेत्री, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम

प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर* एवं *संकायाध्यक्ष* (*अनुदेश*), क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु

दिनेश कुमार, *प्रोफेसर* एवं *संकायाध्यक्ष* (*अनुसंधान*), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कीर्ति कपूर, पूर्व *प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली **(सदस्य-सचिव)**

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष

सुरेंद्र दुबे, *उपाध्यक्ष,* केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

सदस्य

अंजनी श्रीवास्तव, *एसोसिएट प्रोफेसर* एवं *विभागाध्यक्ष,* हिंदी विभाग, महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

अक्षय कुमार दीक्षित, *टी.जी.टी.* (हिंदी), आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय, छतरपुर, नई दिल्ली

अनुराधा, *पी.जी.टी.* (हिंदी) (अवकाश प्राप्त), सरदार पटेल विद्यालय, नई दिल्ली

चमन लाल गुप्त, *प्रोफेसर* एवं पूर्व *विभागाध्यक्ष,* हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

नंद किशोर पांडेय, *कुलपति,* हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, जयपुर

नीलकंठ कुमार, *असिस्टेंट प्रोफेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

प्रणय कुमार, *विभागाध्यक्ष,* हिंदी एवं संस्कृत विभाग, एल.के. सिंघानिया एजुकेशन सेंटर, गोटन

मीनू सिंह, *पी.जी.टी.* (हिंदी), सर्वोदय कन्या विद्यालय, रजोकरी, नई दिल्ली

राजीव रंजन सिन्हा, *पी.जी.टी.* (हिंदी), सर्वोदय सह-शिक्षा विद्यालय, मेहराम नगर, नई दिल्ली

लक्ष्मी प्रसाद मालगुड़ी, *पी.जी.टी.* (हिंदी), राजकीय इंटर कॉलेज, कोटी कॉलोनी, कलसी ब्लॉक, देहरादून

विवेकानंद उपाध्याय, *असिस्टेंट प्रोफेसर,* काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

शारदा कुमारी, *प्राचार्य* (अवकाश प्राप्त), डी.आई.ई.टी., आर.के. पुरम, सेक्टर-7, नई दिल्ली

संजय कुमार श्रीवास्तव, *पी.जी.टी.* (हिंदी), महात्मा गाँधी इंटर कॉलेज, गोरखपुर

साकेत बहुगुणा, *असिस्टेंट प्रोफेसर* (भाषाविज्ञान), केंद्रीय हिंदी संस्थान (दिल्ली केंद्र), नई दिल्ली

सुमन कुमार सिंह, *प्रधानाध्यापक,* गवर्मेंट सेकेंडरी स्कूल, कौड़िया वसंती, भगवानपुर हाट, सिवान

सदस्य-समन्वयक

संध्या सिंह, *प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग एवं *संयोजक*, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (हिंदी भाषा उप-समूह), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सदस्य सह-समन्वयक

नरेश कोहली, *एसोसिएट प्रोफेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य - भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों; पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (भाषा) के सभी सदस्यों तथा अन्य अंतःसंबंधी विषयों के लिए गठित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों के अध्यक्षों एवं सदस्यों के प्रति इस पुस्तक के निर्माण की प्रक्रिया में मार्गदर्शन एवं समीक्षा हेतु बहुमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, *संयुक्त निदेशक*, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान; *अध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग; *अध्यक्ष*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग; *अध्यक्ष*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग; *अध्यक्ष*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग; *अध्यक्ष*, जेंडर अध्ययन विभाग; *अध्यक्ष*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग के साथ ही इन विभागों के सदस्यों का पाठ्यपुस्तक में अंतरानुशासनिक विषयों के अंतःसंबंध को सुनिश्चित करने के लिए आभार व्यक्त करती है।

इस पुस्तक में जिन रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उनकी स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों, उनके परिजनों एवं उनसे संबद्ध प्रकाशकों के प्रति परिषद् अपना आभार व्यक्त करती है।

इस पाठ्यपुस्तक में योगदान के लिए श्याम सिंह सुशील, *लेखक*, दिल्ली के प्रति परिषद् विशेष आभार प्रकट करती है।

परिषद्, *वरिष्ठ शोध सहायक*— सुनीत मिश्र; *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*— प्रिया, सत्यम सिंह, अरुण कुमार, सोनम सिंह तथा राहुल कुमार यादव; और तकनीकी सहयोग हेतु फरहीन फातिमा, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* का हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, इस पुस्तक के संपादन के लिए प्रकाशन प्रभाग में कार्यरत अतुल मिश्रा, *संपादक* (संविदा); अब्दुल मजीद, *प्रूफरीडर* (संविदा) के प्रति तथा इस पुस्तक को प्रकाशन हेतु अंतिम रूप से तैयार करने के लिए पवन कुमार बरियार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; विवेक राजपूत, उपासना, अनिता कुमारी और मनोज कुमार, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

गंगा

भारत की प्रमुख नदियों में गंगा, हमारी सभ्यता व संस्कृति का अविरल प्रवाह है। गंगोत्री से निकलकर इसकी धारा गंगासागर (बंगाल की खाड़ी) तक जाती है। इस तरह गंगा भारत के बड़े भौगोलिक क्षेत्र की जीवन-रेखा है। गंगा की तरह हिंदी भी हमारी सभ्यता व संस्कृति की एक पहचान है। हिंदी भारत के व्यापक क्षेत्र में बोली, समझी व पढ़ी जाती है। गंगा पाठ्यपुस्तक भी न केवल विद्यार्थियों की भाषाई दक्षता विकसित करती है बल्कि उन्हें भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के सतत प्रवाह से भी जोड़ती है।

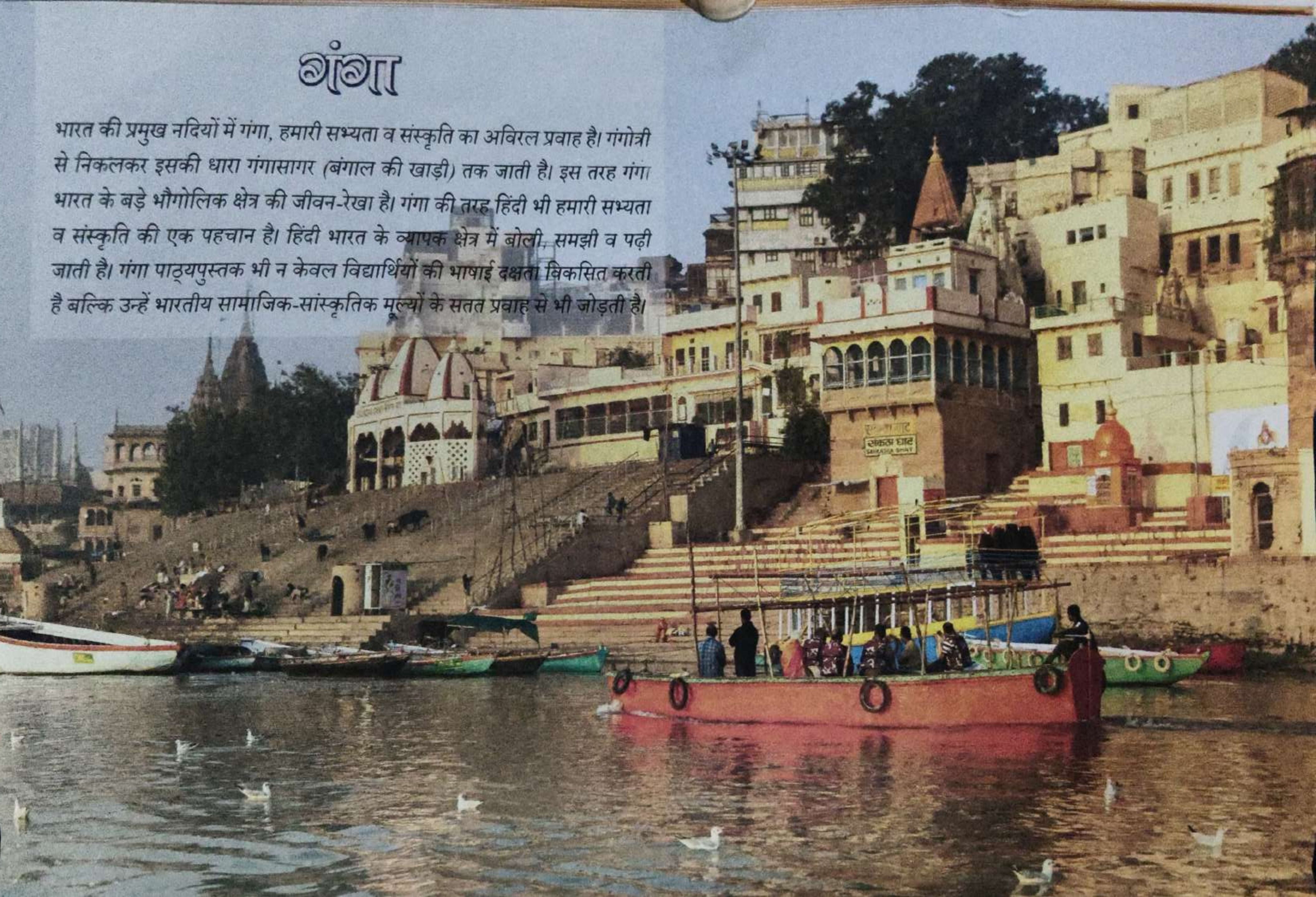

विषय-क्रम

	आमुख		*iii*
	यह पुस्तक		*v*
	भाषा संगम— वैष्णव जन तो तेने कहिए...		*xviii*

गद्य खंड

1.	दो बैलों की कथा	*प्रेमचंद*	3
2.	क्या लिखूँ?	*पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी*	30
3.	संवादहीन	*शेखर जोशी*	45
4.	ऐसी भी बातें होती हैं (लता मंगेशकर से साक्षात्कार)	*यतींद्र मिश्र*	62
5.	आखिरी चट्टान तक	*मोहन राकेश*	84
6.	रीढ़ की हड्डी	*जगदीशचंद्र माथुर*	100
7.	मैं और मेरा देश	*कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'*	120
	निर्मल जीत सिंह सेखों (साथ-साथ पढ़ें)	*रा.शै.अ.प्र.प.*	*139*

काव्य खंड

8.	पद	*रैदास*	145
9.	राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद	*तुलसीदास*	153
10.	भारति, जय, विजयकरे!	*सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'*	166
11.	झाँसी की रानी	*सुभद्रा कुमारी चौहान*	176
12.	घर की याद	*भवानीप्रसाद मिश्र*	194
	तब याद तुम्हारी आती है (साथ-साथ पढ़ें)	*रामनरेश त्रिपाठी*	*206*

भाषा संगम

वैष्णव जन तो तेने कहिए...

वैष्णव जन तो तेने कहिए,
जे पीड़ पराई जाणे रे।
परदु:खे उपकार करे तोये,
मन अभिमान न आणे रे।
सकल लोकमां सहुने वंदे,
निंदा न करे केनी रे।
वाच काछ मन निश्चल राखे,
धन-धन जननी तेनी रे।
समदृष्टी ने तृष्णा त्यागी,
परस्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले,
परधन नव झाले हाथ रे।
मोह माया व्यापे नहीं जेने,
दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे।
रामनामशुं ताली लागी,
सकल तीरथ तेना तनमां रे।
वणलोभी ने कपटरहित छे,
काम क्रोध निवार्या रे।
भणे नरसैयो तेनुं दरसन करतां,
कुल एकतेर तार्या रे।

– नरसी मेहता

(गुजराती भाषा के प्रसिद्ध कवि)

गद्य खंड

आधुनिक काल में गद्य का आविर्भाव सबसे प्रधान साहित्यिक घटना है।

–*रामचंद्र शुक्ल*

गद्य जीवन संग्राम की भाषा है।

–*सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'*

कहानी ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास सभी उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं।

–*प्रेमंचद*

1

0901CH01

प्रेमचंद

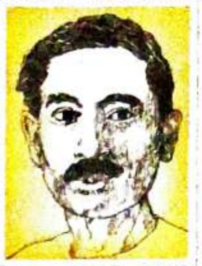

प्रेमचंद का जन्म सन् 1880 में लमही (वाराणसी), उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनका मूल नाम धनपत राय था। उन्होंने शिक्षा विभाग में नौकरी की परंतु असहयोग आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और लेखन कार्य के प्रति पूरी तरह समर्पित हो गए।

प्रेमचंद की कहानियाँ *मानसरोवर* के आठ भागों में संकलित हैं। *सेवासदन*, *प्रेमाश्रम*, *रंगभूमि*, *कायाकल्प*, *निर्मला*, *गबन*, *कर्मभूमि*, *गोदान* उनके प्रमुख उपन्यास हैं। उन्होंने *हंस*, *जागरण*, *माधुरी* पत्रिकाओं का संपादन भी किया। उन्होंने जिस गाँव और शहर के परिवेश को देखा और जिया, उसकी अभिव्यक्ति उनके कथा साहित्य में मिलती है। किसान, मजदूर, दलित, स्त्री और स्वाधीनता आंदोलन आदि उनकी रचनाओं के मूल विषय हैं।

प्रेमचंद के कथा साहित्य में मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षियों को भी आत्मीयता मिली है। उनकी भाषा सरल, जीवंत एवं मुहावरेदार है तथा लोक प्रचलित शब्दों का प्रयोग उन्होंने कुशलतापूर्वक किया है। सन् 1936 में प्रेमचंद का निधन हो गया।

'दो बैलों की कथा' में प्रेमचंद ने किसानों के जीवन और पशुओं के साथ उनके भावनात्मक संबंधों को मार्मिक ढंग से दिखाया है। इस कहानी में उन्होंने यह भी बताया है कि स्वतंत्रता सहज ही नहीं मिलती, उसके लिए बार-बार संघर्ष करना पड़ता है। इस प्रकार परोक्ष रूप से यह कहानी स्वतंत्रता आंदोलन की भावना से जुड़ी है। प्रेमचंद ने इसमें 'पंचतंत्र' और 'हितोपदेश' जैसी कहानियों की परंपरा को अपनाया और आगे बढ़ाया है।

दो बैलों की कथा

जानवरों में गधा सबसे ज्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है। हम जब किसी आदमी को परले दरजे का बेवकूफ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ है, या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्याई हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है; किंतु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा। जितना चाहो गरीब को मारो, चाहे जैसी खराब, सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी न दिखाई देगी। वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता हो; पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा। उसके चेहरे पर एक स्थायी विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख-दुख, हानि-लाभ, किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा। ऋषियों-मुनियों के जितने गुण हैं, वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं; पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है। सद्‌गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा। कदाचित सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है। देखिए न, भारतवासियों की अफ्रीका में क्या दुर्दशा हो रही है? क्यों अमरीका में उन्हें घुसने नहीं दिया जाता? बेचारे शराब नहीं पीते, चार पैसे कुसमय के लिए बचाकर रखते हैं, जी तोड़कर काम करते हैं, किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते, चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं फिर भी बदनाम हैं। कहा जाता है, वे जीवन के आदर्श को नीचा करते हैं। अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते, तो शायद सभ्य कहलाने लगते। जापान की मिसाल सामने है। एक ही विजय ने उसे संसार की सभ्य जातियों में गण्य बना दिया।

लेकिन गधे का एक छोटा भाई और भी है, जो उससे कम ही गधा है, और वह है 'बैल'। जिस अर्थ में हम 'गधा' शब्द का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते-जुलते अर्थ में 'बछिया के ताऊ' का भी प्रयोग करते हैं। कुछ लोग बैल को शायद बेवकूफों में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे; मगर हमारा विचार ऐसा नहीं

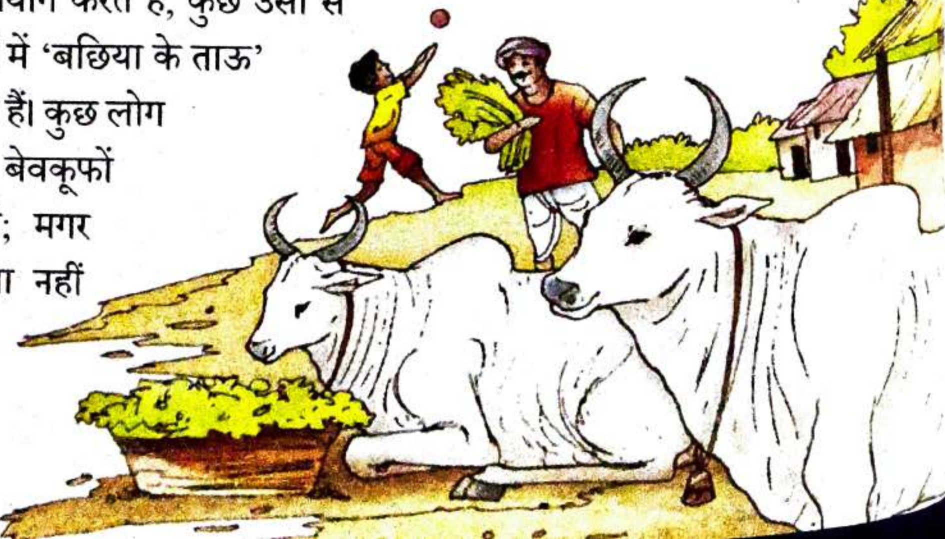

है। बैल कभी-कभी मारता भी है, कभी-कभी अड़ियल बैल भी देखने में आता है। और भी कई रीतियों से अपना असंतोष प्रकट कर देता है; अतएव उसका स्थान गधे से नीचा है।

झूरी के दोनों बैलों के नाम थे हीरा और मोती। दोनों पछाईं जाति के थे— देखने में सुंदर, काम में चौकस, डील में ऊँचे। बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक-दूसरे से मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते थे। एक, दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाता था, हम नहीं कह सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक-दूसरे को चाटकर और सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे— विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हल्की-सी रहती है, जिस पर ज्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता। जिस वक्त ये दोनों बैल हल या गाड़ी में जोत दिए जाते और गरदन हिला-हिलाकर चलते, उस वक्त हरएक की यही चेष्टा होती थी कि ज्यादा-से-ज्यादा बोझ मेरी ही गरदन पर रहे। दिन-भर के बाद दोपहर या संध्या को दोनों खुलते, तो एक-दूसरे को चाट-चूटकर अपनी थकान मिटा लिया करते। नाँद में खली-भूसा पड़ जाने के बाद दोनों साथ उठते, साथ नाँद में मुँह डालते और साथ ही बैठते थे। एक मुँह हटा लेता, तो दूसरा भी हटा लेता था।

संयोग की बात, झूरी ने एक बार गोईं को ससुराल भेज दिया। बैलों को क्या मालूम, वे क्यों भेजे जा रहे हैं। समझे, मालिक ने हमें बेच दिया। अपना यों बेचा जाना उन्हें अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने, पर झूरी के साले गया को घर तक गोईं ले जाने में दाँतों पसीना आ गया। पीछे से हाँकता तो दोनों दाएँ-बाएँ भागते; पगहिया पकड़कर आगे से खींचता, तो दोनों पीछे को जोर लगाते। मारता तो दोनों सींग नीचे करके हुँकारते। अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती, तो झूरी से पूछते– तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो? हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। अगर इतनी मेहनत से काम न चलता था तो और काम ले लेते। हमें तो तुम्हारी चाकरी में मर जाना कबूल था। हमने कभी दाने-चारे की शिकायत नहीं की। तुमने जो कुछ खिलाया, वह सिर झुकाकर खा लिया, फिर तुमने हमें इस जालिम के हाथ क्यों बेच दिया?

संध्या समय दोनों बैल अपने नए स्थान पर पहुँचे। दिन-भर के भूखे थे, लेकिन जब नाँद में लगाए गए, तो एक ने भी उसमें मुँह न डाला। दिल भारी हो रहा था। जिसे उन्होंने अपना घर समझ रखा था, वह आज उनसे छूट गया था। यह नया घर, नया गाँव, नए आदमी, सब उन्हें बेगानों-से लगते थे।

दोनों ने अपनी मूक-भाषा में सलाह की, एक-दूसरे को कनखियों से देखा और लेट गए। जब गाँव में सोता पड़ गया, तो दोनों ने जोर मारकर पगहे तुड़ा डाले और घर की तरफ चले। पगहे बहुत मजबूत थे। अनुमान न हो सकता था कि कोई बैल उन्हें तोड़ सकेगा; पर इन दोनों में इस समय दूनी शक्ति आ गई थी। एक-एक झटके में रस्सियाँ टूट गईं।

झूरी प्रातःकाल सोकर उठा, तो देखा कि दोनों बैल चरनी पर खड़े हैं। दोनों की गरदनों में आधा-आधा गराँव लटक रहा है। घुटने तक पाँव कीचड़ से भरे हैं और दोनों की आँखों में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा है।

झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्‌गद हो गया। दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। प्रेमालिंगन और चुंबन का वह दृश्य बड़ा ही मनोहर था।

घर और गाँव के लड़के जमा हो गए और तालियाँ बजा-बजाकर उनका स्वागत करने लगे। गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्वपूर्ण थी। बाल-सभा ने निश्चय किया, दोनों पशु-वीरों को अभिनंदन-पत्र देना चाहिए। कोई अपने घर से रोटियाँ लाया, कोई गुड़, कोई चोकर, कोई भूसी।

एक बालक ने कहा– "ऐसे बैल किसी के पास न होंगे।"

दूसरे ने समर्थन किया– "इतनी दूर से दोनों अकेले चले आए।"

तीसरा बोला– "बैल नहीं हैं वे, उस जनम के आदमी हैं।"

इसका प्रतिवाद करने का किसी को साहस न हुआ।

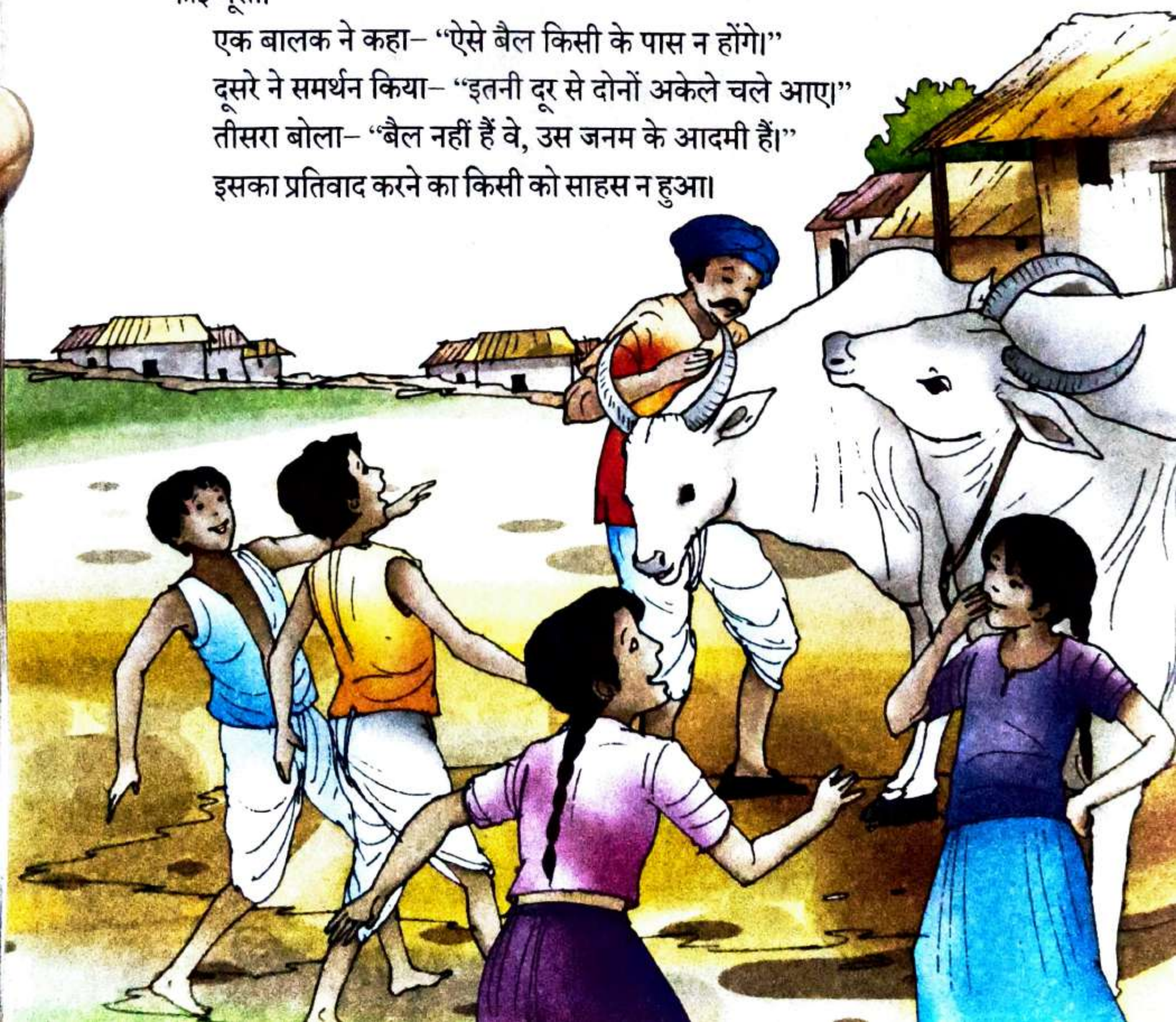

झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा, तो जल उठी। बोली– "कैसे नमक-हराम बैल हैं कि एक दिन वहाँ काम न किया; भाग खड़े हुए।"

झूरी अपने बैलों पर यह आक्षेप न सुन सका– "नमकहराम क्यों हैं? चारा-दाना कुछ न दिया होगा, तो क्या करते?"

स्त्री ने रोब के साथ कहा– "बस, तुम्हीं तो बैलों को खिलाना जानते हो और तो सभी पानी पिला-पिलाकर रखते हैं।"

झूरी ने चिढ़ाया– "चारा मिलता तो क्यों भागते?"

स्त्री चिढ़ी– "भागे इसलिए कि वे लोग तुम-जैसे बुद्धुओं की तरह बैलों को सहलाते नहीं। खिलाते हैं, तो रगड़कर जोतते भी हैं। ये दोनों ठहरे कामचोर, भाग निकले। अब देखूँ, कहाँ से खली और चोकर मिलता है! सूखे भूसे के सिवा कुछ न दूँगी, खाएँ चाहें मरें।"

वही हुआ। मजूर को बड़ी ताकीद कर दी गई कि बैलों को खाली सूखा भूसा दिया जाए।

बैलों ने नाँद में मुँह डाला, तो फीका-फीका। न कोई चिकनाहट, न कोई रस। क्या खाएँ? आशा-भरी आँखों से द्वार की ओर ताकने लगे।

झूरी ने मजूर से कहा– "थोड़ी-सी खली क्यों नहीं डाल देता?"

"मालकिन मुझे मार ही डालेंगी।"

"चुराकर डाल आ।"

"ना दादा, पीछे से तुम भी उन्हीं की-सी कहोगे।"

2

दूसरे दिन झूरी का साला फिर आया और बैलों को ले चला। अबकी उसने दोनों को गाड़ी में जोता।

दो-चार बार मोती ने गाड़ी को सड़क की खाई में गिराना चाहा; पर हीरा ने संभाल लिया। वह ज्यादा सहनशील था।

संध्या-समय घर पहुँचकर उसने दोनों को मोटी रस्सियों से बाँधा और कल की शरारत का मजा चखाया। फिर वही सूखा भूसा डाल दिया। अपने दोनों बैलों को खली, चूनी सब कुछ दी।

दोनों बैलों का ऐसा अपमान कभी न हुआ था। झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे। यहाँ मार पड़ी। आहत सम्मान की व्यथा तो थी ही, उस पर मिला सूखा भूसा।

नाँद की तरफ आँखें तक न उठाईं।

दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी। वह मारते-मारते थक गया; पर दोनों ने पाँव न उठाया। एक बार जब उस निर्दयी ने हीरा की नाक पर खूब डंडे जमाए, तो मोती का गुस्सा काबू के बाहर हो गया। हल लेकर भागा। हल, रस्सी, जुआ, जोत, सब टूट-टाट कर बराबर हो गया। गले में बड़ी-बड़ी रस्सियाँ न होतीं, तो दोनों पकड़ाई में न आते।

हीरा ने मूक-भाषा में कहा– "भागना व्यर्थ है।"

मोती ने उत्तर दिया– "तुम्हारी तो इसने जान ही ले ली थी।"

"अबकी बड़ी मार पड़ेगी।"

"पड़ने दो, बैल का जन्म लिया है, तो मार से कहाँ तक बचेंगे?"

गया दो आदमियों के साथ दौड़ा आ रहा है। दोनों के हाथों में लाठियाँ हैं।

मोती बोला– "कहो तो दिखा दूँ कुछ मजा मैं भी। लाठी लेकर आ रहा है।"

हीरा ने समझाया– "नहीं भाई! खड़े हो जाओ।"

"मुझे मारेगा, तो मैं भी एक-दो को गिरा दूँगा!"

"नहीं। हमारी जाति का यह धर्म नहीं है।"

मोती दिल में ऐंठकर रह गया। गया आ पहुँचा और दोनों को पकड़ कर ले चला। कुशल हुई कि उसने इस वक्त मारपीट न की, नहीं तो मोती भी पलट पड़ता। उसके तेवर देखकर गया और उसके सहायक समझ गए कि इस वक्त टाल जाना ही मसलहत है।

आज दोनों के सामने फिर वही सूखा भूसा लाया गया। दोनों चुपचाप खड़े रहे। घर के लोग भोजन करने लगे। उस वक्त एक छोटी-सी लड़की दो रोटियाँ लिए निकली और दोनों के मुँह में देकर चली गई। उस एक रोटी से इनकी भूख तो क्या शांत होती; पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया। यहाँ भी किसी सज्जन का वास है। लड़की भैरो की थी। उसकी माँ मर चुकी थी। सौतेली माँ उसे मारती रहती थी, इसलिए इन बैलों से उसे एक प्रकार की आत्मीयता हो गई थी।

दोनों दिन-भर जोते जाते, डंडे खाते, अड़ते। शाम को थान पर बाँध दिए जाते और रात को वही बालिका उन्हें दो रोटियाँ

खिला जाती। प्रेम के इस प्रसाद की यह बरकत थी कि दो-दो गाल सूखा भूसा खाकर भी दोनों दुर्बल न होते थे, मगर दोनों की आँखों में, रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था।

एक दिन मोती ने मूक-भाषा में कहा– "अब तो नहीं सहा जाता, हीरा!"

"क्या करना चाहते हो?"

"एकाध को सींगों पर उठाकर फेंक दूँगा।"

"लेकिन जानते हो, वह प्यारी लड़की, जो हमें रोटियाँ खिलाती है, उसी की लड़की है, जो इस घर का मालिक है। यह बेचारी अनाथ न हो जाएगी?"

"तो मालकिन को न फेंक दूँ। वही तो उस लड़की को मारती है।"

"लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो।"

"तुम तो किसी तरह से निकलने ही नहीं देते। बताओ, तुड़ाकर भाग चलें।"

"हाँ, यह मैं स्वीकार करता, लेकिन इतनी मोटी रस्सी टूटेगी कैसे?"

"इसका एक उपाय है। पहले रस्सी को थोड़ा-सा चबा लो। फिर एक झटके में टूट जाती है।"

रात को जब बालिका रोटियाँ खिलाकर चली गई, तो दोनों रस्सियाँ चबाने लगे, पर मोटी रस्सी मुँह में न आती थी। बेचारे बार-बार जोर लगाकर रह जाते थे।

सहसा घर का द्वार खुला और वही लड़की निकली। दोनों सिर झुकाकर उसका हाथ चाटने लगे। दोनों की पूँछें खड़ी हो गईं। उसने उनके माथे सहलाए और बोली– "खोले देती हूँ। चुपके से भाग जाओ, नहीं तो यहाँ लोग तुम्हें मार डालेंगे। आज घर में सलाह हो रही है कि इनकी नाकों में नाथ डाल दी जाएँ।"

उसने गराँव खोल दिया, पर दोनों चुपचाप खड़े रहे।

मोती ने अपनी भाषा में पूछा– "अब चलते क्यों नहीं?"

हीरा ने कहा– "चलें तो, लेकिन कल इस अनाथ पर आफत आएगी। सब इसी पर संदेह करेंगे।" सहसा बालिका चिल्लाई– "दोनों फूफावाले बैल भागे जा रहे हैं। ओ दादा! दादा! दोनों बैल भागे जा रहे हैं, जल्दी दौड़ो।"

गया हड़बड़ाकर भीतर से निकला और बैलों को पकड़ने चला। वे दोनों भागे। गया ने पीछा किया। वह और भी तेज हुए। गया ने शोर मचाया। फिर गाँव के कुछ आदमियों को भी साथ लेने के लिए लौटा। दोनों मित्रों को भागने का मौका मिल गया। सीधे दौड़ते चले गए। यहाँ तक कि मार्ग का ज्ञान न रहा। जिस परिचित मार्ग से आए थे, उसका यहाँ पता न था। नए-नए गाँव मिलने लगे। तब दोनों एक खेत के किनारे खड़े होकर सोचने लगे, अब क्या करना चाहिए।

हीरा ने कहा– "मालूम होता है, राह भूल गए।"

"तुम भी बेतहाशा भागे। वहीं उसे मार गिराना था।"

"उसे मार गिराते, तो दुनिया क्या कहती? वह अपना धर्म छोड़ दे, लेकिन हम अपना धर्म क्यों छोड़ें?"

दोनों भूख से व्याकुल हो रहे थे। खेत में मटर खड़ी थी। चरने लगे। रह-रहकर आहट ले लेते थे, कोई आता तो नहीं है।

जब पेट भर गया और दोनों ने आजादी का अनुभव किया तो मस्त होकर उछलने-कूदने लगे। पहले दोनों ने डकार ली। फिर सींग मिलाए और एक-दूसरे को ठेलने लगे। मोती ने हीरा को कई कदम पीछे हटा दिया, यहाँ तक कि वह एक खाई में गिर गया। तब उसे भी क्रोध आया। संभलकर उठा और फिर मोती से भिड़ गया। मोती ने देखा– खेल में झगड़ा हुआ चाहता है तो किनारे हट गया।

3

अरे! यह क्या? कोई साँड़ डौंकता चला आ रहा है। हाँ, साँड़ ही है। वह सामने आ पहुँचा। दोनों मित्र बगलें झाँक रहे हैं। साँड़ पूरा हाथी है। उससे भिड़ना जान से हाथ धोना है; लेकिन न भिड़ने पर भी तो जान बचती नहीं नजर आती। इन्हीं की तरफ आ भी रहा है। कितनी भयंकर सूरत है!

मोती ने मूक-भाषा में कहा– "बुरे फँसे। जान बचेगी? कोई उपाय सोचो।"

हीरा ने चिंतित स्वर में कहा– "अपने घमंड में भूला हुआ है। आरजू-विनती न सुनेगा।"

"भाग क्यों न चलें?"

"भागना कायरता है।"

"तो फिर यहीं मरो। बंदा तो नौ-दो-ग्यारह होता है।"

"और जो दौड़ाए?"

"तो फिर कोई उपाय सोचो जल्द!"

"उपाय यही है कि उस पर दोनों जने एक साथ चोट करें। मैं आगे से रगेदता हूँ, तुम पीछे से रगेदो, दोहरी मार पड़ेगी, तो भाग खड़ा होगा। मेरी ओर झपटे, तुम बगल से उसके पेट में सींग घुसेड़ देना। जान जोखिम है; पर दूसरा उपाय नहीं है।"

दोनों मित्र जान हथेलियों पर लेकर लपके। साँड़ को भी संगठित शत्रुओं से लड़ने का तजुरबा न था। वह तो एक शत्रु से मल्लयुद्ध करने का आदी था। ज्योंही हीरा पर झपटा, मोती ने पीछे से दौड़ाया। साँड़ उसकी तरफ मुड़ा, तो हीरा ने रगेदा। साँड़ चाहता था कि एक-एक करके

दोनों को गिरा ले; पर ये दोनों भी उस्ताद थे। उसे यह अवसर न देते थे। एक बार साँड़ झल्लाकर हीरा का अंत कर देने के लिए चला कि मोती ने बगल से आकर पेट में सींग भोंक दी। साँड़ क्रोध में आकर पीछे फिरा तो हीरा ने दूसरे पहलू में सींग चुभा दिया। आखिर बेचारा जख्मी होकर भागा और दोनों मित्रों ने दूर तक उसका पीछा किया। यहाँ तक कि साँड़ बेदम होकर गिर पड़ा। तब दोनों ने उसे छोड़ दिया।

दोनों मित्र विजय के नशे में झूमते चले जाते थे।

मोती ने अपनी सांकेतिक भाषा में कहा– "मेरा जी तो चाहता था कि बच्चा को मार ही डालूँ।"

हीरा ने तिरस्कार किया– "गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।"

"यह सब ढोंग है। बैरी को ऐसा मारना चाहिए कि फिर न उठे।"

"अब घर कैसे पहुँचेंगे, वह सोचो।"

"पहले कुछ खा लें, तो सोचें।"

सामने मटर का खेत था ही। मोती उसमें घुस गया। हीरा मना करता रहा, पर उसने एक न सुनी। अभी दो ही चार ग्रास खाए थे कि दो आदमी लाठियाँ लिए दौड़ पड़े और दोनों मित्रों को घेर लिया। हीरा तो मेड़ पर था, निकल गया। मोती सींचे हुए खेत में था। उसके खुर कीचड़ में धँसने लगे। न भाग सका। पकड़ लिया गया। हीरा ने देखा, संगी संकट में है, तो लौट पड़ा। फँसेंगे तो दोनों फँसेंगे। रखवालों ने उसे भी पकड़ लिया।

प्रातःकाल दोनों मित्र काँजीहौस में बंद कर दिए गए।

4

दोनों मित्रों को जीवन में पहली बार ऐसा साबिका पड़ा कि सारा दिन बीत गया और खाने को एक तिनका भी न मिला। समझ ही में न आता था, यह कैसा स्वामी है। इससे तो गया फिर भी अच्छा था। यहाँ कई भैंसें थीं, कई बकरियाँ, कई घोड़े, कई गधे; पर किसी के सामने चारा न था, सब जमीन पर मुरदों की तरह पड़े थे। कई तो इतने कमजोर हो गए थे कि खड़े भी न हो सकते थे। सारा दिन दोनों मित्र फाटक की ओर टकटकी लगाए ताकते रहे; पर कोई चारा लेकर आता न दिखाई दिया। तब दोनों ने दीवार की नमकीन मिट्टी चाटनी शुरू की, पर इससे क्या तृप्ति होती?

रात को भी जब कुछ भोजन न मिला, तो हीरा के दिल में विद्रोह की ज्वाला दहक उठी। मोती से बोला– " अब तो नहीं रहा जाता मोती!"

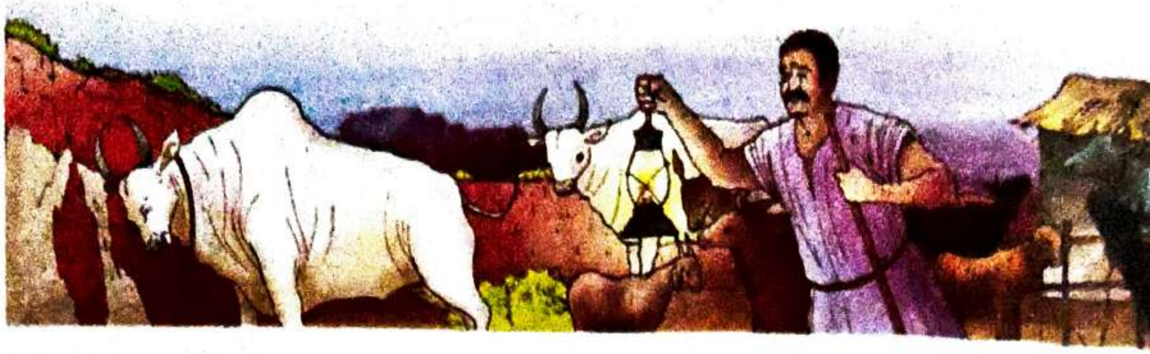

मोती ने सिर लटकाए हुए जवाब दिया– "मुझे तो मालूम होता है, प्राण निकल रहे हैं।"

"इतनी जल्द हिम्मत न हारो भाई! यहाँ से भागने का कोई उपाय निकालना चाहिए।"

"आओ दीवार तोड़ डालें।"

"मुझसे तो अब कुछ नहीं होगा।"

"बस इसी बूते पर अकड़ते थे!"

"सारी अकड़ निकल गई।"

बाड़े की दीवार कच्ची थी। हीरा मजबूत तो था ही, अपने नुकीले सींग दीवार में गड़ा दिए और जोर मारा, तो मिट्टी का एक चिप्पड़ निकल आया। फिर तो उसका साहस बढ़ा। उसने दौड़-दौड़कर दीवार पर चोटें कीं और हर चोट में थोड़ी-थोड़ी मिट्टी गिराने लगा।

उसी समय काँजीहौस का चौकीदार लालटेन लेकर जानवरों की हाजिरी लेने आ निकला। हीरा का यह उजड्डपन देखकर उसने उसे कई डंडे रसीद किए और मोटी-सी रस्सी से बाँध दिया।

मोती ने पड़े-पड़े कहा– "आखिर मार खाई, क्या मिला?"

"अपने बूते-भर जोर तो मार दिया।"

"ऐसा जोर मारना किस काम का कि और बंधन में पड़ गए।"

"जोर तो मारता ही जाऊँगा, चाहे कितने ही बंधन पड़ते जाएँ।"

"जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

"कुछ परवाह नहीं। यों भी तो मरना ही है। सोचो, दीवार खुद जाती तो कितनी जानें बच जातीं। इतने भाई यहाँ बंद हैं। किसी की देह में जान नहीं है। दो-चार दिन और यही हाल रहा तो सब मर जाएँगे।"

"हाँ, यह बात तो है। अच्छा, तो ला, फिर मैं भी जोर लगाता हूँ।"

मोती ने भी दीवार में उसी जगह सींग मारा। थोड़ी-सी मिट्टी गिरी और फिर हिम्मत बढ़ी। फिर तो वह दीवार में सींग लगाकर इस तरह जोर करने लगा, मानो किसी प्रतिद्वंद्वी से लड़ रहा है। आखिर कोई दो घंटे की जोर-आजमाई के बाद दीवार ऊपर से लगभग एक हाथ गिर गई।

उसने दूनी शक्ति से दूसरा धक्का मारा, तो आधी दीवार गिर पड़ी।

दीवार का गिरना था कि अधमरे-से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे। तीनों घोड़ियाँ सरपट भाग निकलीं। फिर बकरियाँ निकलीं। इसके बाद भैंसें भी खिसक गईं; पर गधे अभी तक ज्यों-के-त्यों खड़े थे।

हीरा ने पूछा– "तुम दोनों क्यों नहीं भाग जाते?"

एक गधे ने कहा– "जो कहीं फिर पकड़ लिए जाएँ!"

"तो क्या हरज है। अभी तो भागने का अवसर है।"

"हमें तो डर लगता है, हम यहीं पड़े रहेंगे।"

आधी रात से ऊपर जा चुकी थी। दोनों गधे अभी तक खड़े सोच रहे थे कि भागें या न भागें और मोती अपने मित्र की रस्सी तोड़ने में लगा हुआ था। जब वह हार गया, तो हीरा ने कहा– "तुम जाओ, मुझे यहीं पड़ा रहने दो। शायद कहीं भेंट हो जाए।"

मोती ने आँखों में आँसू लाकर कहा– "तुम मुझे इतना स्वार्थी समझते हो, हीरा? हम और तुम इतने दिनों एक साथ रहे हैं। आज तुम विपत्ति में पड़ गए, तो मैं तुम्हें छोड़कर अलग हो जाऊँ।"

हीरा ने कहा– "बहुत मार पड़ेगी। लोग समझ जाएँगे यह तुम्हारी शरारत है।"

मोती गर्व से बोला– "जिस अपराध के लिए तुम्हारे गले में बंधन पड़ा, उसके लिए अगर मुझ पर मार पड़े, तो क्या चिंता। इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे।"

यह कहते हुए मोती ने दोनों गधों को सींगों से मार-मारकर बाड़े के बाहर निकाला और तब अपने बंधु के पास आकर सो रहा।

भोर होते ही मुंशी और चौकीदार तथा अन्य कर्मचारियों में कैसी खलबली मची, इसके लिखने की जरूरत नहीं। बस, इतना ही काफी है कि मोती की खूब मरम्मत हुई और उसे भी मोटी रस्सी से बाँध दिया गया।

5

एक सप्ताह तक दोनों मित्र वहाँ बँधे पड़े रहे। किसी ने चारे का एक तृण भी न डाला। हाँ, एक बार पानी दिखा दिया जाता था। यही उनका आधार था। दोनों इतने दुर्बल हो गए थे कि उठा तक न जाता था; ठठरियाँ निकल आई थीं।

एक दिन बाड़े के सामने डुग्गी बजने लगी और दोपहर होते-होते वहाँ पचास-साठ आदमी जमा हो गए। तब दोनों मित्र निकाले गए और उनकी देखभाल होने लगी। लोग

आ-आकर उनकी सूरत देखते और मन फीका करके चले जाते। ऐसे मृतक बैलों का कौन खरीदार होता?

सहसा एक दढ़ियल आदमी, जिसकी आँखें लाल थीं और मुद्रा अत्यंत कठोर, आया और दोनों मित्रों के कूल्हों में उँगली गोदकर मुंशी जी से बातें करने लगा। उसका चेहरा देखकर अंतर्ज्ञान से दोनों मित्रों के दिल काँप उठे। वह कौन है और उन्हें क्यों टटोल रहा है, इस विषय में उन्हें कोई संदेह न हुआ। दोनों ने एक-दूसरे को भीत नेत्रों से देखा और सिर झुका लिया।

हीरा ने कहा– "गया के घर से नाहक भागे। अब जान न बचेगी।"

मोती ने अश्रद्धा के भाव से उत्तर दिया– "कहते हैं, भगवान सबके ऊपर दया करते हैं। उन्हें हमारे ऊपर क्यों दया नहीं आती।"

"भगवान के लिए हमारा मरना-जीना दोनों बराबर है। चलो, अच्छा ही है, कुछ दिन उसके पास तो रहेंगे। एक बार भगवान ने उस लड़की के रूप में हमें बचाया था। क्या अब न बचाएँगे?"

"यह आदमी छुरी चलाएगा। देख लेना।"

"तो क्या चिंता है? माँस, खाल, सींग, हड्डी सब किसी-न-किसी काम आ जाएँगी।"

नीलाम हो जाने के बाद दोनों मित्र उस दढ़ियल के साथ चले। दोनों की बोटी-बोटी काँप रही थी। बेचारे पाँव तक न उठा सकते थे, पर भय के मारे गिरते-पड़ते भागे जाते थे; क्योंकि वह ज़रा भी चाल धीमी हो जाने पर जोर से डंडा जमा देता था।

राह में गाय-बैलों का एक रेवड़ हरे-हरे हार में चरता नजर आया। सभी जानवर प्रसन्न थे, चिकने, चपल। कोई उछलता था, कोई आनंद से बैठा पागुर करता था। कितना सुखी जीवन था इनका; पर कितने स्वार्थी हैं सब। किसी को चिंता नहीं कि उनके दो भाई बधिक के हाथ पड़े कैसे दुखी हैं।

सहसा दोनों को ऐसा मालूम हुआ कि यह परिचित राह है। हाँ, इसी रास्ते से गया उन्हें ले गया था। वही खेत, वही बाग, वही गाँव मिलने लगे। प्रतिक्षण उनकी चाल तेज होने लगी। सारी थकान, सारी दुर्बलता गायब हो गई। आह? यह लो! अपना ही हार आ गया। इसी कुएँ पर हम पुर चलाने आया करते थे; यही कुआँ है।

मोती ने कहा– "हमारा घर नगीच आ गया।"

हीरा बोला– "भगवान की दया है।"

"मैं तो अब घर भागता हूँ।"

"यह जाने देगा?"

"इसे मैं मार गिराता हूँ।"

"नहीं-नहीं, दौड़कर थान पर चलो। वहाँ से हम आगे न जाएँगे।"

दोनों उन्मत्त होकर बछड़ों की भाँति कुलेलें करते हुए घर की ओर दौड़े। वह हमारा थान है। दोनों दौड़कर अपने थान पर आए और खड़े हो गए। दढ़ियल भी पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था।

झूरी द्वार पर बैठा धूप खा रहा था। बैलों को देखते ही दौड़ा और उन्हें बारी-बारी से गले लगाने लगा। मित्रों की आँखों से आनंद के आँसू बहने लगे। एक झूरी का हाथ चाट रहा था।

दढ़ियल ने जाकर बैलों की रस्सियाँ पकड़ लीं।

झूरी ने कहा– मेरे बैल हैं।

"तुम्हारे बैल कैसे? मैं मवेशीखाने से नीलाम लिए आता हूँ।"

"मैं तो समझता हूँ चुराए लिए आते हो! चुपके से चले जाओ। मेरे बैल हैं। मैं बेचूँगा तो बिकेंगे। किसी को मेरे बैल नीलाम करने का क्या अख़्तियार है?"

"जाकर थाने में रपट कर दूँगा।"

"मेरे बैल हैं। इसका सबूत यह है कि मेरे द्वार पर खड़े हैं।"

दढ़ियल झल्लाकर बैलों को जबरदस्ती पकड़ ले जाने के लिए बढ़ा। उसी वक्त मोती ने सींग चलाया। दढ़ियल पीछे हटा। मोती ने पीछा किया। दढ़ियल भागा। मोती पीछे दौड़ा। गाँव के बाहर निकल जाने पर वह रुका; पर खड़ा दढ़ियल का रास्ता देख रहा था। दढ़ियल दूर खड़ा धमकियाँ दे रहा था, गालियाँ निकाल रहा था, पत्थर फेंक रहा था। और मोती विजयी शूर की भाँति उसका रास्ता रोके खड़ा था। गाँव के लोग यह तमाशा देखते थे और हँसते थे।

जब दढ़ियल हारकर चला गया, तो मोती अकड़ता हुआ लौटा।

हीरा ने कहा—"मैं डर रहा था कि कहीं तुम गुस्से में आकर मार न बैठो।"

"अगर वह मुझे पकड़ता, तो मैं बे-मारे न छोड़ता।"

"अब न आएगा।"

"आएगा तो दूर ही से खबर लूँगा। देखूँ, कैसे ले जाता है।"

"जो गोली मरवा दे? "

"मर जाऊँगा; पर उसके काम तो न आऊँगा।"

"हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता।"

"इसीलिए कि हम इतने सीधे हैं।"

ज़रा देर में नाँदों में खली, भूसा, चोकर और दाना भर दिया गया और दोनों मित्र खाने लगे। झूरी खड़ा दोनों को सहला रहा था और बीसों लड़के तमाशा देख रहे थे। सारे गाँव में उछाह-सा मालूम होता था।

उसी समय मालकिन ने आकर दोनों के माथे चूम लिए।

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. कहानी में हीरा और मोती का आपसी संबंध किस गुण को मुख्य रूप से दर्शाता है?
   - (क) प्रतिस्पर्धा और प्रतिद्वंद्विता
   - (ख) एकता और सहयोग
   - (ग) गर्व और दंभ
   - (घ) विद्रोह और क्रोध
2. हीरा-मोती ने नया स्थान स्वीकार क्यों नहीं किया?
   - (क) उन्हें भरपेट भोजन दिया गया।
   - (ख) उन्हें बहुत मोटी रस्सी से बाँधा गया।
   - (ग) मालिक ने बेचा, यह सोचकर उन्हें अपमान लगा।
   - (घ) उन्हें अलग-अलग बाँधा गया।
3. बैलों ने रस्सी तोड़कर घर लौटने का निर्णय क्यों लिया?
   - (क) कष्टों से बचने के लिए
   - (ख) स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए
   - (ग) अभिमान की रक्षा के लिए
   - (घ) अपनापन पाने के लिए
4. गया द्वारा डंडे से मारने पर मोती का आक्रोश किस मानवीय मनोवृत्ति का द्योतक है?
   - (क) स्वाभिमान
   - (ख) अहिंसा
   - (ग) पराधीनता
   - (घ) अन्याय की रक्षा
5. कहानी में बैलों की 'मूक-भाषा' का प्रयोग लेखक ने किस लिए किया?
   - (क) कहानी को रोचक बनाने के लिए
   - (ख) मनुष्य जैसी चेतना दिखाने के लिए

(ग) संवादों को छोटा रखने के लिए

(घ) कथा में हास्य उत्पन्न करने के लिए

6. 'दो बैलों की कथा' को यदि स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ें, तो हीरा और मोती किसके प्रतीक हो सकते हैं?

(क) भारत पर अंग्रेजों के क्रूर और अन्यायपूर्ण शासन के

(ख) स्वतंत्रता संग्राम में पशुओं के योगदान के

(ग) सत्याग्रह और अहिंसा के आंदोलन के

(घ) स्वतंत्रता के लिए भारतीय जनता के संघर्ष के

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. "दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी।" जब बैल नए मालिक के यहाँ गए, तो उन्होंने काम करने से इनकार क्यों कर दिया था?

2. "गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्वपूर्ण थी।" बैलों का घर लौट आना कोई साधारण घटना नहीं है। कैसे?

   (संकेत– वे क्यों लौट आए, उनके और झूरी के मन में कौन-कौन से भाव रहे होंगे, क्या वास्तविक जीवन में भी ऐसा होता है आदि।)

3. "मोती ने मूक-भाषा में कहा— अब तो नहीं सहा जाता, हीरा!"

   'कभी-कभी संघर्ष करना आवश्यक हो जाता है' इस कथन को कहानी के उदाहरणों से सिद्ध कीजिए।

4. "जब पेट भर गया और दोनों ने आजादी का अनुभव किया..." हीरा एवं मोती 'स्वतंत्रता' और 'अपनापन' दोनों में से किस भावना से अधिक प्रेरित थे? कारण सहित लिखिए।

5. "बैलों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी।"

   'अत्याचार सहना भी अन्याय में भागीदारी है'— क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने उत्तर के कारण भी बताइए।

6. "बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था।" हीरा और मोती अभिन्न मित्र थे। कहानी की किन-किन घटनाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है? कम से कम तीन बिंदु लिखिए।

7. "उसी समय मालकिन ने आकर दोनों के माथे चूम लिए।" कहानी में मालकिन और छोटी लड़की, दोनों के व्यवहार की तुलना कीजिए।

मेरी कल्पना मेरे अनुमान

1. "उसने उनके माथे सहलाए और बोली– खोले देती हूँ। चुपके से भाग जाओ..." यदि आप वह छोटी लड़की होते, तो बैलों की मदद किस प्रकार करते?
2. "दोनों गधे अभी तक ज्यों-के-त्यों खड़े थे।" भय और संकोच इंसान को अवसर मिलने पर भी जकड़े रखता है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? इस वाक्य के संबंध में कहानी और अपने अनुभवों से उदाहरण लेते हुए अपने विचार लिखिए।

मेरे अनुभव मेरे विचार

1. "दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हल्की-सी रहती है, जिस पर ज्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता।" क्या आप इस बात से सहमत हैं? आपको ऐसा क्यों लगता है? अपने अनुभवों के आधार पर बताइए।
2. "हीरा ने तिरस्कार किया– गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।"

   "यह सब ढोंग है। बैरी को ऐसा मारना चाहिए कि फिर न उठे।"

   आपका इस संबंध में क्या विचार है? आप किसके साथ हैं— हीरा के या मोती के या दोनों के? क्यों?
3. "हम और तुम इतने दिनों एक साथ रहे। आज तुम विपत्ति में पड़ गए तो मैं तुम्हें छोड़कर अलग हो जाऊँ?" क्या कभी आपने किसी विपत्ति या चुनौती का सामना अपने किसी मित्र या परिजन के साथ मिलकर किया है? उस घटना के विषय में बताइए।

विधा से संवाद

कहानी की पड़ताल

कहानी ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास सभी उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं।

कोई कहानी वास्तविक या काल्पनिक घटनाओं पर आधारित हो सकती है और इसमें वास्तविक या काल्पनिक पात्र भी शामिल हो सकते हैं।

आप कहानी लेखन की इस प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए एक कहानी का शीर्षक चुनिए और दिए गए मुख्य बिंदुओं को पूरा कीजिए—

शीर्षक और लेखक	
विषय	
क्रिया/कार्य	
परिवेश/देश-काल और मुख्य विचार	
चरित्र/पात्र	
परिणाम	

कहानी का सौंदर्य

"दोनों सिर झुकाकर उसका हाथ चाटने लगे। दोनों की पूँछें खड़ी हो गईं।"

इस वाक्य को पढ़कर आँखों के सामने एक दृश्य-सा बन जाता है। आप जानते हैं कि भाषा की इस विशेषता को चित्रात्मकता कहते हैं। 'दो बैलों की कथा' कहानी में ऐसी अनेक विशेषताएँ हैं जो इसे अद्‌भुत और प्रभावपूर्ण बनाती हैं।

नीचे इस कहानी में आए कुछ विशेष बिंदुओं को उदाहरण के साथ दिया गया है। आप भी एक-एक उदाहरण खोजकर तालिका में लिखिए—

विशेषता	विशेषता का अर्थ	उदाहरण 1	उदाहरण 2
चित्रात्मक भाषा	शब्दों के माध्यम से पाठक के मन में स्पष्ट और जीवंत चित्र या छवियाँ बनाना।	घुटने तक पाँव कीचड़ से भरे हैं।	सहसा घर का द्वार खुला और वही लड़की निकली।
संवादात्मकता	कथ्य को आगे बढ़ाने के लिए, पात्रों के विचार, भाव आदि व्यक्त करने के लिए बातचीत और संवादों का प्रयोग।	मर जाऊँगा, पर उसके काम तो न आऊँगा।	
विरोधाभास	एक ही प्रसंग या रचना में दो विपरीत या परस्पर विरोधी बातें एक साथ मौजूद होना।	झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्‌गद हो गया। झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा, तो जल उठी।	

विशेषता	विशेषता का अर्थ	उदाहरण 1	उदाहरण 2
व्यंग्य	वह शैली जिसमें मजाक, हास्य या कटाक्ष (चुभते हुए संकेतों) के माध्यम से किसी दोष, कुरीति, अन्याय, पाखंड या कमजोरी को प्रकट किया जाता है।	भारतवासियों की अफ्रीका में क्या दुर्दशा हो रही है? अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते तो शायद सभ्य कहलाने लगते।	
संघर्ष	दो विरोधी शक्तियों, विचारों, इच्छाओं या परिस्थितियों का आपस में टकराना।	उससे भिड़ना जान से हाथ धोना है; लेकिन न भिड़ने पर भी जान बचती नहीं नजर आती। (बैल बनाम साँड़)	
अतिशयोक्ति	किसी पात्र, घटना, भाव या वस्तु का वर्णन इतना बढ़ाकर करना कि वह असंभव या अविश्वसनीय लगे।	झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे।	
संदेह/उलझन	जब पात्र किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाता।	सारा दिन बीत गया और खाने को एक तिनका भी न मिला। समझ ही में न आता था, यह कैसा स्वामी है?	

कहानी की रचना

प्राय: कहानी के प्रारंभ में ही कहानी के मुख्य चरित्र, कहानी का समय, कहानी की भाषा, घटनाओं आदि के कुछ संकेत मिलने लगते हैं। प्रेमचंद की इस कहानी में भी ऐसे संकेत हैं। आप कहानी के ऐसे संकेत/बिंदुओं को ढूँढ़कर लिखिए।

विषयों से संवाद

कहानी का समय और समाज

'दो बैलों की कथा' कहानी जिस समय लिखी गई थी, उस समय भारत पर अंग्रेजों का दमनकारी शासन चल रहा था। उस समय भारतवासी भी अपने-अपने ढंग से इस अंग्रेजी शासन का विरोध कर रहे थे। इस कार्य में लेखक भी किसी से पीछे नहीं थे। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने हेतु प्रेरित कर रहे थे।

इस कहानी में से कुछ वाक्य चुनकर नीचे दिए गए हैं। इन वाक्यों का मिलान स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े उपयुक्त वाक्यों के साथ कीजिए—

कहानी में से वाक्य	स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ाव
1. जोर तो मारता ही जाऊँगा, चाहे कितने ही बंधन पड़ते जाएँ।	1. भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियों ने बलिदान दिया, जिससे लाखों भारतीयों में आजादी की प्रेरणा जगी।
2. मर जाऊँगा, पर उसके काम तो न आऊँगा।	2. भारतीय जनता के मन में ब्रिटिश शासन के प्रति विद्रोह धीरे-धीरे गहराता गया।
3. हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता।	3. ब्रिटिश साम्राज्य बहुत शक्तिशाली था, फिर भी स्वतंत्रता सेनानियों ने साहसपूर्वक उसका सामना किया।
4. दोनों मित्रों की आँखों में, रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था।	4. दासता के काल में भारतीयों के प्राण, सम्मान और अधिकारों की कोई महत्ता नहीं थी।
5. इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे।	5. स्वतंत्रता के लिए प्राण देना स्वीकार्य था, पर अंग्रेजों की सेवा में लगना अस्वीकार्य।
6. साँड़ पूरा हाथी है... पर दोनों मित्र जान हथेलियों पर लेकर लपके।	6. स्वतंत्रता सेनानी बार-बार जेल गए, फाँसी पर चढ़े, पर संघर्ष छोड़ने को तैयार नहीं हुए।

पशुओं के लिए कानून

नीचे दिए गए संवाद पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

"मैं तो समझता हूँ, चुराए लिए आते हो। चुपके से चले जाओ। मेरे बैल हैं। मैं बेचूँगा, तो बिकेंगे। किसी को मेरे बैल नीलाम करने का क्या अख़्तियार है!"

"जाकर थाने में रपट कर दूँगा।"

"मेरे बैल हैं। इसका सबूत यह है कि मेरे द्वार पर खड़े हैं।"

1. बैलों का काँजीहाउस में बंद होना न्याय और अन्याय दोनों को दर्शाता है। कैसे?
2. यदि आपको अवसर मिले तो आप बैलों की ओर से कौन-कौन से कानूनी अधिकार माँगेंगे?

3. मान लीजिए कि हीरा-मोती अपने साथ हुए अन्याय की शिकायत करना चाहते हैं। उनकी ओर से उनकी शिकायत थानाध्यक्ष को करते हुए एक पत्र लिखिए।

   (संकेत– "थानाध्यक्ष महोदय, हमारा नाम... है। हमारे साथ अन्याय हुआ है...।")

हमारी धरोहर और संस्कृति

1. "वह अपना धर्म छोड़ दे लेकिन हम अपना धर्म क्यों छोड़ें!"
   कहानी के अनुसार हीरा और मोती सदैव ध्यान रखते थे कि कौन-से कार्य करने योग्य हैं और कौन-से नहीं। वे कौन-कौन से कार्य कभी नहीं करते थे?
2. "गिरे हुए बैरी पर सींग न चलाना चाहिए।"
   "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो।"
   हीरा के ये कथन किन भारतीय मूल्यों की ओर संकेत करते हैं?
3. "दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता"
   (क) खेतों में जुताई के लिए बैल और हल कृषि के पारंपरिक उपकरण हैं। कृषि के अन्य पारंपरिक और आधुनिक उपकरणों तथा उनके उपयोग के विषय में पता लगाइए और लिखिए।
   (ख) भारत में बैल केवल पशु नहीं बल्कि कृषि संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। लिखिए कि भारतीय गाँवों एवं शहरों में भी बैल किस-किस काम में सहायक होते हैं?

अलग-अलग और साथ-साथ

"दो-चार बार मोती ने गाड़ी को सड़क की खाई में गिराना चाहा; पर हीरा ने संभाल लिया। वह ज्यादा सहनशील था।"

1. कहानी के आधार पर हीरा और मोती की विशेषताएँ लिखिए।
   (संकेत– धैर्यवान, गुस्सैल, मेहनती, शांत, सहनशील आदि)
2. हीरा और मोती की विशेषताएँ कुछ-कुछ समान और कुछ-कुछ अलग हैं, किंतु उनकी भिन्न विशेषताएँ एक-दूसरे को पूरा करती हैं। कैसे?
3. आपकी कक्षा में भी कुछ-कुछ समान और कुछ-कुछ भिन्न विशेषताओं वाले सहपाठी हैं। सबकी आवश्यकताएँ भी थोड़ी समान और थोड़ी भिन्न हैं। बताइए कि आप भिन्न विशेषताओं वाले सहपाठी से अपने लिए कैसा व्यवहार चाहते हैं? उनसे पता कीजिए कि वे आपसे अपने लिए कैसा व्यवहार चाहते हैं?
   (संकेत– क्या-क्या करें और क्या-क्या न करें, कैसे पढ़ाई खेल आदि में एक-दूसरे की सहायता करें और साथ दें)

4. "दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक-दूसरे से मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते थे।"

   कहानी में अनेक स्थानों पर 'मूक-भाषा' का उल्लेख किया गया है। आपके विचार से हीरा और मोती किस प्रकार आपस में बातें किया करते होंगे? अनुमान और कल्पना से बताइए।

5. आप भी अनेक अवसरों पर बिना शब्दों का उच्चारण किए संवाद करते हैं। कब-कब? कहाँ-कहाँ? कुछ उदाहरण लिखिए।

भारतीय सांकेतिक भाषा

आप नीचे दी गई इंटरनेट कड़ी (लिंक) पर जाकर भारतीय सांकेतिक भाषा सीख सकते हैं—

https://www.youtube.com/@ISLRTC

https://islrtc.nic.in/

मार्ग खोजेंगे कैसे?

"सीधे दौड़ते चले गए। यहाँ तक कि मार्ग का ज्ञान न रहा। जिस परिचित मार्ग से आए थे, उसका यहाँ पता न था। नए-नए गाँव मिलने लगे।"

1. हीरा-मोती अपने घर के मार्ग से भटक गए थे। क्या कभी आपके साथ ऐसा हुआ है कि आप रास्ता भूल गए या भटक गए? तब आपने अपने मार्ग का पता कैसे लगाया था?

2. यदि कोई व्यक्ति भटक जाए तो उसे क्या करना चाहिए कि वह सुरक्षित रूप से अपने गंतव्य तक पहुँच जाए। कक्षा में चर्चा कीजिए और लिखिए।

   (संकेत– ऑनलाइन मानचित्र, पुलिस, स्कूल, सरकारी भवन, विद्यार्थी, सड़क पर लगे सूचना-पट, दुकानों के बोर्डों पर लिखे पते, डाकघर आदि।)

3. आपके विद्यालय में आपदा की स्थिति में निकासी का मार्ग दर्शाने वाला मानचित्र अवश्य होगा। उसे ध्यानपूर्वक देखिए और पता लगाइए कि आपदा की स्थिति में आपकी कक्षा के सबसे निकट और सुरक्षित कौन-सा मार्ग है।

सृजन

1. हीरा और मोती की दैनंदिनी

कहानी में हीरा और मोती आपस में मनुष्यों की तरह बातें करते दिखते हैं। कल्पना कीजिए कि वे लिख-पढ़ भी सकते हैं। हीरा या मोती की नजर से उस दिन की डायरी लिखिए जब उन्हें काँजीहाउस ले जाया गया।

कैसे लिखें—

- "आज का दिन..." से आरंभ करें।
- भावनाएँ लिखें (भूख, गुस्सा, दर्द)।
- अंत में आशा या संकल्प लिखें।

(संकेत– "आज हमें काँजीहाउस में बंद किया गया। भूख से पेट जल रहा है। पर विश्वास है कि झूरी हमें वापस ले जाएगा।")

2. आज के समाचार

मान लीजिए आप एक स्थानीय समाचार पत्र के संवाददाता हैं। अपने समाचार पत्र के लिए बैलों के काँजीहाउस से भागने का समाचार लिखिए।

कैसे लिखें—

- शीर्षक दें।
- घटना का विवरण (कहाँ, कब, क्या हुआ)।
- परिणाम और लोगों की प्रतिक्रिया।

(संकेत– शीर्षक 'दो बहादुर बैलों ने तोड़ी बेड़ियाँ')

3. कहानी का नया अंत

यदि बैल वापस न लौटते तो कहानी का अंत कैसे होता? कहानी का नया अंत लिखिए।

कैसे लिखें—

- बैलों की नई जगह।
- झूरी की स्थिति।

(संकेत– "हीरा और मोती अब एक बूढ़े किसान के घर शांति से रह रहे हैं।")

4. चित्रकथा लेखन

नीचे 'दो बैलों की कथा' की एक घटना को चित्रकथा के रूप में दिया गया है। इन घटनाओं को पहचानिए। प्रत्येक घटना के लिए उपयुक्त संवाद और घटनाक्रम बताने वाले वाक्य लिखिए।

कैसे लिखें—

- हर चित्र के लिए एक छोटा संवाद बनाकर लिखिए।
- दृश्य का क्रम— बंद करना, भागने की योजना, दीवार तोड़ना, आजादी।

(संकेत– चित्र 4: "अब हम आजाद हैं।")

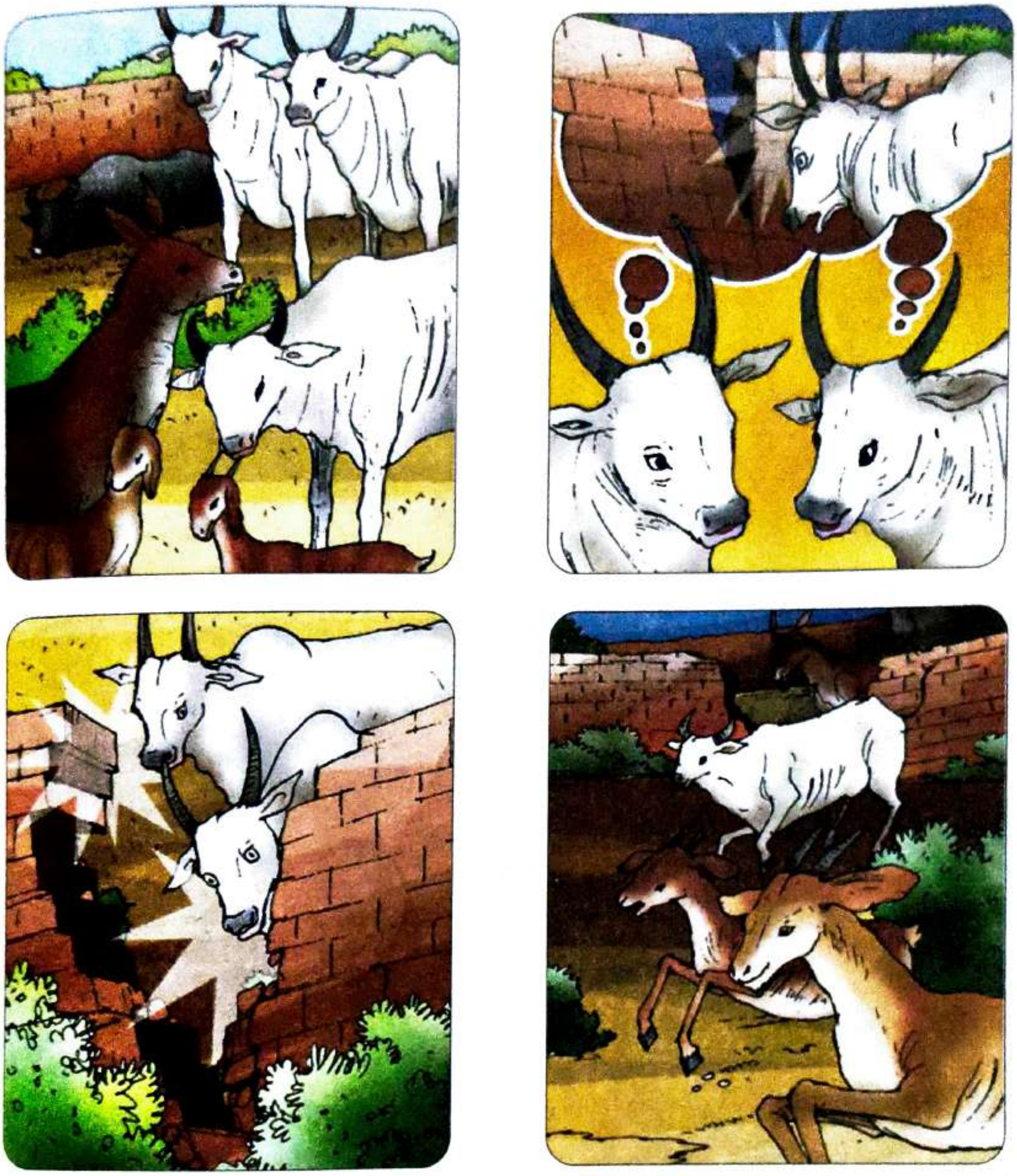

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

मेरे शब्द

कहानी में से पाँच ऐसे शब्द चुनकर लिखिए जो आपके लिए बिल्कुल नए हैं। अब उन शब्दों के अर्थ अपने अनुमान से लिखिए। इसके बाद उनके अर्थ शब्दकोश में से देखकर लिखिए।

भाषा गढ़ते मुहावरे

"लोग आ-आकर उनकी सूरत देखते और मन फीका करके चले जाते।"

'मन फीका करना' एक मुहावरा है जिसका अर्थ आपको वाक्य पढ़कर समझ में आ ही गया होगा। इसी से मिलते-जुलते मुहावरे हैं— जी फीका होना, जी खट्टा होना आदि। 'दो बैलों की कथा' कहानी में कई मुहावरे हैं जिनसे यह कहानी जीवंत हो गई है। ऐसी भाषा को ही मुहावरेदार भाषा कहा जाता है।

कहानी में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। इन वाक्यों में मुहावरों को पहचानकर रेखांकित कीजिए। इन मुहावरों का प्रयोग करते हुए नए वाक्य बनाकर लिखिए—

1. "झूरी के साले गया को घर तक गोईं ले जाने में दाँतों पसीना आ गया।"
2. "उसका चेहरा देखकर अंतर्ज्ञान से दोनों मित्रों के दिल काँप उठे।"
3. "झूरी की स्त्री ने बैलों को द्वार पर देखा, तो जल उठी।"
4. "मोती दिल में ऐंठकर रह गया।"
5. "आएगा तो दूर ही से खबर लूँगा। देखूँ कैसे ले जाता है।"
6. "जी तोड़कर काम करते हैं, किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते, चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं।"
7. "अगर वे भी ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते, तो शायद सभ्य कहलाने लगते।"
8. "तो फिर वहीं मरो। बंदा तो नौ-दो ग्यारह होता है।"

गतिविधियाँ

नीचे दी गई गतिविधियाँ अपने समूह के साथ मिलकर कीजिए—

1. **कविता (गीत) और अभिनंदन-पत्र**

   "बाल-सभा ने निश्चय किया, दोनों पशुवीरों को अभिनंदन-पत्र देना चाहिए।"

   (क) मान लीजिए कि बाल-सभा ने हीरा और मोती की प्रशंसा में एक गीत लिखा और गाया। अपनी कल्पना से वह गीत लिखिए।

   (ख) हीरा और मोती के लिए अभिनंदन-पत्र लिखिए।

2. **बाल सभा में भाषण**

   मान लीजिए कि आपको बाल-सभा ने हीरा-मोती के लौटने के बाद भाषण देने के लिए बुलाया है। भाषण का विषय है— 'पशुओं के अधिकार'। अपना भाषण लिखिए और कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

3. **शीर्षक**

इस कहानी के पाँच भाग हैं। कहानी के प्रत्येक भाग को अपने मन से उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

मेरी पहेली

अपने समूह के साथ मिलकर ऐसी पहेलियाँ बनाइए जिनके उत्तर निम्नलिखित हों—

हीरा, झूरी, मोती, गया, बैल, मटर, रस्सी, रोटी

भाषा संगम

"कभी-कभी अड़ियल **बैल** भी देखने में आता है।"

नीचे 'बैल' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

बैल (हिंदी); वृषभः (संस्कृत); बओलद, बल्द (पंजाबी); बैल (उर्दू); दोंद (कश्मीरी); ढ़गो (सिंधी); बैल (मराठी); बळद (गुजराती); बैल (कोंकणी); गोरु (नेपाली); बलद (बांग्ला); षाँड़, बलध (असमिया); शन लाबा (मणिपुरी); बलद (ओड़िआ); एंद्दु (तेलुगु); एरिदु/काळैमाहु (तमिल); काळ (मलयालम); एत्तु (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप 'बैल' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp

खोजबीन

दो बैलों की कथा

https://www.youtube.com/watch?v=cq0Lgg7iM14&ab_channel=NCERTOFFICIAL

कथा सम्राट– प्रेमचंद

https://www.youtube.com/watch?v-3314rJcclul&ab channel-NCERTOFFICIAL

प्रेमचंद का बचपन और बच्चों की कहानियाँ

https://www.youtube.com/watch?v-bg0MzrE36Dg&t-187s&ab_channel-NCERTOFFICIAL

शब्द-संपदा

निरापद — आपत्ति से रहित, निर्विघ्न, सुरक्षित
सहिष्णुता/सहिष्णुत्व — सहनशीलता, क्षमा
विषाद — उदासी, अवसाद, जड़ता, मन उचट जाना
पराकाष्ठा — अंतिम सीमा, चरम कोटि या सीमा,
कदाचित् — कभी, शायद
पछाईं/पछाँह — पश्चिमी प्रदेश का, पश्चिम दिशा
चौकस — चौकन्ना, सावधान, ठीक
डील — शरीर की ऊँचाई-चौड़ाई आदि, कद, देह, शरीर
विग्रह — अलगाना, फैलाना, फूट पैदा करना, खंड, भाग, विस्तार
विनोद — परिहास, मनोरंजन, हटाना, क्रीड़ा, कौतूहल
आत्मीयता — अपनापन, मैत्री
नाँद — मिट्टी का एक बड़ा और चौड़ा बर्तन जिसमें पशुओं को चारा-पानी आदि दिया जाता है, हौदी
गोईं/गुइयाँ — खेल का साथी, सखी
पगहिया/पगहा/पघा — ढोर (पशु) बाँधने की रस्सी
कनखियों/कनखी — आँख की कोर, तिरछी निगाह से देखना, आँख का इशारा
चरनी — मेंड़दार लंबा चबूतरा जिस पर गाय-बैल को चारा पानी दिया जाता है, गाय-बैल को चारा-पानी देने के लिए गाड़ी हुई नाँद
गराँव — फंदेदार रस्सी जो बैल आदि के गले में पहनाई जाती है
प्रतिवाद — विरोध, खंडन, वादी की बात के विरोध में कही जाने वाली बात
ताकीद — किसी कार्य के लिए बार-बार चेताने की क्रिया
टिटकार/टिटकारना — 'टिक-टिक' शब्द करके घोड़े, बैल आदि को चलने के लिए प्रेरित करना
तेवर — क्रोधभरी दृष्टि , कोप प्रकट करने वाली तिरछी नजर, भौंह
थान — पशुओं के बाँधे जाने की जगह, बँधी हुई लंबाई का कपड़े का बड़ा टुकड़ा
बरकत — वृद्धि, बढ़ती, सौभाग्य, लाभ, प्रभाव
बेतहाशा — बहुत तेजी से, बदहवास होकर (भागना), बिना सोचे-विचारे

व्याकुल — घबड़ाया हुआ, हतबुद्धि, व्यग्र, अभिभूत, भीत

रगेदता/रगेदना — भगाना, खदेड़ना, दौड़ाना

तजुरबा/तजरबा — अनुभव

मल्लयुद्ध — कुश्ती, बाहुयुद्ध

ग्रास — कौर, निवाला, आहार, निगलना, ग्रहण

मेंड़ — खेत की सीमा, सिंचाई आदि के लिए उसके चारों ओर बनाया हुआ मिट्टी का घेरा

खुर — नख, चारपाई के पाये का निचला हिस्सा

काँजीहौस/काँजीहाउस ['काइन हाउस'] — वह बाड़ा जिसमें दूसरे का खेत आदि खाने वाले या अनाथ चौपाए (पशु) बंद किए जाते और कुछ दंड लेकर छोड़े या नीलाम किए जाते हैं

साबिका/साविका — वास्ता, सरोकार, काम (पड़ना, होना)

तृप्ति — भोजन आदि की प्राप्ति से उत्पन्न संतोष या तृप्त होने का भाव

दहक — आग का दहकना, लपट, ज्वाला

उजड्डपन — अशिष्टता, उद्दंडता, उच्छृंखलता

बूते/बूता — सामर्थ्य, बल, शक्ति, बस

आजमाई/आजमाना — परीक्षार्थ प्रयोग करना, परीक्षा, जाँच करना

चेत — होश, संज्ञा, याद, ज्ञान, चित्त, मन, इच्छा, सावधानी

डुग्गी — चमड़े से मढ़ा चौड़े मुँह का छोटा बाजा

उन्मत्त — मतवाला, सनकी

नीलाम — बिक्री की एक रीति जिसमें सबसे अधिक दाम बोलने वाले के हाथ माल बेचा जाता है, बोली बोलकर बेचना

अख़्तियार/इख़्तियार — पसंद करना या इसका अधिकार, वश, विचाराधिकार, ग्रहण

2

0901CH02

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जन्म सन् 1894 में खैरागढ़, राजनंदगांव, छत्तीसगढ़ (तत्कालीन मध्यप्रदेश) में हुआ था। हिंदी साहित्य में उनकी ख्याति कुशल आलोचक, कवि, निबंधकार, हास्य व्यंग्यकार के रूप में है। निबंध लेखन के लिए वे विशेष रूप से स्मरणीय हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं— *पंच-पात्र, पद्म-वन, प्रबंध पारिजात, कुछ बिखरे पन्ने* (निबंध संग्रह), *अश्रुदल, शतदल* (काव्य), *झलमला, त्रिवेणी* (कहानी संग्रह), *विश्व साहित्य, हिंदी कहानी साहित्य, हिंदी साहित्य विमर्श, हिंदी उपन्यास साहित्य* (आलोचना)। उन्होंने *सरस्वती* और *छाया* पत्रिकाओं का संपादन भी किया।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने अपने लेखन में अध्यात्म, समाज-सुधार, लोकजीवन को प्रमुखता दी है। उन्होंने अपने निबंधों में भारतीय कृषि एवं सामाजिक संबंधों का तार्किक मूल्यांकन और विश्लेषण किया है। उनकी रचनाओं में भारतीय और पाश्चात्य साहित्य के सिद्धांतों का सामंजस्य देखने को मिलता है। सन् 1971 में उनका निधन हो गया।

'क्या लिखूँ?' निबंध में पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने निबंध की रचना प्रक्रिया को समझाया है। इस निबंध में उन्होंने 'दूर के ढोल सुहावने' और 'समाज-सुधार' शीर्षक दो विषयों को लेकर निबंध लेखन में आने वाली कठिनाइयों की चर्चा की है। निबंध की रचना प्रक्रिया के संबंध में विभिन्न विद्वानों के विचारों का उल्लेख करते हुए उन्होंने निबंध लिखने के आदर्श तरीके को खोजने का प्रयत्न रोचक और सरल ढंग से किया है। लेखक ने अपने विचारों को प्रकट करने के लिए साहित्यिक और सांस्कृतिक संदर्भों का अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रयोग किया है। इस निबंध की आत्मपरक शैली— जिसमें लेखक स्वयं पाठकों से संवाद करता है— इसे अधिक जीवंत, आत्मीय और प्रभावशाली बनाती है। आइए, निबंध लेखन की अन्य प्रक्रियाओं को समझने के लिए पढ़ते हैं— 'क्या लिखूँ?'

क्या लिखूँ?

मुझे आज लिखना ही पड़ेगा। अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबंध लेखक ए.जी. गार्डिनर का कथन है कि लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है। उस समय मन में कुछ ऐसी उमंग-सी उठती है, हृदय में कुछ ऐसी स्फूर्ति-सी आती है, मस्तिष्क में कुछ ऐसा आवेग-सा उत्पन्न होता है कि लेख लिखना ही पड़ता है। उस समय विषय की चिंता नहीं रहती। कोई भी विषय हो, उसमें हम अपने हृदय के आवेग को भर ही देते हैं। हैट टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम दे सकती है। उसी तरह अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय उपयुक्त है। असली वस्तु है हैट, खूँटी नहीं। इसी तरह मन के भाव ही तो यथार्थ वस्तु हैं, विषय नहीं।

गार्डिनर साहब के इस कथन की यथार्थता में मुझे संदेह नहीं, पर मेरे लिए कठिनता यह है कि मैंने उस मानसिक स्थिति का अनुभव ही नहीं किया है, जिसमें भाव अपने आप उत्थित हो जाते हैं। मुझे तो सोचना पड़ता है, चिंता करनी पड़ती है, परिश्रम करना पड़ता है, तब कहीं मैं एक निबंध लिख सकता हूँ। आज तो मुझे विशेष परिश्रम करना पड़ेगा, क्योंकि मुझे कोई साधारण निबंध नहीं लिखना है। आज मुझे नमिता और अमिता के लिए आदर्श निबंध लिखना होगा। नमिता का आदेश है कि मैं 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' इस विषय पर लिखूँ। अमिता का आग्रह है कि मैं समाज-सुधार पर लिखूँ, ये दोनों ही विषय परीक्षा में आ चुके हैं और उन दोनों पर आदर्श निबंध लिखकर मुझे उन दोनों को निबंध-रचना का रहस्य समझाना पड़ेगा।

दूर के ढोल सुहावने अवश्य होते हैं। पर क्या वे इतने सुहावने होते हैं कि उन पर पाँच पेज लिखे जा सकें? इसी प्रकार जिस समाज-सुधार की चर्चा अनादि काल से लेकर आज तक होती आ रही है और जिसके संबंध में बड़े-बड़े विज्ञों में भी विरोध है, उसको मैं पाँच पेज में कैसे लिख दूँ? मैंने सोचा कि सबसे पहले निबंधशास्त्र के आचार्यों की सम्मति जान लूँ। पहले यह तो समझ लूँ कि आदर्श निबंध है क्या और वह कैसे लिखा जाता है, तब फिर मैं विषय की चिंता करूँगा। इसलिए मैंने निबंधशास्त्र के कई आचार्यों की रचनाएँ देखीं।

एक विद्वान का कथन है कि निबंध छोटा होना चाहिए। छोटा निबंध बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है, क्योंकि बड़े निबंध में रचना की सुंदरता नहीं बनी रह सकती। इस कथन को मान लेने में ही मेरा लाभ है। मुझे छोटा ही निबंध लिखना है, बड़ा नहीं। पर लिखूँ कैसे? निबंधशास्त्र के उन्हीं आचार्य महोदय का कथन है कि निबंध के दो प्रधान अंग हैं—

सामग्री और शैली। पहले तो मुझे सामग्री एकत्र करनी होगी, विचार-समूह संचित करना होगा। इसके लिए मुझे मनन करना चाहिए। यह तो सच है कि जिसने जिस विषय का अच्छा अध्ययन किया है, उसके मस्तिष्क में उस विषय के विचार आते हैं। पर यह कौन जानता था कि 'दूर के ढोल सुहावने' पर भी निबंध लिखने की आवश्यकता होगी। यदि यह बात पहले से ज्ञात होती तो पुस्तकालय में जाकर इस विषय का अनुसंधान कर लेता; पर अब समय नहीं है। मुझे तो यहीं बैठकर दो ही घंटों में दो निबंध तैयार कर देने होंगे। यहाँ न तो विश्वकोश है और न कोई ऐसा ग्रंथ जिसमें इन विषयों की सामग्री उपलब्ध हो सके। अब तो मुझे अपने ही ज्ञान पर विश्वास कर लिखना होगा।

विज्ञों का कथन है कि निबंध लिखने के पहले उसकी रूपरेखा बना लेनी चाहिए। अतएव सबसे पहले मुझे 'दूर के ढोल सुहावने' की रूपरेखा बनानी है। मैं सोच ही नहीं सकता कि इस विषय की कैसी रूपरेखा है। निबंध लिख लेने के बाद मैं उसका सारांश कुछ ही वाक्यों में भले ही लिख दूँ, पर निबंध लिखने के पहले उसका सार दस-पाँच शब्दों में कैसे लिखा जाए? क्या सचमुच हिंदी के सब विज्ञ लेखक पहले से अपने-अपने निबंधों के लिए रूपरेखा तैयार कर लेते हैं? ए.जी. गार्डिनर को तो अपने लेखों का शीर्षक बनाने में ही सबसे अधिक कठिनाई होती है। उन्होंने लिखा कि मैं लेख लिखता हूँ और शीर्षक देने का भार मैं अपने मित्र पर छोड़ देता हूँ। उन्होंने यह भी लिखा है कि शेक्सपीयर को भी नाटक लिखने में उतनी कठिनाई न हुई होगी, जितनी कठिनाई नाटकों के नामकरण में हुई होगी। तभी तो घबराकर नाम न रख सकने के कारण उन्होंने अपने एक नाटक का नाम रखा 'जैसा तुम चाहो'। इसलिए मुझसे तो रूपरेखा तैयार न होगी।

अब मुझे शैली निश्चित करनी है। आचार्य महोदय का कथन है कि भाषा में प्रवाह होना चाहिए। इसके लिए वाक्य छोटे-छोटे हों, पर एक-दूसरे से संबद्ध। यह तो बिल्कुल ठीक है। मैं छोटे-छोटे वाक्य अच्छी तरह लिख सकता हूँ। पर मैं हूँ मास्टर। अपनी विद्वता का

प्रदर्शन करने के लिए, अपना गौरव स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि वाक्य कम-से-कम आधे पृष्ठ में तो समाप्त हों। बाणभट्ट ने *कादंबरी* में ऐसे ही वाक्य लिखे हैं। वाक्यों में अस्पष्टता भी चाहिए, क्योंकि यह अस्पष्टता या दुर्बोधता गांभीर्य ला देती है। इसीलिए संस्कृत के प्रसिद्ध कवि श्रीहर्ष ने जान-बूझकर अपने काव्य में ऐसी गुत्थियाँ डाल दी हैं, जो अज्ञों से न सुलझ सकें और सेनापति ने भी अपनी कविता दुर्बोध कर दी है। तभी तो अलंकारों, मुहावरों और लोकोक्तियों का समावेश भी निबंधों के लिए आवश्यक बताया जाता है। तब क्या किया जाए?

अंग्रेजी के निबंधकारों ने एक दूसरी ही पद्धति को अपनाया है। उनके निबंध इन आचार्यों की कसौटी पर भले ही खरे सिद्ध न हों, पर अंग्रेजी साहित्य में उनका मान अवश्य है। उस पद्धति के जन्मदाता मानटेन समझे जाते हैं। उन्होंने स्वयं जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया, उसी को अपने निबंधों में लिपिबद्ध कर दिया। ऐसे निबंधों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे मन की स्वच्छंद रचनाएँ हैं। उनमें न कवि की उदात्त कल्पना रहती है, न आख्यायिका-लेखक की सूक्ष्म दृष्टि और न विज्ञों की गंभीर तर्कपूर्ण विवेचना। उनमें लेखक की सच्ची अनुभूति रहती है। उनमें उसके सच्चे भावों की सच्ची अभिव्यक्ति होती है, उनमें उसका उल्लास रहता है। ये निबंध तो उस मानसिक स्थिति में लिखे जाते हैं, जिसमें न ज्ञान की गरिमा रहती है और न कल्पना की महिमा, जिसमें जीवन का गौरव भूलकर हम अपने में ही लीन हो जाते है, जिसमें हम संसार को अपनी ही दृष्टि से देखते हैं और अपने ही भाव से ग्रहण करते हैं। तब इसी पद्धति का अनुसरण कर मैं भी क्यों न निबंध लिखूँ। पर मुझे तो दो निबंध लिखने होंगे।

मुझे अमीर खुसरो की एक कहानी याद आई। एक बार प्यास लगने पर वे एक कुएँ के पास पहुँचे। वहाँ चार औरतें पानी भर रही थीं। पानी माँगने पर पहले उनमें से एक ने खीर पर कविता सुनने की इच्छा प्रकट की, दूसरी ने चरखे पर, तीसरी ने कुत्ते पर और चौथी ने ढोल पर। अमीर खुसरो प्रतिभावान थे, उन्होंने एक ही पद्य में चारों की इच्छाओं की पूर्ति कर दी। उन्होंने कहा—

खीर पकाई जतन से, चरखा दिया चला।
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा।।

मुझमें खुसरो की प्रतिभा नहीं है, पर उनकी इस पद्धति को स्वीकार करने से मेरी कठिनाई आधी रह जाती है। मैं भी एक निबंध में इन दोनों विषयों का समावेश कर दूँगा।

दूर के ढोल सुहावने होते हैं, क्योंकि उनकी कर्कशता दूर तक नहीं पहुँचती। जब ढोल के पास बैठे हुए लोगों के कान के पर्दे फटते रहते हैं, तब दूर किसी नदी के तट पर संध्या

समय, किसी दूसरे के कान में वही शब्द मधुरता का संचार कर देते हैं। ढोल के उन्हीं शब्दों को सुनकर वह अपने हृदय में किसी के विवाहोत्सव का चित्र अंकित कर लेता है। कोलाहल से पूर्ण घर के एक कोने में बैठी हुई किसी लज्जाशील नव-वधू की कल्पना वह अपने मन में कर लेता है। उस नव-वधू के प्रेम, उल्लास, संकोच, आशंका और विषाद से युक्त हृदय के कंपन ढोल की कर्कश ध्वनि को मधुर बना देते हैं। सच तो यह है कि ढोल की ध्वनि के साथ आनंद का कलरव, उत्सव का प्रमोद और प्रेम का संगीत, ये तीनों मिले रहते हैं। तभी उसकी कर्कशता समीपस्थ लोगों को भी कटु नहीं प्रतीत होती और दूरस्थ लोगों के लिए तो वह अत्यंत मधुर बन जाती है।

यह बात सच है कि दूर रहने से हमें यथार्थता की कठोरता का अनुभव नहीं होता। यही कारण है कि जो तरुण संसार के जीवन-संग्राम से दूर हैं, उन्हें संसार का चित्र बड़ा ही मनमोहक प्रतीत होता है; जो वृद्ध हो गए हैं, जो अपनी बाल्यावस्था और तरुणावस्था से दूर हट आए हैं, उन्हें अपने अतीतकाल की स्मृति बड़ी सुखद लगती है। वे अतीत का ही स्वप्न देखते हैं। तरुणों के लिए जैसे भविष्य उज्ज्वल होता है, वैसे ही वृद्धों के लिए अतीत। वर्तमान से दोनों को असंतोष होता है। तरुण भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं और वृद्ध अतीत को खींचकर वर्तमान में देखना चाहते हैं। तरुण क्रांति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत-गौरव के संरक्षक। इन्हीं दोनों के कारण वर्तमान सदैव क्षुब्ध रहता है और इसी से वर्तमान काल सदैव सुधारों का काल बना रहता है।

मनुष्य जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल ही नहीं हुआ, जब सुधारों की आवश्यकता न हुई हो। तभी तो आज तक कितने ही सुधारक हो गए हैं, पर सुधारों का अंत कब हुआ है? भारत के इतिहास में बुद्धदेव, महावीर स्वामी, नागार्जुन, शंकराचार्य, कबीर, नानक, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद और महात्मा गांधी में ही सुधारकों की गणना समाप्त नहीं होती। सुधारकों का दल नगर-नगर और गाँव-गाँव में होता है। यह सच है कि जीवन में नए-नए दोष उत्पन्न होते जाते हैं और नए-नए सुधार हो जाते हैं। न दोषों का अंत है और न सुधारों का। जो कभी सुधार थे, वही आज दोष हो गए हैं और उन सुधारों का फिर नव सुधार किया जाता है। तभी तो यह जीवन प्रगतिशील माना गया है।

हिंदी में प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है। उसके निर्माता यह समझ रहे हैं कि उनके साहित्य में भविष्य का गौरव निहित है। पर कुछ ही समय के बाद उनका यह साहित्य भी अतीत का स्मारक हो जाएगा और आज जो तरुण हैं, वही वृद्ध होकर अतीत के गौरव का स्वप्न देखेंगे। उनके स्थान में तरुणों का फिर दूसरा दल आ जाएगा, जो भविष्य का स्वप्न देखेगा। दोनों के ही स्वप्न सुखद होते हैं, क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. "हैट टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम दे सकती है... असली वस्तु है हैट, खूँटी नहीं।" निबंध में 'हैट' और 'खूँटी' का उल्लेख किस भाव को सबसे अधिक उजागर करता है?
   - (क) विषय से अधिक लेखक के भावों की प्रधानता को दर्शाना
   - (ख) विचार से अधिक तथ्य आधारित सामग्री को प्रमुख बताना
   - (ग) शैली से अधिक भाषा व्यवस्था की उपयोगिता बताना
   - (घ) उदाहरण से अधिक सिद्धांत आधारित लेखन का समर्थन करना
2. "उनमें लेखक की सच्ची अनुभूति रहती है... उसका उल्लास रहता है।" मानटेन की पद्धति लेखक के लिए किस निर्णय का आधार बनती है?
   - (क) शैली और स्पष्ट-सहज भाषा को महत्व न देना
   - (ख) परंपरागत निबंधकारों को अस्वीकार करना
   - (ग) अध्ययन के बिना अपने विचार प्रस्तुत कर देना
   - (घ) अनुभव आधारित स्वच्छंद लेखन को अपनाना

3. "तरुणों के लिए भविष्य उज्ज्वल... वृद्धों के लिए अतीत सुखद..." यह तुलना किस पर आधारित है?
   - (क) तर्क और भावना
   - (ख) ज्ञान और शिक्षा
   - (ग) परिश्रम और उपलब्धि
   - (घ) अभिलाषा और अनुभव

4. निबंध में अमीर खुसरो की कहानी का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है?
   (क) कविता लेखन की कला को समझाने के लिए
   (ख) एक साथ कई विषयों को संबोधित करने की प्रतिभा दिखाने के लिए
   (ग) ढोल के महत्व को दर्शाने के लिए
   (घ) सामाजिक सुधार के उदाहरण के रूप में
5. निबंध में समाज-सुधार के संदर्भ में क्या कहा गया है?
   (क) सुधारों की आवश्यकता हर युग में बनी रहती है।
   (ख) सुधार केवल बड़े विचारकों द्वारा संभव हैं।
   (ग) सुधार केवल आधुनिक युग की देन हैं।
   (घ) सुधारों का कोई अंत नहीं, लेकिन दोष समाप्त हो जाते हैं।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. निबंध लेखन के विषय में ए.जी. गार्डिनर और लेखक के विचारों में क्या अंतर है?
2. लेखक के अनुसार वृद्ध और तरुण दोनों ही वर्तमान से असंतुष्ट रहते हैं, पर दोनों की असंतुष्टि के कारण भिन्न हैं। आपके विचार से उनकी असंतुष्टि के क्या-क्या कारण हो सकते हैं?
3. नमिता और अमिता किन विषयों पर निबंध लिखवाना चाहती हैं? उनके द्वारा सुझाए गए विषयों पर निबंध लिखने में लेखक को क्या-क्या कठिनाइयाँ आईं?
4. निबंधशास्त्र के आचार्यों ने आदर्श निबंध लिखने की कौन-सी युक्तियाँ सुझाई हैं? आप किसी भी विषय पर निबंध लिखने से पहले किस तरह की तैयारी करते हैं?
5. मानटेन ने "जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया, उसी को अपने निबंधों में लिपिबद्ध कर दिया।" निबंध लेखन के लिए देखने, सुनने और अनुभव करने की क्या उपयोगिता हो सकती है?

विधा से संवाद

निबंध लिखने की कला

'निबंध' का शाब्दिक अर्थ है— 'बाँधना' (नि+बंध), अर्थात भली-भाँति बँधा या गठा हुआ। यह गद्य की वह विधा है जिसमें रचनाकार किसी विषय पर अपने अनुभव, विचार, दृष्टिकोण और भावनाओं को तार्किक, भावनात्मक, क्रमबद्ध और साहित्यिक रूप से प्रस्तुत करते हैं।

शैली का अर्थ अभिव्यक्ति का ढंग होता है। निबंधकार विभिन्न प्रकार से विषय को प्रस्तुत करता है। इस पाठ में निबंध लेखन की प्रक्रियाओं के विषय में चर्चा की गई है। दिए गए आरेख को देखिए और इसके आधार पर एक निबंध लिखिए। अगर आपको निबंध लेखन का कोई और ढंग बेहतर लगता है तो उसे ऐसे ही आरेख से दर्शाइए और बताइए कि आपको वह ढंग क्यों बेहतर लगता है?

भाव-विस्तार

"तरुण क्रांति के समर्थक होते हैं और वृद्ध अतीत गौरव के संरक्षक"

यदि उपर्युक्त वाक्य का भाव-विस्तार किया जाए तो कहा जा सकता है कि— युवा पीढ़ी में किसी समस्या को लेकर आक्रोश की भावना प्रबल होती है। वह किसी भी समस्या के समाधान के लिए बैठकर बातचीत करने के बजाय उस पर त्वरित निर्णय लेना चाहते हैं जबकि वृद्ध पीढ़ी किसी समस्या के समाधान के लिए अनुभव और परंपरागत ढंग पर विश्वास करती है।

पाठ में से चुनकर कुछ ऐसे और वाक्य नीचे दिए गए हैं। इन वाक्यों का अपने शब्दों में भाव-विस्तार कीजिए—

- "जो तरुण संसार के जीवन-संग्राम से दूर हैं, उन्हें संसार का चित्र बड़ा ही मनमोहक प्रतीत होता है।"
- "मनुष्य जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल ही नहीं हुआ, जब सुधारों की आवश्यकता न हुई हो।"
- "आज जो तरुण हैं, वही वृद्ध होकर अतीत के गौरव का स्वप्न देखेंगे।"
- "निबंध छोटा होना चाहिए। छोटा निबंध बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है।"

मेरा अनुभव

इस निबंध में लेखक को दो विषयों ('दूर के ढोल सुहावने होते हैं' और 'समाज-सुधार') पर निबंध लिखने थे। पिछली कक्षाओं में आपने भी बहुत से विषयों पर अनुच्छेद, संवाद और निबंध लिखे हैं। आपको किन विषयों पर लिखना सरल या कठिन लगा और क्यों?

विषयों से संवाद

1. निबंध में बुद्धदेव, महावीर स्वामी, नागार्जुन, शंकराचार्य, कबीर, नानक आदि कई महान व्यक्तियों के नाम आए हैं। इनके विषय में जानकारी एकत्रित करके संक्षेप में बताइए कि इन्होंने अपने समय में समाज के लिए क्या-क्या कार्य किए।
2. निबंध में उल्लिखित महान व्यक्तियों ने अपने द्वारा किए गए कार्यों से समाज को एक नई दिशा दिखाई। हमारे आस-पास और भी ऐसे व्यक्ति और संस्थाएँ हैं जो स्त्री-शिक्षा, पर्यावरण, असमानता, विशेष आवश्यकता समूह (दिव्यांगजन) आदि के लिए कार्य करते हैं। ऐसे व्यक्तियों, संस्थाओं के विषय में पता लगाइए और लिखिए।
3. आपको 'समाज-सुधार' करने का अवसर मिले तो आप क्या-क्या सुधार करना चाहेंगे और कैसे करना चाहेंगे? लिखिए।
4. भारतीय ज्ञान साहित्य में अनेक स्थानों पर नैतिक, आध्यात्मिक और व्यावहारिक जीवन में संतुलन की बात की गई है। इस विषय पर अपने शिक्षक के साथ मिलकर चर्चा कीजिए।

सृजन

1. 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' एक लोकोक्ति है। लोक में प्रचलित लोकप्रिय वाक्य या वाक्यांश को लोकोक्ति कहते हैं, जो किसी विशेष अर्थ या सीख को व्यक्त करता है। लोकोक्ति भाषा को समृद्ध करती है तथा विचारों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने में सहायता करती है। यह लोगों के अनुभव, विश्वास और मूल्यों को दर्शाती है।

   आपने यह लोकोक्ति भी सुनी होगी— 'आम के आम गुठलियों के दाम'। अब आप इस लोकोक्ति और 'जैविक खाद की निर्मिति में हमारा प्रयास' विषय को मिलाकर एक संक्षिप्त लेख तैयार कीजिए।

2. "जब ढोल के पास बैठे हुए लोगों के कान के पर्दे फटते रहते हैं, तब दूर किसी नदी के तट पर संध्या समय, किसी दूसरे के कान में वही शब्द मधुरता का संचार कर देते हैं।"

   आपने पढ़ा कि ढोल के पास बैठे व्यक्ति की अपेक्षा दूर बैठे व्यक्ति के लिए ढोल की आवाज़ का अनुभव भिन्न है। अपने अनुभव के आधार पर किसी ऐसी घटना का उल्लेख अपनी

डायरी में कीजिए, जब किसी वस्तु, व्यक्ति या संस्था के विषय में दूर से आपका अनुमान कुछ और रहा हो, पर निकट से आपका अनुभव बिल्कुल अलग रहा हो।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

समास

"मुझे उन दोनों को **निबंध-रचना** का रहस्य समझाना पड़ेगा"

उपर्युक्त पंक्ति में रेखांकित शब्द को ध्यानपूर्वक पढ़िए। यह दो पदों 'निबंध' और 'रचना' के मेल से बना है जिसका अर्थ है— निबंध की रचना।

समास

समास का अर्थ है संक्षेप। समास में दो या अनेक शब्दों के मेल से एक नए शब्द की रचना होती है, जैसे– गंगा+जल = गंगाजल, देश+भक्ति = देशभक्ति। इस प्रकार समास वह शब्द रचना है, जिसमें दो (या दो से अधिक), अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र संबंध रखने वाले, स्वतंत्र शब्द रचना के अंग होते हैं।

समास रचना में प्रायः दो पद (शब्द) होते हैं। पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं। जैसे– गंगाजल में 'गंगा' पूर्वपद और 'जल' उत्तरपद है। इसी तरह देशभक्ति शब्द में 'देश' को पूर्वपद और 'भक्ति' को उत्तरपद कहेंगे। समास रचना से बने शब्द को 'समस्त पद' कहते हैं; जैसे– गंगाजल, देशभक्ति।

यदि समास रचना से बने शब्द (समस्त पद) के अंग अलग-अलग करने हों, तो उस प्रक्रिया को समास विग्रह कहते हैं। जैसे यदि 'गंगाजल' समस्त पद के अंग अलग-अलग (समास विग्रह) करें, तो दो पद निकलेंगे— गंगा और जल। समास विग्रह इस प्रकार लिखते हैं— गंगाजल = गंगा+जल (गंगा का जल)।

समास के छह प्रमुख भेद हैं—

1.	तत्पुरुष समास	इस समास में उत्तरपद प्रधान होता है और पूर्वपद गौण होता है। तत्पुरुष समास की रचना में समस्त पदों के बीच में आने वाले परसर्गों (का, से, पर आदि) का लोप हो जाता है। जैसे– रसोईघर ⟶ रसोई + घर = रसोई के लिए घर

2.	कर्मधारय समास	कर्मधारय समास में पूर्वपद विशेषण तथा उत्तरपद विशेष्य होता है अथवा पूर्वपद और उत्तरपद में उपमेय-उपमान का संबंध होता है। जैसे– नीलकमल ⟶ नील + कमल = नीले रंग का कमल
3.	द्विगु समास	जिन समासों का पूर्वपद संख्यावाची शब्द हो, वहाँ द्विगु समास होता है। अर्थ की दृष्टि से यह समास प्रायः समूहवाची होता है। जैसे– तिरंगा = तीन रंगों का समाहार
4.	बहुव्रीहि समास	बहुव्रीहि समास में दोनों पद गौण होते हैं तथा ये दोनों पद मिलकर किसी अन्य पद के विषय में कुछ संकेत करते हैं। अन्य पद ही 'प्रधान' होता है। जैसे– पीतांबर ⟶ पीत + अंबर = पीला है अंबर (वस्त्र) जिसका अर्थात कृष्ण/विष्णु
5.	द्वंद्व समास	इस समास में दोनों ही पद प्रधान होते हैं तथा दोनों पदों को जोड़ने वाले समुच्चयबोधक अव्यय का लोप हो जाता है। अव्यय वे शब्द होते हैं जिनमें वचन, लिंग, पुरुष आदि की दृष्टि से कोई रूप परिवर्तन नहीं होता है। जैसे– भाई-बहन = भाई और बहन
6.	अव्ययीभाव समास	इस समास में पूर्वपद अव्यय होता है और समस्त पद भी अव्यय (क्रिया-विशेषण) का काम करता है। जैसे– यथाशक्ति ⟶ यथा + शक्ति = शक्ति के अनुसार पुनरुक्त शब्दों में समास होने पर भी अव्ययीभाव समास होता है। जैसे– धीरे-धीरे, जल्दी-जल्दी, दिनोदिन।

निबंध में ऐसे अनेक सामासिक शब्द आए हैं। उन शब्दों को ढूँढ़कर उनका समास विग्रह कीजिए और समास का नाम लिखिए। आपकी समझ के लिए एक उदाहरण तालिका में दिया गया है। पाठ से अन्य उदाहरण चुनकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

सामासिक पद	समास विग्रह	समास का नाम
निबंधशास्त्र	निबंध का शास्त्र	तत्पुरुष समास

2.	कर्मधारय समास	कर्मधारय समास में पूर्वपद विशेषण तथा उत्तरपद विशेष्य होता है अथवा पूर्वपद और उत्तरपद में उपमेय-उपमान का संबंध होता है। जैसे– नीलकमल ⟶ नील + कमल = नीले रंग का कमल
3.	द्विगु समास	जिन समासों का पूर्वपद संख्यावाची शब्द हो, वहाँ द्विगु समास होता है। अर्थ की दृष्टि से यह समास प्रायः समूहवाची होता है। जैसे– तिरंगा = तीन रंगों का समाहार
4.	बहुव्रीहि समास	बहुव्रीहि समास में दोनों पद गौण होते हैं तथा ये दोनों पद मिलकर किसी अन्य पद के विषय में कुछ संकेत करते हैं। अन्य पद ही 'प्रधान' होता है। जैसे– पीतांबर ⟶ पीत + अंबर = पीला है अंबर (वस्त्र) जिसका अर्थात कृष्ण/विष्णु
5.	द्वंद्व समास	इस समास में दोनों ही पद प्रधान होते हैं तथा दोनों पदों को जोड़ने वाले समुच्चयबोधक अव्यय का लोप हो जाता है। अव्यय वे शब्द होते हैं जिनमें वचन, लिंग, पुरुष आदि की दृष्टि से कोई रूप परिवर्तन नहीं होता है। जैसे– भाई-बहन = भाई और बहन
6.	अव्ययीभाव समास	इस समास में पूर्वपद अव्यय होता है और समस्त पद भी अव्यय (क्रिया-विशेषण) का काम करता है। जैसे– यथाशक्ति ⟶ यथा + शक्ति = शक्ति के अनुसार पुनरुक्त शब्दों में समास होने पर भी अव्ययीभाव समास होता है। जैसे– धीरे-धीरे, जल्दी-जल्दी, दिनोदिन।

निबंध में ऐसे अनेक सामासिक शब्द आए हैं। उन शब्दों को ढूँढ़कर उनका समास विग्रह कीजिए और समास का नाम लिखिए। आपकी समझ के लिए एक उदाहरण तालिका में दिया गया है। पाठ से अन्य उदाहरण चुनकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

सामासिक पद	समास विग्रह	समास का नाम
निबंधशास्त्र	निबंध का शास्त्र	तत्पुरुष समास

उपसर्ग एवं प्रत्यय

- "सेनापति ने भी अपनी कविता <u>दुर्बोध</u> कर दी है।"
- "समाज-सुधार की चर्चा <u>अनादि</u> काल से लेकर आज तक होती आ रही है।"

दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। दोनों रेखांकित शब्दों में मूल शब्द 'बोध' के पहले 'दुर्' उपसर्ग और 'आदि' के पहले 'अन्' उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाए गए हैं। उपसर्ग भाषा के ऐसे सार्थक और लघुतम खंड हैं जिनका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं होता है। ये शब्दों के आरंभ में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं।

अब नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों को देखिए—

- "आज तक कितने ही <u>**सुधारक**</u> हो गए हैं।"
- "लेखों का शीर्षक बनाने में ही सबसे अधिक <u>**कठिनाई**</u> होती है।"

रेखांकित शब्दों में मूल शब्द 'सुधार' के बाद में 'क' प्रत्यय और 'कठिन' शब्द के बाद में 'आई' प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाए गए हैं। प्रत्यय भाषा के ऐसे सार्थक और लघुतम खंड हैं जिनका प्रयोग स्वतंत्र रूप में नहीं होता और जो शब्दों के अंत में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं।

1. निबंध से उपसर्ग और प्रत्यय वाले शब्द ढूँढ़कर अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।
2. नीचे दिए गए वाक्यों को उचित उपसर्ग या प्रत्यय लगाकर पूरा कीजिए—
   - निबंध लिखना बड़ी __________ (कठिन...) की बात है।
   - वर्तमान से दोनों को __________ (...संतोष) होता है।
   - वाक्यों में कुछ __________ (...स्पष्ट...) भी चाहिए, क्योंकि यह __________ (...स्पष्ट...) या __________ (...बोध...) गांभीर्य ला देती है।
3. नीचे दिए गए शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाकर लिखिए। आपकी सहायता के लिए एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

मधुर सुधार सुंदर गति समाज

उदाहरण– मधुर → मधुरता, मधुरमय, सुमधुर

भाव एक शब्द अनेक

इस पाठ में अनेक ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है जिनके अर्थ परस्पर मिलते-जुलते हैं। उदाहरण के लिए, *विचार-मनन-चिंतन* या *सुहावने-मधुर-मनमोहक*। पाठ में से ऐसे शब्द ढूँढ़िए तथा वाक्य प्रयोग के द्वारा उनके अर्थ स्पष्ट कीजिए।

गतिविधियाँ

1. "खीर पकाई जतन से, चरखा दिया चला।
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा।।"

   पाठ में अमीर खुसरो की यह प्रसिद्ध अनमेली आई है। अनमेली एक प्रकार की हास्य-व्यंग्यपूर्ण काव्य शैली है जिसमें असंगत वाक्यों एवं विपरीत स्थितियों को जोड़कर मनोरंजन किया जाता है। अमीर खुसरो आम लोगों के मन को बहलाने व हँसाने के उद्देश्य से ऐसे प्रयोग किया करते थे। आप उनके द्वारा रचित अन्य अनमेलियों, मुकरियों व पहेलियों का शिक्षक की सहायता से ढूँढ़कर संकलन कीजिए।

2. कक्षा में 'युवा और वृद्ध— दो पीढ़ियों के पीढ़ीगत अंतर' पर वाद-विवाद का आयोजन कीजिए। वाद-विवाद के नियमों के लिए आप कक्षा 7 और 8 की पाठ्यपुस्तक *मल्हार* के कुछ पाठों का अभ्यास देखकर अपनी प्रतियोगिता के नियम निर्धारित कर सकते हैं।

भाषा संगम

"**निबंध** लिखने के पहले उसकी रूपरेखा बना लेनी चाहिए।"

नीचे 'निबंध' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

निबंध (हिंदी); निबंधः (संस्कृत); निबंध (पंजाबी); मजमून (उर्दू); मजमून (कश्मीरी); मज्मूनु, निबंधु (सिन्धी); निबंध (मराठी); निबंध (गुजराती); निबंध (कोंकणी); निबंध (नेपाली); निबंध, प्रबंध (बांग्ला); निबंध-रचना (असमिया); निबंध, वाड्ङ् (मणिपुरी); प्रबंध, रचना (ओड़िआ); व्यासमु (तेलुगु); कट्टुरै (तमिल); उपन्यासम् (मलयालम); लेख, प्रबंध (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप 'निबंध' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp

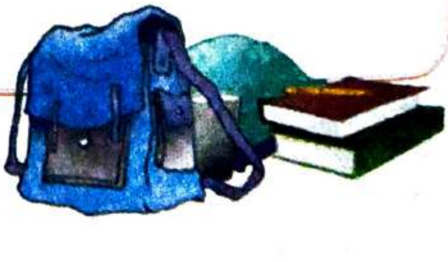

झरोखे से

पाठ में आदर्श निबंध लेखन के विषय में विस्तार से बताया गया है। अब आप सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का लेख 'मैं क्यों लिखता हूँ?' पढ़िए—

मैं क्यों लिखता हूँ?

मैं क्यों लिखता हूँ? यह प्रश्न बड़ा सरल जान पड़ता है पर बड़ा कठिन भी है, क्योंकि इसका सच्चा उत्तर लेखक के आंतरिक जीवन के स्तरों से संबंध रखता है। उन सबको संक्षेप में कुछ वाक्यों में बाँध देना आसान तो नहीं ही है, न जाने संभव भी है या नहीं? इतना ही किया जा सकता है कि उनमें से कुछ का स्पर्श किया जाए— विशेष रूप से ऐसों का जिन्हें जानना दूसरों के लिए उपयोगी हो सकता है।

एक उत्तर तो यह है कि मैं इसीलिए लिखता हूँ कि स्वयं जानना चाहता हूँ कि क्यों लिखता हूँ— लिखे बिना इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिल सकता है। वास्तव में सच्चा उत्तर यही है। लिखकर ही लेखक उस आभ्यंतर विवशता को पहचानता है जिसके कारण उसने लिखा और लिखकर ही वह उससे मुक्त हो जाता है। मैं भी उस आंतरिक विवशता से मुक्ति पाने के लिए तटस्थ होकर उसे देखने और पहचान लेने के लिए लिखता हूँ। मेरा विश्वास है कि सभी कृतिकार— क्योंकि सभी लेखक कृतिकार नहीं होते, न उनका सब लेखन ही कृति होता है— इसीलिए लिखते हैं। यह ठीक है कि कुछ ख्याति मिल जाने के बाद कुछ बाहर की विवशता से भी लिखा जाता है— संपादकों के आग्रह से, प्रकाशक के तकाजे से, आर्थिक आवश्यकता से। पर एक तो कृतिकार हमेशा अपने सम्मुख ईमानदारी से यह भेद बनाए रखता है कि कौन-सी कृति भीतरी प्रेरणा का फल है, कौन-सा लेखन बाहरी दबाव का, दूसरे यह भी होता है कि बाहर का दबाव वास्तव में दबाव नहीं रहता, वह मानो भीतरी उन्मेष का निमित्त बन जाता है।

– सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

खोजबीन

पाठ में आए साहित्यकारों बाणभट्ट, श्रीहर्ष, अमीर खुसरो, सेनापति, महात्मा गांधी, ए.जी. गार्डिनर, शेक्सपीयर, मानटेन के विषय में पुस्तकालय या इंटरनेट से ढूँढ़कर पढ़िए।

शब्द-संपदा

स्फूर्ति — फुरती, उत्तेजना, कंपन, उछलना, मन में प्रकट होना

आवेग — बिना सोचे-विचारे कुछ कर बैठने की अंत:प्रेरणा, झोंक, अशांति, उतावली, एक संचारी भाव

यथार्थता/यथार्थ — सत्य, प्रकृत, उचित

उत्थित — उठा हुआ, उठता हुआ, बल-वैभव में बढ़ा हुआ, उत्पन्न, ऊँचा, फैलाया हुआ

रहस्य — गुप्तभेद, गोपनीय विषय, मर्म

विज्ञों/विज्ञ — जानकार, समझदार, विद्वान

सम्मति — सहमति, स्वीकृति, अनुमति, राय, मत, आदर, सम्मान

अनुसंधान — अन्वेषण, खोज, जाँच-पड़ताल, प्रयत्न, योजना, आयोजन

विश्वकोश — वह ग्रंथ जिसमें संसार के सारे विषयों का विवरण हो, वह भंडार जिसमें विश्व की सारी वस्तुएँ संगृहीत हों

दुर्बोधता/दुर्बोध — जो शीघ्र समझ में न आए, गूढ़

गांभीर्य — गंभीरता, गहराई, चित्त की स्थिरता, जटिलता

गुत्थी — उलझन, कठिनाई, तागे आदि में उलझने से पड़ी हुई गाँठ

अज्ञों/अज्ञ — ज्ञानरहित, नासमझ, अचेतन

पद्धति — प्रथा, परिपाटी, मार्ग, पथ, रास्ता, प्रणाली

पाश्चात्य — पश्चिम का, बाद का, पच्छिमी, पिछला हिस्सा

आख्यायिका — सिलसिलेवार कहानी या वृत्तांत, शिक्षा देने वाली कल्पित कथा

उदात्त — ऊँचा, महान, श्रेष्ठ, उदार, प्रसिद्ध, प्रिय, ऊँचे स्वर में उच्चरित

अभिव्यक्ति — व्यक्त, प्रकट होना, प्रकाशन

अनुसरण — पीछे चलना, अनुकरण, अभ्यास, अनुकूल आचरण

समावेश — साथ रहना, शामिल होना, मिलना, एकत्र होना, प्रवेश

संध्या — शाम का वह समय जब दिन के दो भागों का मेल होता है, साँझ, योग, मेल, ठहराव, सीमा

अंकित — लिखित, चिह्नित, चित्रित, गिना हुआ

कोलाहल — बहुत से लोगों के एक साथ बोलने से होने वाला शोर, हंगामा, हल्ला

विषाद — अवसाद, उदासी, तंद्रा

कलरव — मधुर ध्वनि, कोमल

3

शेखर जोशी

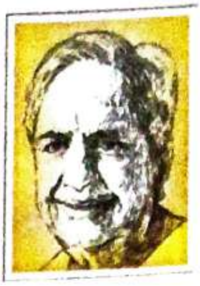

0901CH03

शेखर जोशी का जन्म सन् 1932 में अल्मोड़ा, उत्तराखंड (तत्कालीन उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उनका पहला कहानी संग्रह *कोसी का घटवार* सन् 1958 में प्रकाशित हुआ। उनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं— *साथ के लोग, दाज्यू, हलवाहा, नौरंगी बीमार है, आदमी का डर, डांगरी वाले, मेरा पहाड़* (कहानी संग्रह), *एक पेड़ की याद* (शब्दचित्र-संग्रह), *स्मृति में रहें वे* (संस्मरण), *न रोको उन्हें शुभ्रा* (कविता संग्रह), *मेरा ओलिया गाँव* (आत्मवृत्त)। उनकी कहानियों का संग्रह *शेखर जोशी कथा समग्र* शीर्षक से प्रकाशित है। शेखर जोशी ने ग्रामीण-शहरी मध्यवर्गीय समाज के जीवन-मूल्यों तथा कारखानों में काम करने वाले मजदूरों के जीवन-संघर्षों को अपनी कहानियों में प्रमुखता से उभारा है।

उन्हें उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार' तथा 'साहित्य भूषण सम्मान', मध्य प्रदेश शासन द्वारा 'अखिल भारतीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' तथा 'श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। सन् 2022 में उनका निधन हो गया।

'संवादहीन' कहानी ग्रामीण वृद्ध स्त्री के अकेलेपन की संवेदनशील कहानी है। कहानी के दो मुख्य पात्र ताई और मिट्ठू हैं। मिट्ठू ताई के लिए केवल एक तोता नहीं बल्कि संवाद का माध्यम और ममता का केंद्र है। इन दोनों के बीच कभी प्रेमपूर्ण संवाद है तो कभी नोक-झोंक भी रहती है। मनुष्य और पशु-पक्षी के संबंधों को दर्शाने के साथ ही यह कहानी समकालीन जीवन-यथार्थ की विसंगतियों, जैसे– पलायन, अकेलेपन और आदर्श एवं यथार्थ के द्वंद्व को अभिव्यक्त करती है।

संवादहीन

गहरी साँस लेकर ताई कहतीं, "भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?" और बंद पिंजड़े में अपने पंखों को फड़फड़ाता, उछल-कूद मचाता मिट्ठू उत्तर देता, "राम-राम कहो, सीताराम कहो।"

ताई दुहरातीं— सीताराम! सीताराम!

ताई और मिट्ठू

मिट्ठू और ताई।

अब ये ही दो प्राणी गाँव के बीच में स्थित बड़े घर के उस सूने खंडहर में एक-दूसरे को सहारा देने के लिए रह गए थे। ताई ने अपने जीवन में अच्छे दिन भी देखे थे। पूत-परिवार, बहू-बेटियाँ, नौकर-चाकर, गाय-ढोर, क्या नहीं था बड़े घर में! देखते ही देखते क्या से क्या हो गया! बहू-बेटे गाँव का मोह छोड़कर शहरों के होकर रह गए। बेटियाँ अपने-अपने हाथ पीले कराकर अपनी गृहस्थी में रम गईं, किसके भरोसे कारबार संभलता। धीरे-धीरे सब पराए हाथों में चला गया। जब खेती-बाड़ी नहीं, कारबार नहीं, तो नौकर-चाकर किस दम पर टिकते! अपनी अकेली जान के लिए ताई दो जून का एक जून चूल्हा फूँक लेतीं, व्रत-उपवास के बहाने चौका-चूल्हा टाल जातीं, पेट की समस्या उनके लिए कभी समस्या नहीं रही, पर सूने घर की भाँय-भाँय जैसे उन्हें काटने को दौड़ती थी।

भला हो गनपत का, जिसने ताई के सूनेपन को सहारा दे दिया था, वह न जाने कहाँ से एक प्यारा-सा पहाड़ी तोता ले आया था। ताई की सारी ममता मिट्ठू पर बरस पड़ी। वह रात-दिन मिट्ठू को लेकर ही बेचैन रहने लगीं। जो ताई अपनी खातिर चूल्हा जलाने में आलस्य कर जाती थीं, वही अब नियमपूर्वक मिट्ठू के लिए दाल-भात बनातीं। मिट्ठू के वक्त-बेवक्त के तकाजों के लिए रोटी बचाकर रखतीं। अब ताई को इस बात की पूरी जानकारी रहने लगी थी कि किसके खेत में हरी मिर्चें तैयार हो गई हैं और किस पेड़ में फसल के आखिरी अमरूद बचे हैं।

कुशाग्र बुद्धि छात्र की तरह मिट्ठू ताई के पढ़ाए पाठ को न केवल हू-ब-हू दुहरा देता बल्कि एक-दो बार सुनकर याद भी रख लेता था और मौके बे-मौके ताई के सवालों का सटीक उत्तर दे देता। बड़े घर का सूनापन धीरे-धीरे मिट्ठू की बातचीत से अब रौनक में बदल गया था, अड़ोस-पड़ोस की बहू-बेटियाँ बच्चों को गोदी में उठाकर मिट्ठू से उनका मन बहलाने के लिए आ जुटतीं और घर गुलजार हो जाता। सुबह पौ फटने लगती, पेड़ों में चिड़ियाँ चहचहातीं

तो मिट्ठू भी जैसे ताई को भोर की झपकी से जगाने के लिए ही अपना पाठ शुरू कर देते—

हर हर गंगे!

हर हर गंगे!!

सीताराम बोल!

सीताराम बोल!!

मिट्ठू राम राम!

मिट्ठू राम राम!!

ताई अचकचाकर उठ बैठतीं। लाड़ से मिट्ठू को निहारकर आशीष देतीं— "जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ" और मिट्ठू भी बदले में अपनी बुजुर्गी दिखाकर कहते—

खुश रहो!

खुश रहो!!

ताई निहाल हो जातीं। वृद्धावस्था का शरीर और उस पर नई गृहस्थी का भार, काम-काज से थककर ताई जब कभी पिंजरे को बगल में रखकर सुस्ताने लगतीं तो अनायास ही मिट्ठू से सवाल कर बैठतीं, "मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?" और नौजवान मिट्ठू ताई के बुढ़ापे का सहारा बनकर दम-खम के साथ उन्हें दिलासा देते—

कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!

ताई के थके शरीर में प्राण लौट आते, और तब उस अलस दोपहरी में ताई मिट्ठू को अपनी राम-कहानी सुनाने लगतीं। वैभव और सत्ता के बीते दिनों की गाथा। काल की अतल गहराइयों से झाँकता एक-एक चेहरा ताई को नए-नए प्रसंगों की याद दिला देता— जमींदार

साहब का रोबीला चेहरा, उनके उपकारों से दबी प्रजा के अनगिनत चेहरे, वे हाथी, वे घोड़े, वे खेल-तमाशे, वे ब्याह-शादियाँ, तीज-त्योहार, जन्म और मृत्यु-पर्व, वे भोज, वे दावतें, जमींदार साहब के दरबार की रौनक, उनकी गुणग्राहकता, उनकी तुनकमिजाजी, उनका गुस्सा, उनके इशारे पर मर मिटने वाले लोग... ताई घंटों तक मिट्ठू को अपनी जीवन-गाथा सुनाती रहतीं और वह अपनी गर्दन टेढ़ी कर कभी धैर्यवान श्रोता बना रहता और कभी अपनी समझ के अनुसार बीच-बीच में कुछ टीका-टिप्पणी कर देता।

ऐसा नहीं कि ताई और मिट्ठू का संवाद हमेशा प्रेमपूर्ण ही रहता हो, कभी-कभी ताई थकी-माँदी लेटी होतीं और अपनी किसी जिद को मनवाने के लिए मिट्ठू पिंजड़े में तूफान खड़ा कर देते। पानी और दाने की कटोरियों को जान-बूझकर उलटा देते, तो खीझकर ताई कोसतीं, "मेरी जान खाने को आ गया है, मर जा!" और मिट्ठू भी उतनी ही खीझ के साथ हमला बोल देते, "मर जा! मर जा! मर जा!" फिर मान-मनौवल का दौर चलता और ताई और मिट्ठू की दुनिया पहले की तरह प्रेम से चलने लगती।

ताई को घड़ी-भर के लिए भी मिट्ठू का वियोग सहन नहीं हो सकता था। कभी-कभार गाँव में थोड़ी देर के लिए भी न्यौते-बुलावे में जातीं, तो दस बार खिड़की-दरवाजों की साँकलें टोहकर देखतीं, कंजूस के धन की तरह मिट्ठू को छिपाकर रखतीं और जल्दी लौट आने का दिलासा देकर देहरी से पाँव बाहर निकालतीं। लेकिन एक संयोग आ पड़ा कि ताई धर्म-संकट में पड़ गईं। इस लोक में ताई ने बहुत ऊँच-नीच देख लिए थे, अब कभी-कभी परलोक की चिंता भी मन में घर कर जाती। गाँव के कई लोग कुंभ-स्नान के लिए प्रयागराज जा रहे थे, अच्छा साथ बन रहा था। प्रयाग में कुंभ-स्नान का लोभ जहाँ उन्हें अपनी ओर खींच रहा था, वहीं मिट्ठू की चिंता अपनी ओर खींच रही थी। हँसी-हँसी में किसी ने सलाह दी, "ताई, मिट्ठू को भी साथ ले चलो, उसे भी गंगा-स्नान करा देना।" किसी दूसरे ने टोक दिया कि रेलगाड़ी में उसका भी टिकट लगेगा, आखिर वह भी तो बोलता-बतियाता प्राणी है। ताई पशोपेश में पड़ गईं। टिकट का पैसा भी वह मिट्ठू की खातिर खर्च कर देतीं लेकिन मेले-ठेले, भीड़-भाड़ में उसकी सुरक्षा के बारे में उन्हें पूरा भरोसा नहीं था, अंत में जगन मास्टर की घरवाली ने उनकी चिंता दूर कर दी। वह ताई के लौटने तक मिट्ठू को अपने पास रखने के लिए सहमत हो गई थी। विदा के दिन ताई की आँसुओं की धार रुके नहीं रुकती थी। बार-बार वह मिट्ठू को पुचकारतीं, जल्दी लौट आने का दिलासा देतीं। मिट्ठू भी उनकी बातों के उत्तर में 'हर हर गंगे', 'राम राम सीताराम' कहकर उन्हें भरोसा देते रहे कि वह जगन मास्टर की घरवाली के साथ प्रेम से रह लेंगे।

ताई तो कुंभ-स्नान के लिए चल दीं। लेकिन जगन मास्टर के घर में महाकुंभ हो गया।

अपने पति से सलाह लिए बिना मास्टराइन ने ताई का भार अपना लिया था। जगन मास्टर दूसरे मिजाज के आदमी थे। उन्होंने अपने कुछ नियम-सिद्धांत बना रखे थे और भरसक कोशिश करते थे कि उनके कारण किसी को कोई कष्ट न पहुँचे। स्वतंत्र विचारों के आदमी थे। दूसरों की स्वतंत्रता पर बाधा नहीं डालना चाहते थे। पिंजड़े में बंद मिट्ठू को देखकर उन्हें बेचैनी होने लगती। जब-जब मिट्ठू को देखते, अपनी पत्नी की बुद्धि पर तरस खाते और अपने आप को भी दोषी अनुभव करते।

जगन मास्टर के लिए जब मिट्ठू की यातना असह्य हो गई, तो उन्होंने एक दिन कमरा बंदकर मिट्ठू के पिंजरे को जमीन पर रखा और उसका दरवाजा खोल दिया, ताकि उसे कुछ देर के लिए ही सही, खुली हवा में आने का मौका देकर अपने पाप का थोड़ा प्रायश्चित कर लें। मिट्ठू अब पिंजरे में रहने के इतने आदी हो चुके थे कि उन्होंने बाहर आने की कोई इच्छा नहीं प्रकट की। जगन मास्टर भी अपनी धुन के पक्के थे। निकट ही अनाज का थैला पड़ा हुआ था। उन्होंने मुट्ठी में थोड़ा अनाज लेकर पिंजरे के दरवाजे से लेकर बाहर तक बिखेर दिया और स्वयं अलग हटकर उसे देखते रहे। मिट्ठू धीरे-धीरे दाना चुगते हुए

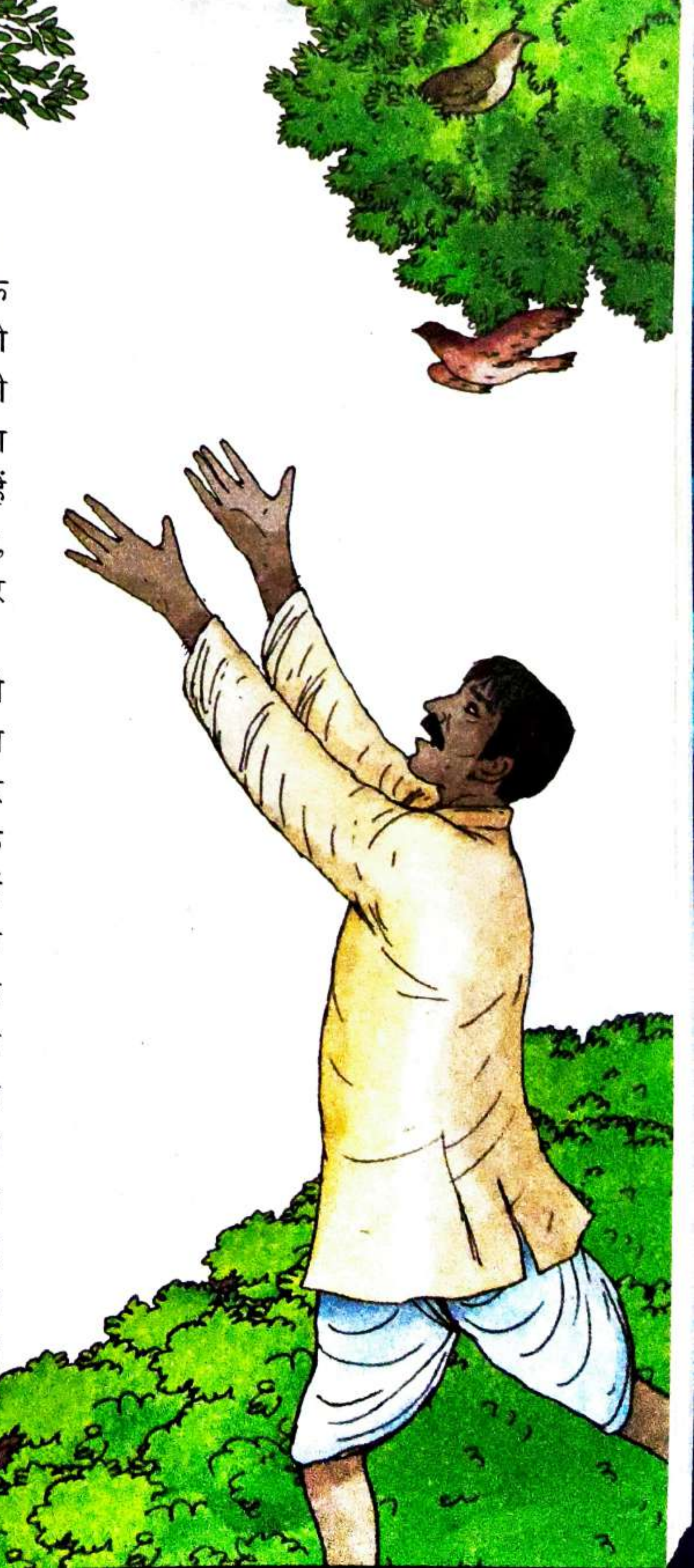

बाहर आ गए तो जगन मास्टर ने संतोष की साँस ली। मिट्ठू फिर पिंजरे की छत पर बैठ गए। एक दो घंटे बाद जगन मास्टर ने उन्हें पकड़कर फिर पिंजरे में बंद कर दिया और चैन की साँस लेकर पिंजरे को बरामदे में टाँग दिया।

अब जगन मास्टर हर रोज कमरा बंद करते। मिट्ठू को बाहर आने का आमंत्रण देते और उनकी आजादी का सुख स्वयं भोगते। यह क्रम तीन-चार दिन तक चला ही था कि एक दिन मिट्ठू की नजर ऊपर खुले रोशनदान पर पड़ गई और सहज कौतूहलवश वह पिंजरे की छत से तिरछी आँख अपने लक्ष्य की ओर देखकर रोशनदान पर पहुँच लिए। जगन मास्टर का ध्यान अचानक 'गीता-रहस्य' से हटकर मिट्ठू के पंखों की फड़फड़ाहट पर गया, फिर रोशनदान पर बैठे मिट्ठू पर। जगन मास्टर हाथ में अनाज लेकर 'आ-आ' की गुहार लगा ही रहे थे कि मिट्ठू ने फिर तिरछी आँख से रोशनदान के बाहर की दुनिया की ओर देखा और ये गए! वो गए!! अकेले मिट्ठू क्या उड़े, आदर्शवादी जगन मास्टर के हाथों के सभी तोते उड़ गए। ढीली धोती को दोनों हाथों से सँभालते हुए वह बाग में एक पेड़ से दूसरे पेड़ के पास, 'मिट्ठू आ! मिट्ठू आ!!' पुकारते हुए पसीना-पसीना होते रहे और मिट्ठू एक डाल से दूसरी डाल पर, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर अपने पंख तौलने में मशगूल रहे।

ताई के लौटने का दिन निकट आ रहा था। गाँव में सभी के मन में इस अनहोनी घटना ने एक गहरी आशंका को जन्म दे दिया था। ताई के तेज स्वभाव के अतिरिक्त मिट्ठू के प्रति उनके लगाव को सभी जानते थे और लौटकर मिट्ठू को न पाने पर उनकी क्या दशा हो सकती है, इसका अनुमान वे भली-भाँति लगा सकते थे। बहुत सोच-विचार के बाद आखिर गनपत ने ही एक सुझाव दिया कि मिट्ठू की ही सूरत-शक्ल का एक दूसरा तोता ले आया जाए, ताकि ताई को भ्रम में रखा जा सके और दूसरे दिन सच ही वह तोता लेकर हाजिर हो गया।

अब जगन मास्टर की जिंदगी का एक नया दौर शुरू हुआ। वह तोते को पिंजरे में रखकर पाठ पढ़ाने लगे, ताकि ताई के आने तक वह भी दो अक्षर सीख ले। यह एक संयोग ही है कि जगन मास्टर ने अंतिम दिन ताई के मिट्ठू को गीता के दो-चार श्लोक रटाने की कल्पना की थी, ताकि गंगा-स्नान का पुण्य अर्जन कर लौटी हुई ताई अपने मिट्ठू के मुँह से गीता सुन सकें, लेकिन वह अनहोनी हो गई और अब जगन मास्टर अपनी फिक्र के मारे खाना-पीना छोड़कर घंटों पिंजरे के सामने बैठकर रटते—

मिट्ठू, राम राम
सीताराम सीताराम
हर गंगे, हर गंगे

राम राम, सीताराम

बोलते-बोलते उनका गला सूख जाता, मास्टराइन भोजन ठंडा होने की शिकायत करतीं, तो आग्नेय दृष्टि से उनकी ओर देखकर पानी पीकर फिर दुहराते —

राम राम

सीताराम, हर गंगे...

फिर खीझकर कहते— मर जा! मर जा!!

पर वह पिंजरे के अंदर से टुकुर-टुकुर उन्हें देखता रहता या शायद उनकी बेवकूफी पर हँसता रहता हो।

कुंभ-स्नान से लौटकर सभी तीर्थयात्री अपने-अपने घरों की ओर चल दिए लेकिन ताई सीधे बड़े घर की ओर न जाकर जगन मास्टर के दरवाजे पहुँचीं। ताई सोच रही थीं कि उन्हें देखते ही मिट्ठू 'राम राम सीताराम' की रट लगाकर आसमान सिर पर उठा लेगा, पिंजड़े में कूद-फाँद मचाकर तूफान खड़ा कर देगा, लेकिन वहाँ बैठे एवजी मिट्ठू ने उन्हें देखकर कोई हरकत नहीं की, वह केवल इधर-उधर ताकता रहा।

ताई अपने मिट्ठू को गुहार कर थक गईं लेकिन उनके सूनेपन का साथी न जाने किन अमराइयों में घूम रहा होगा।

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. कहानी में ताई और मिट्ठू का संबंध किस भाव को दर्शाता है?
   (क) परोपकार और त्याग
   (ख) ममता और स्नेह
   (ग) करुणा और क्रोध
   (घ) जिज्ञासा और सहायता
2. जगन मास्टर द्वारा मिट्ठू को पिंजरे से बाहर निकालना किस भावना या मूल्य का संकेत देता है?
   (क) अनुशासन और परंपरा
   (ख) उदासीनता और असावधानी
   (ग) आत्मगौरव और विद्रोह
   (घ) करुणा और नैतिकता
3. मिट्ठू का उड़ जाना किस विचार को प्रस्तुत करता है?
   (क) भोजन की खोज
   (ख) प्रेम की आकांक्षा
   (ग) स्वतंत्रता की चाह
   (घ) पक्षियों में सम्मान की प्रवृत्ति
4. ताई के जीवन के दुख का मुख्य कारण क्या था?
   (क) सम्मान और प्रतिष्ठा में कमी आना
   (ख) परिवार से दूरी और संवाद का अभाव
   (ग) आर्थिक विपन्नता और निर्धनता
   (घ) मिट्ठू के प्रति प्रेम और संवाद

5. कहानी में मानव-समाज में व्याप्त किस विसंगति को उजागर किया गया है?
   (क) मजबूरी
   (ख) कर्मपरायणता
   (ग) अकेलापन
   (घ) संवादधर्मिता

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. "भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?" ताई इस वाक्य में किस 'नैया' की बात कर रही हैं? वे यह बात क्यों कह रही हैं?
2. "धीरे-धीरे सब पराए हाथ में चला गया।" इस वाक्य में किस घटना की ओर संकेत किया गया है?
3. "ताई की सारी ममता मिट्ठू पर बरस पड़ी।" क्यों?
4. "अब ताई को इस बात की पूरी जानकारी रहने लगी थी कि किसके खेत में हरी मिर्चें तैयार हो गई हैं और किस पेड़ में फसल के आखिरी अमरूद बचे हैं।" इस वाक्य द्वारा ताई के व्यक्तित्व में आए परिवर्तनों के विषय में क्या-क्या पता चलता है?
5. "जगन मास्टर दूसरे मिजाज के आदमी थे।" जगन मास्टर का व्यक्तित्व कैसा था? कहानी में से उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
6. कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' किसके लिए सबसे अधिक सार्थक प्रतीत होता है— ताई, जगन मास्टर, मिट्ठू या नया तोता? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।
7. "अब ये ही दो प्राणी गाँव के बीच में स्थित बड़े घर के उस सूने खंडहर में एक-दूसरे को सहारा देने के लिए रह गए थे।" ताई के बड़े से घर को सूना खंडहर क्यों कहा गया होगा?

मेरे प्रश्न

नीचे कुछ उत्तर और उनके दो-दो प्रश्न दिए गए हैं। पहचानिए कि इनमें से कौन-सा प्रश्न उस उत्तर के लिए उपयुक्त है?

1. उत्तर : ताई के अकेलेपन को मिट्ठू ने सहारा दिया।

   प्रश्न क : ताई के सूनेपन को किसने सहारा दिया था?

   प्रश्न ख : ताई को मिट्ठू किसने भेंट में दिया था?

2. उत्तर : ताई के लौटने से पहले मिट्ठू उड़ गया था।

   प्रश्न क : ताई के लौटने के बाद मिट्ठू कहाँ चला गया था?

   प्रश्न ख : ताई के प्रयागराज से लौटने से पहले क्या अनहोनी हुई?

3. उत्तर : गाँववालों को डर था कि ताई को सच्चाई जानकर सदमा लगेगा।

   प्रश्न क : गाँववाले ताई की वापसी से क्यों चिंतित थे?

   प्रश्न ख : गाँववाले मिट्ठू के उड़ने से खुश क्यों थे?

4. उत्तर : कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' जीवन के मौन का प्रतीक है।

   प्रश्न क : कहानी का शीर्षक 'संवादहीन' क्यों उपयुक्त नहीं है?

   प्रश्न ख : शीर्षक 'संवादहीन' का क्या भावार्थ है?

मेरे अनुभव मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने अनुभवों के आधार पर दीजिए—

1. "कभी-कभार गाँव में थोड़ी देर के लिए भी न्यौते-बुलावे में जातीं, तो दस बार खिड़की-दरवाजों की साँकलें टोहकर देखतीं..." ताई की तरह जब आप अपने घर या परिवार से दूर होते हैं, तो किसी वस्तु या व्यक्ति की चिंता आपको भीतर से कैसे परेशान करती है?
2. "आखिर वह भी तो बोलता-बतियाता प्राणी है।" क्या आप मानते हैं कि पशु-पक्षियों में भी संवेदनाएँ होती हैं? अपने किसी अनुभव का वर्णन करते हुए लिखिए।
3. "गनपत ने ही एक सुझाव दिया कि मिट्ठू की ही सूरत-शक्ल का एक दूसरा तोता ले आया जाए ताकि ताई को भ्रम में रखा जा सके..." ताई को भ्रम में रखना उचित था या नहीं? तर्क सहित अपने विचार लिखिए।
4. "ताई सोच रही थीं कि उन्हें देखते ही मिट्ठू 'राम राम सीताराम' की रट लगाकर आसमान सिर पर उठा लेगा।" क्या कभी ऐसा हुआ कि आपने सोचा कुछ और, हुआ कुछ और? उस अनुभव को लिखिए।
5. "मिट्ठू अब पिंजरे में रहने के इतने आदी हो चुके थे कि उन्होंने बाहर आने की कोई इच्छा नहीं प्रकट की।" क्या प्राणी सचमुच पिंजरे में रहने के आदी हो सकते हैं? अपने उत्तर के समर्थन में अपने आस-पास से उदाहरण भी दीजिए।

विधा से संवाद

कहानी का सौंदर्य

संवादहीन कहानी में अनेक विशेष बिंदु हैं जो इसे प्रभावपूर्ण बनाते हैं। नीचे कहानी के कुछ विशेष बिंदु और उनके उदाहरण दिए गए हैं। आप भी कहानी से इसी प्रकार के एक-एक उदाहरण खोजकर लिखिए—

विशेष बिंदु	अर्थ	उदाहरण
चित्रात्मकता (दृश्य बिंब)	शब्दों के माध्यम से पाठक के मन में स्पष्ट और जीवंत चित्र या छवियाँ बनाना।	मिट्ठू एक डाल से दूसरी डाल पर, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर अपने पंख तौलने में मशगूल रहे।
संवादात्मकता	कथ्य को आगे बढ़ाने के लिए, पात्रों के विचार, भाव आदि व्यक्त करने के लिए बातचीत और संवादों का प्रयोग।	"राम-राम कहो, सीताराम कहो।"
पुनरुक्ति	शब्दों की बार-बार पुनरावृत्ति से भाव की तीव्रता।	"कटेगी! कटेगी!! कटेगी!!!"
अतिशयोक्ति	किसी पात्र, घटना, भाव या वस्तु का वर्णन इतना बढ़ाकर करना कि वह असंभव या अविश्वसनीय लगे।	रेलगाड़ी में उसका भी टिकट लगेगा, आखिर वह भी तो बोलता-बतियाता प्राणी है।।
लोकधर्मी भाषा	ग्रामीण, सहज, बोल-चाल की भाषा।	भगवान! कैसे नैया पार लगेगी?
प्रश्नोत्तर शैली	पात्रों या लेखक द्वारा प्रश्न पूछना।	मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?

कहानी का अंत

किसी कहानी का अंत अनेक प्रकार से हो सकता है जैसे—

1. **सुखांत** – जब कहानी का अंत प्रसन्नता, सफलता से होता है।
2. **दुखांत** – जब कथा का अंत दुख, वियोग, मृत्यु या हानि से होता है।
3. **मुक्त अंत** – जब कहानी स्पष्ट रूप से खत्म नहीं होती, बल्कि सोचने के लिए छोड़ दी जाती है।
4. **अप्रत्याशित अंत** – जब अंत अचानक और अप्रत्याशित रूप से सामने आता है।
5. **यथार्थवादी अंत** – जब कहानी का अंत जीवन की सच्चाई जैसा लगे।
6. **प्रेरणात्मक अंत** – जब कहानी के अंत में कोई प्रेरणा या सकारात्मक सोच दी जाए।
7. **व्यंग्यात्मक अंत** – जब कहानी का अंत व्यंग्य या कटाक्ष से किसी सत्य को प्रकट करता है।

आपके अनुसार 'संवादहीन' कहानी के अंत को किस श्रेणी में रखा जा सकता है? अपने उत्तर के कारण भी बताइए। आप इस कहानी का नया अंत किस प्रकार करना चाहेंगे?

विषयों से संवाद

1. "अंत में जगन मास्टर की **घरवाली** ने उनकी चिंता दूर कर दी।"

   कहानी में रेखांकित पात्र का नाम नहीं दिया गया है। इसे कहीं 'मास्टराइन', तो कहीं 'जगन मास्टर की घरवाली' कहा गया है। आपके अनुसार कहानी में ऐसा क्यों किया गया होगा?

2. "गाँव के कई लोग **कुंभ-स्नान** के लिए प्रयागराज जा रहे थे"

(क) 'कुंभ-स्नान' एक सुप्रसिद्ध आयोजन है जिसमें करोड़ों लोग भाग लेते हैं। पता लगाइए—

- इसका आयोजन क्यों किया जाता है?
- पिछली बार इसका आयोजन कब और कहाँ हुआ था?
- अगला आयोजन कब और कहाँ होगा?

(ख) मान लीजिए कि ताई आपके मोहल्ले में रहती हैं। वे कुंभ-स्नान के लिए कैसे गई होंगी? उनकी यात्रा का वर्णन लिखिए।
(संकेत– कहाँ से कहाँ तक की यात्रा, टिकट, यात्रा के साधन, संगी-साथी, खान-पान, ठहरना आदि।)

(ग) आपके गाँव या नगर में कौन-सा मेला, उत्सव या पर्व मनाया जाता है? वहाँ का दृश्य, भीड़, श्रद्धा और वातावरण का वर्णन कीजिए। मेले में कैसी आवाज़ें, रंग, गंध, खान-पान, दृश्य और भाव होंगे?
(संकेत– उनका वर्णन पाँच ज्ञानेंद्रियों— देखने, सुनने, सूँघने, छूने और स्वाद महसूस करने के आधार पर कीजिए।)

सृजन

1. "बहू-बेटे गाँव का मोह छोड़कर शहरों के होकर रह गए।"

   अपना घर छोड़कर नए स्थान पर बस जाना आसान नहीं होता है। ताई के बहू-बेटों ने गाँव क्यों छोड़ा होगा? गाँव छोड़ते समय क्या-क्या सोचा होगा? अपना घर छोड़ने के लिए स्वयं को कैसे तैयार किया होगा?

2. "वहाँ बैठे एवजी मिट्ठू ने उन्हें देखकर कोई हरकत नहीं की"

   ताई सोच रही थीं कि मिट्ठू 'राम राम सीताराम' कहेगा, लेकिन एवजी मिट्ठू चुप था। कल्पना कीजिए कि एक दिन असली मिट्ठू वापस आ गया। मिट्ठू ने नए तोते को देखकर क्या कहा होगा? आगे की कहानी लिखिए।
   (संकेत– प्रारंभ कीजिए— "एक दिन आकाश में वही हरे पंख चमके... ")

3. "अब ये ही दो प्राणी गाँव के बीच में स्थित बड़े घर के उस सूने खंडहर में एक-दूसरे को सहारा देने के लिए रह गए थे।"

आज घर जाकर अपने किसी बड़े या बुज़ुर्ग से बात कीजिए। उनसे पूछिए— "आप जब मेरी आयु के थे, तब समय कैसे बिताया करते थे; क्या-क्या बातें या काम करते थे? आदि"। उनके कहे हुए अनुभव अपनी पुस्तिका में लिखिए।

4. "मिट्ठू ने फिर तिरछी आँख से रोशनदान के बाहर की दुनिया की ओर देखा और ये गए! वो गए!!"

मान लीजिए कि जगन मास्टर ने मिट्ठू की खोज के लिए एक विज्ञापन प्रकाशित किया है। अपनी कल्पना से वह विज्ञापन बनाइए।

(संकेत– आप समाचार पत्रों में प्रकाशित खोया-पाया या तलाश संबंधी विज्ञापन देख सकते हैं।)

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

'मिट्ठू' शब्द का अर्थ होता है— मधुरभाषी, मीठा बोलनेवाला या तोता।

यह शब्द इतना अधिक प्रचलित है कि इसका प्रयोग एक मुहावरे में भी किया जाता है— 'अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना' जिसका अर्थ है 'अपनी प्रशंसा आप करना' या 'अपने मुँह से अपनी बड़ाई करना'।

आप कुछ ऐसे मुहावरों की सूची बनाइए जिनमें किसी अन्य जीव-जंतु का उल्लेख किया गया हो, जैसे नीचे लिखे इस वाक्य में है—

"अकेले मिट्ठू क्या उड़े, आदर्शवादी जगन मास्टर के हाथों के सभी तोते उड़ गए।"

ध्वन्यात्मकता शब्दों से

"जगन मास्टर का ध्यान अचानक 'गीता-रहस्य' से हटकर मिट्ठू के पंखों की '**फड़फड़ाफट**' पर गया।"

पक्षी के उड़ने पर पंखों के हिलने-डुलने से उत्पन्न ध्वनि '**फड़फड़ाफट**' कहलाती है। ध्वनियों का आभास कराने वाले कुछ और शब्द लिखिए और उनसे नए वाक्य बनाइए।

शब्द-युग्म

"अपनी अकेली जान के लिए ताई दो जून का एक जून चूल्हा फूँक लेतीं, व्रत-उपवास के बहाने चौका-चूल्हा टाल जातीं।"

उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। ये शब्द-युग्म हैं। वे शब्द जो जोड़े में लिखे जाते हैं, उन्हें शब्द-युग्म कहा जाता है। शब्द-युग्म मुख्यतः निम्न प्रकार के होते हैं—

- पुनरुक्त शब्द-युग्म, जैसे– बार-बार
- सजातीय शब्द-युग्म, जैसे– उठना-बैठना

- समानार्थक शब्द-युग्म, जैसे– दिन-प्रतिदिन
- विपरीतार्थक शब्द-युग्म, जैसे– दिन-रात

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द-युग्म नीचे दिए गए हैं। उनका अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए—

वक्त-बेवक्त, नियम-सिद्धांत, शादी-ब्याह, तीज-त्योहार

खोजबीन शब्दों की

"ढीली धोती को दोनों हाथों से सँभालते हुए वह बाग में एक पेड़ से दूसरे पेड़ के पास, 'मिट्ठू आ! मिट्ठू आ!!' पुकारते हुए पसीना-पसीना होते रहे और मिट्ठू एक डाल से दूसरी डाल पर, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर अपने पंख तौलने में मशगूल रहे।"

उपर्युक्त अनुच्छेद में से खोजिए—

- ऐसा शब्द जो 'तंग' का विपरीतार्थक है।
- ऐसा वाक्यांश जो एक मुहावरा है।
- ऐसा शब्द जो एक क्रिया है।
- ऐसा शब्द जो एक संज्ञा है।
- ऐसा शब्द जो एक सर्वनाम है।
- ऐसा शब्द जो एक विशेषण है।
- ऐसा शब्द जो एक कारक है।
- ऐसा शब्द जो एक कर्ता है।

अर्थ के आधार पर वाक्य

आप जानते ही हैं कि अर्थ के आधार पर वाक्यों के कई भेद होते हैं जैसे– विधानवाचक, निषेधवाचक, प्रश्नवाचक, विस्मयादिबोधक, आज्ञावाचक (विधिवाचक), इच्छावाचक, संदेहवाचक और संकेतवाचक।

	वाक्य का भेद	अर्थ/उपयोग	उदाहरण
1	विधानवाचक वाक्य	किसी घटना या स्थिति के बारे में कथन करने वाला वाक्य।	जगन मास्टर ने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया।
2.	निषेधवाचक वाक्य	किसी कार्य के न होने या मना करने का भाव व्यक्त करने वाला वाक्य।	मिट्ठू ने कोई हरकत नहीं की।
3.	प्रश्नवाचक वाक्य	किसी बात को पूछने या जानने के लिए प्रयुक्त वाक्य।	मिट्ठू! अब कैसे कटेगी?

4.	विस्मयादिबोधक वाक्य	आश्चर्य, प्रसन्नता या दुख प्रकट करने वाला वाक्य।	मिट्ठू ने फिर तिरछी आँख से रोशनदान के बाहर की दुनिया की ओर देखा और ये गए! वो गए!!
5.	आज्ञावाचक वाक्य	किसी को कुछ करने का आदेश या आग्रह व्यक्त करने वाला वाक्य।	राम-राम कहो, सीताराम कहो।
6.	इच्छावाचक वाक्य	किसी आकांक्षा, आशा या इच्छा को प्रकट करने वाला वाक्य।	जीते रहो बेटा, जुग-जुग जिओ!
7.	संदेहवाचक वाक्य	किसी बात को लेकर शंका या अनिश्चितता प्रकट करने वाला वाक्य।	ताई के सूनेपन का साथी न जाने किन अमराइयों में घूम रहा होगा।
8.	संकेतवाचक वाक्य	इसमें एक बात या कार्य का होना या न होना किसी दूसरी बात या कार्य के होने या न होने पर निर्भर होता है।	जब खेती-बाड़ी नहीं, कारबार नहीं, तो नौकर-चाकर किस दम पर टिकते!

अब आप भी अपनी पुस्तक में से प्रत्येक प्रकार का एक-एक वाक्य चुनकर लिखिए।

गतिविधियाँ

नीचे दी गई गतिविधियाँ अपने समूह के साथ मिलकर कीजिए—

1. **कहानी के रंग**

   समूहों को अलग-अलग भावनाएँ (दुख, स्नेह, आजादी) दीजिए और इसे मूक अभिनय द्वारा प्रस्तुत कीजिए।

2. **पंखों की योजना**

   छोटे समूहों में सोचें कि अगर आपको मिट्ठू की तरह उड़ने का मौका मिले तो आप कहाँ जाते और क्यों?

3. **"पेट की समस्या उनके लिए कभी समस्या नहीं रही"**

   यह वाक्य बताता है कि ताई ने भोजन संबंधी अपनी आवश्यकताओं पर कभी ध्यान नहीं दिया अथवा उन्हें महत्वपूर्ण नहीं माना। हमारे परिवेश में ऐसी बहुत-सी महिलाएँ हैं जो परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं को प्राथमिकता देती हैं और अपनी आवश्यकताओं की अनदेखी करती हैं।

   - अपने घर की महिलाओं की भोजन संबंधी रुचियों के विषय में जानिए और समझिए कि उनकी पंसद का भोजन माह में कब-कब बनता है।

मेरी पहेली

अपने समूह के साथ मिलकर ऐसी पहेलियाँ या प्रश्न बनाइए जिनके उत्तर निम्नलिखित हों—

तोता, ताई, कुंभ, पिंजरा, कमरा, गंगा

भाषा संगम

"वह न जाने कहाँ से एक प्यारा-सा पहाड़ी **तोता** ले आया था।"

नीचे 'तोता' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

तोता (हिंदी); शुकः (संस्कृत); तोता (पंजाबी); तोता (उर्दू); तोतुं (कश्मीरी); तोतो (सिंधी); पोपट (मराठी); पोपट, सूडो (गुजराती); पोपट (कोंकणी); सुगा (नेपाली); तोता (बांग्ला); भाटौ (असमिया); तेनवा (मणिपुरी); शुआ (शुक); (ओड़िआ); चिलुक (तेलुगु); किळि (तमिल); शुकम्, तत्त (मलयालम); गिळि (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप 'तोता' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp

खोजबीन

शेखर जोशी

https://www.youtube.com/watch?v=Q0fTM4VlPGs

https://www.youtube.com/watch?v=1LKQA85Dam0

तोता

https://www.youtube.com/watch?v=eSV2dzX5gyU

तोते को गीत सिखाना

https://www.youtube.com/watch?v=lvmwy5JeNe4

तोते की कहानी

https://www.youtube.com/watch?v=4UBNp3elJjY

शब्द-संपदा

ढोर	— पालतू गोजातीय पशुओं के लिए प्रयुक्त शब्द, चौपाया, डंगर
तकाजा	— आवश्यकता, इच्छा, अनुरोध, कोई काम करने के लिए किसी से बार-बार कहना, माँगना
कुशाग्र	— तीव्र, कुश की नोंक जैसा तीक्ष्ण
पौ फटना	— प्रात:काल का प्रकाश, तड़का होना
अचकचाना	— भौचक्का होना, चौंक उठना
निहाल	— प्रसन्न, हर तरह से तृप्त
सत्ता	— अस्तित्व, यथार्थता, अधिकार, प्रभुत्व, प्रभुसत्ता
अतल	— अथाह, तलहीन
प्रसंग	— प्रकरण, संबंध, विषय का तारतम्य, एक प्रकार की संगति, लगाव
रोबीला	— प्रभावशाली
तुनकमिजाज	— जो झटपट या छोटी-छोटी बातों पर नाराज हो जाए, नाजुक मिजाज, चिड़चिड़ा
वियोग	— विच्छेद, विरह, अभाव, छुटकारा
साँकल	— जंजीर, सिकड़ी, शृंखला
टोह	— खोज, अनुसंधान, पता, देखभाल
देहरी/देहली	— दरवाजे की चौखट में नीचे वाली लकड़ी जिसे लाँघकर घर में घुसते-निकलते हैं, देहली पर रखा हुआ दीया
मिजाज	— स्वभाव, तबीयत, प्रकृति, आदत, गर्व, घमंड
प्रायश्चित	— शोधन, वह शास्त्र-विहित कर्म जो पाप का मार्जन करने के लिए किया जाए
कौतूहलवश	— उत्सुकता, अचंभा, कुतूहल, त्योहार, उत्सव
मशगूल	— कार्यरत, किसी काम या शगल में लगा हुआ
अर्जन	— कमाना, संग्रह करना
एवजी	— बदले में काम करने वाला, स्थानापन्न
आग्नेय	— अग्नि से उत्पन्न, अग्नि जैसा, अग्नि-संबंधी, अग्नि को अर्पित
जून	— वक्त, वेला, दिन का अर्द्ध भाग, ईसवी सन् का छठा महीना

4

0901CH04

यतींद्र मिश्र

यतींद्र मिश्र का जन्म सन् 1977 में अयोध्या (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ से हिंदी में एम.ए. किया। कविता, संगीत व अन्य ललित कलाओं के साथ-साथ समाज और संस्कृति के विविध क्षेत्रों में भी उनकी गहरी रुचि है।

यतींद्र मिश्र के तीन काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए हैं— *यदा-कदा, अयोध्या तथा अन्य कविताएँ, ड्योढ़ी पर आलाप*। इसके अलावा उन्होंने शास्त्रीय गायिका गिरिजा देवी के जीवन और संगीत साधना पर एक पुस्तक *गिरिजा* लिखी। रीतिकाल के अंतिम प्रतिनिधि कवि 'द्विजदेव' की ग्रंथावली (2000) का सह-संपादन किया। कुँवर नारायण पर केंद्रित दो पुस्तकों के अलावा स्पिक मैके के लिए विरासत-2001 के कार्यक्रम के लिए रूपंकर कलाओं पर केंद्रित *थाती* का संपादन भी किया। वे आजकल स्वतंत्र लेखन के साथ अर्द्धवार्षिक पत्रिका *सहित* का संपादन कर रहे हैं।

'मेरी आवाज़ ही पहचान है!' अपनी आवाज़ से भारत ही नहीं बल्कि विश्व के कोने-कोने में अपनी पहचान बनाने वाली 'भारत रत्न' लता मंगेशकर संगीत के संसार का वह नाम हैं जिनके विषय में यदि बात न हो तो भारतीय संगीत की बात अधूरी रह जाएगी। इंदौर, मध्यप्रदेश में जन्मी लता मंगेशकर ने मात्र पाँच वर्ष की आयु में अपने पिता से संगीत की प्रारंभिक शिक्षा ली और जीवनपर्यंत संगीत के प्रति समर्पित रहीं।

जीवन के अनेक उतार-चढ़ाव व संघर्षों के होते हुए भी लता मंगेशकर ने किस प्रकार संगीत और परिवार के प्रति अपने उत्तरदायित्व को निभाया, आइए पढ़ते हैं उनके साथ साक्षात्कार में...

ऐसी भी बातें होती हैं

(लता मंगेशकर से साक्षात्कार)

यतींद्र मिश्र : दीदी, आपके संगीत की अप्रतिम यात्रा पर बातचीत शुरू करते हैं...

इस संवाद में मेरा प्रयास यह रहेगा कि मैं संगीत में आकंठ डूबे हुए आपके महान जीवन की उन दुर्लभ छवियों से उन करोड़ों प्रशंसकों को मिलवा सकूँ, जो आपको हर दिन सुनते हुए कहीं अपने जीवन को सार्थक ढंग से शुरू करने की प्रेरणा पाते हैं।

आप अगर तैयार हों, तो मैं ऐसे असंख्य शुभचिंतकों, आपके संगीत के प्रति दीवानगी की हद तक समर्पित श्रोताओं और फिल्म-संगीत के प्रति आदर का भाव रखने वाले तमाम देशवासियों की ओर से प्रणाम करते हुए आपसे प्रश्न पूछना चाहूँगा...

लता मंगेशकर : जी, जरूर। आपका बेहद शुक्रिया कि आपका ऐसा कुछ करने का मन है। आप पूछिए, मैं आपके प्रश्नों का जवाब देने के लिए तैयार हूँ। मैं कोशिश करूँगी कि जो कुछ भी मैंने संगीत में रहते हुए जाना है, उसे आपको बता सकूँ। आपके माध्यम से ही मैं अपने करोड़ों प्रशंसकों का आभार व्यक्त करती हूँ, जो उन्होंने मुझे इतना प्रेम और सम्मान दे रखा है। मुझे तो यह भी लगता है कि जितना प्रेम मुझे मिला है, शायद गाकर उतना आभार मैं अपने प्रशंसकों के प्रति जता नहीं पाई हूँ...

यतींद्र मिश्र : आपके पिताजी पं. दीनानाथ मंगेशकर की वे कौन-सी स्मृतियाँ हैं, जो आज भी आपके स्मरण में जीवित हैं? जिनको याद करना आपको सुख से भरता है?

लता मंगेशकर : कई बातें हैं। जैसे हम लोग बचपन में जब बहुत शरारत करते थे, तब पिताजी सबको बुलाकर अपने सामने खड़ा करते थे। वे बस हमको गंभीरता से देखते थे और इतने में ही हमारा रोना शुरू हो जाता था। मतलब वे कुछ कहते नहीं थे, न ही किसी बात पर डाँट पड़ती थी; मगर हम सभी समझ जाते थे कि हमको बुलाया किसलिए गया है। पिताजी उस समय पूछते थे, 'समझ गए न?' इस पर हम लोग कहते थे, 'हाँ, हम लोग समझ गए।' इसके बाद वे कहते थे कि 'अच्छा अब जाओ, बाहर जाकर खेलो।' इस तरह हमारे पिताजी का गुस्सा था, जो बिना कुछ कहे ही हम भाई-बहनों को डरा देता था।

मेरे पिताजी कमाल के आदमी थे, जिन्हें मैंने हमेशा अपने काम और संगीत में डूबा हुआ ही देखा। उनकी ड्रामा कंपनी के नाटक रात नौ बजे शुरू होते थे और देर रात दो से तीन बजे तक जाकर समाप्त होते थे। इतनी देर एक नाटक में समय इसलिए लगता था कि

एक नाटक के पाँच अंक होते थे। फिर उसमें लंबी-लंबी रागदारी वाले गायन की भी परंपरा थी। एक बार पिताजी जब गाना शुरू करते थे, तो खूब सीटियाँ, तालियाँ और 'वन्स मोर' मिलता था। बाबा माइक पर थोड़ी तेज आवाज़ में गाते थे, जो सुनने पर बहुत अच्छा लगता था। मेरे पिताजी की एक बड़ी विशेषता यह भी थी कि वे एक राग को गाते हुए उसमें सुर बदलकर भी अपना गायन करते थे। मतलब एक राग गाते समय किसी भी सुर को 'सा' (षडज) बनाकर इस तरह राग को बदल देते थे कि वह कुछ नया हो जाता था और फिर उसी समय नए राग में गाते हुए दोबारा से पहले राग और उसके सुर में वापस लौट आते थे।

उस समय म्यूजिकल ड्रामा का बहुत चलन था। हमारे यहाँ कभी भी बिना म्यूजिक के कोई ड्रामा हुआ ही नहीं। एक नई बात मेरे पिताजी के नाटकों में यह भी थी कि वे पहली बार मराठी रंगमंच में कर्नाटक और पंजाब का संगीत लेकर आए। मतलब उन्होंने बाकायदा कर्नाटक जाकर वहाँ का कुछ गीत और संगीत सीखा था, जिसे अपने नाटकों में डाला।

मुझे यह भी याद है कि जिस दिन कोई ड्रामा नहीं होता था, उस दिन घर में संगीत की सभा होती थी और बहुत सारे लोग हमारे घर आते थे। फिर वे उसमें नाटक का कोई गीत नहीं गाते थे, बल्कि उस दिन सिर्फ शास्त्रीय संगीत होता था। मेरे पिताजी के गाए हुए शास्त्रीय संगीत के कई रेकॉर्ड एच.एम.वी. से रिलीज हुए हैं और जहाँ तक मुझे याद पड़ता है कि एक रेकॉर्ड उन्होंने राग जयजयवंती का भी बनाया था, जिसे मेगाफोन कंपनी ने बाजार में उतारा।

यतींद्र मिश्र : पिताजी से संगीत के अलावा आपने क्या-क्या और सीखा?

लता मंगेशकर : सबसे ज्यादा तो स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा। उन्होंने जो संस्कार दिए उससे जिंदगी में सही बातों पर खड़े रहने की हिम्मत मिली। आज मुझे इस बात की खुशी है कि मैंने किसी से यह नहीं कहा कि आप मुझे पाँच सौ रुपये दीजिए, फलाँ चीज ला दीजिए, मुझे उसकी जरूरत है। इस तरह जो चीज मैं कर पाई, उसमें मैं अपने बाबा का संस्कार मानती हूँ। मैंने पिताजी में यह बात देखी थी कि हर हालात में कैसे रहना चाहिए। यह मेरे पिताजी ने ही मुझे सिखाया था कि अगर कोई बात तुम्हें सही लगती है, तो उसे करो और किसी के

आगे झुकने की जरूरत नहीं है। इस तरह जब मैं याद करती हूँ, तो लगता है कि बाबा ऐसा कहते थे, बाबा ने यह कहा था, बाबा ने उस समय में इस तरह कोई निर्णय लिया था। यह सब मेरे बड़े काम आया है। हमने हर तरह के दिन देखे थे। पिताजी की कंपनी जब अच्छी चलती थी, तो हम सब लोग बड़े शान से रहते थे। फिर पिताजी के निधन के बाद हमें यह भी देखना पड़ा कि बुरे हालात में कैसे जीना है। मेरी माँ का भी वही संस्कार था कि कैसे भी स्वाभिमान के साथ जी लेना है, मगर किसी के आगे जाकर हाथ नहीं पसारना है।... और देखिए, ये सब बातें मेरे कितने काम आई हैं। आज मेरे पास पैसे हैं और नाम है! हम आज जहाँ रहते हैं, वह भले ही इतना छोटा-सा घर है, पर उसमें हम लोग बहुत खुश हैं। इस बात के लिए भी ईश्वर को धन्यवाद करते हैं कि बाबा ने जैसा सिखाया था, उस पर हम सभी भाई-बहनों ने चलने का प्रयास किया।

यतींद्र मिश्र : बचपन में आप सभी भाई-बहन फिल्में देखकर उसकी नकल उतारते थे। किसी खास फिल्म को देखकर उसकी नकल का स्मरण करेंगी?

लता मंगेशकर : (हँसते हुए) अरे! यह तो हम सब भाई-बहन बहुत करते थे। फिल्में ही थीं, जो मनोरंजन का एक ऐसा माध्यम थीं जिनको देखकर बच्चे अपने ढंग से कुछ-कुछ करते रहते थे। मुझे याद है कि प्रभात फिल्म कंपनी की एक पिक्चर थी 'संत तुकाराम'। फिल्म में दिखाया गया है कि तुकाराम सदेह बैकुंठ जाते हैं और उन्हें लेने ईश्वर का विमान आता है। वे यह गीत गाते हुए स्वर्ग जाते हैं— 'अमी जातो अमचा गावा, अमचा राम-राम ध्यावा' (मैं अपने गाँव जा रहा हूँ। सभी लोग मेरा राम-राम ले लीजिए)। हम कमरे में घर भर के गद्दे, तकिये एक के ऊपर एक रखकर ऊँचा स्वर्ग बनाते थे, जिस पर चढ़कर मैं बैठती थी और वहीं से यह गीत गाती थी। नीचे कमरे में मीना, मेरे फूफा का बेटा पंढरीनाथ और आशा, ये तीनों तुकाराम के अनुयायी बनकर रोते थे और कहते थे— 'हमें भी साथ ले लीजिए। हमें भी साथ ले चलिए।' (खिलखिलाकर हँसती हैं) उस समय उषा बहुत छोटी थी, इसलिए वह इन नाटकों में नहीं रहती थी। तो यह सब होता था। हम बहुत सारी फिल्मों की नकल उतारते थे, जिनमें धार्मिक फिल्में ज्यादा होती थीं क्योंकि पिताजी धार्मिक और देशभक्ति की फिल्मों के अलावा दूसरी फिल्में नहीं देखने देते थे। उनका सख्त अनुशासन था और यह सब काम चोरी-चोरी तब होता था, जब पिताजी घर के बाहर हों और यह जान न पाएँ कि घर में फिल्मों का खेल खेला जा रहा है।

यतींद्र मिश्र : अगर किसी फिल्म में आपको अभिनय करने को कहा जाता, तो वह कौन-सी फिल्म होती जिसमें आप काम करना पसंद करतीं?

लता मंगेशकर : नहीं, मैंने शुरू में तो फिल्मों में काम ही किया था और कुल छह या सात फिल्मों में किया था। मैं बहुत छोटी थी उस समय, जब फिल्मों की दुनिया में अभिनय के मार्फ़त ही आई। मुझे कभी अच्छा नहीं लगा मेकअप करना, लाइट के सामने जाना और काफी लोग खड़े हैं, तो उनके सामने कभी रो रहे हैं और कभी हँस रहे हैं। गा भी रहे हैं। मुझे वह कभी अच्छा नहीं लगा। अच्छी फिल्मों को देखकर सराहने का जी जरूर करता है, मगर अभिनय करने के बारे में तो सोच भी नहीं सकती। एक फिल्म हमारे यहाँ हिंदी और मराठी दोनों में बनी थी 'छत्रपति शिवाजी'। उसमें भालजी पेंढारकर थे जिन्हें मैं बाबा कहती थी। मैं उनके पास गई, हालाँकि उस वक्त तक मैंने अभिनय का काम छोड़ दिया था। मैंने उनसे खुद कहा—'बाबा मैं चाहती हूँ कि इस फिल्म का आखिर का जो गाना है, उसमें दो लाइनें मैं भी आकर गाऊँ।' तो फिर मैंने उसके हिंदी और मराठी, दोनों ही संस्करणों में बाद की दो पंक्तियाँ गाई हैं, जिन दृश्यों में मैं मौजूद भी हूँ। मैं छत्रपति शिवाजी को बहुत पसंद करती हूँ, इसलिए बस इसी फिल्म के लिए मेरा मन हुआ कि भले ही एक दृश्य में सही, मगर यहाँ रहा जा सकता है।

यतींद्र मिश्र : उस दौर में आपके काम की परिस्थितियाँ कैसी थीं? क्या वे आपके हिसाब से धीरे-धीरे अनुकूल होती गईं अथवा वैसे ही हमेशा की तरह एक चुनौती का सबब बनी रहीं, जैसे कि वे संघर्ष के दिनों में थीं?

लता मंगेशकर : यह कह पाना मुश्किल होगा कि मेरी परिस्थितियाँ कभी बहुत अच्छी या बुरी रही हों। मैं इन सब बातों पर ध्यान नहीं देती थी। अलबत्ता मैं उस जमाने से लेकर बाद तक बहुत मेहनत से अपने काम करती थी। मुझे याद है कि मेरी रेकॉर्डिंग सुबह से रात तक चलती रहती थी। एक स्टूडियो से दूसरे और तीसरे स्टूडियो के चक्कर में ही पूरा दिन बीत जाता था। मुझे अपने गाने और रेकॉर्डिंग के अलावा किसी दूसरी चीज की सुध नहीं रहती थी।

हमेशा यही बात दिमाग में घूमती थी कि किसी तरह बस मुझे अपने परिवार को देखना है। फिर वह रेकॉर्डिंग का वक्त हो या घर का खाली समय। किस तरह मैं अपने परिवार के लिए ज्यादा से ज्यादा कमाकर उनकी जरूरतें पूरी कर सकती हूँ, इसी में सारा वक्त निकल जाता था। आप मेरी परिस्थितियों के बारे में पूछ रहे हैं, तो सच बात तो यही है कि मुझे रेकॉर्डिंग से या उसकी तकलीफों से इतना फर्क नहीं पड़ता था, जितना इस बात से कि आने वाले कल में मेरे कितने गीत रेकॉर्ड होने हैं। फलाँ फिल्म के खत्म होने के साथ मुझे नए कॉन्ट्रेक्ट की दूसरी नई फिल्मों के गाने कब रेकॉर्ड करने हैं।

यतींद्र मिश्र : बचपन का कोई ऐसा सपना जिसे पूरा करने की हसरत मन में बहुत दिनों तक पलती रही हो?

लता मंगेशकर : ऐसा कोई सपना तो खास नहीं है, मगर आपको बचपन की एक बात बताती हूँ। मेरे पिताजी उस समय जीवित थे और जब वे अपने कार्यक्रमों के लिए तैयार होते थे, तो उनको जितने मेडल मिले थे, वे अपने कपड़ों पर सीने के बाईं तरफ लगाते थे। वह जमाना ऐसा था, जिसमें यह प्रचलन रहा कि कलाकार लोग अपने प्रदर्शनों में मिले हुए मेडल पहनकर ही बैठते थे। मुझे जगह तो याद नहीं है, मगर यह ठीक से याद है कि पिताजी के अलावा बाहर के किसी कलाकार को जो सबसे पहले मैंने गाते हुए सुना है, वह पंडित कुमार गंधर्व थे। कुमार गंधर्व जी जब काली शेरवानी पहनकर और अपने ढेर सारे मेडल लगाकर गाने के लिए बैठे, तो वह बात मुझे बहुत पसंद आई। मुझे तब हमेशा यह लगता था कि जब मैं बड़ी हो जाऊँगी, तब मुझे भी ऐसे ही मेडल मिलेंगे, जिसे लगाकर किसी कार्यक्रम में जाऊँगी।

यतींद्र मिश्र : अगर हम समय के चक्र (टाइम मशीन) को घुमाकर सन् 1949-50 में ले जाएँ, तो आपके फिल्मों से संबंधित सांगीतिक जीवन की शुरुआत में खेमचंद प्रकाश, शंकर-जयकिशन, हुस्नलाल-भगतराम जैसे म्यूजिक डायरेक्टर आते हैं और आपको एक मजबूत जमीन बनाने के लिए, 'आएगा आने वाला' (महल), 'हवा में उड़ता जाए मोरा लाल दुपट्टा मलमल का' (बरसात) और 'चले जाना नहीं नैन मिला के' (बड़ी बहन) जैसे गाने मिलते हैं। इससे एक नए युग का सूत्रपात होता है, जो कहीं आपके कद को बड़ा बनाने में मददगार रहता है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि यदि उस जमाने में ए.आर. रहमान आए होते, जतिन-ललित आए होते, शंकर-एहसान-लॉय होते, तो ये सारे गाने कैसे बनते? उस समय 'आएगा आने वाला' की आमद कैसी होती?

लता मंगेशकर : (हँसते हुए) बड़ा मजेदार प्रश्न है आपका। कहना मुश्किल है इस पर क्या बोलूँ? समझ में नहीं आ रहा है कि वाकई अगर ऐसा हुआ होता, तो ये गाने कैसे बनते। यह विचार और कल्पना तो सुनने में अच्छी लगती है, पर मैं पूरी तरह इसका आकलन नहीं कर सकती कि 'आएगा आने वाला' को ए.आर. रहमान ने बनाया होता या 'हवा में उड़ता जाए' को जतिन-ललित ने, तो कैसा प्रभाव पैदा होता।... मगर मैं इतना जरूर जानती हूँ कि कुछ बहुत बढ़िया होता या बिल्कुल दूसरे अंदाज में सामने आता, जिसकी शायद धुनें और तर्ज भी अलग होते। मैं आपसे प्रश्न करती हूँ कि जो मेरे गाने रहमान ने बनाए या जतिन-ललित के लिए मैंने 'मेरे ख्वाबों में जो आए' (दिलवाले दुल्हनिया ले जाएँगे) गाया है, उसे श्याम सुंदर जी, नौशाद साहब या अनिल विश्वास ने रचा होता, तो आपके लिहाज से वह किस तरह

बनता? यह वाकई बहुत रोचक और सोचने वाली बात है कि समय के हेर-फेर से हमारे गीतों का स्वभाव कैसा होता? इतना जरूर मैं कहना चाहूँगी कि पुराने समयों में, जब मैंने 'महल', 'बड़ी बहन', 'बरसात', 'तराना', 'बाजार' और 'संगदिल' जैसी फिल्मों के लिए पार्श्वगायन किया था, उस समय तकनीकी रूप से सिनेमा में बहुत तरक्की नहीं हुई थी। 'आएगा आने वाला' में मुझे हॉल में बहुत दूर से चलकर दबे पाँव रेकॉर्डिंग वाले माईक तक आना पड़ता था और उसी अनुपात में रेकॉर्डिंग के माईक पर स्वर का उतार-चढ़ाव कैद किया जाता था।

बहुत सारे ऐसे गाने मुझे याद हैं जिसमें कुछ विशेष प्रभावों को देने के लिए अनिल विश्वास, श्याम सुंदर, सज्जाद हुसैन, सलिल चौधरी और सी. रामचंद्र ने कुछ नए तरीके और अजीबोगरीब टोटके आजमाए थे, जिनसे गीतों में वह प्रभाव पैदा हो सका। आज, जो स्थिति है और जिस तरह हमारी तकनीक विकसित हो चुकी है, उसमें अगर इन लोगों को काम करने का मौका मिलता, तब तो कमाल ही हो गया होता। न जाने कितना और अधिक एडवांस किस्म का ये लोग संगीत रच पाते, आप सोच सकते हैं। ठीक उसी तरह, जैसा सुंदर और स्तरीय संगीत आज के संगीतकार बना रहे हैं— रहमान, जतिन-ललित और तमाम अन्य लोग— अगर पीछे जाकर काम करते, तो कितनी मुश्किलें आतीं और कितना संघर्ष करते हुए वे सब अपना गाना बनाते, इसका अंदाजा भी लगाया जा सकता है। मेरे लिए भी यह कम चुनौती की बात नहीं कि मैं अनिल विश्वास की धुनों जैसा काम रहमान के साथ कर रही होती और उसी तरह इन नए लोगों की धुनों पर नौशाद साहब के लिए रेकॉर्ड करती, तो कैसा होता?

यतींद्र मिश्र : इसी समय विषय परिवर्तन करते हुए आपसे कुछ व्यक्तिगत सवाल पूछने का मन हो रहा है। इस संदर्भ में आपके व्यक्तित्व को देखते हुए यह बात दिमाग में आती है कि आपने रंगों से हमेशा परहेज किया है। विशेषकर अपने पहनावे में भी इस बात का ध्यान रखा

कि कहीं से भी रंगों की कोई भी दर्शना अभिव्यक्त न हो सके। आपकी सफेद रंग की साड़ियों पर मौजूद रंगीन धारियाँ, गुलबूटों और पल्लों का रंग छोड़कर कहीं भी रंग से दोस्ताना निभता नहीं दिखता। ऐसे में एक ख्याल मन में आता है कि आप रंगों का त्योहार होली कैसे मनाती होंगी? होली को लेकर कोई संस्मरण या व्यक्तिगत रुचि की कोई बात जो आप यहाँ साझा करना चाहें।

लता मंगेशकर : हम होली खेलते थे। यह बहुत पहले की बात है, जब मेरे पिताजी जीवित थे। आजकल तो मैंने होली खेलना ही बंद कर दिया है। पहले सारा दिन रंग खेलना और भीगना और बाद में जाकर देर शाम तक नहाना, अब यह सब सालों से अच्छा नहीं लगता है। यह जो होली पूरे देश में प्रचलित है, हम उसे होली की तरह नहीं मनाते थे। मेरा मतलब यह है कि होली के एक दिन पहले जब होली जलाते हैं और उस समय होलिका की पूजा होती है, उसमें जो प्रसाद चढ़ाया जाता है, उन तमाम तरह की मिठाइयों को होलिका में डालते हैं। नारियल भी होलिका में आखिरी में जलाया जाता है, जिसे जल जाने के बाद आग से निकालकर उसे तोड़कर प्रसाद लेते हैं। वह जो राख बनती है, उसे उठाकर दूसरे दिन एक-दूसरे पर डालते हैं। इसे हम लोग 'गुड़वड़' कहते हैं। होली के बाद पाँचवें दिन रंग-पंचमी आती है, उस दिन मेरी माँ और पिताजी हम सब भाई-बहनों पर केसर घोलकर थोड़ा छिड़कते थे। माँ घर में कुछ मीठा बनाती थीं, जो भगवान को चढ़ाकर हमें प्रसाद में खाने को मिलता था। हम सभी की अलग-अलग आरतियाँ भी माँ उतारती थीं और इस तरह हमारे घर में बचपन में होली का त्योहार मनता था। यह होली जो आजकल प्रचलित है, इसका कोई प्रभाव हमारे घर में नहीं था।

हमारे यहाँ दशहरा और दीवाली का ज्यादा महत्व था। नवरात्रि भी बहुत धूमधाम के साथ हम लोगों के यहाँ मनती है। नवरात्रि के पहले दिन हम 'गुड़ि पड़वा' मनाते हैं, जिसका विशेष महत्व है। इसमें हम घर में बाहर 'गुड़ि' बाँधते हैं और कलश स्थापना करते हैं। सूर्योदय के समय ही 'गुड़ि' पर बताशों की माला या हार बनाकर चढ़ाई जाती है, जिसे सूर्यास्त होने तक उतार लिया जाता है और प्रसाद के रूप में घर के सभी सदस्य उसे लेते हैं। यह एक बहुत महत्वपूर्ण आयोजन है हमारी तरफ और ऐसी मान्यता है कि भगवान राम चौदह वर्ष बाद जब अयोध्या लौटे थे, तो हर घर में ऐसे ही बताशों की लड़ी सजाकर 'गुड़ि' बाँधी गई थी। महाराष्ट्र में ऐसा ही कहा जाता है। पहले दिन 'गुड़ि' बाँधने के बाद नौ दिन तक उत्सव मनाया जाता है, जिसके अंत में नवमी पर राम जी के जन्म की तिथि रामनवमी आती है।

...तो यह त्योहार हम राम आगमन मानकर मनाते हैं, जबकि बाकी जगहों पर दुर्गा की आराधना में नवरात्र होता है। महाराष्ट्र में उस तरह नवरात्र नहीं मनता, जिस तरह गुजरात, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में दुर्गा की आराधना में यह त्योहार मनाया जाता है।

यतींद्र मिश्र : त्योहारों की ऐसी कोई खास बात, जो आपके शुरुआती जीवन में परंपरा की तरह निभती रही हो और जिसे आपने बाद में भी पूरी आत्मीयता के साथ निभाना जारी रखा।

लता मंगेशकर : ऐसी कोई खास बात मुझे याद नहीं आती। अलबत्ता इतना जरूर कहूँगी कि पचास का दशक रहा होगा, जब मैं फिल्म इंडस्ट्री में नई-नई आई थी और मेरा काम कुछ चल निकलना शुरू हुआ था। उस दौरान मैंने कुछ सालों तक दीवाली के दिन अपने सीनियर म्यूजिक डायरेक्टर्स के यहाँ मिठाई लेकर जाने का चलन शुरू किया था। आप सुनकर हैरान होंगे कि मैं ऐन दीवाली के दिन तड़के पाँच बजे ही नहा-धोकर बहुत सारे संगीतकारों के घर मिठाई लेकर पहुँच जाती थी।

एक बार बड़ा मजेदार वाकया हुआ कि मैं नौशाद साहब के घर सुबह करीब साढ़े पाँच बजे पहुँच गई और जब कॉलबेल बजाया, तो उनींदे से नौशाद साहब मुझे गेट पर खड़ा देखकर डर गए। वे डरकर पूछने लगे— "लता बाई सब खैरियत तो है, इतने सबेरे क्या मुसीबत आन पड़ी?" मैंने उन्हें हँसकर कहा, "कुछ नहीं नौशाद साहब, आज दीवाली है तो आपको बधाई देने और मिठाई पहुँचाने चली आई।" इस पर वे बोले, "अरे इतनी सुबह क्यों परेशान हुई?" तब मैंने उनको हँसते हुए जवाब दिया कि नौशाद साहब आपके अलावा मुझे अभी दो-तीन जगह— अनिल विश्वास जी, रोशनलाल, मदन भैया और बर्मन दादा के यहाँ भी जाना है। इस पर वे लाड़ से भरकर बोले— "हाँ। मैं बिल्कुल भूल गया! लेकिन पहले बैठो, चाय पियो और मुँह मीठा करो, फिर जाने देंगे। फिर बोले, "लता, तुम हम सबको मिठाई बाँट रही हो, लेकिन हम सारे संगीतकारों को मिलकर तो तुम्हें मिठाई खिलानी चाहिए, जो तुमने हमारी धुनों में इतनी मिठास घोली है।" नौशाद साहब से मैंने यही इतना भर कहा कि आप आशीर्वाद दीजिए कि आगे भी जीवन में हर दीवाली के साथ मैं और मधुर से मधुर गीत गा सकूँ।

यतींद्र मिश्र : त्योहारों के संदर्भ में एक बात और ध्यान में आती है कि अधिकांश प्रदेशों में पर्वों व अनुष्ठानों से संदर्भित घर-घर गीत गाए जाने का प्रचलन रहा है। उदाहरण के लिए होली के मौके पर फाग और धमार, बिहार में छठ पूजा पर छठ के गीत, जन्माष्टमी और रामनवमी में ईश्वर के जन्म के कारण सोहर और बधावा आदि गाने का मामला। ये गीत ज्यादातर घर और मोहल्ले की स्त्रियाँ ही गाती हैं, गायन एक रिवाज की तरह कायम है। ऐसे में महाराष्ट्र के संदर्भ में आपके देखे ऐसे कौन-से अवसर आए हैं?

लता मंगेशकर : (हँसते हुए) हमारे यहाँ होली और दीवाली पर तो इस तरह घरों में गीत नहीं होता। यह जरूर है कि विवाह के बाद जब नई बहू घर में आती है, तब एक पूजा होती है घरों में, जिसमें पास-पड़ोस की बहुत सारी औरतें आती हैं। यह मंगलागौर कहलाता है। सारी औरतें बिल्कुल मुग्ध भाव से गीत गाती हैं और नाचती भी हैं। बिल्कुल ठेठ गँवई अंदाज में यह मंगलागौर का उत्सव मनाया जाता है, मगर आहिस्ता-आहिस्ता वह भी अब खत्म हो रहा है। मुझे अच्छी तरह से याद है; जब मैं बहुत छोटी थी, तब घर-परिवार या पड़ोस में किसी की भी शादी के बाद यह मंगलागौर मनाया जाता था और हम सभी लोग उसमें खूब नाचते-गाते थे। उनमें स्त्रियाँ नौटंकी और तमाशा की तरह भी कुछ-कुछ करती थीं। मतलब कोई कुछ भी रूप धरकर नाचता था।

यतींद्र मिश्र : दीदी, कोरस में गाने वाली लड़कियों के साथ आपके कैसे रिश्ते रहे? क्या वे सब भी आप लोगों की गायिकी में कोई सहयोग करती थीं या उनका एक अलग ही विभाग होता था, जो मुख्य पार्श्वगायक-गायिकाओं से अलग रहता था?

लता मंगेशकर : उस वक्त एक ऐसा ग्रुप था, जो सब जगह जाता था। नौशाद साहब के यहाँ, मदन मोहन जी के यहाँ। शंकर-जयकिशन, एस.डी. बर्मन, आर.डी. बर्मन, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल— ये जितने भी लोग थे; सभी के यहाँ एक ही ग्रुप की लड़कियाँ थीं, जो कोरस में गाने जाती थीं। इसलिए सबसे मेल-मुलाकात भी गहरी पहचान में बदल गई थी। मेरा कोरस की लड़कियों के साथ बहुत अच्छा संबंध था। मतलब जितनी भी लड़कियाँ थीं, वो बिल्कुल मेरे घर जैसी थीं। सबका ही घर में आना-जाना होता था। मीना की शादी जब कोल्हापुर में हुई, तो कोरस की सारी लड़कियाँ और लड़के वहाँ आए थे और उन लोगों ने वहाँ खूब गाने गाए और डांस किया था। जहाँ तक मुझे याद पड़ता है, सन् 1960 में जो ग्रुप कोरस गाने वालों का हमें मिला था, वह लगभग अस्सी तक वैसे ही चला है। 1980 के पास जाकर वह बदला गया। फिर उनमें कुछ लड़कियों ने गाना बंद कर दिया था और कुछ लोगों ने छोड़ दिया।

फिर अस्सी के बाद तो यह भी हो गया था कि कोरस वालों का म्यूजिक पहले रेकॉर्ड हो जाता था। बाद में हम लोग जाकर अपने गाने गा आते थे। उससे पहले के दौर में पुरुष और स्त्री आवाज़ों के कोरस हम लोगों के गीतों के साथ ही रेकॉर्ड होते थे। भले ही वह गाना डुएट हो या फिर कोई सोलो सांग। अकसर मुकेश भैया और मेरे गाने या किशोर कुमार और मेरे गानों में कोरस की लड़कियाँ साथ ही गाती थीं। उनमें से कुछ के नाम तो मुझे अभी भी याद हैं। कुछ एक लड़कियाँ बहुत सुरीला गाती थीं, जिनमें कविता, गांधारी, कल्याणी, सुमन और रेखा थीं। यह सब मुझे बड़ी भली और अच्छी लगती थीं। कविता और गांधारी बहनें थीं और

दोनों साथ ही कोरस में गाती थीं। रेखा शादी-शुदा बाल-बच्चों वाली औरत थी, जो अच्छी तरीके से कोरस में साथ देती थी। कल्याणी की भी आवाज़ सुंदर थी। यह सब इतनी भली थीं कि जब रेकॉर्डिंग के लिए आती थीं, तो अकसर वहाँ स्टूडियो में ज्यादा कुर्सियाँ नहीं होती थीं। वे सब बड़े मजे से जमीन पर बैठती थीं और अकसर मैं भी रेकॉर्डिंग में आकर वहीं जमीन पर बैठकर उन सभी के साथ बातें करती थी। यह मैं उन कोरस गाने वाली लड़कियों की बात कर रही हूँ, जो बहुत शुरुआती दौर में लगभग पचास और साठ के दशक में संगीतकारों के यहाँ कोरस गाने के लिए जाती रही हैं। आजकल का मुझे कुछ मालूम नहीं है। अब कौन-कौन से लोग हैं और उनका सिंगर्स के साथ में गाना रेकॉर्ड होता है या अलग से? यह मुझे मालूम नहीं है। मुझसे मिलने वाले जितने लड़के और लड़कियाँ थीं, उन सबने बहुत बाद तक संपर्क बनाया हुआ था।

यतींद्र मिश्र : संगीत की प्राचीन परंपरा में बहुत सारी जनश्रुतियाँ और कहानियाँ संगीत को गरिमा और शिखर देने के संदर्भ में कही जाती रही हैं या हम इस तरह कह सकते हैं कि परंपरा में व्याप्त रही हैं। मसलन स्वामी हरिदास और तानसेन के युग की बहुत सारी कथाओं में यह मान्यताएँ भी प्रचलित रहीं कि तानसेन के दीपक राग गाने से दीये जल उठे या कि उनकी पुत्रियों ताना-रीरी के मेघ राग गाने से वर्षा होने लगी। इस तरह की अवधारणाओं पर आप किस तरह सोचती हैं?

लता मंगेशकर : यह जिस जमाने की कथाएँ हैं, जिसमें हरिदास बाबा और तानसेन जैसे महान संगीतकारों के लिए ऐसा कहा गया, तो हो सकता है कि उनकी कला में कोई सच्चा सुर या आत्मा की आवाज़ लगी होगी, तो ऐसा कुछ घट गया होगा, ऐसा हम आदर में मान लेते हैं। परंतु यह निश्चित ही हुआ होगा, यह कम से कम मैं नहीं कह सकती क्योंकि ऐसा मेरा कोई अनुभव नहीं है। हालाँकि मैं यह मानती हूँ कि संगीत में वह असीम शक्ति है कि कुछ अप्रत्याशित वह जरूर रच देता है, जिसका अनुभव भी कई बार हमें हुआ है। कई बार अपने बाबा पंडित दीनानाथ मंगेशकर को सुनते हुए भी मैं कुछ अप्रत्याशित अनुभव करती थी।

आपको एक वाकया बताती हूँ। मैं मुंबई में उस्ताद अली अकबर खाँ और पंडित रविशंकर का एक कंसर्ट सुन रही थी। मैं श्रोताओं की पंक्ति में बिल्कुल आगे बैठी अली अकबर भाई का वादन सुन रही थी और वे अत्यंत मंत्रमुग्ध किस्म का वादन कर रहे थे। तभी कुछ समय बीता होगा, मसलन पचास-साठ मिनट कि 'ठन' से उनके सरोद का एक तार टूटा और उन्हें बजाना बंद करना पड़ा। जब वे उठकर पीछे ग्रीन रूम में गए, तो उनसे मिलने मैं भी वहाँ गई। मैंने बोला, "आप बहुत सुंदर बजा रहे थे, काश कि यह तार न टूटता और हम पूरी तरह राग को अंत तक सुन पाते।" इस पर अली अकबर भाई ने एक बड़ी मार्मिक बात कही, जो आज तक मुझे भूलती नहीं। वे बोले— "बहन, जब बहुत सुर में तार लगता है, तो टूट जाता है।" उन्होंने अपने सुर को इतने पवित्र भाव से इतना डूबकर लगाया कि सरोद का तार टूट गया। इस प्रसंग से मुझे यह लगता है कि संगीत की सीमा इतनी अनंत है कि तार भी शुद्ध स्वर के आघात को सह नहीं पाता, टूटकर अलग हो जाता है। आज जब उस्ताद अली अकबर खाँ या पंडित रविशंकर के संदर्भ में इन बातों को सोचती हूँ, तो इस बात पर विश्वास करने का मन होता है कि हो सकता है मियाँ तानसेन से कोई ऐसा सच्चा सुर जरूर लगा होगा कि बारिश हो गई या दीपक जल उठे!

यतींद्र मिश्र : दीदी, आप तो घर-घर में व्याप्त हैं। आपकी आवाज़ से लोगों की सुबह होती है। अगर मैं अतिरेक नहीं कर रहा, तो यह कहना वाजिब है कि आप अमर हैं और दूसरी लता मंगेशकर होना इस दुनिया में संभव नहीं है...

लता मंगेशकर : मुझे भगवान ने बहुत कुछ दिया है। मुझे किसी बात की शिकायत नहीं है। मैं बहुत खुश हूँ। आप जैसे लोग अगर यह मानते हैं कि मैं अमर हूँ, तो यह मुझे मिलने वाले उस प्यार जैसा ही है, जो दुनिया ने मुझे दिया है।... मेरा गाना अमर है, पर शरीर तो अमर नहीं। उसे तो जाना ही है, आज नहीं तो कल। कल नहीं तो परसों या किसी न किसी दिन...। इस बात पर मुझे कोई अफसोस नहीं होता। वह तो होकर रहेगा। हमारे यहाँ यही कहा जाता है—'गाव गेला वाहुन, नाव गेला राहुन'। मतलब गाँव तो बह जाता है, लेकिन जो नाम है, वह रह जाता है। मैं इसको हमेशा से मानती रही हूँ। एक बात की मुझे सबसे ज्यादा खुशी है कि मैंने अपने पिताजी का नाम, थोड़ा ही सही मगर, आगे बढ़ाया।

आज मुझे लगता है कि हे प्रभु! तुमने जो भी दिया, वह बहुत दिया, दूसरों से कहीं ज्यादा दिया। अपनी कृपा की छाया से जैसे मुझे छाँह दी है, वैसे ही हर एक कलाकार और नेक इंसानों के ऊपर भी रखना... यही प्रार्थना है।

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. लता जी ने अपने पिताजी से क्या-क्या सीखा?
   (क) अनुशासन और नियम के साथ जीना
   (ख) भय और संशय के साथ जीना
   (ग) स्वाभिमान और सच्चाई के साथ जीना
   (घ) चतुराई और संयम के साथ जीना

2. पिताजी की मृत्यु के बाद परिवार सँभालने का लता जी का निर्णय किस जीवन-मूल्य का द्योतक है?
   (क) संघर्ष
   (ख) निराशा
   (ग) भौतिकता
   (घ) कर्तव्यनिष्ठा

3. "बिल्कुल ठेठ गँवई अंदाज में यह मंगलागौर का उत्सव मनाया जाता है..." 'मंगलागौर' के वर्णन से भारतीय समाज की कौन-सी परंपरा उजागर होती है?
   (क) संगीत पर आधुनिकता का प्रभाव
   (ख) लोकगीतों की लोकप्रियता में कमी
   (ग) धार्मिक कार्यक्रमों में संगीत का महत्व
   (घ) संगीत की महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिका

4. "गाव गेला वाहुन, नाव गेला राहुन" — इस कहावत का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?
   (क) नाव गाँव में नहीं रहती, नदी में बहती है।
   (ख) इस नश्वर संसार में सब कुछ नष्ट हो जाता है।
   (ग) फिल्मों में गीत गाने से बहुत प्रसिद्धि मिलती है।
   (घ) जीवन अस्थायी है, पर कर्म अमर रहते हैं।

5. कोरस में साथ गाने वाली लड़कियों के साथ लता जी के संबंध कैसे थे?
   (क) औपचारिक
   (ख) कामकाजी
   (ग) आत्मीय
   (घ) प्रतिस्पर्धात्मक
6. लता मंगेशकर के अनुसार बाबा हरिदास और तानसेन की कथाओं से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
   (क) संगीत द्वारा दीपक जलाए जा सकते हैं।
   (ख) मेघराग गाने से वर्षा होने लगती है।
   (ग) सुर में वाद्य बजाने से तार टूट जाते हैं।
   (घ) संगीत में अपरिमित शक्ति होती है।
7. पूरे साक्षात्कार में लता मंगेशकर की जो छवि बनती है, वह मुख्यतः कैसी है?
   (क) सादगी, समर्पण और आत्मसम्मान की
   (ख) प्रसिद्धि, परिवार को समर्पित और आत्ममुग्ध
   (ग) कठोर सिद्धांतवादी और व्यावहारिक व्यक्ति
   (घ) आधुनिकता विरोधी रूढ़िवादी विचारों वाली

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. "पिताजी उस समय पूछते थे, 'समझ गए न?'... इसके बाद वे कहते थे कि 'अच्छा अब जाओ, बाहर जाकर खेलो।''' यह प्रसंग पारिवारिक अनुशासन और स्नेह के संतुलन का प्रतीक है। कैसे?
   (*संकेत– यहाँ अनुशासन में* डर है *या* सम्मान?)
2. लता मंगेशकर पर अपने पिताजी पं. दीनानाथ मंगेशकर के व्यक्तित्व का क्या प्रभाव पड़ा? उनके कौन-कौन से कार्यों और व्यवहार में उनके पिता का प्रभाव दिखाई देता है?
3. "मैंने अपने पिताजी का नाम, थोड़ा ही सही मगर, आगे बढ़ाया।" 'नाम आगे बढ़ाने' का लता जी के लिए क्या अर्थ है? क्या यह सिर्फ प्रसिद्धि पाना है या इससे कोई महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व भी जुड़ा हुआ है?
4. किसी भी कार्य को पूरा करने में सहयोगियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। साक्षात्कार के आधार पर बताइए कि लता जी के अपने सहयोगियों के साथ संबंध कैसे थे?

साक्षात्कार से उभरता व्यक्तित्व/उभरती छवि

साक्षात्कार से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन पंक्तियों से लता मंगेशकर के व्यक्तित्व के कौन-कौन से गुण या विशेषताएँ उभरकर सामने आती हैं? चुनकर लिखिए—

दृढ़ता, कृतज्ञता, दार्शनिकता, समर्पण, उत्तरदायित्व, स्पष्टता, एकाग्रता,
साधना, स्पष्टवादिता, विनम्रता, कठोरता, सरलता, आत्मविश्वास,
उत्सवप्रियता, श्रद्धा, मानवता, अमरता, घमंड, स्वाभिमान

1. "मुझे अपने गाने और रेकॉर्डिंग के अलावा किसी दूसरी चीज की सुध नहीं रहती थी।"
2. "अगर कोई बात तुम्हें सही लगती है, तो उसे करो और किसी के आगे झुकने की जरूरत नहीं है।"
3. "आप जैसे लोग अगर यह मानते हैं कि मैं अमर हूँ, तो यह मुझे मिलने वाले उस प्यार जैसा ही है।"
4. "मेरा गाना अमर है, पर शरीर तो अमर नहीं।"

मेरे प्रश्न

नीचे दिए गए वाक्य को पढ़िए—

"संगीत में असीम शक्ति और अप्रत्याशित रचने की क्षमता होती है।"

इस वाक्य के आधार पर अनेक प्रश्न बनाए जा सकते हैं, जैसे–

1. लता मंगेशकर ने संगीत के विषय में क्या कहा?
2. लता मंगेशकर ने संगीत की क्या विशेषताएँ बताई हैं?
3. लता मंगेशकर ने संगीत की क्षमता का आकलन करते हुए क्या कहा?
4. उस्ताद अली अकबर खाँ और पंडित रविशंकर के कंसर्ट में हुई घटना से संगीत के बारे में क्या पता चलता है?

आपने देखा कि अनेक प्रश्नों का एक ही उत्तर हो सकता है और एक ही उत्तर से अनेक प्रश्न बनाए जा सकते हैं।

अब नीचे दिए गए उत्तरों से अधिक से अधिक प्रश्न बनाइए (कम से कम दो)—

1. **उत्तर** : 'मंगलागौर' जैसे लोक पर्वों में स्त्रियों के बीच गीत, नृत्य और सौहार्द का भाव झलकता था।

2. **उत्तर** : लता जी का मानना था कि तकनीकी प्रगति के बावजूद पुराने संगीतकारों की सादगी और गहराई अद्वितीय थी।

मेरे अनुभव मेरे विचार

अपने अनुभवों के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. "अगर कोई बात तुम्हें सही लगती है, तो उसे करो और किसी के आगे झुकने की जरूरत नहीं है।"

   क्या आप किसी ऐसी स्थिति से गुजरे हैं जब आपको किसी सही बात पर अकेले खड़ा होना पड़ा हो? कब और क्यों?

2. "बाबा ने जैसा सिखाया था, उस पर हम सभी भाई-बहनों ने चलने का प्रयास किया।"

   आपके परिवार में भी कोई ऐसी सीख या नियम अवश्य होंगे जिनका पालन आप किसी के याद दिलाए बिना स्वत: करते होंगे, उनके विषय में बताइए।

3. "पहले दिन गुड़ि बाँधने के बाद नौ दिन तक उत्सव मनाया जाता है।"

   आप भी अपने घर में किसी पारंपरिक पर्व को विशेष तरीके से मनाते होंगे। उसका वर्णन कीजिए।

4. "बिल्कुल ठेठ गँवई अंदाज में यह मंगलागौर का उत्सव मनाया जाता है, मगर आहिस्ता-आहिस्ता वह भी अब खत्म हो रहा है।"

   पाठ में आपने पढ़ा कि लता मंगेशकर के बचपन से अब तक उत्सवों से जुड़ी अनेक परंपराएँ बदल रही हैं। कौन-कौन सी परंपराएँ बदल गई हैं? अपने घर-परिवार में बातचीत करके पता लगाइए कि विभिन्न त्योहारों को मनाने के तरीकों में कौन-कौन से बदलाव आ रहे हैं?

विधा से संवाद

साक्षात्कार की पड़ताल

1. 'ऐसी भी बातें होती हैं' एक साक्षात्कार है। साक्षात्कार में एक व्यक्ति प्रश्न पूछता है और दूसरा व्यक्ति उन प्रश्नों के उत्तर देता है। साक्षात्कार विधा के कुछ मुख्य बिंदु आगे दिए गए हैं। इस साक्षात्कार में से इन मुख्य बिंदुओं को रेखांकित करने वाली पंक्तियों को ढूँढ़कर लिखिए।

साक्षात्कार के मुख्य बिंदु

- साक्षात्कार लेने वाले का नाम और जिसका साक्षात्कार लिया गया, उसका नाम
- प्रश्नोत्तर
- भावनात्मक वातावरण
- आमंत्रण, स्वागत और परिचय
- उत्तर देने की शैली का संकेत
- विचार और उदाहरण
- संस्मरण
- समापन

2. "मैं कोशिश करूँगी कि जो कुछ भी मैंने संगीत में रहते हुए जाना है, उसे आपको बता सकूँ।"

   इस कथन से साक्षात्कार की शैली के विषय में क्या पता चलता है— क्या यह औपचारिक संवाद है या आत्मीय बातचीत? अपने विचार तर्क सहित लिखिए।

आपका साक्षात्कार

"आप पूछिए, मैं आपके प्रश्नों का जवाब देने के लिए तैयार हूँ।"

प्रस्तुत पाठ में विश्व-प्रसिद्ध व्यक्तित्व का साक्षात्कार दिया गया है। कल्पना कीजिए कि आप भी लता मंगेशकर के इस साक्षात्कार में उपस्थित हैं। आप लता जी से कौन-कौन से अलग प्रश्न पूछते और क्यों?

विषयों से संवाद

1. "एक स्टूडियो से दूसरे और तीसरे स्टूडियो के चक्कर में ही पूरा दिन बीत जाता था।"

   सन् 1942 में अपने पिता की मृत्यु के बाद लता मंगेशकर ने अकेले अपनी माँ, छोटे भाई-बहनों की देखभाल की और अपने घर को सँभाला। उस समय उनकी आयु मात्र 13 वर्ष थी। तब महिलाओं का फिल्मों में काम करना अच्छा नहीं माना जाता था। उस समय सुबह से

रात तक एक स्टूडियो से दूसरे स्टूडियो भागते हुए लता जी के एक दिन की कल्पना कीजिए। इस भागदौड़ में वे किन-किन चुनौतियों का सामना करती होंगी?

(संकेत– भोजन, यात्रा-भाड़ा, सुरक्षा, थकान आदि)

2. "पहले के दौर में पुरुष और स्त्री आवाज़ों के कोरस हम लोगों के गीतों के साथ ही रेकॉर्ड होते थे। भले ही वह गाना डुएट हो या फिर कोई सोलो सांग।"

   अपने घर, आस-पड़ोस, समुदाय, विद्यालय में होने वाले उन कार्यों के विषय में बताइए जिसमें सहयोग और सामूहिकता की आवश्यकता होती है।

शास्त्रीय संगीत

1. "फिर उसमें लंबी-लंबी रागदारी वाले गायन की भी परंपरा थी।"

   रागदारी वाले गायन का अर्थ है भारतीय शास्त्रीय संगीत। आपने इस पाठ में संगीत से जुड़े अनेक शब्दों को पढ़ा है। शब्दकोश, इंटरनेट, पुस्तकालय और अपने शिक्षकों की सहायता से इनके अर्थ और उदाहरण खोजकर लिखिए—

   राग, सुर, बंदिश, अभंग, सोहर, फाग, बधावा

2. "त्योहारों के संदर्भ में एक बात और ध्यान में आती है कि अधिकांश प्रदेशों में पर्वों व अनुष्ठानों से संदर्भित घर-घर गीत गाए जाने का प्रचलन रहा है।" आपने पढ़ा कि भारत में त्योहारों पर फाग, धमार, सोहर, बधावा, छठ के गीत आदि गाने की परंपरा है। अपने क्षेत्र में गाए जाने वाले ऐसे गीतों के विषय में अपने घर में पता कीजिए और एक गीत अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

साइबर सुरक्षा

"आज, जो स्थिति है और जिस तरह हमारी तकनीक विकसित हो चुकी है, उसमें अगर इन लोगों को काम करने का मौका मिलता, तब तो कमाल ही हो गया होता।"

- आज तकनीकी विकास इतना अधिक हो चुका है कि अनेक धोखेबाज/ठग कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग करके अपनी आवाज़ बदलकर लोगों के साथ धोखाधड़ी करते हैं। कक्षा में चर्चा कीजिए और बताइए कि साइबर सुरक्षा नियमों का प्रयोग करते हुए इस प्रकार की धोखाधड़ी से किस प्रकार बचा जा सकता है?

  https://cybercrime.gov.in/UploadMedia/CyberSafetyHindi.Pdf

हम ऐसे भी बोलते हैं

"वे बस हमको गंभीरता से देखते थे... मगर हम सभी समझ जाते थे कि हमको बुलाया किसलिए गया है।"

1. क्या आपके जीवन में भी कोई ऐसा व्यक्ति है जो बिना कुछ बोले सिर्फ नजरों या संकेतों (हाव-भाव) से ही आपको समझा देता है? उस अनुभव के विषय में बताइए।
2. यदि कोई व्यक्ति बिना बोले (संकेत भाषा में) आपको कुछ समझा रहा है, तो वह आपके साथ और आप उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे?
   (संकेत– धैर्य, जिज्ञासा, समानुभूति आदि)

सृजन

1. "अगर हम समय के चक्र (टाइम मशीन) को घुमाकर सन् 1949-50 में ले जाएँ", कल्पना कीजिए कि आपके पास टाइम मशीन है। 1940–50 के दशक में जाकर लता जी से मिलिए और उनके साथ बिताए गए एक दिन का वर्णन डायरी के रूप में लिखिए। उस समय की वेशभूषा, भोजन, संगीत आदि का वर्णन अवश्य कीजिए।
2. "आप जैसे लोग अगर यह मानते हैं कि मैं अमर हूँ, तो यह मुझे मिलने वाले उस प्यार जैसा ही है।"
   कल्पना कीजिए कि यह लता जी का अंतिम संदेश है— आप उस पर अपनी भावनात्मक प्रतिक्रिया एक अनुच्छेद के रूप में व्यक्त कीजिए।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

मुहावरे

"मगर किसी के आगे जाकर हाथ नहीं पसारना है।"

उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित अंश मुहावरा है। हाथ पसारना या फैलाना का अर्थ है— कुछ माँगना या याचना करना। हाथों से जुड़े अनेक मुहावरे आपने पढ़े और सुने होंगे। ऐसे ही कुछ मुहावरे नीचे दिए गए हैं। इनका प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए—

- हाथ में आना
- हाथ का मैल होना
- हाथ से हाथ मिलाना
- हाथ साफ करना
- हाथ से निकल जाना
- हाथ धो बैठना

हमारी भाषाएँ

1. "'गाव गेला वाहुन, नाव गेला राहुन'। मतलब गाँव तो बह जाता है, लेकिन जो नाम है, वह रह जाता है।" आपने एक कहावत और उसका हिंदी में अर्थ पढ़ा। इस कहावत के अर्थ को अपने घर या क्षेत्र की भाषा अथवा भाषाओं में लिखिए।
2. लता जी ने मराठी कहावत को हिंदी में समझाया। अब आप अपनी मातृभाषा की कोई कहावत चुनिए और उसका हिंदी में अनुवाद कीजिए। अनुवाद के बाद भाव में क्या परिवर्तन आया? लिखिए।
3. एक 'सेतु चित्र' बनाइए जिसमें दो किनारे हों— एक किनारे पर हिंदी और दूसरे किनारे पर अपने घर या क्षेत्र की भाषा। दोनों किनारों के बीच में ऐसे शब्द लिखिए जो दोनों भाषाओं में समान अर्थ रखते हैं।

गतिविधियाँ

1. 'नाम रह जाएगा' वाक्य के लिए एक सुंदर पोस्टर बनाइए। इसके ऊपर 'नाम रह जाता है...' लिखिए और नीचे विभिन्न भारतीय भाषाओं में 'नाम' शब्द (जैसे– नाव, नालो, नांउ, नाउँ, मिङ्, पेरु, नामम् आदि) लिखिए। साथ ही कक्षा में सब विद्यार्थी मिलकर एक प्रतिज्ञा लें— 'हम हर भाषा का सम्मान करेंगे।'
2. कागज पर एक पेड़ का चित्र बनाइए। इसे नाम दीजिए— भाषा-वृक्ष। इसकी जड़ में लिखिए— 'भारतीय संस्कृति'; तने पर और शाखाओं पर लिखिए— हिंदी, मराठी, तमिल, बांग्ला, गुजराती आदि। हर शाखा पर उस भाषा का एक प्यारा शब्द जोड़िए।
3. समूह में मिलकर किसी विषय पर एक छोटा समाचार बुलेटिन तैयार कीजिए जिसमें हिंदी, अंग्रेजी और किसी क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग हो। उदाहरण के लिए, एक विषय हो सकता है— 'कला जो जोड़ती है, बाँटती नहीं।'
4. भाषाई स्मृति पोटली

   अपने परिवार में प्रयुक्त अलग-अलग भाषाओं के पाँच शब्द एकत्र कीजिए (जैसे– दादी मराठी बोलती हों, माँ हिंदी)। उन्हें एक 'शब्द पोटली' में कार्ड पर सजाइए।
5. स्वर-कोलाज

   लता जी के जीवन के प्रेरक वाक्यों और गीतों का चित्रमय कोलाज बनाइए।
6. समय-रेखा

   लता जी के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ कालानुक्रम में दर्शाइए।

भाषा संगम

"उस दिन घर में **संगीत** की सभा होती थी।"

नीचे 'संगीत' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

संगीत (हिंदी); सङ्गीतम् (संस्कृत); संगीत (पंजाबी); मूसीकी, मौसिकी (उर्दू); मूसीकी, संगीत (कश्मीरी); संगीत (सिंधी); संगीत कला (मराठी); संगीतकळा (ला) (गुजराती); संगीत (कोंकणी); संगीत (नेपाली); संगीत (बांग्ला); संगीत (असमिया); ईशै (मणिपुरी); संगीत (ओड़िआ); संगीतमु (तेलुगु); संगीतम्, इशै (तमिल); संगीतम् (मलयालम); संगीत (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप 'संगीत' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp

खोजबीन

लता मंगेशकर से जान-पहचान

1. "जब मैं बड़ी हो जाऊँगी, तब मुझे भी ऐसे ही मेडल मिलेंगे।"

   लता जी ने बचपन में मेडल पाने की कल्पना की और जीवन में अनगिनत पुरस्कार और मेडल प्राप्त भी किए। पता कीजिए कि उन्होंने जीवन-भर में कौन-कौन से 'मेडल' और पुरस्कार प्राप्त किए?

2. पाठ में लता मंगेशकर ने कई फिल्मों और गीतों का उल्लेख किया है। इंटरनेट की सहायता से इनमें से किसी एक फिल्म और गीत को देखकर उसके विषय में अपने विचार लिखिए। आपको यह फिल्म और गीत कैसा लगा और क्यों?

3. अब आप नीचे दी गई इंटरनेट कड़ी की सहायता से लता मंगेशकर द्वारा गाया हुआ गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगो' सुन सकते हैं।

   https://youtu.be/CF_RqQF99Iw?si=7CG_zpv8XW5Hprnn

शब्द-संपदा

अप्रतिम — बेजोड़, अनुपम
आकंठ — कंठ तक, पूर्ण रूप से
समर्पित — समर्पण किया हुआ, दिया हुआ, सौंपा हुआ,
स्मरण — याद, स्मृति, चिंता
रागदारी — ठीक राग गाने का ढंग या क्रिया
राग — विशिष्ट ताल-लययुक्त, ध्वनि, मन को प्रसन्न करना, प्रीति, अनुराग
स्वाभिमान — आत्मसम्मान, अपनी प्रतिष्ठा का अभिमान
बैकुंठ — स्वर्ग, एक ताल, संगीत
अनुयायी — पीछे चलने वाला, अनुगामी, समान
मार्फ़त/मारफ़त — माध्यम, ज्ञान
सबब — कारण, अपादान कारण, हेतु
अलबत्ता — निस्संदेह
सूत्रपात — कार्य का आरंभ, माप वाले सूत से मापन का कार्य
आमद — आय, आना
पार्श्वगायन/पार्श्वगायक — किसी अन्य अभिनेता या अभिनेत्री के बदले में नेपथ्य में बैठकर गाने वाला, स्वरदान करने वाला
परहेज — किसी वस्तु से बचना, बीमार का हानिकर पदार्थ न खाना
वाकया/वाकिया — घटना, दुर्घटना, युद्ध
खैरियत — कुशल, भलाई, नेकी
फाग — फागुन में गाया जाने वाला गीत, फागुन में होने वाला राग-रंग, होली
धमार — फाग का एक भेद (संगीत), एक ताल
सोहर — बच्चे के जन्म के अवसर पर गाया जाने वाला एक मंगलगीत
बधावा — मंगलाचार, बधाई, बच्चे के जन्म आदि के अवसर पर भेजा जाने वाला उपहार
मसलन — उदाहरण रूप में
अप्रत्याशित — जिसकी आशा न रही हो, अनसोचा, आकस्मिक
अतिरेक — आवश्यकता से अधिक, अंतर, आधिक्य
वाजिब — उचित, कर्तव्य

5

0901CH05

मोहन राकेश

हिंदी साहित्य के बहुमुखी रचनाकार मोहन राकेश का जन्म सन् 1925 को अमृतसर, पंजाब में हुआ था। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, डायरी लेखन, यात्रा-वृत्तांत आदि अनेक विधाओं में साहित्य सृजन किया। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं— *आषाढ़ का एक दिन*, *लहरों के राजहंस*, *आधे-अधूरे* (नाटक), *अंधेरे बंद कमरे*, *अंतराल*, *न आने वाला कल* (उपन्यास), *क्वार्टर तथा अन्य कहानियाँ*, *नए बादल*, *वारिस तथा अन्य कहानियाँ* (कहानी-संग्रह), *मोहन राकेश की डायरी* (डायरी लेखन), *आखिरी चट्टान तक* (यात्रा-वृत्तांत) इत्यादि। *आषाढ़ का एक दिन* नाटक के लिए उन्हें 'संगीत नाटक अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कुछ समय तक उन्होंने *सारिका* नामक हिंदी पत्रिका का संपादन भी किया। उनके लेखन में भावों की गहराई के साथ-साथ आधुनिक जीवन की जटिलताओं और मानवीय संवेदनाओं का सूक्ष्म अंकन मिलता है। सन् 1972 को 48 वर्ष की अल्पायु में उनका निधन हो गया।

'आखिरी चट्टान तक' एक रोचक यात्रा-वृत्तांत है जिसमें लेखक ने कन्याकुमारी की अपनी यात्रा के अनुभवों को व्यक्त किया है। यात्रा-वृत्तांत में बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर और अरब सागर के मिलन-स्थल पर स्थित कन्याकुमारी के प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन सजीव ढंग से किया गया है। कन्याकुमारी के समुद्री तट के जीवन से साक्षात्कार होने पर लेखक केवल वहाँ की भौगोलिक और सांस्कृतिक सुंदरता का ही वर्णन नहीं करता बल्कि अपने मन में उठने वाली भावनाओं, विस्मय, रोमांच, शांति और आत्मिक खोज को भी व्यक्त करता है। यात्रा-वृत्तांत की भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और चित्रात्मक है जो पाठक के मन में दृश्यों को ऐसे जीवंत कर देती है कि पाठक को लगता है कि वह भी लेखक के साथ ही यात्रा कर रहा है। प्रकृति की भव्यता और मानव-मन की गहन अनुभूतियों को यह यात्रा-वृत्तांत एक साथ उजागर करता है।

आखिरी चट्टान तक

कन्याकुमारी। सुनहले सूर्योदय और सूर्यास्त की भूमि।

केप होटल के आगे बने बाथ टैंक के बाईं तरफ, समुद्र के अंदर से उभरी स्याह चट्टानों में से एक पर खड़ा होकर मैं देर तक भारत के स्थल-भाग की आखिरी चट्टान को देखता रहा। पृष्ठभूमि में कन्याकुमारी के मंदिर की लाल और सफेद लकीरें चमक रही थीं। अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी— इन तीनों के संगम-स्थल-सी वह चट्टान, जिस पर कभी स्वामी विवेकानंद ने समाधि लगायी थी, हर तरफ से पानी की मार सहती हुई स्वयं भी समाधिस्थ-सी लग रही थी। हिंद महासागर की ऊँची-ऊँची लहरें मेरे आस-पास की स्याह चट्टानों से टकरा रही थीं। बलखाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं जिससे उनके ऊपर चूरा बूँदों की जालियाँ बन जाती थीं। मैं देख रहा था और अपनी पूरी चेतना से महसूस कर रहा था— शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति। तीनों तरफ से क्षितिज तक पानी-ही-पानी था, फिर भी सामने का क्षितिज, हिंद महासागर का, अपेक्षया अधिक दूर और अधिक गहरा जान पड़ता था। लगता था कि उस ओर दूसरा छोर है ही नहीं। तीनों ओर के क्षितिज को आँखों में समेटता मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ, एक जीवित व्यक्ति, दूर से आया यात्री, एक दर्शक। उस दृश्य के बीच में जैसे दृश्य का एक हिस्सा बनकर खड़ा रहा— बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी-सी चट्टान। जब अपना होश हुआ, तो देखा कि मेरी चट्टान भी तब तक बढ़ते पानी में काफी घिर गई है। मेरा पूरा शरीर सिहर गया। मैंने एक नजर फिर सामने के उमड़ते विस्तार पर डाली और पास की एक सुरक्षित चट्टान पर कूदकर दूसरी चट्टानों पर से होता हुआ किनारे पर पहुँच गया।

पच्छिमी क्षितिज में सूर्य धीरे-धीरे नीचे जा रहा था। मैं सूर्यास्त की दिशा में चलने लगा। दूर पच्छिमी तट-रेखा के एक मोड़ पर पीली रेत का एक ऊँचा टीला नजर आ रहा था। सोचा उस टीले पर जाकर सूर्यास्त देखूँगा।

यात्रियों की कितनी ही टोलियाँ उस दिशा में जा रही थीं। हम लोग टीले पर पहुँच गए। यह वह 'सैंड हिल' थी जिसकी चर्चा मैं वहाँ पहुँचने के बाद से ही सुन रहा था। सैंड हिल पर बहुत से लोग थे। आठ-दस नवयुवतियाँ, छह-सात नवयुवक और दो-तीन गाँधी टोपियों वाले व्यक्ति। वे शायद सूर्यास्त देख रहे थे। गवर्नमेंट गेस्ट हाउस के बैरे उन्हें सूर्यास्त के समय की कॉफी पिला रहे थे। उन लोगों के वहाँ होने से सैंड हिल बहुत रंगीन हो उठी थी। कन्याकुमारी

का सूर्यास्त देखने के लिए उन्होंने विशेष रुचि के साथ सुंदर रंगों का रेशम पहना था। हवा समुद्र की तरह उस रेशम में भी लहरें पैदा कर रही थी। कुछ युवतियाँ वहाँ आकर थकी-सी एक तरफ बैठ गईं— उस पूरे कैनवस में एक तरफ छिटके हुए कुछ बिंदुओं की तरह। उनसे कुछ दूर पर एक रंगहीन बिंदु, मैं, ज्यादा देर अपनी जगह स्थिर नहीं रह सका। सैंड हिल से सामने का पूरा विस्तार तो दिखाई दे रहा था, पर अरब सागर की तरफ एक और ऊँचा टीला था जो उधर के विस्तार को ओट में लिए था। सूर्यास्त पूरे विस्तार की पृष्ठभूमि में देखा जा सके, इसके लिए मैं कुछ देर सैंड हिल पर रुका रहकर आगे उस टीले की तरफ चल दिया। पर रेत पर अपने अकेले कदमों को घसीटता वहाँ पहुँचा, तो देखा कि उससे आगे उससे भी ऊँचा एक और टीला है। जल्दी-जल्दी चलते हुए मैंने एक के बाद एक कई टीले पार किए। टाँगें थक रही थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था। हर अगले टीले पर पहुँचने पर लगता कि शायद अब एक ही टीला और है, उस पर पहुँचकर पच्छिमी क्षितिज का खुला विस्तार अवश्य नजर आएगा। और सचमुच एक टीले पर पहुँचकर वह खुला विस्तार सामने फैला दिखाई दे गया— वहाँ से दूर तक एक रेत की लंबी ढलान थी, जैसे वह टीले से समुद्र में उतरने का रास्ता हो। सूर्य तब पानी से थोड़ा ही ऊपर था। अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया— ऐसे जैसे वह टीला संसार की सबसे ऊँची चोटी हो, और मैंने, सिर्फ मैंने, उस चोटी को पहली बार सर किया हो।

पीछे दाईं तरफ दूर-दूर हटकर उगे नारियलों के झुरमुट नजर आ रहे थे। गूँजती हुई तेज हवा से उनकी टहनियाँ ऊपर को उठ रही थीं। पच्छिमी तट के साथ-साथ सूखी पहाड़ियों की एक शृंखला दूर तक चली गई थी जो सामने फैली रेत के कारण बहुत रूखी, बीहड़ और वीरान

लग रही थी। सूर्य पानी की सतह के पास पहुँच गया था। सुनहली किरणों ने पीली रेत को एक नया-सा रंग दे दिया था। उस रंग में रेत इस तरह चमक रही थी जैसे अभी-अभी उसका निर्माण करके उसे वहाँ उड़ेला गया हो। मैंने उस रेत पर दूर तक बने अपने पैरों के निशानों को देखा। लगा जैसे रेत पहली बार उन निशानों से टूटा हो। इससे मन में एक सिहरन भी हुई, हल्की उदासी भी घिर आई।

सूर्य का गोला पानी की सतह से छू गया। पानी पर दूर तक सोना-ही-सोना ढुल आया। पर वह रंग इतनी जल्दी-जल्दी बदल रहा था कि किसी भी एक क्षण के लिए उसे एक नाम दे सकना असंभव था। सूर्य का गोला जैसे एक बेबसी में पानी के लावे में डूबता जा रहा था। धीरे-धीरे वह पूरा डूब गया और कुछ क्षण पहले जहाँ सोना बह रहा था, वहाँ अब लहू बहता नजर आने लगा। कुछ और क्षण बीतने पर वह लहू भी धीरे-धीरे बैज़नी और बैज़नी से काला पड़ गया। मैंने फिर एक बार मुड़कर दाईं तरफ पीछे देख लिया। नारियलों की टहनियाँ उसी तरह हवा में ऊपर उठी थीं। हवा उसी तरह गूँज रही थी, पर पूरे दृश्यपट पर स्याही फैल गई थी। एक-दूसरे से दूर खड़े झुरमुट, स्याह पड़कर, जैसे लगातार सिर धुन रहे थे और हाथ-पैर पटक रहे थे। मैं अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और अपनी मुट्ठियाँ भींचता-खोलता कभी उस तरफ और कभी समुद्र की तरफ देखता रहा।

अचानक खयाल आया कि मुझे वहाँ से लौटकर भी जाना है। इस खयाल से ही शरीर में कँपकँपी भर गई। दूर सैंड हिल की तरफ देखा। वहाँ स्याही में डूबे कुछ धुँधले रंग हिलते नजर आ रहे थे। मैंने रंगों को पहचानने की कोशिश की, पर उतनी दूर से आकृतियों को अलग-अलग कर सकना संभव नहीं था। मेरे और उन रंगों के बीच स्याह पड़ती रेत के कितने ही टीले थे। मन में डर समाने लगा कि क्या अँधेरा होने से पहले मैं उन सब टीलों को पार करके जा सकूँगा? कुछ कदम उस तरफ बढ़ा भी पर लगा कि नहीं! उस रास्ते से जाऊँगा, तो शायद रेत में ही भटकता रह जाऊँगा। इसलिए सोचा बेहतर है नीचे समुद्र तट पर उतर जाऊँ— तट का रास्ता निश्चित रूप से केप होटल के सामने तक ले जाएगा। निर्णय तुरंत करना था, इसलिए बिना और सोचे मैं रेत पर बैठकर नीचे तट की तरफ फिसल गया। पर तट पर पहुँचकर फिर कुछ क्षण बढ़ते अँधेरे की बात भूला रहा। कारण था तट की रेत। यूँ पहले भी समुद्र-तट पर कई-कई रंगों की रेत देखी थी— सुरमई, खाकी, पीली और लाल। मगर जैसे रंग उस रेत में थे, वैसे मैंने पहले कभी कहीं की रेत में नहीं देखे थे। कितने ही अनाम रंग थे वे। एक-एक इंच पर एक-दूसरे से अलग... और एक-एक रंग कई-कई रंगों की झलक लिए हुए। काली घटा और घनी लाल आँधी को मिलाकर रेत के आकार में ढाल देने से रंगों के जितनी तरह के अलग-अलग सम्मिश्रण पाए जा सकते थे, वे सब वहाँ थे— और उनके अतिरिक्त भी बहुत-से

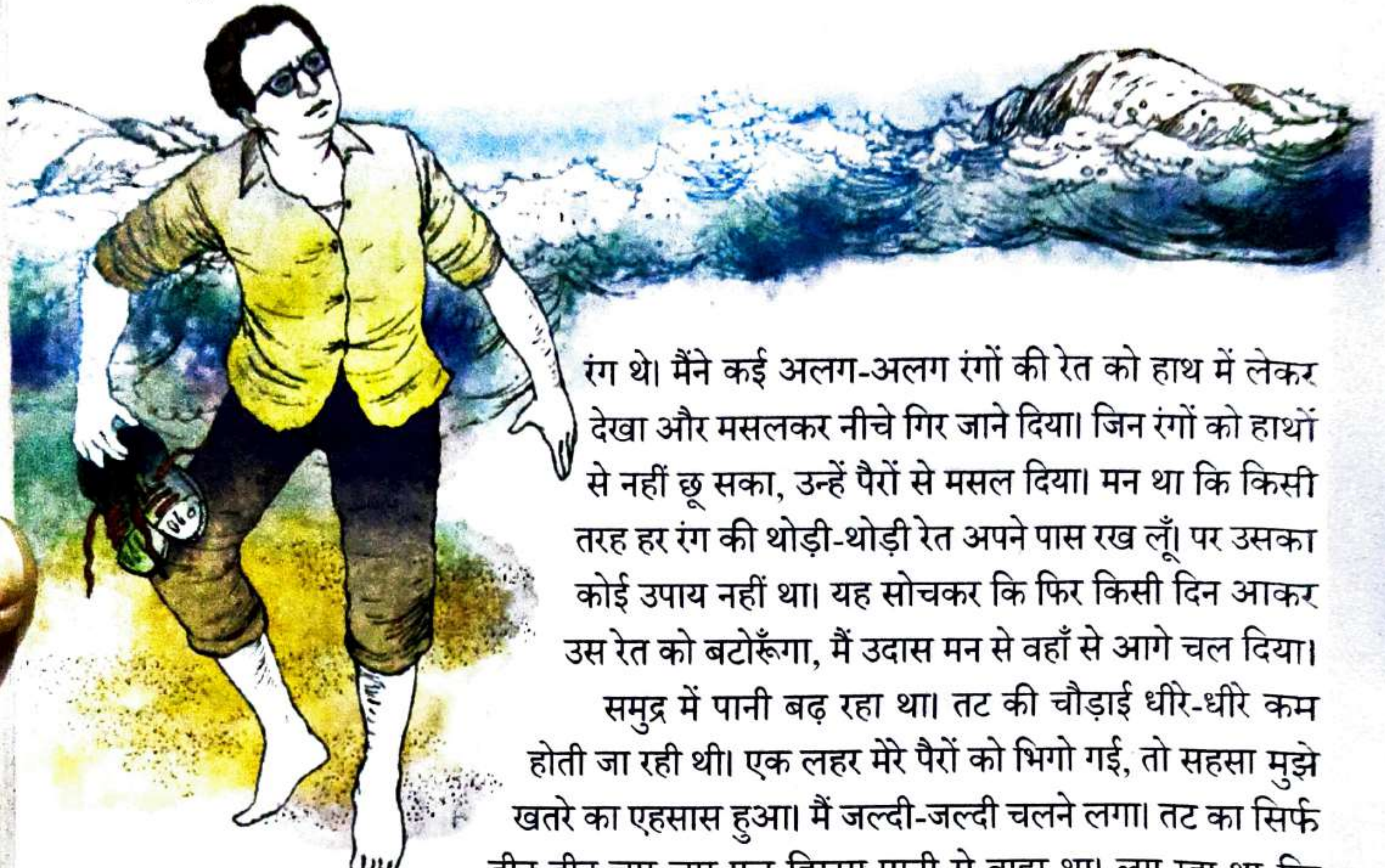

रंग थे। मैंने कई अलग-अलग रंगों की रेत को हाथ में लेकर देखा और मसलकर नीचे गिर जाने दिया। जिन रंगों को हाथों से नहीं छू सका, उन्हें पैरों से मसल दिया। मन था कि किसी तरह हर रंग की थोड़ी-थोड़ी रेत अपने पास रख लूँ। पर उसका कोई उपाय नहीं था। यह सोचकर कि फिर किसी दिन आकर उस रेत को बटोरूँगा, मैं उदास मन से वहाँ से आगे चल दिया।

समुद्र में पानी बढ़ रहा था। तट की चौड़ाई धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। एक लहर मेरे पैरों को भिगो गई, तो सहसा मुझे खतरे का एहसास हुआ। मैं जल्दी-जल्दी चलने लगा। तट का सिर्फ तीन-तीन चार-चार फुट हिस्सा पानी से बाहर था। लग रहा था कि जल्दी ही पानी उसे भी अपने अंदर समा लेगा। एक बार सोचा कि खड़ी रेत से होकर फिर ऊपर चला जाऊँ। पर वह स्याह पड़ती रेत इस तरह दीवार की तरह उठी थी कि उस रास्ते ऊपर जाने की कोशिश करना ही बेकार था। मेरे मन में खतरा बढ़ गया। मैं दौड़ने लगा। दो-एक और लहरें पैरों के नीचे तक आकर लौट गईं। मैंने जूता उतारकर हाथ में ले लिया। एक ऊँची लहर से बचकर इस तरह दौड़ा जैसे सचमुच वह मुझे अपनी लपेट में लेने आ रही हो। सामने एक ऊँची चट्टान थी। वक्त पर अपने को संभालने की कोशिश की, फिर भी उससे टकरा गया। बाँहों पर हल्की खरोंच आ गई, पर ज्यादा चोट नहीं लगी। चट्टान पानी के अंदर तक चली गई थी— उसे बचाकर आगे जाने के लिए पानी में उतरना आवश्यक था। पर उस समय पानी की तरफ पाँव बढ़ाने का मेरा साहस नहीं हुआ। मैं चट्टान की नोकों पर पैर रखता किसी तरह उसके ऊपर पहुँच गया। सोचा नीचे खड़े रहने की अपेक्षा वह अधिक सुरक्षित होगा। पर ऊपर पहुँचकर लगा जैसे मेरे साथ एक मजाक किया गया हो। चट्टान के उस तरफ तट का खुला फैलाव था— लगभग सौ फुट का। कितने ही लोग वहाँ टहल रहे थे। ऊपर सड़क पर जाने के लिए वहाँ से रास्ता भी बना था। मन से डर निकल जाने से मुझे अपने आप काफी हल्का लगा और मैं चट्टान से नीचे कूद गया।

रात केप होटल का लॉन। अँधेरे में हिंद महासागर को काटती कुछ स्याह लकीरें— एक पौधे की टहनियाँ। नीचे सड़क पर टार्च जलाता-बुझाता एक आदमी। दक्षिण-पूर्व के क्षितिज में एक जहाज की मद्धिम-सी रोशनी।

सूर्योदय। हम आठ आदमी 'विवेकानंद चट्टान' पर बैठे थे। चट्टान तट से सौ-सवा-सौ गज आगे समुद्र के बीच जाकर है— वहाँ, जहाँ बंगाल की खाड़ी की भौगोलिक सीमा समाप्त होती है। मेरे अलावा कन्याकुमारी के तीन नवयुवक थे

जिनमें से एक ग्रेजुएट था। चार मल्लाह थे जो एक छोटी-सी मछुआ नाव में हमें वहाँ लाए थे। नाव क्या थी, रबड़ पेड़ के तीन तनों को साथ-साथ जोड़ लिया गया था, बस। नीचे की नुकीली चट्टानों और ऊपर की ऊँची-ऊँची लहरों से बचाते हुए मल्लाह नाव को उस तरफ ला रहे थे, तो मैंने आसमान की तरफ देखते हुए उतनी देर अपनी चेतना को स्थगित रखने की चेष्टा की थी, अपने अंदर के डर को दिखावटी उदासीनता से ढक रखना चाहा था। पर जब चट्टान पर पहुँच गए, तो डर मेरी टाँगों में उतर गया क्योंकि वहाँ बैठे हुए भी वे हल्के-हल्के काँप रही थीं।

ग्रेजुएट नवयुवक मुझे बता रहा था कि कन्याकुमारी की आठ हजार की आबादी में कम-से-कम चार-पाँच सौ शिक्षित नवयुवक ऐसे हैं जो बेकार हैं। उनमें से सौ के लगभग ग्रेजुएट हैं। उनका मुख्य धंधा है नौकरियों के लिए अर्ज़ियाँ देना और बैठकर आपस में बहस करना। वह खुद वहाँ फोटो-एल्बम बेचता था। दूसरे नवयुवक भी उसी तरह के छोटे-मोटे काम करते थे। "हम लोग सीपियों का गूदा खाते हैं और दार्शनिक सिद्धांतों पर बहस करते हैं", वह कह रहा था। "इस चट्टान से इतनी प्रेरणा तो हमें मिलती ही है।" मुझे दिखाने के लिए उसने वहीं से एक सीपी लेकर उसे तोड़ा और उसका गूदा मुँह में डाल लिया।

पानी और आकाश में तरह-तरह के रंग झिलमिलाकर, छोटे-छोटे द्वीपों की तरह समुद्र में बिखरी स्याह चट्टानों की ओट से सूर्य उदित हो रहा था। घाट पर बहुत-से लोग उगते सूर्य को अर्घ्य देने के लिए एकत्रित थे। घाट से थोड़ा हटकर गवर्नमेंट गेस्ट हाउस के बैरे सरकारी मेहमानों को सूर्योदय के समय की कॉफी पिला रहे थे। दो स्थानीय नवयुवतियाँ उन्हें अपनी टोकरियों से शंख और मालाएँ दिखला रही थीं। वे लोग दोनों काम साथ-साथ कर रहे थे— मालाओं का मोल-तोल और अपने बाइनाक्यूलर्ज से

सूर्य-दर्शन। मेरा साथी अब मुहल्ले-मुहल्ले के हिसाब से मुझे बेकारी के आँकड़े बता रहा था। बहुत-से कडल-काक हमारे आस-पास तैर रहे थे— वहाँ की बेकारी की समस्या और सूर्योदय की विशेषता, इन दोनों से बे-लाग।

कन्याकुमारी के मंदिर में पूजा की घंटियाँ बज रही थीं। भक्तों की एक मंडली अंदर जाने से पहले मंदिर की दीवार के पास रुककर उसे प्रणाम कर रही थी। सरकारी मेहमान गेस्ट-हाउस की तरफ लौट रहे थे। हमारी नाव और किनारे के बीच हल्की धूप में कई एक नावों के पाल और कडल-काकों के पंख एक-से चमक रहे थे। मैं अब भी आँखों से बीच की दूरी नाप रहा था और मन में बसों का टाइम-टेबल दोहरा रहा था। तीसरी बस नौ चालीस पर, चौथी...।

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. लेखक ने सूर्यास्त का मनोहारी दृश्य कहाँ से देखा?
   - (क) विवेकानंद चट्टान से
   - (ख) अरब सागर की ओर के ऊँचे टीले से
   - (ग) पच्छिमी क्षितिज से
   - (घ) सैंड हिल से
2. "मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं ही हूँ।" यह कथन लेखक की किस मनःस्थिति को दर्शाता है?
   - (क) मौन हो जाना
   - (ख) विस्मित हो जाना
   - (ग) भ्रमित हो जाना
   - (घ) आशंकित होना
3. "मैंने, सिर्फ मैंने उस चोटी को पहली बार सर किया हो।" इस कथन में कौन-सा भाव व्यक्त होता है?
   - (क) करुणा
   - (ख) विनम्रता

(ग) आत्मीयता

(घ) संतुष्टि

4. "शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति" वाक्य में वर्णन है—

(क) बलखाती लहरों का

(ख) सागर की व्यापकता का

(ग) सूर्यास्त के दृश्य का

(घ) पच्छिमी क्षितिज का

5. लेखक की कन्याकुमारी की यात्रा का वर्णन पढ़कर कहा जा सकता है कि—

(क) यह कन्याकुमारी के मौसम को प्रमुखता से वर्णित करता है।

(ख) यह यात्रा को जीवंत अनुभूतियों से जोड़ता है।

(ग) यह केवल यात्रा के रोमांच पर केंद्रित है।

(घ) इसमें कन्याकुमारी का काल्पनिक वर्णन मिलता है।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. यात्रियों का समूह सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए सैंड हिल की ओर बढ़ता जा रहा था लेकिन लेखक सैंड हिल पर पहुँचकर कुछ देर रुकने के बाद दूसरे टीले की ओर बढ़ने लगा। उसके ऐसा करने के पीछे मूल कारण क्या था?
2. लेखक ने कन्याकुमारी के स्थानीय लोगों के विषय में क्या-क्या बताया?
3. "अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया" इस पंक्ति में 'प्रयत्न की सार्थकता' से क्या अभिप्राय है?
4. यात्रा-वृत्तांत में आए उन दृश्यों के विषय में लिखिए जिनका अनुभव लेखक के लिए बिल्कुल नया था।
5. यात्रा-वृत्तांत से ऐसे दो अंश चुनकर लिखिए जिससे लेखक की मानसिक दृढ़ता और हार न मानने की प्रवृत्ति का पता चलता है।

विधा से संवाद

यात्रा का वृत्तांत

मोहन राकेश का 'आखिरी चट्टान तक' यात्रा-वृत्तांत केवल स्थान-चित्रण नहीं है बल्कि इसमें प्रकृति का सजीव रूपांकन, मानव-जीवन और समाज की झलक तथा आत्मानुभूति का गहरा समन्वय मिलता है।

(ग) आत्मीयता

(घ) संतुष्टि

4. "शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति" वाक्य में वर्णन है—

(क) बलखाती लहरों का

(ख) सागर की व्यापकता का

(ग) सूर्यास्त के दृश्य का

(घ) पच्छिमी क्षितिज का

5. लेखक की कन्याकुमारी की यात्रा का वर्णन पढ़कर कहा जा सकता है कि—

(क) यह कन्याकुमारी के मौसम को प्रमुखता से वर्णित करता है।

(ख) यह यात्रा को जीवंत अनुभूतियों से जोड़ता है।

(ग) यह केवल यात्रा के रोमांच पर केंद्रित है।

(घ) इसमें कन्याकुमारी का काल्पनिक वर्णन मिलता है।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. यात्रियों का समूह सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए सैंड हिल की ओर बढ़ता जा रहा था लेकिन लेखक सैंड हिल पर पहुँचकर कुछ देर रुकने के बाद दूसरे टीले की ओर बढ़ने लगा। उसके ऐसा करने के पीछे मूल कारण क्या था?
2. लेखक ने कन्याकुमारी के स्थानीय लोगों के विषय में क्या-क्या बताया?
3. "अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया" इस पंक्ति में 'प्रयत्न की सार्थकता' से क्या अभिप्राय है?
4. यात्रा-वृत्तांत में आए उन दृश्यों के विषय में लिखिए जिनका अनुभव लेखक के लिए बिल्कुल नया था।
5. यात्रा-वृत्तांत से ऐसे दो अंश चुनकर लिखिए जिससे लेखक की मानसिक दृढ़ता और हार न मानने की प्रवृत्ति का पता चलता है।

विधा से संवाद

यात्रा का वृत्तांत

मोहन राकेश का 'आखिरी चट्टान तक' यात्रा-वृत्तांत केवल स्थान-चित्रण नहीं है बल्कि इसमें प्रकृति का सजीव रूपांकन, मानव-जीवन और समाज की झलक तथा आत्मानुभूति का गहरा समन्वय मिलता है।

नीचे यात्रा-वृत्तांत के प्रमुख तत्वों/विशेषताओं को कुछ प्रमुख बिंदुओं के माध्यम से दर्शाया गया है। इन्हें पढ़कर यात्रा-वृत्तांत की रचना-प्रक्रिया को समझने का प्रयास कीजिए। अपनी किसी यात्रा को इन बिंदुओं के माध्यम से समझाइए।

1. दृश्य-वर्णन

- समुद्र, चट्टानें
- लहरों का चित्रण
- रंग, आकाश, रेत का जीवंत चित्रण

2. आत्मानुभूति व भावनाएँ

- विस्मय, रोमांच, भय, आत्म-संवेदना
- अपने अस्तित्व का बोध
- प्रकृति से संवाद

3. सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

- विवेकानंद चट्टान
- स्थानीय लोग, नवयुवक, शिक्षा
- धार्मिक परंपराएँ (मंदिर, अर्घ्य)

4. जीवन-दर्शन

- शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति
- आत्म-चेतना
- क्षणभंगुरता व उदासी

5. शैलीगत विशेषताएँ

- सजीव, प्रवाहपूर्ण भाषा
- दृश्यात्मकता
- रूपक, उपमा, प्रतीक
- रंगों का भावात्मक प्रयोग

6. रोमांच व संघर्ष

- लहरों से संघर्ष
- अँधेरे में भटकने का भय
- सुरक्षित लौटने की चिंता

विषयों से संवाद

यात्रा और खोज

संसार में बहुत से लोगों ने लंबी-लंबी यात्राएँ की हैं और अपनी यात्रा से अर्जित ज्ञान और अनुभव से समाज को समृद्ध किया है। पुस्तकालय एवं शिक्षक की सहायता से कुछ महत्वपूर्ण यात्रा-वृत्तांत और उनके लेखकों के विषय में जानकारी एकत्रित कीजिए और लिखिए। आपकी सहायता के लिए एक संकेत नीचे दिया गया है।

यात्रा-वृत्तांत	स्थान	रचनाकार
किन्नर देश में	हिमाचल प्रदेश में स्थित किन्नौर	राहुल सांकृत्यायन

मेरे देश की धरती

कन्याकुमारी भारत के तमिलनाडु राज्य में स्थित एक तटीय शहर है जिसके प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण पाठ में हुआ है।

1. भारत के समुद्री तट पर स्थित अन्य राज्यों के नाम तथा उनकी अवस्थिति को भारत के मानचित्र पर चिह्नित कीजिए।
2. यात्रा करना सभी को अच्छा लगता है। आपके मन में भी कुछ जगहों को देखने की इच्छा अवश्य हुई होगी। अपनी पसंद की उन जगहों की सूची नीचे दिए गए शीर्षकों के अनुसार बनाइए।

पर्यटन स्थल	राज्य जहाँ वह स्थित है	पर्वतीय/समुद्री/ मैदानी/अन्य क्षेत्र	जलवायु	घूमने का अनुकूल समय

3. कन्याकुमारी की भौगोलिक स्थिति, परिवेश, महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल एवं जन-जीवन का वर्णन करते हुए बताइए कि वहाँ की स्थिति आपके राज्य अथवा शहर/गाँव से किस प्रकार भिन्न है?
4. इस यात्रा-वृत्तांत में कन्याकुमारी में स्थित चट्टान को आखिरी चट्टान कहा गया है। पुस्तकालय या अन्य स्रोतों तथा समाज विज्ञान के अपने शिक्षक से बातचीत करके पता लगाइए कि वर्तमान समय में भारत का अंतिम छोर (दक्षिणतम बिंदु) किसे माना जाता है। उस स्थान के विषय में लिखिए।
5. इंटरनेट या अन्य किन्हीं माध्यमों से पता लगाइए कि आखिरी चट्टान में वर्णित कन्याकुमारी के विवेकानंद स्मारक चट्टान के स्वरूप में किस प्रकार का विस्तार हुआ है?
   (संकेत– *तिरुवल्लुवर की प्रतिमा इत्यादि*)

हस्तशिल्प कौशल

"दो स्थानीय नवयुवतियाँ उन्हें अपनी टोकरियों से शंख-मालाएँ दिखला रही थीं।"

उपर्युक्त पंक्ति में स्थानीय युवतियों द्वारा यात्रियों को दिखाए जाने वाली शंख-मालाओं का उल्लेख है। यह भारतीय हस्तकला उद्योग के एक पारंपरिक रूप को दर्शाता है, जहाँ स्थानीय कारीगर घरेलू स्तर पर उत्पाद बनाते और बेचते हैं। शिक्षक की सहायता से हस्तकला और कुटीर उद्योग के विषय में जानकारी एकत्रित कीजिए।

1. किसी भी स्थानीय शिल्पकार से बात करके निम्नलिखित बिंदुओं पर जानकारी संगृहीत कीजिए। यह कार्य दो-दो के जोड़े में कीजिए—
   - शिल्प का नाम
   - यह कार्य कब से कर रहे हैं?
   - इसका प्रशिक्षण कहाँ से लिया?
   - शिल्प निर्माण में घर की महिलाओं की साझेदारी
   - प्रयुक्त सामग्री, तकनीक, लागत और विपणन
   - औपचारिक संस्थागत प्रशिक्षण

2. डिजिटल खरीददारी और ई-वाणिज्य कुटीर उद्योग को बढ़ावा देने में किस प्रकार उपयोगी है?
3. हस्तशिल्प कला को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी इकट्ठा कीजिए और अपनी कक्षा में उस पर चर्चा कीजिए।

मिलकर चलें

आपकी कक्षा में कुछ विशेष आवश्यकता वाले साथी भी होंगे जिन्हें अपने दैनिक जीवन में अनेक तरह की समस्याओं से जूझना पड़ता होगा।

1. ऐसे साथियों को अगर किसी यात्रा पर जाना हो तो उनके समक्ष किस प्रकार की चुनौतियाँ आ सकती हैं?
2. उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कुछ ऐसे सुझाव दीजिए जो उनकी यात्रा को सहज बनाने में उपयोगी हों।
3. अपने द्वारा दिए गए सुझावों पर विद्यालय के विशेष शिक्षा शिक्षक के साथ चर्चा कीजिए और समझिए कि आपके द्वारा सुझाए गए उपाय कितने प्रभावी हैं तथा उनमें और क्या बदलाव किए जा सकते हैं?
4. प्राप्त सुझावों के विषय में कक्षा के विशेष आवश्यकता वाले साथियों से भी चर्चा कीजिए और उनकी राय जानने का प्रयास कीजिए।

सृजन

प्रकृति की ओर

क्या आपने कभी सूर्योदय और सूर्यास्त के समय का दृश्य देखा है? अगर नहीं तो एक दिन सुबह जल्दी उठकर उगते सूरज की लालिमा को देखिए और अस्त होते सूर्य के साथ शाम का भी आनंद लीजिए। अब इन दोनों दृश्यों की तुलना करते हुए अपने अनुभव का वर्णन कीजिए।

अनुभव की साझेदारी

विधा से संवाद के अंतर्गत आपने दिए गए बिंदुओं के माध्यम से यात्रा-वृत्तांत के प्रमुख तत्वों के विषय में जाना और समझा। इन तत्वों को ध्यान में रखकर आप भी अपने घूमे हुए किसी प्रिय स्थान के अनुभवों पर एक यात्रा-संस्मरण लिखिए।

चर्चा-परिचर्चा

- 'यात्राएँ हमें समृद्ध करती हैं' विषय पर कक्षा में एक परिचर्चा आयोजित कीजिए।
- "एक लहर मेरे पैरों को भिगो गई तो सहसा मुझे खतरे का एहसास हुआ।"
  यात्रा के दौरान कई बार ऐसी अप्रत्याशित चुनौतियाँ सामने आ जाती हैं। ऐसी किसी स्थिति का सामना करने के लिए व्यक्ति में किन गुणों का होना आवश्यक है? अपने सहपाठियों के साथ मिलकर इस विषय पर चर्चा कीजिए।
- यदि आपके पास भी कोई ऐसा अनुभव हो तो उसे अपने सहपाठियों के साथ साझा कीजिए।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

क्रिया-विशेषण की पहचान और रेखांकन

"समुद्र में पानी बढ़ रहा था। तट की चौड़ाई <u>धीरे-धीरे</u> कम होती जा रही थी।"

उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित पद 'धीरे-धीरे' कम होना क्रिया की विशेषता बता रहा है। यहाँ कम होने की क्रिया धीमी गति से हो रही है।

जिस प्रकार संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द 'विशेषण' कहलाते हैं, उसी प्रकार क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द 'क्रिया-विशेषण' कहलाते हैं। इस वाक्य में 'धीरे-धीरे' पद व्याकरणिक दृष्टि से क्रिया-विशेषण है।

नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उनमें क्रिया-विशेषण पदों की पहचान कीजिए तथा दिए गए उदाहरण के अनुसार लिखिए।

वाक्य

(क) बल खाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं।

(ख) यात्रियों की कितनी ही टोलियाँ उस दिशा में जा रही थीं।

(ग) मैं देर तक भारत के स्थल-भाग की आखिरी चट्टान को देखता रहा।

उदाहरण–

वाक्य	क्रिया-विशेषण	क्रिया, जिसकी विशेषता बताई जा रही है
मैं जल्दी-जल्दी चलने लगा।	जल्दी-जल्दी	'चलने लगा' क्रिया की विशेषता

आओ नए वाक्य बनाएँ

पाठ से चुनकर कुछ वाक्य नीचे तालिका में दिए गए हैं। इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों का अर्थ बताते हुए उनसे नए वाक्य बनाइए।

वाक्य
तीनों तरफ से **क्षितिज** तक पानी-पानी था।
पीछे दाईं तरफ दूर-दूर हटकर नारियलों के **झुरमुट** नजर आ रहे थे।
दूर तक एक रेत की लंबी **ढलान** थी।
पच्छिमी तट के साथ-साथ सूखी पहाड़ियों की एक **शृंखला** दूर तक चली गई थी।
सामने फैली रेत के कारण बहुत रूखी, **बीहड़** और वीरान लग रही थी।

गतिविधियाँ

1. कल्पना कीजिए कि आप अपने परिवार के साथ कहीं घूमने गए हैं। वहाँ आपकी भेंट एक ऐसे यात्री से होती है जिसे आपकी सहायता की आवश्यकता है लेकिन आप दोनों एक-दूसरे की भाषा से अपरिचित हैं। ऐसे में उस अनजान यात्री की सहायता आप कैसे करेंगे?
2. पधारो म्हारे देश

   अपने क्षेत्र के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों की एक सूची बनाइए और उनकी विशेषताओं को ध्यान में रखकर एक विवरणिका (ब्रॉशर) तैयार कीजिए।

भाषा संगम

"ऊँची-ऊँची लहरों से बचाते हुए मल्लाह **नाव** को ला रहे थे"

'नाव' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची आगे दी गई है।

नाव (हिंदी); नौ, नौका (संस्कृत); बेड़ी (पंजाबी); किश्ती, नाव (उर्दू); नाव (कश्मीरी); बेड़ी, किश्ती (सिंधी); होड़ी, नाव (मराठी); नाव, होडी (गुजराती); बहड़ी (कोंकणी); नाउ, नौका, डुङ्गा (नेपाली); नाओ, नौका (बांग्ला); नाओ (असमिया); हि (मणिपुरी); नौका, नाआ (ओड़िआ); पडव, नाव (तेलुगू); ओडम् (तमिल); तोणि (मलयालम); दोणि (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप 'नाव' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp

झरोखे से

आपने 'आखिरी चट्टान तक' रचना पढ़ी जो दक्षिण भारत की यात्रा पर आधारित है। आइए, अब पढ़ते हैं हिंदी के प्रसिद्ध रचनाकार निर्मल वर्मा का कुंभ मेले पर आधारित यात्रा-वृत्तांत का एक अंश—

प्रयाग : 1976

मुँह अँधेरे सीटी सुनाई देती है— घनी नींद में सुराख बनाती हुई। एक क्षण पता नहीं चलता, मैं कहाँ हूँ, किस जगह हूँ, कौन-सा समय है? आँखें खुलती हैं, तो ढेस-सा अँधेरा गटगट पीने लगती हैं, जैसे मुँह की प्यास आँखें बुझा रही हैं। याद आता है मेरे नीचे मेरा स्लीपिंग बैग है, मेरी यात्राओं और यातनाओं को ढोता हुआ। मैं जाग गया हूँ— लेकिन मेरी समूची देह गरमाई के घेरे में सो रही है।

कुछ देर बाद आँखें अँधेरे में टोहती हुई एक एक चीज पर ठहर जाती हैं— किताब, तिपाई, लालटेन, फूस का अधखुला दरवाजा, हवा में सरसराती छत। बाहर एक फुसफुसाता हुआ शोर है— रेंगती हुई आवाज़ों का रेला— जैसे हजारों पैर रेत को थपथपाते हुए चल रहे हैं। मैं हड़बड़ाकर अपना स्लीपिंग बैग समेटता हूँ। हाथों में रेत, मिट्टी, फूस के पत्तों को ठेलता हुआ दरवाजा खोलता हूँ, तो ठिठका-सा रह जाता।

चाँद दिखाई देता है। पूर्णिमा का पूरा चाँद, इलाहाबाद के किले पर ऊँघता हुआ। पिछली रात उसे गंगा के भीतर देखा था— एक सफेद परछाई, एक झिलमिला-सा स्वप्न— अब समूची रात की यात्रा में थका हुआ वह किले के माथे पर चिपका था, एक गोल, सफेद, मुरझाई बिंदी जिसे सिर्फ एक अँगुली से पोंछा जा सकता था।

"आप जाग गए?"

सच्चे महाराज का चौकीदार मुझे देखकर कुछ हैरान-सा हो जाता है। दरअसल जब से मैं आया हूँ, वह मुझ पर हैरान है। वह उन्नीस-बीस वर्ष का युवक, जो शायद बचपन में ही आश्रम में बस गया था। मैं जहाँ कहीं भी होता हूँ, वह अपनी फैली फटी-फटी आँखों से मुझे निहारता है— मैं क्या हूँ, यह वह नहीं समझ पाता, न मैं तीर्थयात्री लगता हूँ, न कल्पवासी— मैं उसे आधा हिप्पी, आधा जिप्सी-सा दिखाई देता हूँगा— जो अपने पाप-पुण्यों को एक डफल बैग में समेटकर कुंभ मेले में भटकता है।

"आप भी संगम जाएँगे?"

उसने संदेह से मेरी ओर देखा।

"हाँ, इसीलिए आया हूँ" मैंने कहा। "यह सीटी कौन बजा रहा है?"

"पुलिस" उसने कहा। "यात्रियों को रास्ता दिखाना पड़ता है— बेचारे अँधेरे में भटक जाते हैं।"

दबी ठिठुरती आवाज़ें, भजन की कुछ पंक्तियाँ ठंडी रेत और भूरी चाँदनी पर उठती हैं, किसी बूढ़े स्नानार्थी का काँपता स्वर हवा में बहुत दूर तक रिरियाता रहता है। मैं पंप को ढूँढ़ता हुआ आश्रम का चक्कर लगाता हूँ। लगता है सब सो रहे हैं। हवा में खाली झोपड़ों के दरवाजे सरसराते हैं, खुलते हैं, बंद हो जाते हैं। सब कुटियों से अलग सच्चे महाराज की यज्ञशाला दिखाई देती है— पीले फूल के मंडप, एक छत पर दूसरी छत— जैसे कोई जापानी पैगोड़ा चाँदनी में चमक रहा हो।

कुंभ मेले के वृत्तांत का यह अंश आपको रोचक लगा? अब इस यात्रा-वृत्तांत को इंटरनेट, पुस्तकालय से ढूँढ़कर पूरा पढ़िए।

खोजबीन

- इस यात्रा-वृत्तांत में उल्लिखित 'आखिरी चट्टान' को 'विवेकानंद चट्टान' के नाम से भी जाना जाता है। युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत के रूप में विवेकानंद के जन्मदिवस 12 जनवरी को भारत में 'राष्ट्रीय युवा दिवस' तथा 'राष्ट्रीय युवा सप्ताह' के रूप में मनाया जाता है। राष्ट्रीय युवा सप्ताह के एक हिस्से के रूप में भारत सरकार द्वारा प्रत्येक वर्ष 'राष्ट्रीय युवा महोत्सव' का आयोजन किया जाता है। विवेकानंद के जीवन, लेखन और सामाजिक कार्यों के विषय में पुस्तकालय और इंटरनेट से खोजकर पढ़िए और कक्षा में चर्चा कीजिए। कुछ लिंक नीचे दिए गए हैं।

स्वामी विवेकानंद— युवाओं के लिए सच्चे आदर्श और मार्गदर्शक

https://haryanarajbhavan.gov.in/hi/publication/

स्वामी विवेकानंद— आध्यात्मिक वैज्ञानिक : प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार

https://www.pib.gov.in

शब्द-संपदा

स्याह/सियाह	—	काला, श्याम
चट्टान	—	शिला
समाधिस्थ/समाधि	—	समाधि में स्थित, मनोयोग, तपस्या
चेतना	—	बुद्धि-विवेक से काम लेना, सावधान होना, होश में आना
क्षितिज	—	वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए दिखाई देते हैं, दृष्टि-सीमा
सिहरन	—	कंपन, सिहरने की क्रिया
पृष्ठभूमि	—	पहले की बातें, पीछे की भूमि या पीछे का दृश्य
झुरमुट	—	समूह, मंडली, पास-पास उगे पेड़ या झाड़ जिनकी डालियाँ मिलकर कुंज-सा बना रही हों
बीहड़	—	ऊबड़-खाबड़, विकट, विभक्त
मद्धिम/मद्धम	—	मध्यम, कम अच्छा, मंदा
महुआ/महुवा	—	एक प्रसिद्ध पेड़ जिसके फूल, फल ख़ाने और लकड़ी ईंधन तथा इमारती काम में आती है
सीपियाँ/सीपी/सीप	—	शंख, घोंघे आदि की जाति का एक जलचर प्राणी जिसका शरीर किश्तीनुमा दोहरे खोल के भीतर छिपा होता है और जिसके समुद्र में पाए जाने वाले प्रकार के अंदर मोती पैदा होता है, कड़ा खोल जिसके बटन आदि बनाते हैं
दार्शनिक	—	दर्शनशास्त्र का जानकार, तत्ववेत्ता
ओट	—	आड़, रोक, शरण, परदे के लिए बनाई गई दीवार
अर्घ्य	—	पूजनीय, पूजा में देने योग्य वस्तु, एक प्रकार का मधु
कडल-काक	—	पक्षियों की एक प्रजाति
बाइनाक्यूलर्ज/बाइनाक्यूलर	—	दूरबीन, द्विनेत्री
सैंड हिल	—	बालू का टीला
सुरमई	—	हल्का नीला, सुरमे के रंग का
सिर धुनना	—	शोक, पश्चाताप आदि के वेग से सिर पीटना, मातम करना, पछताना
बे-लाग	—	खरा, दो टूक (बात)

6

0901CH06

जगदीशचंद्र माथुर

जगदीशचंद्र माथुर का जन्म सन् 1917 में शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ और शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से। वे इंडियन सिविल सर्विस में भी चयनित हुए। बिहार राज्य के शिक्षा सचिव, आकाशवाणी के महानिदेशक, सूचना और प्रसारण मंत्रालय के संयुक्त सचिव आदि प्रशासनिक पदों पर कार्य करते हुए वे आजीवन साहित्य-सृजन में सक्रिय रहे।

प्रयाग में अध्ययन के दौरान ही जगदीशचंद्र माथुर ने लेखन आरंभ कर दिया था। उस समय की चर्चित पत्रिकाओं *चाँद* और *रूपाभ* आदि में उनके लिखे नाटक-एकांकी छपने लगे थे। हिंदी नाटक और रंगमंच के विकास में उनके एकांकी व नाटकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ऐतिहासिक नाटकों के साथ-साथ उन्होंने सामाजिक समस्याओं से जुड़े एकांकी-नाटक भी लिखे हैं। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं— *भोर का तारा, कोणार्क, ओ मेरे सपने, शारदीया, पहला राजा, दस तस्वीरें, जिन्होंने जीना जाना*। इनकी संपूर्ण रचनाएँ *जगदीशचंद्र माथुर रचनावली* (चार खंड) में संकलित हैं। *कोणार्क* उनका सर्वाधिक चर्चित और मंचित नाटक है। सन् 1978 में उनका निधन हो गया।

'रीढ़ की हड्डी' एकांकी भारतीय समाज में परंपरागत विवाह की व्यवस्था और स्त्रियों की शिक्षा को लेकर रूढ़िगत सोच पर चोट करती है। इस एकांकी की रचना 1939 में की गई। उस समय भारतीय समाज में शिक्षा और अन्य कार्यक्षेत्रों में स्त्रियों को समान अवसर नहीं मिलते थे। इस एकांकी के माध्यम से विवाह के लिए कम पढ़ी-लिखी लड़कियों की माँग, विवाह में लेन-देन जैसी सामाजिक कुरीतियों को उजागर किया गया है। एकांकी की मुख्य पात्र उमा पढ़ी-लिखी सशक्त महिला का प्रतिनिधित्व करती है।

रीढ़ की हड्डी

पात्र परिचय

उमा	—	*लड़की*
रामस्वरूप (बाबू)	—	*लड़की का पिता*
प्रेमा	—	*लड़की की माँ*
शंकर	—	*लड़का*
गोपालप्रसाद	—	*लड़के का पिता*
रतन	—	*रामस्वरूप का घरेलू सहायक*

(मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा। अंदर के दरवाजे से आते हुए जिन महाशय की पीठ नजर आ रही है, वह अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं। एक तख्त को पकड़े हुए पीछे की ओर चलते-चलते कमरे में आते हैं। तख्त का दूसरा सिरा रतन ने पकड़ रखा है।)

बाबू : अरे धीरे-धीरे चल।... अब तख्त को उधर मोड़ दे... उधर।... बस, बस। *(तख्त के रखे जाने की आवाज़ आती है।)*

रतन : बिछा दें, साहब?

बाबू : *(ज़रा तेज आवाज़ में)* और क्या करेगा? परमात्मा के यहाँ अक्ल बँट रही थी तो तू देर से पहुँचा था क्या?... बिछा दूँ साब!... और यह पसीना किसलिए बहाया है?

रतन : *(तख्त बिछाता है।)* ही-ही-ही।

बाबू : हँसता क्यों है?... अरे, हमने भी जवानी में कसरतें की हैं। कलसों से नहाता था लोटों की तरह। यह तख्त क्या चीज है?... उसे सीधा कर... यों... हाँ, बस। और सुन, बहू जी से दरी माँग ला, इसके ऊपर बिछाने के लिए।... चद्दर भी, कल जो कपड़े धोने वाले के यहाँ से आई है, वही।

(रतन जाता है। बाबू साहब इस बीच में मेजपोश ठीक करते हैं। एक झाड़न से गुलदस्ते को साफ करते हैं। कुर्सियों पर भी दो चार हाथ लगाते हैं। सहसा घर की मालकिन प्रेमा का आना। गंदुमी रंग, छोटा कद। चेहरे और आवाज़ से जाहिर होता है किसी काम में बहुत व्यस्त हैं। उनके पीछे-पीछे भीगी बिल्ली की तरह रतन आ रहा है— खाली हाथ। बाबू साहब (रामस्वरूप) दोनों की तरफ देखने लगते हैं।)

प्रेमा : मैं कहती हूँ तुम्हें इस वक्त धोती की क्या जरूरत पड़ गई! एक तो वैसे ही जल्दी-जल्दी में...

रामस्वरूप : धोती?

प्रेमा : हाँ, अभी तो बदलकर आए हो, और फिर न जाने किसलिए...

रामस्वरूप : लेकिन तुमसे धोती माँगी किसने?

प्रेमा : यही तो कह रहा था रतन।

रामस्वरूप : क्यों रतन, तेरे कानों में डाट लगी है क्या? मैंने कहा था– कपड़े धुलने वाले के यहाँ से जो चद्दर आई है, उसे माँग ला।... अब तेरे लिए दूसरा दिमाग कहाँ से लाऊँ। उल्लू कहीं का।

प्रेमा : अच्छा, जा, पूजावाली कोठरी में लकड़ी के बक्स के ऊपर धुले हुए कपड़े रखे हुए हैं न, उन्हीं में से एक चद्दर उठा ला।

रतन : और दरी?

प्रेमा : दरी यहीं तो रखी है, कोने में। यह पड़ी तो है।

रामस्वरूप : (*दरी उठाते हुए*) और बीबी जी के कमरे में से हारमोनियम उठा ला, और सितार भी!... जल्दी जा!

(*रतन जाता है। पति-पत्नी तख्त पर दरी बिछाते हैं।*)

प्रेमा : लेकिन वह तुम्हारी लाडली बेटी तो मुँह फुलाए पड़ी है।

रामस्वरूप : मुँह फुलाए?... और तुम उसकी माँ, किस मर्ज की दवा हो? जैसे-तैसे करके तो वे लोग पकड़ में आए हैं। अब तुम्हारी बेवकूफी से सारी मेहनत बेकार जाए तो मुझे दोष मत देना।

प्रेमा : तो मैं ही क्या करूँ? सारे जतन करके तो हार गई। तुम्हीं ने उसे पढ़ा-लिखाकर इतना सिर चढ़ा रखा है। मेरी समझ में तो ये पढ़ाई-लिखाई के जंजाल आते नहीं। अपना जमाना अच्छा था। 'आ-ई' पढ़ ली, गिनती सीख ली और बहुत हुआ तो 'स्त्री-सुबोधिनी' पढ़ ली। सच पूछो तो 'स्त्री-सुबोधिनी' में ऐसी-ऐसी बातें लिखी हैं— ऐसी बातें कि क्या तुम्हारी बी.ए., एम.ए. की पढ़ाई में होंगी। और आजकल के तो लच्छन ही अनोखे हैं।

रामस्वरूप : ग्रामोफोन बाजा होता है न?

प्रेमा : क्यों?

रामस्वरूप : दो तरह का होता है। एक तो आदमी का बनाया हुआ। उसे एक बार चलाकर

जब चाहे रोक लो। और दूसरा परमात्मा का बनाया हुआ। उसका रिकार्ड एक बार चढ़ा तो रुकने का नाम नहीं।

प्रेमा : हटो भी! तुम्हें ठठोली ही सूझती रहती है। यह तो होता नहीं कि उस अपनी उमा को राह पर लाते। अब देर ही कितनी रही है उन लोगों के आने में।

रामस्वरूप : तो हुआ क्या?

प्रेमा : तुम्हीं ने तो कहा था कि ज़रा ठीक-ठाक करके नीचे लाना। आजकल तो लड़की कितनी ही सुंदर हो, बिना टीम-टाम के भला कौन पूछता है? इसी मारे मैंने तो पौडर-वौडर उसके सामने रखा था। पर उसे तो इन चीजों से न जाने किस जनम की नफरत है। मेरा कहना था कि आँचल में मुँह लपेटकर लेट गई। भई, मैं तो बाज आई तुम्हारी इस लड़की से।

रामस्वरूप : न जाने कैसा इसका दिमाग है। वरना, आजकल की लड़कियों के सहारे तो पौडर का कारोबार चलता है।

प्रेमा : अरे, मैंने तो पहले ही कहा था। इंट्रेंस ही पास करा लेते— लड़की अपने हाथ रहती, और इतनी परेशानी न उठानी पड़ती। पर तुम तो...

रामस्वरूप : (*बात काटकर*) चुप, चुप!... (*दरवाजे में झाँकते हुए*) तुम्हें कतई अपनी जबान पर काबू नहीं है। कल ही यह बात बता दी थी कि उन सब लोगों के सामने जिक्र और ढंग से होगा। मगर तुम तो अभी से सब-कुछ उगले देती हो। उनके आने तक तो न जाने क्या हाल करोगी।

प्रेमा : अच्छा बाबा, मैं न बोलूँगी। जैसी तुम्हारी मर्जी हो, करना। बस मुझे तो मेरा काम बता दो।

रामस्वरूप : अच्छा तो उमा को जैसे हो तैयार कर लो! न सही पौडर। वैसे कौन बुरी है। पान लेकर भेज देना उसे। और, नाश्ता तो तैयार है न? (*रतन का आना*) आ गया रतन?... इधर ला, इधर। बाजा नीचे रख दे। चद्दर खोल।... पकड़ तो ज़रा उधर से। (*चद्दर बिछाते हैं।*)

प्रेमा : नाश्ता तो तैयार है। मिठाई तो वे लोग ज्यादा खाएँगे नहीं। कुछ नमकीन चीजें बना दी हैं। फल रखे ही हैं। चाय तैयार है, और टोस्ट भी। मगर हाँ, मक्खन? मक्खन तो आया ही नहीं।

रामस्वरूप : क्या कहा? मक्खन नहीं आया? तुम्हें भी किस वक्त याद आई है। जानती हो कि मक्खन वाले की दुकान दूर है, पर तुम्हें तो ठीक वक्त पर कोई बात

सूझती ही नहीं। अब बताओ, रतन मक्खन लाए कि यहाँ का काम करे। दफ्तर के चपरासी से कहा था आने के लिए, सो नखरों के मारे...

प्रेमा : यहाँ का काम कौन ज्यादा है? कमरा तो सब ठीक-ठाक है ही। बाजा-सितार आ ही गया। नाश्ता यहाँ बराबर वाले कमरे में 'ट्रे' में रखा हुआ है सो तुम्हें पकड़ा दूँगी। एकाध चीज खुद ले आना। इतनी देर में रतन मक्खन ले ही आएगा।... दो आदमी ही तो हैं!

रामस्वरूप : हाँ एक तो बाबू गोपालप्रसाद और दूसरा खुद लड़का है। देखो, उमा से कह देना कि ज़रा करीने से आए। ये लोग ज़रा ऐसे ही हैं, गुस्सा तो मुझे बहुत आता है इनके दकियानूसी खयालों पर। खुद पढ़े-लिखे हैं, वकील हैं, सभा-सोसाइटियों में जाते हैं, मगर लड़की चाहते हैं ऐसी कि ज्यादा पढ़ी-लिखी न हो।

प्रेमा : और लड़का?

रामस्वरूप : बताया तो था तुम्हें। बाप सेर है तो लड़का सवा सेर। बी.एससी. के बाद लखनऊ में ही तो पढ़ता है मेडिकल कॉलेज में। कहता है कि शादी का सवाल दूसरा है, तालीम का दूसरा। क्या करूँ, मजबूरी है। मतलब अपना है, वरना इन लड़कों और इनके बापों को ऐसी कोरी-कोरी सुनाता कि ये भी...

रतन : *(जो अब तक दरवाजे के पास चुपचाप खड़ा हुआ था, जल्दी-जल्दी)* बाबू जी, बाबू जी!

रामस्वरूप : क्या है?

रतन : कोई आते हैं।

रामस्वरूप : *(दरवाजे से बाहर झाँककर जल्दी मुँह अंदर करते हुए)* अरे, ऐ प्रेमा, वे आ भी गए। *(रतन पर नजर पड़ते ही)* और तू यहीं खड़ा है! गया नहीं मक्खन लाने?... सब चौपट कर दिया। अरे उधर से नहीं, अंदर के दरवाजे से जा *(रतन अंदर आता है।)* ... और तुम जल्दी करो, प्रेमा! उमा को

समझा देना, थोड़ा-सा गा देगी। *(प्रेमा जल्दी से अंदर की तरफ जाती है। उसकी धोती जमीन पर रखे हुए बाजे से अटक जाती है।)*

प्रेमा : उँह! यह बाजा, वह नीचे ही रख गया है।

रामस्वरूप : तुम जाओ, मैं रखे देता हूँ।... जल्दी। *(प्रेमा जाती है। बाबू रामस्वरूप बाजा उठाकर रखते हैं। किवाड़ों पर दस्तक।)*

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ। आइए, आइए!... हँ-हँ-हँ।

(बाबू गोपालप्रसाद और उनके लड़के शंकर का आना। आँखों से लोक चतुराई टपकती है। आवाज़ से मालूम होता है कि काफी अनुभवी और फितरती महाशय हैं। उनका लड़का कुछ खीस निपोरने वाले नौजवानों में से है। आवाज़ पतली है और खिसियाहट-भरी। झुकी कमर इनकी खासियत है।)

रामस्वरूप : *(अपने दोनों हाथ मलते हुए)* हँ-हँ, इधर तशरीफ़ लाइए— इधर। *(बाबू गोपालप्रसाद बैठते हैं, मगर बेंत गिर पड़ता है।)*

रामस्वरूप : यह बेंत!... लाइए मुझे दीजिए। *(कोने में रख देते हैं। सब बैठते हैं।)* हँ-हँ!... मकान ढूँढ़ने में कुछ तकलीफ तो नहीं हुई?

गोपालप्रसाद : *(खँखारकर)* नहीं। ताँगेवाला जानता था।... और फिर हमें तो यहाँ आना ही था। रास्ता मिलता कैसे नहीं?

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ। यह तो आपकी बड़ी मेहरबानी है। मैंने आपको तकलीफ तो दी...

गोपालप्रसाद : अरे नहीं साहब! जैसा मेरा काम, वैसा आपका काम। आखिर लड़के की शादी तो करनी ही है। बल्कि यों कहिए कि मैंने आपके लिए खासी परेशानी कर दी।

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ! यह लीजिए, आप तो मुझे काँटों में घसीटने लगे। हम तो आपके— हँ-हँ...सेवक हैं। हँ-हँ! *(थोड़ी देर बाद लड़के की तरफ मुखातिब होकर)* और कहिए, शंकर बाबू, कितने दिनों की और छुट्टियाँ हैं?

शंकर : जी, कॉलेज की तो छुट्टियाँ नहीं हैं। 'वीक-एंड' में चला आया था।

रामस्वरूप : तो आपके कोर्स खत्म होने में तो अब साल-भर रहा होगा?

शंकर : जी, यही कोई साल-दो-साल।

रामस्वरूप : साल-दो-साल?

शंकर : हँ-हँ-हँ!... जी, एकाध साल का 'मार्जिन' रखता हूँ।

गोपालप्रसाद : बात यह है साहब कि यह शंकर एक साल बीमार हो गया था। क्या बताएँ, इन लोगों को इसी उम्र में सारी बीमारियाँ सताती हैं। एक हमारा ज़माना था

कि स्कूल से आकर दर्जनों कचौड़ियाँ उड़ा जाते थे, मगर फिर जो खाना खाने बैठते तो वैसी-की-वैसी ही भूख!

रामस्वरूप : कचौड़ियाँ भी तो उस जमाने में पैसे की दो आती थीं।

गोपालप्रसाद : जनाब, यह हाल था कि चार पैसे में ढेर-सी बालाई आती थी। और अकेले दो आने की हजम करने की ताकत थी, अकेले! और अब तो बहुतेरे खेल वगैरह भी होते हैं, स्कूलों में। तब न कोई वालीबॉल जानता था, न टेनिस, न बैडमिंटन। बस कभी हॉकी या कभी क्रिकेट कुछ लोग खेला करते थे। मगर क्या मजाल कि कोई कह जाए कि यह लड़का कमजोर है। (*शंकर और रामस्वरूप खीस निपोरते हैं।*)

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ! उस जमाने की बात ही दूसरी थी। हँ-हँ!

गोपालप्रसाद : (*जोशीली आवाज़ में*) और पढ़ाई का यह हाल था कि एक बार कुर्सी पर बैठे कि बारह घंटे की 'सिटिंग' हो गई, बारह घंटे! जनाब, मैं सच कहता हूँ कि उस जमाने का मैट्रिक भी वह अंग्रेजी लिखता था फर्राटे की, कि आजकल के एम.ए. भी मुकाबिला नहीं कर सकते।

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ! यह तो है ही।

गोपालप्रसाद : माफ कीजिएगा बाबू रामस्वरूप, उस जमाने की जब याद आती है, अपने को जब्त करना मुश्किल हो जाता है।

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ!... जी हाँ वह तो रंगीन जमाना था, रंगीन जमाना। हँ-हँ-हँ! (*शंकर भी ही-ही करता है।*)

गोपालप्रसाद : (*एक साथ अपनी आवाज़ और तरीका बदलते हुए*) अच्छा तो साहब, फिर 'बिजनेस' की बातचीत हो जाए।

रामस्वरूप : (*चौंककर*) 'बिजनेस'?— बिज... (*समझकर*) ओह!... अच्छा, अच्छा। लेकिन ज़रा नाश्ता तो कर लीजिए। (*उठते हैं।*)

गोपालप्रसाद : यह सब आप क्या तकल्लुफ़ करते हैं!

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ! तकल्लुफ़ किस बात का! हँ-हँ-हँ! यह तो मेरी बड़ी तकदीर है कि आप मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए, वरना मैं किस काबिल हूँ। हँ-हँ!... माफ कीजिएगा ज़रा अभी हाजिर हुआ। (*अंदर जाते हैं।*)

गोपालप्रसाद : (*थोड़ी देर बाद दबी आवाज़ में*) आदमी तो भला है। मकान-वकान से हैसियत भी बुरी नहीं मालूम होती। पता चले, लड़की कैसी है।

शंकर : जी... *(कुछ खँखारकर इधर-उधर देखता है।)*

गोपालप्रसाद : क्यों, क्या हुआ?

शंकर : कुछ नहीं।

गोपालप्रसाद : झुककर क्यों बैठते हो? ब्याह तय करने आए हो, कमर सीधी करके बैठो। तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर की 'बैकबोन'... *(इतने में बाबू रामस्वरूप आते हैं, हाथ में चाय की ट्रे लिए हुए। मेज पर रख देते हैं)*

गोपालप्रसाद : आखिर आप माने नहीं।

रामस्वरूप : *(चाय प्याले में डालते हुए)* हँ-हँ-हँ! आपको विलायती चाय पसंद है या हिंदुस्तानी?

गोपालप्रसाद : नहीं-नहीं साहब, मुझे आधा दूध और आधी चाय दीजिए। ज़रा चीनी भी ज्यादा डालिएगा। मुझे तो भई यह नया फैशन पसंद नहीं। एक तो वैसे ही चाय में पानी काफी होता है, फिर चीनी भी नाम के लिए डाली जाए तो जायका क्या रहेगा?

रामस्वरूप : हँ-हँ, कहते तो आप सही हैं।
(प्याला पकड़ाते हैं।)

शंकर : *(खँखारकर)* सुना है, सरकार अब ज्यादा चीनी लेने वालों पर 'टैक्स' लगाएगी।

गोपालप्रसाद : *(चाय पीते हुए)* हूँ। सरकार जो चाहे सो कर ले; पर अगर आमदनी करनी है तो सरकार को बस एक ही टैक्स लगाना चाहिए।

रामस्वरूप : *(शंकर को प्याला पकड़ाते हुए)* वह क्या?

गोपालप्रसाद : खूबसूरती पर टैक्स! *(रामस्वरूप और शंकर हँस पड़ते हैं।)* मजाक नहीं साहब, यह ऐसा टैक्स है जनाब कि देने वाले चूँ भी न करेंगे। बस शर्त यह है कि हर एक औरत पर यह छोड़ दिया जाए कि वह अपनी खूबसूरती के 'स्टैंडर्ड' के माफ़िक अपने ऊपर टैक्स तय कर ले। फिर देखिए ...

रामस्वरूप : *(जोर से हँसते हुए)* वाह-वाह! खूब सोचा आपने! वाकई आजकल खूबसूरती का सवाल भी बेढब हो गया है। हम लोगों के जमाने में तो यह कभी उठता भी न था। *(तश्तरी गोपालप्रसाद की तरफ बढ़ाते हैं)* लीजिए।

गोपालप्रसाद : *(समोसा उठाते हुए)* कभी नहीं साहब, कभी नहीं।

रामस्वरूप : *(शंकर की तरफ मुखातिब होकर)* आपका क्या खयाल है, शंकर बाबू?

शंकर : किस मामले में?

रामस्वरूप : यही कि शादी तय करने में खूबसूरती का हिस्सा कितना होना चाहिए।

गोपालप्रसाद : *(बीच में ही)* यह बात दूसरी है बाबू रामस्वरूप, मैंने आपसे पहले भी कहा था, लड़की का खूबसूरत होना निहायत जरूरी है। कैसे भी हो, चाहे पाउडर वगैरह लगाए, चाहे वैसे ही। बात यह है कि हम-आप मान भी जाएँ, मगर घर की औरतें तो राजी नहीं होतीं। आपकी लड़की तो ठीक है?

रामस्वरूप : जी हाँ, वह तो अभी आप देख लीजिएगा।

गोपालप्रसाद : देखना क्या। जब आपसे इतनी बातचीत हो चुकी है, तब तो यह रस्म ही समझिए।

रामस्वरूप : हँ-हँ, यह तो आपका मेरे ऊपर भारी एहसान है। हँ-हँ!

गोपालप्रसाद : और जायचा (जन्मपत्र) तो मिल ही गया होगा?

रामस्वरूप : जी, जायचे का मिलना क्या मुश्किल बात है। ठाकुर जी के चरणों में रख दिया। बस, खुद-ब-खुद मिला हुआ समझिए।

गोपालप्रसाद : यह ठीक कहा आपने, बिल्कुल ठीक। *(थोड़ी देर रुककर)* लेकिन हाँ, यह जो मेरे कानों में भनक पड़ी है, यह तो गलत है न?

रामस्वरूप : *(चौंककर)* क्या?

गोपालप्रसाद : यह पढ़ाई-लिखाई के बारे में!... जी हाँ, साफ बात है साहब, हमें ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहिए। मेम साहब तो रखनी नहीं, कौन भुगतेगा उसके नखरों को। बस हद से हद मैट्रिक-पास होनी चाहिए... क्यों, शंकर?

शंकर : जी हाँ, कोई नौकरी तो करानी नहीं।

रामस्वरूप : नौकरी का तो कोई सवाल ही नहीं उठता।

गोपालप्रसाद : और क्या साहब! देखिए, कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि जब आपने अपने लड़कों को बी.ए., एम.ए. तक पढ़ाया है तब उनकी बहुएँ भी ग्रेजुएट लीजिए। भला पूछिए इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है। अरे, मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना। अगर औरतें भी वही करने लगीं, अंग्रेजी अखबार पढ़ने लगीं और 'पालिटिक्स' वगैरह पर बहस करने लगीं तब तो हो चुकी गृहस्थी। जनाब, मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं; शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।

रामस्वरूप : जी हाँ, और मर्द के दाढ़ी होती है, औरत के नहीं...! हँ... हँ... हँ...!
(शंकर भी हँसता है, मगर गोपालप्रसाद गंभीर हो जाते हैं।)

गोपालप्रसाद : हाँ, हाँ। वह भी सही है। कहने का मतलब यह है कि कुछ बातें दुनिया में ऐसी हैं जो सिर्फ मर्दों के लिए हैं। और ऊँची तालीम भी ऐसी चीजों में से एक है।

रामस्वरूप : *(शंकर से)* चाय और लीजिए।

शंकर : धन्यवाद। पी चुका।

रामस्वरूप : *(गोपालप्रसाद से)* आप?

गोपालप्रसाद : बस साहब, अब तो खत्म ही कीजिए।

रामस्वरूप : आपने तो कुछ खाया ही नहीं। चाय के साथ 'टोस्ट' नहीं थे, क्या बताएँ, वह मक्खन...

गोपालप्रसाद : नाश्ता ही तो करना था साहब, कोई पेट तो भरना था नहीं। और फिर टोस्ट-वोस्ट मैं खाता भी नहीं।

रामस्वरूप : हँ-हँ! *(मेज को एक तरफ सरका देते हैं। फिर अंदर के दरवाजे की तरफ मुँह कर ज़रा जोर से)* अरे, ज़रा पान भिजवा देना...।

(पान की तश्तरी हाथों में लिए उमा आती है। सादगी के कपड़े। गर्दन झुकी हुई। बाबू गोपालप्रसाद आँखें गड़ाकर और शंकर आँखें छिपाकर उसे ताक रहे हैं।)

रामस्वरूप : हँ-हँ!... यही, हँ-हँ, आपकी लड़की है। लाओ बेटी, पान मुझे दो।

(उमा पान की तश्तरी अपने पिता को देती है। उस समय उसका चेहरा ऊपर को उठ जाता है और नाक पर रखा हुआ सोने की रिम वाला चश्मा दीखता है। बाप-बेटे चौंक उठते हैं।)

गोपालप्रसाद और शंकर : (*एक साथ*) चश्मा!!!

रामस्वरूप : (*ज़रा सकपकाकर*) जी, वह तो... वह पिछले महीने में इसकी आँखें दुखनी आ गई थीं, सो कुछ दिनों के लिए चश्मा लगाना पड़ रहा है।

गोपालप्रसाद : पढ़ाई-वढ़ाई की वजह से तो नहीं है कुछ?

रामस्वरूप : नहीं साहब, वह तो मैंने अर्ज़ किया न।

गोपालप्रसाद : हूँ... (*संतुष्ट होकर कुछ कोमल स्वर में*) बैठो, बेटी।

रामस्वरूप : वहाँ बैठ जाओ उमा, उस तख्त पर, अपने बाजे-वाजे के पास। (*उमा बैठती है।*)

गोपालप्रसाद : चाल में तो कुछ खराबी है नहीं। चेहरे पर भी छवि है।... हाँ कुछ गाना-बजाना सीखा है?

रामस्वरूप : जी हाँ, सितार भी और बाजा भी। सुनाओ तो उमा एकाध गीत सितार के साथ।

(*उमा सितार उठाती है। थोड़ी देर बाद मीरा का मशहूर गीत 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई' गाना शुरू कर देती है। स्वर से जाहिर है कि गाने का अच्छा ज्ञान है। उसके स्वर में तल्लीनता आ जाती है, यहाँ तक कि उसका मस्तक उठ जाता है। उसकी आँखें शंकर की झेंपती-सी आँखों से मिल जाती हैं और वह गाते-गाते एक साथ रुक जाती है।*)

रामस्वरूप : क्यों, क्या हुआ? गाने को पूरा करो उमा।

गोपालप्रसाद : नहीं-नहीं साहब, काफी है। लड़की आपकी अच्छा गाती है। (*उमा सितार रखकर अंदर जाने को बढ़ती है।*)

गोपालप्रसाद : अभी ठहरो, बेटी!

रामस्वरूप : थोड़ा और बैठी रहो, उमा! (*उमा बैठती है।*)

गोपालप्रसाद : (*उमा से*) तो तुमने पेंटिंग-वेंटिंग भी सीखी है?

उमा : (चुप)

रामस्वरूप : हाँ, वह तो मैं आपको बताना भूल ही गया। यह जो तसवीर टँगी हुई है, कुत्ते वाली, इसी ने खींची है। और वह उस दीवार पर भी।

गोपालप्रसाद : हूँ! यह तो बहुत अच्छा है। और सिलाई वगैरह?

रामस्वरूप : सिलाई तो सारे घर की इसी के जिम्मे रहती है, यहाँ तक कि मेरी कमीजें भी। हँ-हँ-हँ!

गोपालप्रसाद : ठीक!... लेकिन, हाँ बेटी, तुमने कुछ इनाम-विनाम भी जीते थे?
(उमा चुप। रामस्वरूप इशारे के लिए खाँसते हैं लेकिन उमा चुप है, उसी तरह गर्दन झुकाए। गोपालप्रसाद अधीर हो उठते हैं और रामस्वरूप सकपकाते हैं।)

रामस्वरूप : जवाब दो, उमा। *(गोपालप्रसाद से)* हँ-हँ, ज़रा शरमाती है। इनाम तो इसने...

गोपालप्रसाद : *(ज़रा रूखी आवाज़ में)* ज़रा मुँह तो खोलना चाहिए।

रामस्वरूप : उमा, देखो, आप क्या कह रहे हैं। जवाब दो न।

उमा : *(हल्की लेकिन मजबूत आवाज़ में)* क्या जवाब दूँ, बाबू जी! जब कुर्सी-मेज बिकती है तब दुकानदार कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीदार को दिखला देता है। पसंद आ गई तो अच्छा है, वरना...

रामस्वरूप : *(चौंककर खड़े हो जाते हैं।)* उमा, उमा!

उमा : अब मुझे कह लेने दीजिए, बाबूजी।... ये जो महाशय मेरे खरीदार बनकर आए हैं, इनसे ज़रा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होता? क्या उनके चोट नहीं लगती? क्या वे बेबस भेड़-बकरियाँ हैं, जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख-भालकर खरीदते हैं?

गोपालप्रसाद : *(ताव में आकर)* बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?

उमा : *(तेज आवाज़ में)* जी हाँ, और हमारी बेइज्जती नहीं होती जो आप इतनी देर से नाप-तोल कर रहे हैं? और ज़रा अपने इन साहबजादे से पूछिए कि अभी पिछली फरवरी में ये लड़कियों के होस्टल के इर्द-गिर्द क्यों घूम रहे थे, और वहाँ से कैसे भगाए गए थे!

शंकर : बाबूजी, चलिए।

गोपालप्रसाद : लड़कियों के होस्टल में?... क्या तुम कालेज में पढ़ी हो?
(रामस्वरूप चुप)

उमा : जी हाँ, मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी.ए. पास किया है। कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की, और न आपके पुत्र की तरह ताक-झाँककर कायरता दिखाई है। मुझे अपनी इज्जत— अपने मान का खयाल तो है। लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह अपना मुँह छिपाकर भागे थे।

रामस्वरूप : उमा, उमा!!

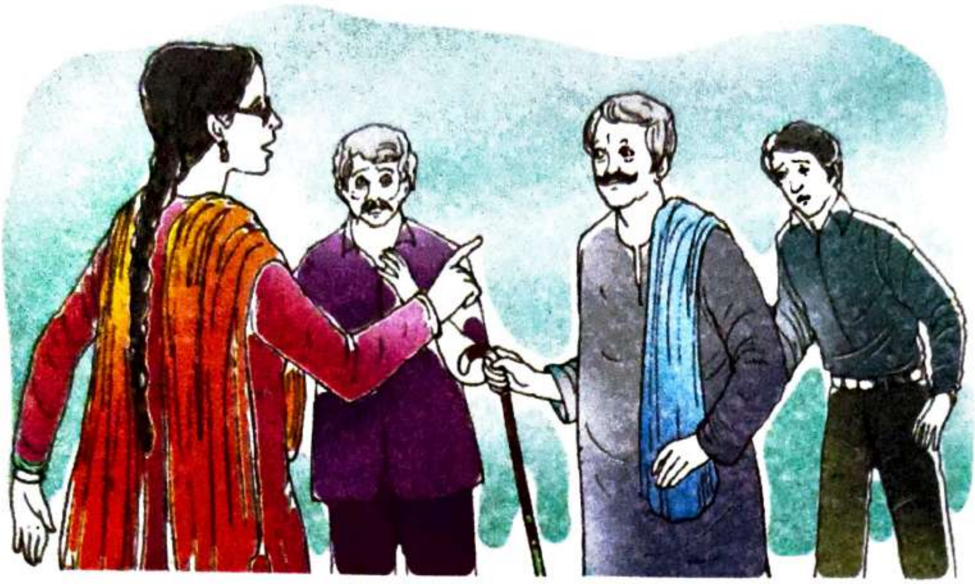

गोपालप्रसाद : (*खड़े होकर गुस्से में*) बस हो चुका। बाबू रामस्वरूप, आपने मेरे साथ दगा किया। आपकी लड़की बी.ए. पास है और आपने मुझको कहा था कि सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है। लाइए, मेरी छड़ी कहाँ है। मैं चलता हूँ। (*छड़ी ढूँढ़कर उठाते हैं।*) बी.ए. पास! उफ्फोह! गजब हो जाता! झूठ का भी कुछ ठिकाना है। आओ, बेटे, चलें।

(*दरवाजे की ओर बढ़ते हैं।*)

उमा : जी हाँ, जाइए, जरूर चले जाइए! लेकिन घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं— यानी बैकबोन, बैकबोन!

(*बाबू गोपालप्रसाद के चेहरे पर बेबसी का गुस्सा है और उनके लड़के के रुलासापन। दोनों बाहर चले जाते हैं। बाबू रामस्वरूप कुर्सी पर धम से बैठ जाते हैं। उमा सहसा चुप हो जाती है। लेकिन उसकी खामोशी सिसकियों में तबदील हो जाती है।*)

(*प्रेमा का घबराहट की हालत में आना।*)

प्रेमा : उमा, उमा... रो रही है?

(*यह सुनकर रामस्वरूप खड़े होते हैं। रतन आता है।*)

रतन : बाबूजी, मक्खन!

(*सब रतन की तरफ देखते हैं और परदा गिरता है।*)

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' का शीर्षक किसका प्रतीक है?
   - (क) शरीर के एक आवश्यक अंग का
   - (ख) व्यक्ति की ऊँचाई के आधार का
   - (ग) आत्म-सम्मान और नैतिक दृढ़ता का
   - (घ) शारीरिक शक्ति और परिश्रम का
2. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में किस पर व्यंग्य किया गया है?
   - (क) पात्रों की निर्धनता और लाचारी पर
   - (ख) पात्रों की भाषा और हास्य पर
   - (ग) विवाह और अशिक्षा पर
   - (घ) समाज की अनुचित मान्यताओं पर
3. "घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं" यह वाक्य शंकर की किस छवि को उजागर करता है?
   - (क) नैतिक साहस की कमी और चारित्रिक दुर्बलता
   - (ख) अनुभव और विवेक की कमी
   - (ग) चारित्रिक दृढ़ता और शारीरिक दुर्बलता
   - (घ) उदासीनता और एकाकीपन
4. "जी हाँ, मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी.ए. पास किया है।" उमा की दृष्टि में शिक्षा प्राप्त करने का सही अर्थ है?
   - (क) बड़ी-बड़ी डिग्री प्राप्त करना
   - (ख) कॉलेज में पढ़ना और नौकरी पाना
   - (ग) माता-पिता और पति को प्रसन्न रखना
   - (घ) आत्मबल और स्वतंत्र विचार रखना

5. गोपालप्रसाद और रामस्वरूप में क्या-क्या समानताएँ हैं?
   (क) दोनों प्रगतिशील हैं और रूढ़ियों को नकारते हैं।
   (ख) दोनों दिखावे और परंपरा के शिकार हैं।
   (ग) दोनों शिक्षा और रूढ़ियों के समर्थक हैं।
   (घ) दोनों संगीत और स्वादिष्ट भोजन के प्रेमी हैं।

6. इस एकांकी की संवाद शैली मुख्यतः कैसी है?
   (क) औपचारिक और शुष्क
   (ख) स्वाभाविक और व्यंग्यपूर्ण
   (ग) काव्यात्मक और प्रश्नात्मक
   (घ) भावुक और संक्षिप्त

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. बाबू रामस्वरूप समाज में आधुनिक व्यवहार का दिखावा करते हैं, जबकि उनके विचार रूढ़िवादी हैं। इस अंतर्द्वंद्व के उदाहरण एकांकी में से खोजकर लिखिए।
   (संकेत– उमा के साथ उनका व्यवहार, विवाह के लिए दिखावे करना किंतु इन प्रयासों को छिपाने की चेष्टा करना आदि।)
2. 'रीढ़ की हड्डी' का संदर्भ दो अलग-अलग पात्रों के लिए भिन्न-भिन्न अर्थों में आया है, उनकी पहचान कीजिए और लिखिए।
3. "मेरी समझ में तो ये पढ़ाई-लिखाई के जंजाल आते नहीं।" प्रेमा की इस सोच से उस समय की स्त्री-शिक्षा की स्थिति के विषय में क्या पता चलता है?
4. लेखक ने 'रीढ़ की हड्डी' शब्द को एकांकी के शीर्षक के रूप में क्यों चुना होगा? यदि आप इस एकांकी का दूसरा शीर्षक रखना चाहें, जो इसकी मुख्य बात को दर्शाए, तो वह क्या होगा और क्यों?

विधा से संवाद

एकांकी की पड़ताल

आप जानते ही हैं कि 'रीढ़ की हड्डी' एक एकांकी है। एकांकी में भी एक कहानी ही होती है, लेकिन एकांकी की रूपरेखा कहानी से थोड़ी अलग होती है।

आगे 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी से संबंधित कुछ बिंदु दिए गए हैं। एकांकी में से इन बिंदुओं से संबंधित एक-एक उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।

1. एकांकी का नाम
2. लेखक का नाम
3. पात्र
4. परिवेश/देश-काल
5. रंग-निर्देश/मंच-निर्देश
6. संवाद-निर्देश
7. समस्या
8. संवाद
9. मुख्य विचार
10. समाधान/परिणाम

रंग-निर्देश

एकांकी की शुरुआत कुछ इस तरह से होती है—

(मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा। अंदर के दरवाजे से आते हुए जिन महाशय की पीठ नजर आ रही है, वे अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं। एक तख्त को पकड़े हुए पीछे की ओर चलते-चलते कमरे में आते हैं। तख्त का दूसरा सिरा रतन ने पकड़ रखा है।)

इस रंग-निर्देश द्वारा एकांकी की पृष्ठभूमि की रचना की गई है, जहाँ से एकांकी आगे बढ़ती है। एकांकी में स्थान, परिवेश, सामाजिक स्थिति आदि के विषय में पाठक और निर्देशक को सटीक जानकारी देने के लिए एकांकीकार/नाटककार प्रायः ऐसे रंग-निर्देशों का प्रयोग करता है। मंचन के समय निर्देशक के पास यह छूट होती है कि वह देश-काल और वातावरण के अनुसार मंच-सज्जा, प्रकाश, पात्रों के वस्त्र आदि में आवश्यक परिवर्तन कर सकता है।

अब इस एकांकी को कक्षा में प्रस्तुत करने का समय है। अपने समूह के साथ मिलकर एकांकी के किसी एक दृश्य का चुनाव कीजिए। उसकी तैयारी कीजिए और कक्षा में उसे प्रस्तुत कीजिए।

(संकेत– (i) समूह बनाइए और उचित हाव-भाव द्वारा उस दृश्य का अभिनय कीजिए। (ii) आप अपनी आवश्यकता के अनुसार दिए गए रंग-निर्देश में परिवर्तन भी कर सकते हैं।)

मेरी टिप्पणी

"जी हाँ, जाइए, जरूर चले जाइए। लेकिन घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं— यानी बैकबोन, बैकबोन!"

उपर्युक्त वाक्य को ध्यान से पढ़िए। यह वाक्य उमा द्वारा शंकर पर की गई एक टिप्पणी है जो एक व्यंग्य की तरह है।

'टिप्पणी' किसी व्यक्ति, विषय या घटना पर व्यक्त की गई एक संक्षिप्त राय, स्पष्टीकरण या विचार होता है। यह किसी के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी देने, किसी मुद्दे पर नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करने या किसी संदर्भ पर विचारों की अभिव्यक्ति होती है, जो पाठक को उस विषय पर एक नया दृष्टिकोण देती है।

टिप्पणी की कुछ विशेषताएँ हैं—

- संक्षिप्तता – इसमें विषय के मुख्य बिंदुओं को कम शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है।
- स्पष्टता – भाषा सरल, स्पष्ट और तर्कपूर्ण होनी चाहिए।
- व्यक्तिपरकता – इसमें व्यक्ति के विचारों और सुझावों को शामिल किया जाता है।

अब आप उमा द्वारा शंकर के लिए कही गई उपर्युक्त बात पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए इस पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

विषयों से संवाद

तुलना और विचार

1. "गोपालप्रसाद : भला पूछिए इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है।"

   एकांकी में उन पंक्तियों को खोजिए जहाँ एकांकी के पात्रों के व्यवहार में लड़कियों तथा लड़कों के प्रति भिन्न-भिन्न दृष्टि अभिव्यक्त हुई है। अब यह भी लिखिए कि आप इस भिन्नता को किस प्रकार समझते हैं?

2. "मुझे अपनी इज्जत, अपने मान का खयाल तो है। लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह अपना मुँह छिपाकर भागे थे।"

   एकांकी में उमा अपने अधिकार और विचार खुलकर व्यक्त करती है। इससे उमा के व्यक्तित्व के विषय में क्या-क्या पता चलता है? आपके विचार से उसके व्यक्तित्व में ये विशेषताएँ कैसे आई होंगी?

   (संकेत– शिक्षा, परिवार का व्यवहार आदि)

सृजन

एकांकी का विस्तार

"रतन : बाबूजी, मक्खन!

(सब रतन की तरफ देखते हैं और परदा गिरता है।)"

1. एकांकी के अंत में रतन कहता है— "बाबूजी, मक्खन..." और परदा गिर जाता है। लेखक ने इस संवाद से एकांकी का अंत क्यों किया होगा?

   (संकेत– हास्य, व्यंग्य, टिप्पणी आदि)

2. एकांकी में यदि परदा दोबारा उठ जाए तो अगला दृश्य क्या होगा? अनुमान लगाइए और लिखिए।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

मेरे शब्द

एकांकी में पाँच ऐसे शब्द चुनकर रेखांकित कर लीजिए जो आपके लिए बिल्कुल नए थे। उन शब्दों वाले वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए। अब उन शब्दों के अर्थ अपने अनुमान से लिखिए। इसके बाद उनके अर्थ शब्दकोश में से देखकर लिखिए।

भाषा में मुहावरे

एकांकी में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। इन वाक्यों में जहाँ-जहाँ मुहावरे आए हैं, उन्हें पहचानकर रेखांकित कीजिए। इन मुहावरों का प्रयोग करते हुए नए वाक्य बनाकर लिखिए—

1. "उनके पीछे-पीछे भीगी बिल्ली की तरह रतन आ रहा है— खाली हाथ।"
2. "लेकिन वह तुम्हारी लाडली बेटी तो मुँह फुलाए पड़ी है।"
3. "और तुम उसकी माँ, किस मर्ज की दवा हो?"
4. "तुम्हीं ने उसे पढ़ा-लिखाकर इतना सिर चढ़ा रखा है।"
5. "मगर तुम तो अभी से सब-कुछ उगले देती हो।"
6. "यह लीजिए, आप तो मुझे काँटों में घसीटने लगे।"
7. "बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?"
8. "लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह अपना मुँह छिपाकर भागे थे।"

संदर्भ में शब्द

"बाप सेर है तो लड़का सवा सेर।"

एकांकी में इस कहावत का प्रयोग रामस्वरूप द्वारा गोपालप्रसाद और शंकर की नकारात्मक प्रवृत्ति का उल्लेख करने के लिए किया गया है। लेकिन इस कहावत का प्रयोग सकारात्मक अर्थ में भी किया जा सकता है। अब आप इस नए प्रयोग से वाक्य बनाकर लिखिए।

गतिविधियाँ

आप भी संवाददाता

1. मान लीजिए कि आप एक संवाददाता हैं और आपको उमा की कहानी का पता चलता है। अब आप उमा तथा अन्य पात्रों का साक्षात्कार लेकर उनका पक्ष दर्शकों के सामने प्रस्तुत कीजिए।

2. मान लीजिए कि आप उमा के घर से रिपोर्टिंग कर रहे हैं जब उसके घर में शंकर आया था। इस पूरे घटनाक्रम को जीवंत प्रसारण (लाइव रिपोर्ट) की तरह प्रस्तुत कीजिए।

भाषा संगम

"**मक्खन** वाले की दुकान दूर है"

नीचे 'मक्खन' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

मक्खन (हिंदी); नवनीतम् (संस्कृत); मक्खण (पंजाबी); मक्खन (उर्दू); ठॅन्य (कश्मीरी); मखणु (सिंधी); लोणी (मराठी); माखण, नवनीत (गुजराती); लोणी (कोंकणी); नौनी, माखन (नेपाली); माखन, ननी (बांग्ला); माखन (असमिया); माखोन (मणिपुरी); लहुणी, मक्खन (ओड़िआ); वॆन्नै (तेलुगु); वॆर्णय् (तमिल); वेण्ण (मलयालम); वेण्णे (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप 'मक्खन' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp

खोजबीन

नीचे दिए गए लिंक का प्रयोग करके आप एकांकी विधा और रीढ़ की हड्डी एकांकी के विषय में और अधिक जान-समझ सकते हैं—

एकांकी

https://www.youtube.com/watch?v=JKHLpQ4p534

रीढ़ की हड्डी

https://www.youtube.com/watch?v=6T6Tnn3Eg1w

शब्द-संपदा

अधेड़	—	आधी उम्र का, ढलती उम्र का
तख़्त	—	लकड़ी की बड़ी चौकी, सिंहासन
गंदुमी	—	गेहुँए रंग का
डाट	—	टेक, अटकाव
जंजाल	—	झंझट, झमेला, संसार का बखेड़ा
ठठोली	—	हँसी, परिहास
करीने/करीना	—	ढंग, क्रम, मेल, समानता
दकियानूसी	—	पुराने विचार का, पुराना
तालीम	—	शिक्षा
चौपट	—	नष्ट, चारों ओर से खुला हुआ
दस्तक	—	खटखटाना, हाथ का हलका आघात या धक्का, ताली
फितरती	—	चालबाज, प्रकृतिगत
खीस निपोरना/खीस निकालना	—	इस तरह हँसना कि दाँत दिखाई दें, बेढंगी हँसी हँसना
खासियत/खासीयत	—	विशेषता, गुण, प्रभाव, प्रकृति, स्वभाव
तशरीफ़	—	आदर, सम्मान, महत्व
मार्जिन	—	सीमा, किनारा
बालाई	—	ऊपर का हिस्सा
तकल्लुफ़	—	बनावट, शिष्टाचार
माफ़िक	—	अनुकूल, अनुसार
मुखातिब	—	संबोधन करने वाला, बात करने वाला
निहायत	—	अत्यधिक, अत्यंत, बहुत ज्यादा
जायचा	—	जन्मपत्री
अर्ज़	—	निवेदन, प्रार्थना, चौड़ाई
अधीर	—	धैर्य रहित, उतावला, आकुल, दृढ़ता रहित

7

0901CH07

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

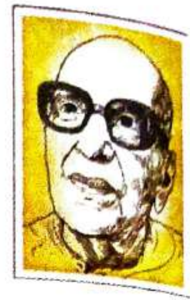

हिंदी के प्रसिद्ध निबंधकार कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म सन् 1906 ई. में उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में हुआ था। कन्हैयालाल मिश्र का मुख्य कार्यक्षेत्र पत्रकारिता था। उन्होंने *नया जीवन* और *विकास* पत्रों का संपादन किया। प्रारंभ से ही स्वतंत्रता संग्राम एवं सामाजिक कार्यों में भाग लेने के कारण उन्हें अनेक बार जेल-यात्रा भी करनी पड़ी। उन्होंने राजनीतिक और सामाजिक जीवन से संबंध रखने वाले अनेक निबंध लिखे। अपनी उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाओं के लिए उन्हें 'पद्म श्री' से सम्मानित किया गया।

उनके संस्मरणात्मक निबंध-संग्रह *दीप जले शंख बजे, जिंदगी मुसकरायी, बाजे पायलिया के घुँघरू, जिंदगी लहलहाई, क्षण बोले कण मुसकाए, कारवाँ आगे बढ़े, माटी हो गई सोना, महके आँगन चहके द्वार* और *आकाश के तारे धरती के फूल* गहन मानवतावादी दृष्टिकोण और जीवन-दर्शन के परिचायक हैं। सन् 1995 में उनका निधन हो गया।

'मैं और मेरा देश' एक ऐसी रचना है जो व्यक्ति और राष्ट्र के अविभाज्य संबंध को गहराई से स्थापित करती है। इस निबंध के अनुसार व्यक्ति की पूर्णता उसकी निजता में ही नहीं होती, बल्कि उसके परिवार, क्षेत्र विशेष और राष्ट्र की पहचान तक से जुड़ी होती है। व्यक्ति द्वारा किया गया हर कार्य उसकी पहचान के साथ-साथ उसके परिवार, क्षेत्र और राष्ट्र से भी जुड़ा होता है। इसी विचार से लेखक यह निष्कर्ष निकालता है कि देश का सम्मान और नागरिक का सम्मान एक-दूसरे से अटूट रूप से जुड़े होते हैं।

निबंध में नागरिक के अधिकार, उसके कर्तव्य और देश की उन्नति तथा कुशल नेतृत्वकर्ता कैसा हो, इस पर भी विचार किया गया है। लेखक इस बात पर बल देता है कि देश के लिए हर एक नागरिक महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है, यदि वह देश के 'शक्तिबोध' और 'सौंदर्यबोध' को हानि न पहुँचाकर सशक्त करता है।

मैं और मेरा देश

मैं अपने घर में जनमा था, पला था।

अपने पड़ोस में खेलकर, पड़ोसियों का ममता-दुलार पा, बड़ा हुआ था।

अपने नगर में घूम-फिरकर, वहाँ के विशाल समाज का संपर्क पा, वहाँ के संचित ज्ञान-भंडार का उपयोग कर, उसे अपनी सेवाओं का दान दे, उसकी सेवाओं का सहारा पा और इस तरह एक मनुष्य से भरा-पूरा नगर बनकर मैं खड़ा हुआ था।

मैं अपने नगर के लोगों का सम्मान करता था, वे भी मेरा सम्मान करते थे।

मुझे बहुतों की अपने लिए जरूरत पड़ती थी। मैं भी बहुतों की जरूरत का उनके लिए जवाब था।

इस तरह मैं समझ रहा था कि मैं अपने में अब पूरा हो गया हूँ, पूरा फैल गया हूँ, पूरा मनुष्य हो गया हूँ।

मैं सोचा करता था कि मेरी मनुष्यता में अब कोई अपूर्णता नहीं रही, मुझे अब कुछ न चाहिए, जो चाहिए, वह सब मेरे पास है— मेरा घर, मेरा पड़ोस, मेरा नगर और मैं। वाह कैसी सुंदर, कैसी संगठित और कैसी पूर्ण है मेरी स्थिति!

एक दिन आनंद की इस दीवार में एक दरार पड़ गई और तब मुझे सोचना पड़ा कि अपने घर, अपने पड़ोस, अपने नगर की सीमाओं में ममता, सहारा, ज्ञान और आनंद के उपहार पाकर भी मेरी स्थिति एकदम हीन है और हीन भी इतनी कि मेरा कहीं भी और कोई भी अपमान कर सकता है— एक मामूली अपराधी की तरह और मुझे यह भी अधिकार नहीं कि मैं उस अपमान का बदला लेना तो दूर रहा, उसके लिए कहीं अपील या दया-प्रार्थना ही कर सकूँ।

क्या कोई भूकंप आया था, जिससे दीवार में दरार पड़ गई?

बड़े महत्व का प्रश्न है। इस अर्थ में भी कि यह बात को खिलने का, आगे बढ़ने का अवसर देता है और इस अर्थ में भी कि ठीक समय पर पूछा गया है। ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में एक अपूर्व आनंद आता है, तो उत्तर यह है आपके प्रश्न का—

जी हाँ, एक भूकंप आया था, जिससे दीवार में दरार पड़ गई और लीजिए आपको कोई नया प्रश्न न पूछना पड़े, इसलिए मैं अपनी ओर से ही कह रहा हूँ कि यह दीवार थी मानसिक विचारों की; इसलिए यह भूकंप भी किसी प्रांत या प्रदेश में नहीं उठा, मेरे मानस में ही उठा था।

मानस में भूकंप उठा था?

हाँ जी, मानस में भूकंप उठा था और भूकंप में क्या कोई धरती थोड़े ही हिली थी, आकाश थोड़े ही काँपा था, एक तेजस्वी पुरुष का अनुभव ही वह भूकंप था, जिसने मुझे हिला दिया।

वे तेजस्वी पुरुष थे स्वर्गीय पंजाब-केसरी लाला लाजपत राय। अपने महान राष्ट्र की पराधीनता के दीन दिनों में जिन लोगों ने अपने रक्त से गौरव के दीपक जलाए और जो घोर अंधकार और भयंकर बवंडरों के झकझोरों में जीवन-भर खेल, उन दीपकों को बुझने से बचाते रहे, उन्हीं में एक थे लालाजी। उनकी कलम और वाणी दोनों में तेजस्विता की अद्भुत किरणें थीं।

वे उन्हीं दिनों सारे संसार में घूमे थे। उनके व्यक्तित्व के गठन में, उनके परिवार, उनके पास-पड़ोस और उनके नगर ने अपने सर्वोत्तम रत्नों की ज्योति उन्हें भेंट दी थी। अजी, क्या बात थी उनके व्यक्तित्व की, क्या देखने में, क्या सुनने में! वे एक अपूर्व मनुष्य थे। कौन था दुनिया में जिस पर वे मिलते ही छा न जाते, पर संसार के देशों में घूमकर वे अपने देश में लौटे, तो उन्होंने अपना सारा अनुभव एक ही वाक्य में भरकर बिखेर दिया। वह अनुभव ही तो वह भूकंप था, जिसने मेरी पूर्णता को एक ही ठसक में अपूर्णता की कसक से भर दिया।

उनका वह अनुभव था कि "मैं अमेरिका गया, इंग्लैंड गया, फ्रांस गया और संसार के दूसरे देशों में भी घूमा, पर जहाँ भी मैं गया, भारतवर्ष की गुलामी की लज्जा का कलंक मेरे माथे पर लगा रहा।" क्या सचमुच यह अनुभव एक मानसिक भूकंप नहीं है, जो मनुष्य को झकझोर कर कहे कि किसी मनुष्य के पास संसार के ही नहीं, यदि स्वर्ग के भी सब उपहार और साधन हों, पर उसका देश गुलाम हो या किसी भी दूसरे रूप में हीन हो तो वे सारे उपहार और साधन उसे गौरव नहीं दे सकते।

इस अनुभव की छाया में मैं सोचता हूँ कि मेरा कर्तव्य है कि मुझे निजी रूप में सारे संसार का राज्य भी क्यों न मिलता हो, मैं कोई ऐसा काम न करूँ जिससे मेरे देश की स्वतंत्रता को, दूसरे शब्दों में, उसके सम्मान को धक्का पहुँचे, उसकी किसी भी प्रकार की शक्ति में कमी आए; साथ ही उसके एक नागरिक के रूप में मेरा यह अधिकार भी है कि अपने देश के सम्मान का पूरा-पूरा भाग मुझे मिले और उसकी शक्तियों से अपने सम्मान की रक्षा का मुझे, जहाँ भी मैं हूँ, भरोसा रहे।

अजी, भला एक आदमी अपने इतने बड़े देश के लिए कर ही क्या सकता है! फिर कोई बड़ा वैज्ञानिक हो तो वह अपने आविष्कार से ही देश को कुछ बल दे या फिर कोई बहुत बड़ा धनपति हो तो वह अपने धन का भामाशाह की तरह समय पर त्याग कर ही कुछ काम आ सकता है, पर हरेक आदमी न तो ऐसा वैज्ञानिक ही हो सकता है, न धनिक ही। फिर जो

बेचारा अपनी ही दाल-रोटी की फिक्र में लगा हुआ हो, वह अपने देश के लिए चाहते हुए भी क्या कर सकता है?

आपका प्रश्न विचारों को उत्तेजना देता है, इसमें कोई संदेह नहीं; पर इसमें भी संदेह नहीं कि इसमें जीवनशास्त्र का घोर अज्ञान भी भरा हुआ है। अरे भाई, जीवन कोई आपके मुन्ने की गुड़िया थोड़े ही है कि आप कह सकें कि बस यह है, इतना ही है। वह तो एक विशाल समुंदर का तट है, जिस पर हरेक अपने लिए स्थान पा सकता है।

लो, एक और बात बताता हूँ आपको। जीवन को दर्शनशास्त्रियों ने बहुमुखी बताया है, उसकी अनेक धाराएँ है। सुना नहीं आपने कि जीवन एक युद्ध है और युद्ध में लड़ना ही तो काम नहीं होता। लड़ने वालों को रसद न पहुँचे तो वे कैसे लड़ें। किसान ही खेती न उपजाए तो रसद पहुँचाने वाले क्या करें और लो, जाने दो बड़ी-बड़ी बातें— युद्ध में जय बोलने वालों का भी महत्व है।

जय बोलने वालों का?

हाँ जी, युद्ध में जय बोलने वालों का भी बहुत महत्व है। कभी मैच देखने का अवसर मिला ही होगा आपको; देखा नहीं आपने कि दर्शकों की तालियों से खिलाड़ियों के पैरों में बिजली लग जाती है और गिरते खिलाड़ी उभर जाते हैं? कवि-सम्मेलनों और मुशायरों की सारी सफलता दाद देने वालों पर ही निर्भर करती है, इसलिए मैं अपने देश का कितना भी साधारण नागरिक क्यों न हूँ, अपने देश के सम्मान की रक्षा के लिए बहुत कुछ कर सकता हूँ। अकेला चना क्या भाड़ फोड़े— यह कहावत, अपने अनुभव के आधार पर ही आपसे कह रहा हूँ— कि सौ फीसदी झूठ है। इतिहास साक्षी है, बहुत बार अकेले चने ने ही भाड़ फोड़ा है और ऐसा फोड़ा है कि भाड़ खील-खील ही नहीं हो गया, उसका निशान तक ऐसा छूमंतर हुआ कि कोई यह भी न जान पाया कि वह बेचारा आखिर था कहाँ।

मैं जानता हूँ, इतिहास की गहराइयों में उतरने का समय नहीं है, पर दो छोटी कहानियाँ तो सुन ही सकते हैं आप; और कहानियाँ भी न प्रेमचंद की हैं, न अंतोन चेखव की। दो युवकों के जीवन की दो घटनाएँ हैं, पर उन दो घटनाओं में वह गाँठ इतनी साफ है, जो नागरिक और देश को एक साथ बाँधती है कि आप दो बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़कर भी उसे इतना साफ नहीं देख सकते।

हमारे देश के महान संत स्वामी रामतीर्थ एक बार जापान गए। वे रेल में यात्रा कर रहे थे कि एक दिन ऐसा हुआ कि उन्हें खाने को फल न मिले और उन दिनों फल ही उनका भोजन था।

गाड़ी एक स्टेशन पर ठहरी तो वहाँ भी उन्होंने फलों की खोज की, पर वे पा न सके। उनके मुँह से निकला– जापान में शायद अच्छे फल नहीं मिलते!

एक जापानी युवक प्लेटफार्म पर खड़ा था। वह अपनी पत्नी को रेल में बैठाने आया था, उसने यह शब्द सुन लिए। सुनते ही वह अपनी बात बीच में छोड़कर भागा और कहीं दूर से एक टोकरी ताजे फल लाया। वे फल उसने स्वामी रामतीर्थ को भेंट करते हुए कहा– लीजिए, आपको ताजे फलों की जरूरत थी।

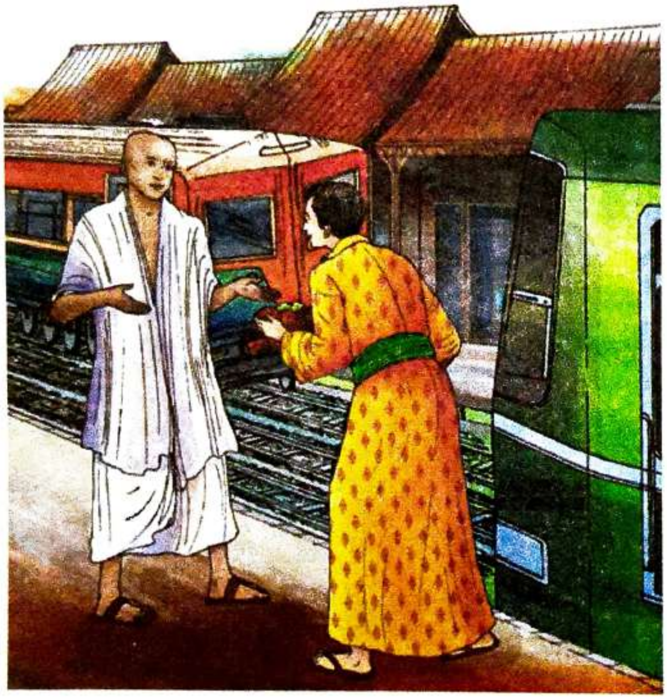

स्वामी जी ने समझा कि यह कोई फल बेचने वाला है और उनके दाम पूछे, पर उसने दाम लेने से इनकार कर दिया। बहुत आग्रह करने पर उसने कहा– आप इनका मूल्य देना ही चाहते हैं तो वह यह है कि आप अपने देश में जाकर किसी से यह न कहिएगा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।

स्वामी जी युवक का यह उत्तर सुनकर मुग्ध हो गए, और वे क्या मुग्ध हो गए, उस युवक ने अपने इस कार्य से अपने देश का गौरव जाने कितना बढ़ा दिया!

इस गौरव की ऊँचाई का अनुमान आप दूसरी घटना सुनकर ही पूरी तरह लगा सकते हैं। एक दूसरे देश का निवासी एक युवक जापान में शिक्षा लेने आया। एक दिन वह सरकारी पुस्तकालय से एक पुस्तक पढ़ने को लाया जिसमें कुछ दुर्लभ चित्र थे। ये चित्र इस युवक ने पुस्तक में से निकाल लिए और पुस्तक वापस कर आया। किसी जापानी विद्यार्थी ने यह देख लिया और पुस्तकालय को इसकी सूचना दे दी। पुलिस ने तलाशी लेकर वे चित्र उस विद्यार्थी के कमरे से बरामद किए और उस विद्यार्थी को जापान से निकाल दिया गया।

मामला यहीं तक रहता तो कोई बात न थी। अपराधी को दंड मिलना ही चाहिए, पर मामला यहीं तक न रुका और पुस्तकालय के बाहर बोर्ड पर लिख दिया गया कि उस देश का (जिसका वह विद्यार्थी था) कोई निवासी इस पुस्तकालय में प्रवेश नहीं कर सकता।

मतलब साफ है, एकदम साफ— कि जहाँ एक युवक ने अपने काम से अपने देश का सिर ऊँचा किया था, वहीं एक युवक ने अपने देश के मस्तक पर कलंक का ऐसा टीका लगाया, जो जाने कितने वर्षों तक संसार की आँखों में उसे लांछित करता रहा।

इन घटनाओं से क्या यह स्पष्ट नहीं होता है कि हरेक नागरिक अपने देश के साथ बँधा हुआ है और देश की हीनता और गौरव का ही फल उसे नहीं मिलता, उसकी हीनता और गौरव का फल भी उसके देश को मिलता है?

मैं अपने देश का नागरिक हूँ और मानता हूँ कि मैं अपना देश हूँ। जैसे मैं अपने लाभ और सम्मान के लिए हरेक छोटी-छोटी बात पर ध्यान देता दूँ, वैसे ही मैं अपने देश के लाभ और सम्मान के लिए भी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दूँ, यह मेरा कर्तव्य है और जैसे मैं अपने सम्मान और साधनों से अपने जीवन में सहारा पाता हूँ, वैसे ही देश के सम्मान और साधनों से भी सहारा पाऊँ, यह मेरा अधिकार है। बात यह है कि मैं और मेरा देश दो अलग चीजें तो हैं ही नहीं।

मैंने जो कुछ जीवन में अध्ययन और अनुभव से सीखा है, वह यही है कि महत्व किसी कार्य की विशालता में नहीं है, उस कार्य के करने की भावना में है। बड़े से बड़ा कार्य हीन है, यदि उसके पीछे अच्छी भावना नहीं है और छोटे से छोटा कार्य भी महान है, यदि उसके पीछे अच्छी भावना है।

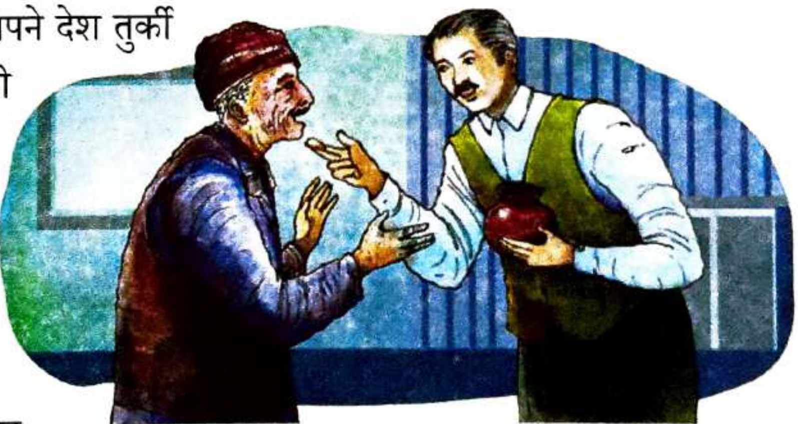

महान कमालपाशा उन दिनों अपने देश तुर्की के राष्ट्रपति थे। राजधानी में अपनी वर्षगाँठ का उत्सव समाप्त कर जब वे अपने भवन में ऊपर चले गए, तो एक देहाती बूढ़ा उन्हें वर्षगाँठ का उपहार भेंट करने आया। सेक्रेटरी ने कहा– अब तो समय बीत गया है। बूढ़े ने कहा– मैं तीस मील से पैदल चलकर आ रहा हूँ, इसलिए मुझे देर हो गई।

राष्ट्रपति तक उसकी सूचना भेजी गई, कमालपाशा विश्राम के वस्त्र बदल चुके थे, वे उन्हीं कपड़ों में नीचे चले आए और उन्होंने बूढ़े किसान का उपहार स्वीकार किया। यह उपहार मिट्टी की छोटी हँडिया में पाव-भर शहद था, जिसे बूढ़ा स्वयं तोड़कर लाया था।

कमालपाशा ने हँडिया को स्वयं खोला और उसमें से दो उँगलियाँ भरकर चाटने के बाद तीसरी उँगली शहद में भरकर बूढ़े के मुँह में दे दी, बूढ़ा निहाल हो गया।

राष्ट्रपति ने कहा– दादा, आज सर्वोत्तम उपहार तुमने ही मुझे भेंट किया क्योंकि इसमें तुम्हारे हृदय का शुद्ध प्यार है। उन्होंने आदेश दिया कि राष्ट्रपति की शाही कार में शाही सम्मान के साथ उनके दादा को गाँव तक पहुँचाया जाए।

क्या यह शहद बहुत कीमती था? क्या उसमें मोती-हीरे मिले हुए थे? ना, उस शहद के पीछे उसके लाने वाले की भावना थी जिसने उसे सौ लालों का एक लाल बना दिया।

हमारे देश में भी एक ऐसी ही घटना घटी थी। एक किसान ने रंगीन सुतलियों से एक खाट बुनी और उसे रेल में रखकर वह दिल्ली लाया। दिल्ली स्टेशन से उस खाट को अपने कंधे पर रखे वह भारत के प्रधानमंत्री पंडित नेहरू की कोठी पर पहुँचा। पंडितजी कोठी से बाहर आए तो वह खाट उसने उन्हें दी। पंडितजी को देखकर वह इतना भाव-मुग्ध हो गया कि मुँह से कुछ कह ही न सका। पंडितजी ने पूछा कि क्या चाहते हो तुम?

उसने कहा, यही कि आप इसे स्वीकार करें। प्रधानमंत्री ने उसका यह उपहार स्वीकार ही नहीं किया, अपना एक फोटो दस्तखत कर उसे स्वयं उपहार में दिया— दस्तखती फोटो के लिए देश के बड़े-बड़े लोग, विद्वान और धनी तरसते हैं! वह क्या उस मामूली खाट के बदले में दिया गया था? ना, वह तो उस खाट वाले की भावना का ही सम्मान था।

क्यों जी, हम यह कैसे जान सकते हैं कि हमारा काम देश के अनुकूल है या नहीं?

वाह, क्या सवाल पूछा है आपने। सवाल क्या, बातचीत में आपने तो एक कीमती मोती ही जड़ दिया यह, पर इसके उत्तर में सिर्फ हाँ या ना से काम न चलेगा, मुझे थोड़ा विवरण देना पड़ेगा।

हम अपने कार्यों को देश के अनुकूल होने की कसौटी पर कसकर चलने की आदत डालें, यह बहुत उचित है, बहुत सुंदर है; पर हम इसमें तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक कि हम अपने देश की भीतरी दशा को ठीक से न समझ लें और उसे हमेशा अपने सामने न रखें।

हमारे देश को दो बातों की सबसे पहले और सबसे ज्यादा जरूरत है। एक शक्ति-बोध और दूसरा सौंदर्य-बोध। बस, हम यह समझ लें कि हमारा कोई भी काम ऐसा न हो जो देश में कमजोरी की भावना को बल दे या कुरुचि की भावना को ही।

जरा अपनी बात को और स्पष्ट कर दीजिए, यह आपकी राय है और मैं इससे बहुत ही खुश हूँ कि आप मुझसे यह स्पष्टता माँग रहे हैं।

क्या आप चलती रेलों में, मुसाफिरखानों में, क्लबों में, चौपालों पर और मोटर-बसों में कभी ऐसी चर्चा करते हैं कि हमारे देश में यह नहीं हो रहा है, वह नहीं हो रहा है और गड़बड़

है, बड़ी परेशानी है; साथ ही इन स्थानों में या इसी तरह के दूसरे स्थानों में आप कभी अपने देश के साथ दूसरे देशों की तुलना करते हैं और इस तुलना में अपने देश को हीन और दूसरे देश को श्रेष्ठ सिद्ध किया जाता है?

यदि इस प्रश्न का उत्तर हाँ है तो आप देश के शक्ति-बोध को भयंकर चोट पहुँचा रहे हैं और आपके हाथों देश के सामूहिक मानसिक बल का ह्रास हो रहा है। सुनी है आपने शल्य की बात? वह महाबली कर्ण का सारथी था। जब भी कर्ण अपने पक्ष के विजय की घोषणा करता, हुंकार भरता, वह अर्जुन की अजेयता का एक हल्का-सा उल्लेख कर देता। बार-बार के इस उल्लेख ने कर्ण के सघन आत्मविश्वास में संदेह की तरेड़ डाल दी, जो उसके मन में भावी पराजय की नींव रखने में सफल हो गई।

अच्छा, आप इस तरह की चर्चा कभी नहीं करते! तो मैं आपसे दूसरा प्रश्न पूछता हूँ। क्या आप कभी केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकते हैं, अपने घर का कूड़ा बाहर फेंकते हैं; मुँह से गंदे शब्दों में गंदे भाव प्रकट करते हैं, इधर की उधर, उधर की इधर लगाते हैं; अपना घर, दफ्तर, गली गंदा रखते हैं, होटलों-धर्मशालाओं में या ऐसे ही दूसरे स्थानों में, ज़ीनों में, कोनों में पीक थूकते हैं? उत्सवों, मेलों, रेलों और खेलों में ठेलमठेल करते हैं और इसी तरह किसी भी रूप में क्या सुरुचि और सौंदर्य को आपके किसी काम से ठेस लगती है?

यदि आपका उत्तर हाँ है, तो आपके द्वारा देश के सौंदर्य-बोध को भयंकर आघात लग रहा है और आपके द्वारा देश की संस्कृति को गहरी चोट पहुँच रही है।

क्या कोई ऐसी कसौटी भी बनाई जा सकती है, जिससे देश के नागरिकों को आधार बनाकर देश की उच्चता और हीनता को हम तोल सकें?

लीजिए, चलते-चलते आपको इस प्रश्न का भी उत्तर दे ही दूँ। इस उच्चता और हीनता की कसौटी है चुनाव।

जिस देश के नागरिक यह समझते हैं कि चुनाव में किसे अपना मत देना चाहिए और किसे नहीं, वह देश उच्च है; जहाँ के नागरिक गलत लोगों के उत्तेजक नारों या व्यक्तियों के गलत प्रभाव में आकर मत देते हैं, वह हीन है।

इसलिए मैं कह रहा हूँ कि मेरा यानी हरेक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह जब भी कोई चुनाव हो, ठीक मनुष्य को अपना मत दें और मेरा अधिकार है कि मेरा मत लिए बिना कोई भी आदमी, वह संसार का सर्वश्रेष्ठ महापुरुष ही क्यों न हो, किसी अधिकार की कुरसी पर न बैठ सके।

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. "एक दिन आनंद की इस दीवार में दरार पड़ गई", इस पंक्ति में रेखांकित शब्द 'दरार' किस ओर संकेत करता है?
   - (क) पूर्णता के भाव की तुष्टि
   - (ख) पारस्परिक संबंध टूटने की स्थिति
   - (ग) पूर्णता के भाव पर प्रहार
   - (घ) सुख-सुविधाओं का अभाव
2. निबंध में कहा गया है कि "ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में एक अपूर्व आनंद आता है।" लेखक को किस तरह के प्रश्नों का उत्तर देने में आनंद की अनुभूति होती है?
   - (क) बात को विस्तार देने वाले प्रश्नों का
   - (ख) बात का निष्कर्ष प्रस्तुत करने वाले प्रश्नों का
   - (ग) बिना किसी संदर्भ के पूछे गए प्रश्नों का
   - (घ) किसी की समझ का आकलन करने वाले प्रश्नों का
3. "अपने महान राष्ट्र की पराधीनता के दीन दिनों में जिन लोगों ने अपने रक्त से गौरव के दीपक जलाए", इस वाक्य में पराधीनता के दिनों को दीन कहा गया है क्योंकि पराधीन भारत में—
   - (क) भोजन, आवास और वस्त्र जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव था।
   - (ख) लोगों के आत्मसम्मान और गौरव की भावना का दमन होता था।
   - (ग) महत्वपूर्ण निर्णय लेने की स्वतंत्रता थी।
   - (घ) धार्मिक रीति-रिवाजों को मनाने पर रोक लगाई जाती थी।
4. निबंध के अनुसार मनुष्य साधन-संपन्न होते हुए भी गौरव का अनुभव नहीं कर सकते यदि—
   - (क) उन्हें विदेश भ्रमण के अवसर न मिलें।
   - (ख) उनका देश किसी दूसरे देश के अधीन हो।
   - (ग) उनके नगर की शासन प्रणाली कमजोर हो।
   - (घ) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन होता हो।

5. "पर उन दो घटनाओं में वह गाँठ इतनी साफ है", इस वाक्य में रेखांकित शब्द 'गाँठ' किन दो बातों को साथ बाँधती है?
   (क) देश और नागरिक
   (ख) देश और संविधान
   (ग) देश और विदेश
   (घ) व्यवसाय और आजीविका
6. प्रस्तुत निबंध में मुख्यतः कौन-सा भाव व्यक्त हुआ है?
   (क) लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था
   (ख) पारिवारिक संबंधों का महत्व
   (ग) व्यक्ति और देश का अंतर्संबंध
   (घ) देश का महत्व और व्यक्ति की उपेक्षा

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. स्वामी रामतीर्थ फल देने वाले युवक का उत्तर सुनकर मुग्ध क्यों हो गए?
2. जापान के युवक ने स्वामी रामतीर्थ को दिए गए फलों के मूल्य के रूप में क्या माँगा? आपके मन में उस युवक के व्यक्तित्व की कौन-सी छवि उभरती है, यह भी लिखिए।
3. "बात यह है कि मैं और मेरा देश दो अलग चीज तो हैं ही नहीं।" स्वयं को देश से अलग न मानने के पीछे क्या तर्क हो सकते हैं, उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

मेरे अनुभव मेरे विचार

1. "देश की हीनता और गौरव का ही फल उसे नहीं मिलता, उसकी हीनता और गौरव का फल भी उसके देश को मिलता है", अपने आस-पास के विभिन्न उदाहरणों के द्वारा इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
2. "मुझे बहुतों की अपने लिए जरूरत पड़ती थी। मैं भी बहुतों की जरूरत का उनके लिए जवाब था।"
   (क) प्रातःकाल से लेकर रात्रि तक आप अपने किन-किन कार्यों में किस-किसका क्या सहयोग लेते हैं और आप दूसरों को किस तरह का सहयोग देते हैं? अपने अनुभव लिखिए।
   (ख) उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित शब्द 'बहुतों' में कौन-कौन सम्मिलित होंगे, अनुमान के आधार पर लिखिए।

(ग) रचनाकार को स्वयं के लिए दूसरे लोगों से किस प्रकार के सहयोग की आवश्यकता पड़ती होगी और वह दूसरों को किस प्रकार का सहयोग देता होगा, अनुमान के आधार पर लिखिए।

3. "सुना नहीं आपने कि जीवन एक युद्ध है और <u>युद्ध में लड़ना ही तो काम नहीं होता।</u>"

(क) उपर्युक्त वाक्य के रेखांकित अंश "युद्ध में लड़ना ही तो काम नहीं होता" के आधार पर लिखिए कि देश की प्रगति, विकास एवं सुरक्षा के प्रति हम सभी के क्या-क्या दायित्व हैं? अपने उत्तर को विस्तार देने के लिए अपने घर या पास-पड़ोस के बड़ों और अध्यापक से चर्चा करके लिखिए।

(ख) अपने पास-पड़ोस में विचरने वाले पशु-पक्षियों की जीवनचर्या का अवलोकन कीजिए और अपने अवलोकन के आधार पर लिखिए कि आप उनके संघर्षों को किस रूप में देखते हैं?

(संकेत— आप अपनी पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानी 'दो बैलों की कथा' के मुख्य पात्रों के अनुभवों को भी आधार बना सकते हैं।)

(ग) इस निबंध में जीवन को युद्ध क्यों कहा गया है? आप अपने घर के बड़ों से इस विषय पर चर्चा करके उनके और अपने विचार लिखिए।

(घ) देश की भौगोलिक सीमाओं की रक्षा सैनिक करते हैं। इसी तरह हमारे आस-पास हमारे जीवन को बेहतर बनाने के लिए अनेक लोग कार्यरत हैं। ये कौन-कौन लोग हैं और उनके लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं?

4. "अपने पड़ोस में खेलकर, पडोसियों की ममता-दुलार पा, बड़ा हुआ था।"

(क) उपर्युक्त पंक्ति के आधार पर लिखिए कि पास-पड़ोस के लोगों में किस तरह के पारस्परिक संबंध रहे होंगे?

(ख) वर्तमान समय में ऐसे संबंधों में किस तरह के परिवर्तन आए हैं और इनके क्या कारण हो सकते हैं? लिखिए।

5. "क्या सुरुचि और सौंदर्य को आपके किसी काम से ठेस लगती है?" अपने घर/विद्यालय के आस-पास, सार्वजनिक संसाधनों और ऐतिहासिक महत्व के स्थानों की स्वच्छता एवं सौंदर्य को बनाए रखने के लिए आप और आपके सहपाठी, संबंधी क्या-क्या करते हैं?

6. "मैं कोई ऐसा काम न करूँ जिससे मेरे देश की स्वतंत्रता को, दूसरे शब्दों में, उसके सम्मान को धक्का पहुँचे।" देश के सम्मान को धक्का न पहुँचे, इसके लिए क्या करें और क्या नहीं करें? अपने-अपने समूह में इसकी चर्चा कीजिए और चर्चा से उभरे बिंदुओं को प्रातःकालीन सभा में पढ़कर सुनाइए।

मेरे प्रश्न

"ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में एक अपूर्व आनंद आता है"

निबंध के उपर्युक्त संदर्भ से आपके लिए दो प्रश्न बनाए गए हैं—

(क) रचनाकार को किस तरह के प्रश्नों का उत्तर देने में आनंद आता है?

(ख) आपको किस तरह के प्रश्नों को बूझना रोचक लगता है?

अब इस निबंध के आलोक में नीचे दी गई सामग्री को पढ़कर तीन प्रश्न बनाइए और लिखिए।

यह सोचना एकदम निराधार है कि केवल संपन्न व्यक्ति ही देश की प्रगति और विकास में योगदान दे सकते हैं। देश की सुरक्षा का विषय हो अथवा ऐश्वर्य व संपन्नता का, सभी नागरिकों का अपनी ही तरह से योगदान होता है। हम सब नागरिक अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। हम यदि कुछ भी गलत करते हैं तो उससे अपनी छवि ही धूमिल नहीं होती अपितु अपने देश की छवि पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

विधा से संवाद

आपने अब तक अपनी पाठ्यपुस्तकों और अन्य पुस्तकों में बहुत से निबंध पढ़े होंगे और लिखे भी होंगे। निबंध लिखने से पहले किस तरह की तैयारी करते हैं? आइए, इस विधा से संबंधित कुछ विचार-विमर्श करते हैं—

1. 'निबंध' का शाब्दिक अर्थ है— 'बाँधना' (नि+बंध)। अर्थात भली-भाँति बँधा या गठा हुआ। यह गद्य की वह विधा है जिसमें रचनाकार किसी विषय पर अपने अनुभव, विचार, दृष्टिकोण और भावनाओं को तार्किक, भावनात्मक, क्रमबद्ध और साहित्यिक रूप से प्रस्तुत करते हैं। एक विधा के रूप में निबंध की कुछ विशेषताओं को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है—

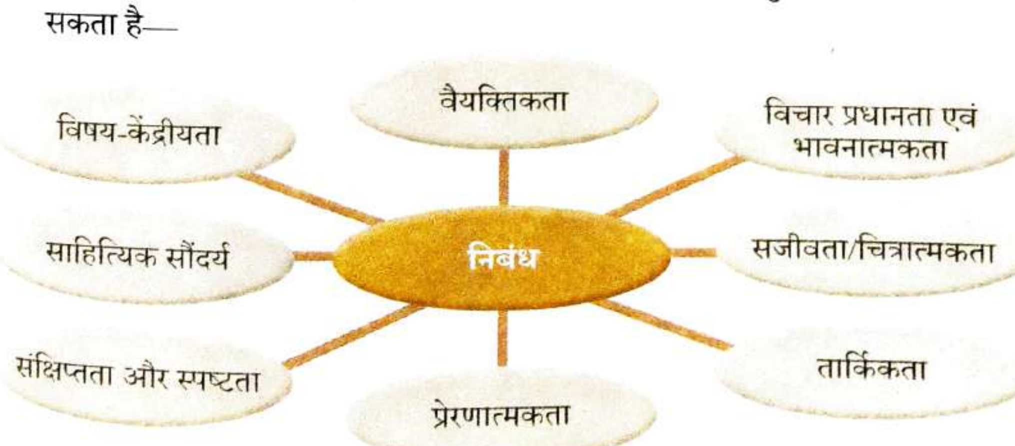

उपर्युक्त बिंदुओं से संबंधित संदर्भ 'मैं और मेरा देश' निबंध से खोजकर लिखिए।

2. "क्या कोई भूकंप आया था, जिससे दीवार में दरार पड़ गई?

बड़े महत्व का प्रश्न है। इस अर्थ में भी कि यह बात को खिलने का, आगे बढ़ने का अवसर देता है और इस अर्थ में भी कि ठीक समय पर पूछा गया है। ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने में एक अपूर्व आनंद आता है, तो उत्तर यह है आपके प्रश्न का..."

निबंध के उपर्युक्त अंश को ध्यान से देखिए। इसकी पहली पंक्ति में एक प्रश्न है और बाद के अंश में उसका उत्तर दिया गया है। आपने ध्यान दिया होगा कि यह पूरा निबंध इसी तरह की प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया है। यह प्रश्नोत्तर या संवादात्मक शैली इस निबंध की संरचना को विशेष बनाती है। इसी तरह की और भी अन्य विशेषताएँ इस निबंध में से छाँटकर लिखिए।

3. नीचे कुछ विषय दिए गए हैं, आप इनमें से किन विषयों पर निबंध लिखना चाहेंगे, कारण सहित लिखिए—

- मेरा भारत मेरा गौरव
- चाँद के साथ गपशप
- जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि
- गागर में सागर
- यथा नाम तथा गुण
- दूध का दूध और पानी का पानी

विषयों से संवाद

चुनाव एवं आपके अनुभव

"क्या कोई ऐसी कसौटी भी बनाई जा सकती है, जिससे देश के नागरिकों को आधार बनाकर देश की उच्चता और हीनता को हम तोल सकें?"

रचनाकार के अनुसार इस प्रश्न का उत्तर है— निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया।

1. जब कोई चुनाव प्रक्रिया आपके क्षेत्र में शुरू होती है तो किस तरह की गतिविधियाँ होती हैं?
2. "जब भी कोई चुनाव हो, ठीक मनुष्य को अपना मत दें", आपके विचार से एक अच्छे उम्मीदवार में क्या-क्या गुण होने चाहिए?

3. चुनाव से जुड़ा अपना कोई अनुभव लिखिए।
(संकेत– विद्यालय में कक्षा प्रतिनिधि का चुनाव)
4. यदि आप किसी सभा, क्लब आदि के चुनाव में उम्मीदवार हों तो आपके क्या-क्या मुद्दे होंगे?

अधिकार और कर्तव्य

इस निबंध में किसी भी स्वतंत्र देश में नागरिक के अधिकार और उसके कर्तव्य की बात की गई है। आपकी पाठ्यपुस्तक के प्रारंभिक पृष्ठ पर भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार और कर्तव्य दिए गए हैं। उसे पढ़कर अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए।

सृजन

हमारा पुस्तकालय

आप अपने विद्यालय एवं सार्वजनिक पुस्तकालय में जाते हैं। हो सकता है, आपको कभी कोई पुस्तक फटी हुई मिली हो या उसमें से कुछ पृष्ठ गायब हों अथवा उसमें पेन से निशान लगे हों—

- ऐसा होने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं?
- ऐसा न हो, इसके लिए क्या किया जा सकता है?
- आप पुस्तकालय में किन नियमों का पालन करते हैं, उन नियमों का पालन करना क्यों अनिवार्य है? इस पर अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए और लिखिए।

ब्रेल लिपि में पुस्तकें

आपके विद्यालय में रोचक पुस्तकों का भंडार है परंतु आपके 'दृष्टिबाधित' सहपाठी स्वयं पढ़कर इनका आनंद नहीं उठा पाते हैं। प्रधानाध्यापक को ब्रेल लिपि में पुस्तकें मँगवाने के संदर्भ में पत्र लिखिए।

कृतज्ञता ज्ञापन

"अपने महान राष्ट्र की पराधीनता के दीन दिनों में जिन लोगों ने अपने रक्त से गौरव के दीप जलाए..."

देश के विकास में सभी का सहयोग होता है जो सीमा पर तैनात हैं और जो देश के भीतर हैं, जैसे– अध्यापक, किसान, श्रमिक, कलाकार, वैज्ञानिक, अभियंता आदि। इन सभी के अमूल्य योगदान के लिए कृतज्ञता ज्ञापन तैयार करके लिखिए।

विज्ञापन

"ठीक मनुष्य को अपना मत दें।"

उपर्युक्त पंक्ति में चुनाव में योग्य उम्मीदवार को चुनने का संदेश दिया गया है। आप भी चुनाव में योग्य उम्मीदवार को चुनने के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।

स्वच्छता और आचरण

"क्या आप कभी केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकते हैं..."

निबंध के इस अंश को पुन: पढ़िए। इस प्रकार के और कौन-कौन से आचरण हो सकते हैं जिनसे देश के सौंदर्य को आघात लगता है? इस विषय पर अपने अभिभावकों, सहपाठियों और शिक्षकों के साथ चर्चा कीजिए। *(संकेत– ऐतिहासिक या सार्वजनिक स्थानों पर अपना नाम आदि लिखना।)*

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

संदर्भ में शब्द

नीचे लिखे वाक्यों पर ध्यान दीजिए—

- एक दिन आनंद की इस दीवार में <u>दरार</u> पड़ गई।
- क्या कोई भूकंप आया था, जिससे दीवार में <u>दरार</u> पड़ गई।

दीवार में पैदा हुई चटक/तरेड़/फाँक/टूटन के लिए 'दरार' शब्द का प्रयोग करते हैं। भूकंप आने पर अथवा किसी भी प्रकार के तोड़-फोड़ का कार्य होने पर भवनों की छतों और दीवारों में दरार पड़ जाती है। इस शब्द का प्रयोग ऐसे भी किया जाता है—

- वे बहुत अच्छे मित्र थे। न जाने ऐसा क्या हुआ कि उनके संबंधों में <u>दरार</u> पड़ गई।
- भेदभाव की भावना सामाजिक एकता में <u>दरार</u> डालती है।

अब इसी प्रकार 'गाँठ' शब्द के प्रयोग पर ध्यान दीजिए—

- "पर उन दो घटनाओं में वह <u>गाँठ</u> इतनी साफ है, जो नागरिक और देश को एक साथ बाँधती है"
- माला गूँथते समय धागे के एक सिरे पर <u>गाँठ</u> बाँध दीजिए।

इसी प्रकार 'पानी' शब्द का प्रयोग देखिए—

- बहुत प्यास लगी है, पानी दीजिए।
- जब उस लड़के की पुस्तक से पन्ने फाड़ने की बात सामने आई तो वह पानी-पानी हो गया।
- इतनी अधिक वर्षा हुई कि चारों ओर पानी-पानी हो गया।
- अब इनके कामों के बारे में और क्या कहा जाए, इनका तो पानी ही उतर चुका है।

अब अपनी पाठ्यपुस्तक में से ऐसे अन्य शब्द छाँटकर लिखिए जो संदर्भ के अनुसार भिन्न-भिन्न अर्थ देते हों।

मिलते-जुलते भाव वाले 'शब्द-युग्म'

- "अपने पड़ोस में खेलकर, पड़ोसियों की ममता-दुलार पा, बड़ा हुआ था।"
- "इस तरह एक मनुष्य से भरा-पूरा नगर बनकर मैं खड़ा हुआ था।"

पहले वाक्य में 'ममता-दुलार' और दूसरे वाक्य में 'भरा-पूरा' शब्द मिलता-जुलता भाव दे रहे हैं। ये शब्द-युग्म हैं। शब्द-युग्म प्राय: दो शब्दों के समूह होते हैं। ये कई प्रकार से बनते और बनाए जाते हैं। कभी अर्थ की दृष्टि से समान होते हैं, कभी उच्चारण की दृष्टि से समान होते हैं परंतु अर्थ में अंतर होता है, कभी विपरीत भाव भी देते हैं। इस प्रकार के शब्दों के प्रयोग से भाषा में सजीवता आती है।

आप इस निबंध में से मिलते-जुलते अर्थ वाले और पुनरुक्त (एक ही शब्द को फिर से कहना) शब्द-युग्म छाँटकर लिखिए।

शब्दों की कड़ियाँ/शृंखला

"मैं सोचा करता था कि मेरी मनुष्यता में अब कोई अपूर्णता नहीं रही।"

उपर्युक्त वाक्य के रेखांकित शब्द 'अपूर्णता' में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का ही प्रयोग चिह्नित किया गया है। इस प्रयोग को समझकर नीचे दिए गए शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय शब्द पहचानकर लिखिए—

अलौकिक, निरक्षरता, सम्मानित, अनावश्यक, अपमानित, अभिमानी

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
अपूर्णता	अ	पूर्ण	ता

(आपकी पाठ्यपुस्तक के 'क्या लिखूँ?' पाठ में भी उपसर्ग और प्रत्यय के प्रयोग के विषय में जानकारी दी गई है।)

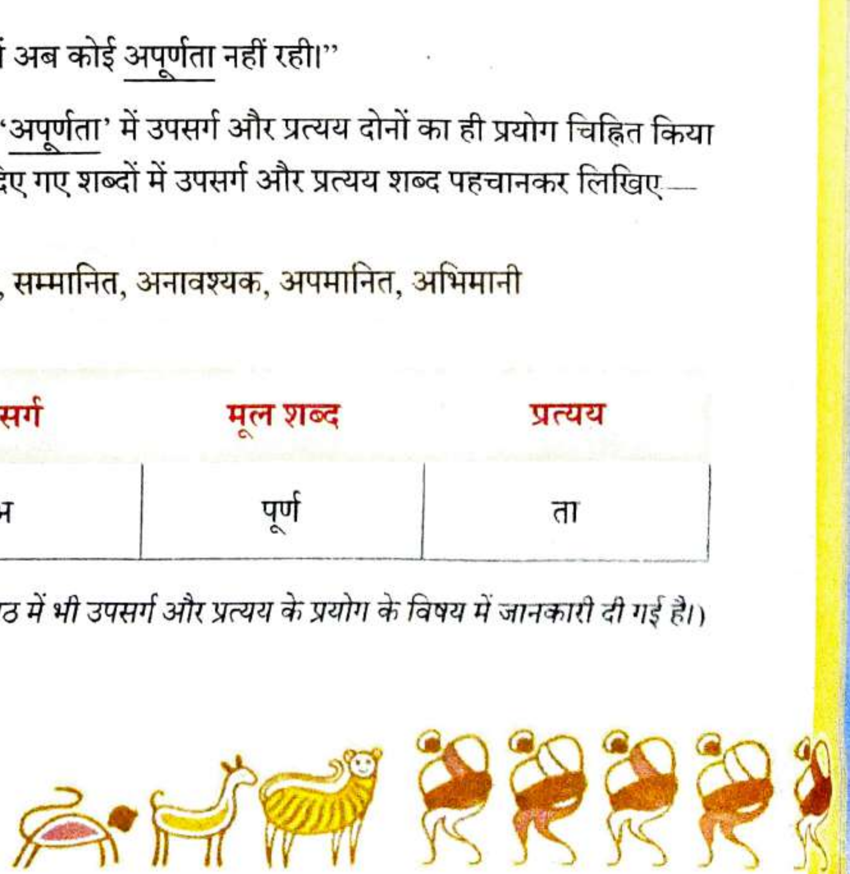

गतिविधियाँ

'देश मात्र एक भौगोलिक सीमा क्षेत्र नहीं है।'

इस विषय पर परिचर्चा का आयोजन कीजिए और परिचर्चा में उभरकर आए बिंदुओं की रिपोर्ट तैयार कीजिए। रिपोर्ट को पावर प्वांइट प्रस्तुतीकरण या चार्ट के माध्यम से कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

भाषा संगम

"मैं अपने देश का नागरिक हूँ"

नीचे 'देश' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

देश (हिंदी); देशः, क्षेत्रम् (संस्कृत); देस, देश (पंजाबी); ख़ित्ता, इलाक़ा (उर्दू); दीश, मुलुॅख (कश्मीरी); देशु, देसु (सिंधी); देश (मराठी); देश, प्रदेश (गुजराती); देश (कोंकणी); देश, मुलुक, राष्ट्र (नेपाली); प्रदेश, अञ्चल, राज्य (बांग्ला); देश, राज्य, प्रदेश (असमिया); लैबाक, मफम, लम (मणिपुरी); देश, राज्य, प्रदेश, अंचल (ओड़िआ); प्रदेशमु (तेलुगु); इडम्, पिरदेशम् (तमिल); देशम् (मलयालम); देश (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप 'देश' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp

झरोखे से

इस निबंध में स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय का उल्लेख किया गया है। इसमें नागरिक के कर्तव्य एवं अधिकारों की बात की गई है। अब आप लाला लाजपत राय के नीचे दिए गए कुछ विचारों को पढ़िए।

आत्मनिर्भरता

प्रगति का तात्पर्य है स्वतंत्रता की ओर प्रस्थान। तुम्हारे पूर्वजों ने तुम्हें यही सिखाया है कि जैसे ही तुममें पर-निर्भरता पनपती है, स्वतंत्रता पलायन कर जाती है। यदि पर-निर्भरता को पूर्णरूपेण नहीं त्याग सकते तो एक सीमा तक कम तो कर ही सकते हो। आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास की आदत डालो, किसी को नाराज करने या परेशान करने के इरादे से नहीं, वरन पुरुषार्थ की भावना से ऐसा करो।

– यूरोप से भारत वापसी पर स्वागत के अवसर पर
(बंबई, 20 फरवरी 1920)

अधिकारों की रक्षा

हर एक का नैतिक कर्तव्य है कि तन-मन-धन से अपने जन्मसिद्ध अधिकारों की रक्षा करे। मेरी राय में जो ऐसा नहीं करता, अपने नैतिक कर्तव्य से हट जाता है। जितनी जल्दी हम अपनी इस नैतिक जिम्मेदारी को समझ लेंगे, हम स्वराज्य को प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगे।

– जेल जाते समय देशवासियों के नाम संदेश
(7 जनवरी 1922)

खोजबीन

निबंध में स्वामी रामतीर्थ के अनुभव का उल्लेख किया गया है। आप अपने पुस्तकालय या इंटरनेट से उनके विषय में सामग्री खोजकर पढ़िए और सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।

शब्द-संपदा

संचित — इकट्ठा किया हुआ, जमा किया हुआ, ढेर लगाया हुआ

मानस — मन, चित्त, मन से उत्पन्न, मानसरोवर, रामचरितमानस

तेजस्वी — तेजवाला, प्रतापी, शक्तिशाली, प्रभावशाली

ठसक — चाल-ढाल का बनावटीपन, जिससे रूप, धन आदि का गर्व सूचित होता हो; ऐंठ, शान, नखरा

धनिक — धनवान, धनी, स्वामी

रसद — अनाज, खाने का सामान, भत्ता, राशन

दाद देना — न्यायोचित प्रशंसा करना, न्याय करना

साक्षी — गवाही, गवाह का बयान

लांछित — दोषयुक्त, कलंकित

हँडिया — एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन

सुतली — सन या पटसन के रेशों से बटकर बनाई हुई डोरी

चौपाल — खुली या छायी हुई मंडपाकार बैठक जहाँ गाँव के लोग बैठकर पंचायत आदि करते हों; छायादार बड़ा चबूतरा या दालान

सघन — घना, गझिन, ठोस

तरेड़ — दरार

ज़ीना — सीढ़ी, सोपान

साथ-साथ पढ़ें

निर्मल जीत सिंह सेखों

सरदार त्रिलोक सिंह सेखों एवं हरबंस कौर के पुत्र निर्मल जीत सिंह सेखों का जन्म 17 जुलाई 1945 को हुआ था। उनका गाँव इसवाल पंजाब के लुधियाना के समीप हलवारा एयरफोर्स स्टेशन के पास था। संभवतः इसीलिए वे बचपन से ही वायुयान के प्रति आकर्षित रहे। 19वीं शताब्दी की शुरुआत के एक प्रसिद्ध योद्धा हरी सिंह नलवा की कहानियों के प्रति उनकी विशेष अनुरक्ति थी। यही नहीं, वे अपने पिता से भी बेहद प्रभावित थे, जिन्होंने भारतीय वायुसेना में अपनी सेवाएँ दी थीं। आसमान से जुड़ी रोमांचक और प्रेरक कहानियों को बेहद उत्साहपूर्वक सुनने वाले निर्मल जीत सिंह ने एक दिन खुद को भी भारतीय वायुसेना से जोड़ने का सपना देखा था। उन्होंने लड़ाकू विमान चालक बनने का दृढ़ निश्चय बचपन में ही कर लिया था।

निर्मल जीत ने लुधियाना के समीप अजितसर मोहे में स्थित खालसा हाई स्कूल से अपनी शिक्षा प्राप्त की तथा मैट्रिक की परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। उन्होंने सन् 1962 में दयालबाग इंजीनियरिंग कॉलेज आगरा में दाखिला लिया। 'नेशनल कैडेट कोर' (एन.सी.सी.) में कैडेट रहते हुए, निर्मल जीत ने एरो-मॉडलिंग में अपनी गहरी रुचि प्रदर्शित की। हालाँकि 1965 के युद्ध के बाद उन्होंने भारतीय वायुसेना में शामिल होने के अपने सपने को साकार करने के लिए बीच में ही इंजीनियरिंग की पढ़ाई छोड़ दी।

अनेक बाधाओं के बावजूद निर्मल जीत सिंह सेखों की आकांक्षा जल्द ही पूरी हो गई। 4 जून 1967 को उन्हें भारतीय वायुसेना में नियुक्ति मिल गई। चूँकि वे बहुत लंबी कद-काठी के थे, इसलिए उनके लिए छोटे लड़ाकू विमान 'नैट' में बैठना असहज था। हालाँकि जल्द ही वे इन लड़ाकू विमानों 'नैट्स' को उड़ाने में सिद्धहस्त हो गए। अपने उदार एवं मैत्रीपूर्ण स्वभाव के लिए पहचाने जाने वाले निर्मल जीत सिंह को सभी प्यार से 'भाई' कहकर पुकारते थे। अक्टूबर 1968 में वे फ्लाइंग ऑफिसर के रूप में 'फ्लाइंग बुलेट्स' कही जाने वाली संख्या 18 स्क्वाड्रन में शामिल हो गए।

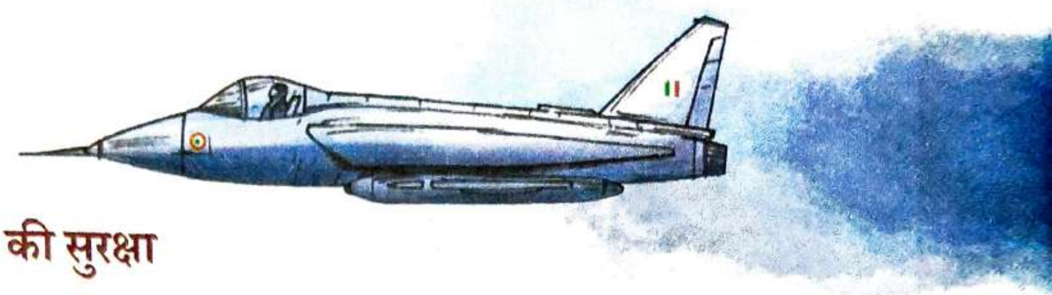

आसमान की सुरक्षा

1971 में पाकिस्तान ने भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में हवाई हमले द्वारा युद्ध छेड़ दिया। कई हवाई क्षेत्र पाकिस्तानी वायुसेना के हवाई हमलों के शिकार हो गए। भारत, श्रीनगर में हवाई सुरक्षा के लिए किसी एयरक्राफ्ट को नहीं रख सकता था, क्योंकि इस संबंध में 1948 में एक अंतरराष्ट्रीय समझौता हुआ था। लेकिन युद्ध के कारण कश्मीर घाटी की सुरक्षा के लिए श्रीनगर में नैट स्क्वाड्रन टुकड़ी को रखा गया था। ऐसी चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में निर्मल जीत सिंह सेखों इस टुकड़ी में शामिल हुए। उन्होंने जल्द ही अपने को भयानक ठंड के अनुकूल ढाल लिया और निर्भीकतापूर्वक पाकिस्तानी वायुसेना को मुँहतोड़ जवाब दिया।

14 दिसंबर को पेशावर हवाई अड्डे से उड़ान भरने वाले पाकिस्तानी वायुसेना के एफ-86 सेबर जेट फाइटर ने श्रीनगर हवाई क्षेत्र पर हमला शुरू कर दिया। फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों उस वक्त मुस्तैदी के साथ ड्यूटी पर तैनात थे। पाकिस्तानी विमान चालकों द्वारा लगातार किए जा रहे हमलों ने सेखों को अपनी असाधारण वीरता प्रदर्शित करने का अवसर दिया। अपनी जान की परवाह किए बगैर वे नैट एयरक्राफ्ट लेकर उड़ पड़े। प्रारंभ से ही दिखाई दे रहा था कि परिस्थितियाँ उनके अनुकूल नहीं हैं। लेकिन इस विषम परिस्थिति में भी वे असफल नहीं हुए और उन्होंने दुश्मन को आसमान में ही एक भयंकर युद्ध में घेरना शुरू कर दिया।

अपने नैट एयरक्राफ्ट का कुशलतापूर्वक संचालन करते हुए, निर्मल जीत सिंह सेखों ने छह पाकिस्तानी सेबर फाइटर एयरक्राफ्ट को मार्ग में रोक दिया। उन्होंने इन लड़ाकू विमानों पर आक्रमण किया तथा ज्यादातर को नष्ट कर दिया। अपने फौलादी संकल्प के बारे में 'कॉम्बेट एयर पैट्रॉल' (सी.ए.पी.) कंट्रोल रूम को बताते हुए उन्होंने कहा, "मैं दो सेबर फाइटर एयरक्राफ्ट के पीछे लगा हूँ। मैं उन्हें भागने नहीं दूँगा।" सेखों भले ही भयानक परिस्थितियों में लड़ रहे थे, लेकिन उन्होंने पाकिस्तानी वायुसेना को भारी क्षति पहुँचाई। अपनी योग्यता पर पूर्ण विश्वास रखने वाले निर्मल जीत सिंह ने आकाश में आखिरी दम तक वीरतापूर्वक युद्ध किया। उनके निर्भीक हवाई युद्ध ने शत्रु चालकों के इरादों पर सेंध लगा दी, जिसके कारण वे कश्मीर में कोई विशिष्ट सफलता प्राप्त न कर सके।

फ्लाइंग ऑफिसर सेखों की उम्र मात्र 26 वर्ष थी, जब उन्होंने मातृभूमि की रक्षा करते हुए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया था। वे अपने पीछे अपनी पत्नी मनजीत सेखों को छोड़ गए, जिनसे उनका विवाह महज 10 माह पूर्व ही हुआ था (बाद में उनका पुनर्विवाह हो गया)। भारतीय वायुसेना के वे एकमात्र नायक हैं, जिन्हें परम वीर चक्र से सम्मानित किया गया। जो लोग हवाई-युद्ध-कौशल में प्रवीण होना चाहते हैं, उनके लिए फ्लाइंग ऑफिसर सेखों का अभूतपूर्व उड़ान-कौशल तथा विषम से विषम परिस्थितियों में भी किए गए असाधारण कार्य प्रेरणा के स्रोत हैं।

7 अक्टूबर 1982 को भारतीय वायुसेना की पचासवीं वर्षगाँठ पर सेना के डाक विभाग ने फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों के सम्मान में एक विशेष डाक आवरण जारी किया था। सन् 2000 में 50वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर भारत सरकार द्वारा आपके सम्मान में एक डाक टिकट भी जारी किया गया। पंजाब के लुधियाना जिला न्यायालय के प्रांगण तथा एयरफोर्स म्यूजियम, पालम, नई दिल्ली में नैट एयरक्राफ्ट के साथ इनकी प्रतिमा लगाई गई है। चेतन आनंद द्वारा निर्देशित फिल्म 'हिन्दुस्तान की कसम' (1973), भारतीय वायुसेना के 1971 के युद्ध के गौरवशाली अध्याय पर आधारित है।

स्रोत– वीरगाथा— परम वीर चक्र विजेताओं की कहानियाँ, रा.शै.अ.प्र.प.

एयरफोर्स म्यूजियम, पालम, नई दिल्ली में स्थापित 'नैट एयरक्राफ्ट' के साथ फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों की प्रतिमा

प्रशस्ति पत्र

फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों

(10877), फ्लाइंग ब्रांच (पायलट)

फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों श्रीनगर में स्थित 'नैट डिटैचमेंट' के पायलट थे, जहाँ उन्हें पाकिस्तानी हवाई हमले से घाटी की रक्षा करनी थी। युद्ध के शुरुआती दौर से ही वे और उनके सहयोगी पाकिस्तानी विमानों द्वारा एक के बाद एक हो रहे तूफानी हमलों का बहादुरी और दृढ़ता से सामना करते हुए नैट एयरक्राफ्ट की उत्तम साख को कायम रखे हुए थे। 14 दिसंबर 1971 को श्रीनगर हवाई पट्टी पर दुश्मन के छह सेबर एयरक्राफ्ट के एक दल द्वारा हमला किया गया था। उस समय फ्लाइंग ऑफिसर सेखों रेडिनेस ड्यूटी पर थे। तत्काल ही दुश्मन के कम से कम 6 लड़ाकू विमान ऊपर मँडराने लगे और हवाई पट्टी पर ताबड़तोड़ बमबारी शुरू कर दी। इस हमले के दौरान जानलेवा खतरे के बावजूद फ्लाइंग ऑफिसर सेखों ने उड़ान भरी और तुरंत ही दो हमलावर सेबर फाइटर एयरक्राफ्ट को युद्ध में उलझा लिया। इस लड़ाई में यह हुआ कि उन्होंने एक एयरक्राफ्ट को मार गिराया तथा दूसरे को आग के हवाले कर दिया। इतने में दूसरे सेबर लड़ाकू विमान संकट में फँसे अपने साथियों की सहायता के लिए आ गए और उन्होंने फिर फ्लाइंग ऑफिसर सेखों के 'नैट एयरक्राफ्ट' को घेर लिया, इस बार एक के पीछे चार थे। हालाँकि बराबरी की टक्कर न होते हुए भी फ्लाइंग ऑफिसर सेखों ने अकेले ही दुश्मनों को पूरी टक्कर दी। इस लड़ाई में जो कि एक वृक्ष जितनी ऊँचाई पर लड़ी जा रही थी, सेखों ने अपनी पूरी वीरता दिखाई, लेकिन अंत में अधिक संख्या ने उन्हें मात दे दी। उनका विमान गिरकर ध्वस्त हो गया और वे वीरगति को प्राप्त हो गए।

ऐसे समय में जब मृत्यु निश्चित थी, फ्लाइंग ऑफिसर सेखों ने सर्वोच्च वीरता, हवाई रण-कौशल और असाधारण संकल्प का परिचय अपने निहित कर्तव्यों से भी ऊपर उठकर देते हुए वायुसेना की परंपराओं को नई ऊँचाइयाँ दीं।

गजट ऑफ इंडिया नोटिफिकेशन
सं. 7–प्रेसी./72

काव्य खंड

समूचे जनसमूह में भाषा और भाव की एकता और सौहार्द का होना अच्छा है।

—हजारीप्रसाद द्विवेदी

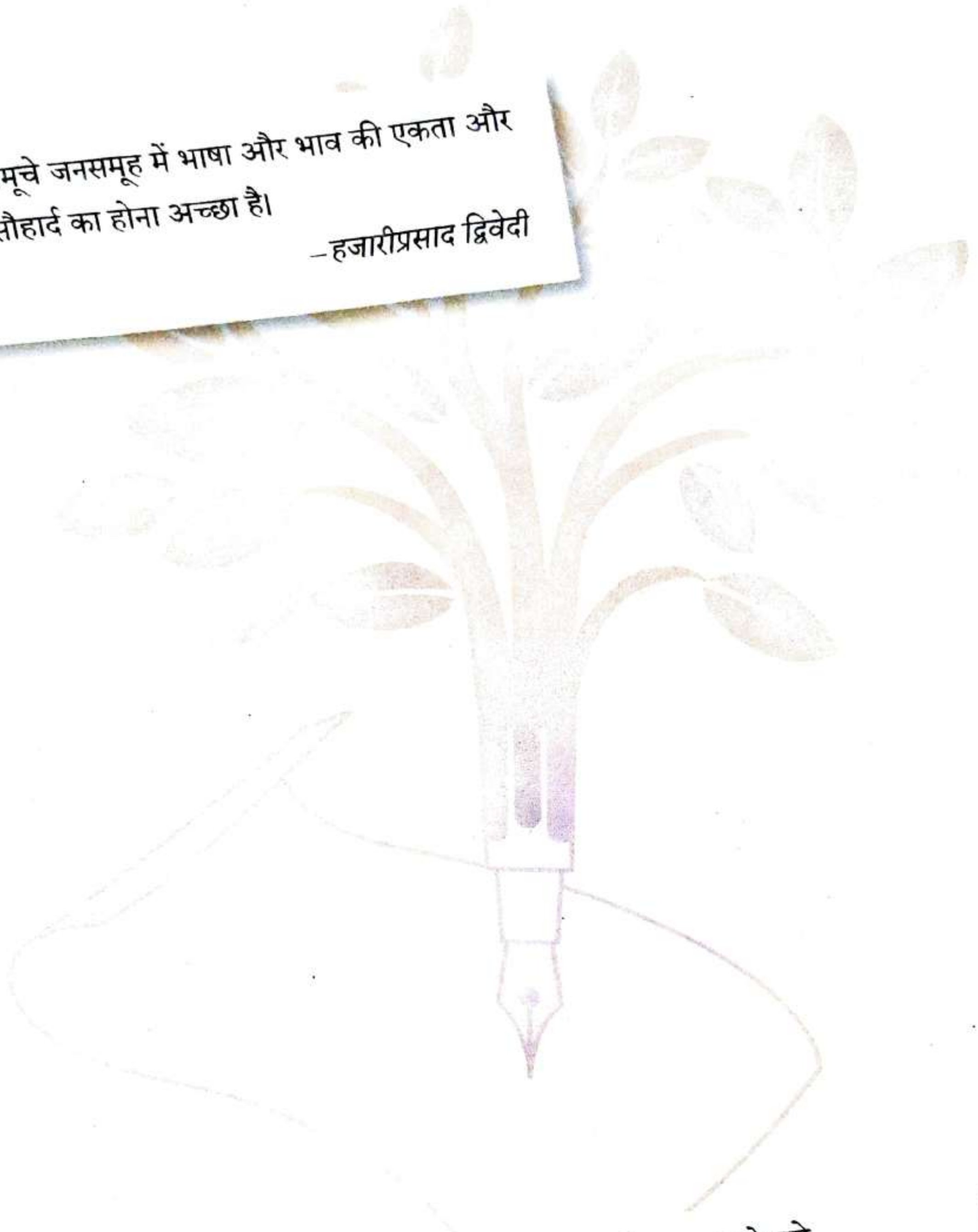

कुछ लिख के सो कुछ पढ़ के सो
तू जिस जगह जागा सवेरे
उस जगह से बढ़ के सो!

—भवानीप्रसाद मिश्र

8

रैदास

रैदास नाम से विख्यात संत रविदास का जन्म काशी (वाराणसी) में हुआ। उनका जीवन-काल 15वीं शताब्दी (सन् 1388–1518)* माना जाता है। रैदास संत कवियों में गिने जाते हैं। उन्होंने बाह्य आडंबरों का खंडन कर मन की शुद्धता और आंतरिक भक्ति को ही सच्चा धर्म माना है।

0901CH08

रैदास ने अपनी काव्य-रचनाओं में सरल, व्यावहारिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया है, जिसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू-फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है। उनकी सरल ब्रज भाषा में लिखी भक्ति रचनाएँ *आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी* में शामिल हैं और वे आज भी समानता, प्रेम और भाईचारे का संदेश देती हैं। उनकी रचनाएँ *रैदास बानी* में संकलित हैं।

यहाँ रैदास के दो पद लिए गए हैं। पहले पद में बताया गया है कि जैसे चंदन-पानी, दीपक-बाती, मोती-धागा और बादल-मोर का संबंध अटूट होता है, वैसे ही भक्त से उसके आराध्य अलग नहीं हो सकते। इस पद में अनन्य भक्ति और आराध्य के प्रति समर्पण का भाव प्रकट होता है।

दूसरे पद में भी आराध्य से भक्त का अटूट नाता व्यक्त किया गया है। वह तीर्थ और व्रत छोड़ सकता है, पर प्रभु-चरणों की भक्ति नहीं। यह पद निष्ठा, विश्वास और अडिग भक्ति को व्यंजित करता है।

***संदर्भ**– *हिंदी साहित्य कोश (भाग-2), नामवाची शब्दावली, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी*

पद*

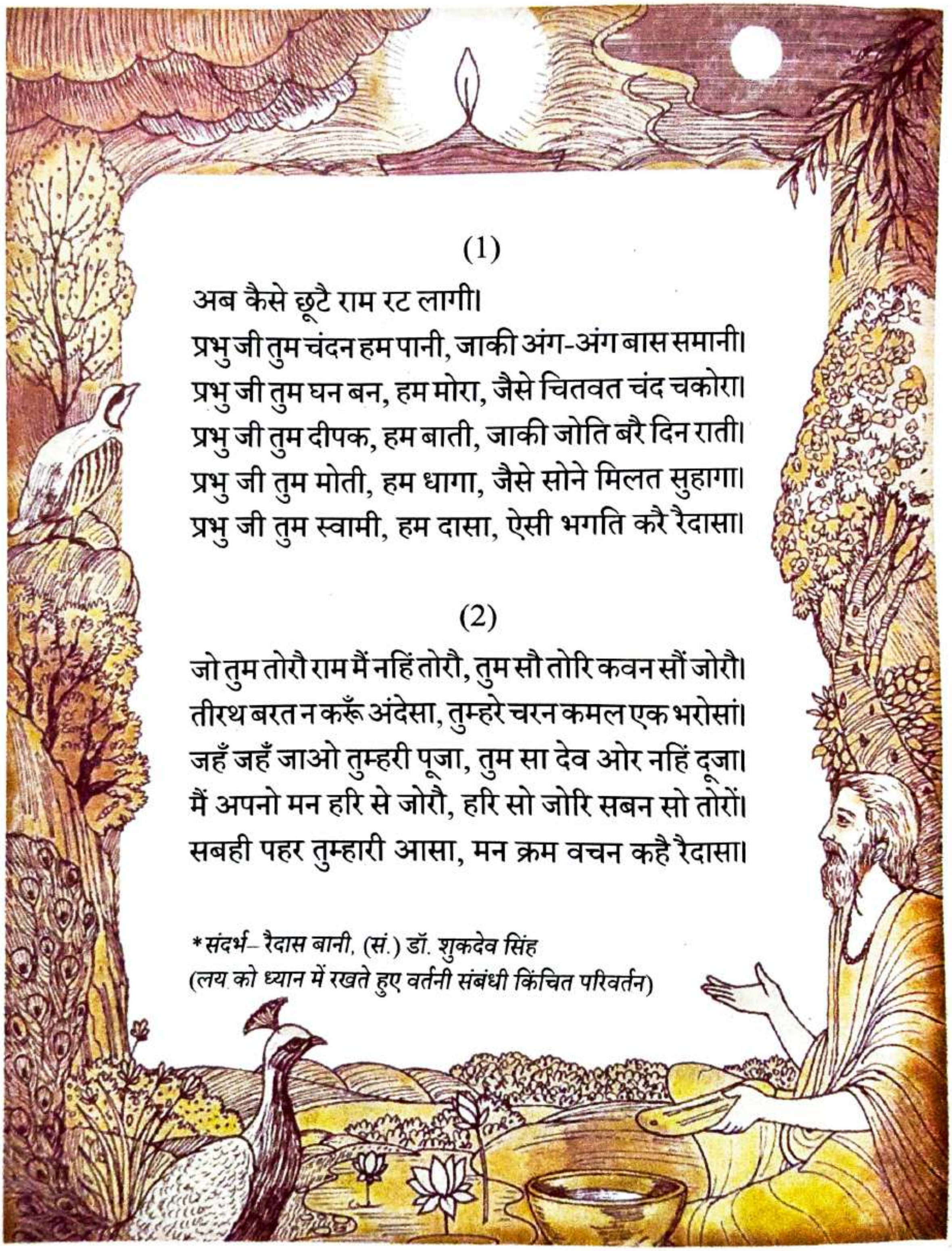

(1)

अब कैसे छूटै राम रट लागी।
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।
प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी तुम दीपक, हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी तुम मोती, हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी, हम दासा, ऐसी भगति करै रैदासा।

(2)

जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ, तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ।
तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसा।
जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा, तुम सा देव ओर नहिं दूजा।
मैं अपनो मन हरि से जोरौ, हरि सो जोरि सबन सो तोरों।
सबही पहर तुम्हारी आसा, मन क्रम वचन कहै रैदासा।

*संदर्भ– रैदास बानी, (सं.) डॉ. शुकदेव सिंह
(लय को ध्यान में रखते हुए वर्तनी संबंधी किंचित परिवर्तन)

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. "अब कैसे छूटै राम रट लागी" पंक्ति का भाव है?
   - (क) नाम उच्चारण की कठिनाई
   - (ख) नाम रटकर याद करना
   - (ग) आराध्य का नाम जपना
   - (घ) मित्रों का नाम रटना
2. "प्रभु जी तुम चंदन हम पानी" पंक्ति में आराध्य और भक्त का संबंध किस रूप में व्यक्त हुआ है?
   - (क) एकाकार और समरूप
   - (ख) तरल और तीव्र सुगंध
   - (ग) आश्रय और आश्रित
   - (घ) द्रव और ठोस
3. "तुम दीपक, हम बाती" से रैदास का क्या भाव है?
   - (क) दीपक और बाती का कोई मेल नहीं होता है।
   - (ख) दीपक बिना बाती भी जल सकता है।
   - (ग) भक्त आराध्य से अधिक महत्वपूर्ण है।
   - (घ) भक्त का आराध्य से मेल जीवन को आलोकित करता है।
4. "जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ" पंक्ति में रैदास का क्या आशय है?
   - (क) परोपकारी भक्ति भाव
   - (ख) आराध्य से अटूट संबंध
   - (ग) सांसारिक मोह
   - (घ) कर्मकांड पर बल
5. "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा" पंक्ति से आप क्या समझते हैं?
   - (क) तीर्थ और व्रत आवश्यक नहीं हैं।
   - (ख) तीर्थ और व्रत सब आवश्यक हैं।

(ग) तीर्थ जाने से मुक्ति निश्चित है।

(घ) आराध्य के चरणों में सच्चा आश्रय है।

6. सर्वव्यापक ईश्वर की अवधारणा किस पंक्ति में व्यक्त होती है?

(क) "जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा"

(ख) "जाकी जोति बरै दिन राती"

(ग) "तुम दीपक, हम बाती"

(घ) "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा"

अर्थ और भाव

नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ समझाते हुए भाव स्पष्ट कीजिए।

(क) "प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।"

(ख) "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसा।।"

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. "जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ" पंक्ति में रैदास की अपने आराध्य में अटूट निष्ठा का भाव है। इससे आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।
2. रैदास ने तीर्थ और व्रत के स्थान पर किस साधन को भक्ति का प्रमुख आधार माना है? आपके विचार से भक्ति के क्या आधार हो सकते हैं?
3. दोनों पदों में भक्त और आराध्य के संबंध को किन-किन प्रतीकों/उपमाओं से व्यक्त किया गया है? लिखिए।

विधा से संवाद

कविता का सौंदर्य

- "प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।"

उपर्युक्त पंक्ति के रेखांकित अंश पर ध्यान दीजिए। इसमें अनुप्रास अलंकार का प्रयोग किया गया है। जिस रचना में व्यंजन वर्णों की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

- "प्रभु जी तुम मोती, हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा।"

उपर्युक्त रेखांकित अंश में उपमा अलंकार है। किसी प्रसिद्ध वस्तु की समानता के आधार पर जब किसी वस्तु या व्यक्ति के रूप, गुण, धर्म का वर्णन किया जाता है तो वहाँ उपमा अलंकार होता है।

- "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसा।"

उपर्युक्त रेखांकित अंश में रूपक अलंकार है। रूपक अलंकार वहाँ होता है जहाँ रूप और गुण की अत्यधिक समानता के कारण उपमेय में उपमान का आरोप कर अभेद स्थापित किया जाए।

अब आप अपनी पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित कविताओं में अनुप्रास, उपमा और रूपक अलंकार वाली अन्य पंक्तियों को ढूँढ़कर लिखिए।

कविता की कुछ अन्य विशेषताएँ

नीचे दी गई सूची को ध्यान से देखिए। इस सूची में रैदास के दोनों पदों से कुछ विशेषताएँ चुनकर दी गई हैं। पदों में से चुनकर इन विशेषताओं को दर्शाती पंक्तियाँ लिखिए। उदाहरण के लिए पहली विशेषता के सामने पंक्ति दी गई है।

विशेषताएँ	उदाहरण
अनन्य भक्ति भाव	"जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ, तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ।"
सरल और लोकधर्मी भाषा	
उपमा और तुलना	
लयात्मकता और गेयता/ध्वन्यात्मकता	
दृढ़ निष्ठा और आस्था	

विषयों से संवाद

1. तीर्थ और व्रत के स्थान पर रैदास ने आराध्य की भक्ति को प्रधान माना है। भक्तिकाल के कवि रैदास की तरह कबीर भी निराकार आराध्य की भक्ति पर बल देते हैं। तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के आधार पर बताइए कि इसके क्या कारण हो सकते हैं?
(संकेत– आप अपने सामाजिक विज्ञान के शिक्षक की सहायता भी ले सकते हैं।)

2. "सोने मिलत सुहागा"

   'सुहागा' एक प्राकृतिक खनिज है जिसके प्रयोग से सोने की अशुद्धियाँ दूर हो जाती हैं और उसकी चमक बढ़ जाती है। 'सुहागा' का रासायनिक नाम और उसकी विशेषताएँ अपने विज्ञान के शिक्षक से चर्चा करके लिखिए।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

शब्दों की बात

1. पठित पदों में से संज्ञा और सर्वनाम के तीन-तीन उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।
2. रैदास के इन दोनों पदों में बहुत से ऐसे शब्द प्रयुक्त हुए हैं जिनके स्थान पर अन्य शब्दों का प्रयोग होता है। नीचे सूची में दिए गए शब्दों को देखिए। आप या आपके आस-पास के लोग इन शब्दों के लिए किन अन्य शब्दों का प्रयोग करते हैं? लिखिए।

   मोरा, चकोरा, बाती, राती, सोने, तीरथ, बरत

सृजन

1. कक्षा में समूह बनाकर इन दोनों पदों को गाकर/पाठ करके प्रस्तुत कीजिए।
2. कल्पना कीजिए कि पद में आई उपमाओं के आधार पर भक्त और आराध्य आपस में बात कर रहे हैं। इस दृश्य को आधार बनाकर संवाद-लेखन कीजिए।
3. "जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ" पंक्ति को आधार बनाकर अटूट मित्रता पर एक लघुकथा तैयार कीजिए।

झरोखे से

आपने रैदास के पद पढ़े। अब आप रैदास की तरह ही महाराष्ट्र के संत कवि नामदेव के आगे दिए गए दो पद पढ़िए। निर्गुण संत काव्य परंपरा के संत कवि नामदेव का जन्म 13वीं–14वीं शताब्दी में महाराष्ट्र में हुआ। अन्य संत कवियों की भाँति नामदेव ने भी बाह्य आडंबरों, सामाजिक रूढ़ियों का विरोध कर सामाजिक समरसता, प्रेम एवं निराकार भक्ति से संबंधित पदों की रचना की है।

(1)

माइ न होती बापु न होता करम न होती काया।
हम नहिं होते, तुम नहिं होते, कवन कहां ते आया।।
राम कोइ न किसही केरा। जैसे तरवर पंखि-बसेरा।।
चंद न होता, सूर न होता, पानी पवनु मिलाया।
सास्त्र न होता बेद न होता, करमु कहां ते आया।।
खेचरि भूचरि तुलसी माला गुरपरसादी पाया।
नामा प्रणवै परम तत्त कूं सतगुर मोहि लखाया।।

(2)

मोहि लागति तालाबेली।
बछरा बिनु गाइ अकेली।।
पानी बिनु ज्यूं मीन तलफैं।
ऐसे रामनाम बिनु नामा कलपै।।
जैसे गाइ का बाछा छूटला।
थन चोखता माखन घूटला।।
नामदेउ नारायन पाया।
गुर भेटत ही अलख लखाया।।
जैसे विषै हेत परनारी।
ऐसे नामे प्रीति मुरारी।।
जैसे ताप ते निरमल घामा।
तैसे रामनाम बिनु बापुरो नामा।।

अब अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए और बताइए कि रैदास तथा नामदेव के पदों में क्या-क्या अंतर है और क्या-क्या समानताएँ हैं?

खोजबीन

रैदास के जीवन और पदों के विषय में पुस्तकालय और इंटरनेट से खोजकर पढ़िए। कुछ लिंक नीचे दिए गए हैं।

https://youtu.be/zZoAghETdgI

https://youtu.be/0vfpBMozOXY

शब्द-संपदा

चंदन	—	एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी एक प्रधान गंधद्रव्य है, संदल, चंदन को घिसकर बनवाया हुआ लेप
बास	—	गंध, निवास, वासस्थान, वस्त्र
घन	—	बादल, मेघ, अंधकार, समूह, विस्तार
चितवत/चितवन/चितवना	—	किसी की ओर देखने का ढंग, दृष्टि, देखना, निरखना
चकोरा/चकोर	—	तीतर की जाति का एक पक्षी जो चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है
जोति/ज्योति	—	प्रकाश, रोशनी, लौ, सूर्य, नक्षत्र
तीरथ/तीर्थ	—	पुण्य क्षेत्र, वह पुण्य स्थान जहाँ विशेष धर्म के अनुयायी पूजा, स्नान आदि के लिए जाते हों, जैसे– काशी, प्रयाग, मथुरा आदि
अंदेसा	—	सोच, चिंता, शक, आशंका, खतरा, हानि, दुविधा

9

तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास का जन्म आज के उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनका जीवन-काल 16वीं–17वीं शताब्दी (सन् 1532–1623)* के मध्य माना गया है। *रामचरितमानस* तुलसीदास का प्रसिद्ध महाकाव्य है। *रामचरितमानस* उनकी अनन्य रामभक्ति और उनके सृजनात्मक कौशल का मनोरम उदाहरण है। उनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ *कवितावली, गीतावली, दोहावली, कृष्णगीतावली, विनयपत्रिका, हनुमान बाहुक* हैं। तुलसीदास की रचनाओं में राम मानवीय मर्यादाओं और आदर्शों के प्रतीक हैं जिनके माध्यम से उन्होंने नीति, स्नेह, शील, विनय, त्याग जैसे मूल्यों को प्रतिष्ठित किया है। मानव-प्रकृति, लोकजीवन और जीवन-जगत संबंधी गहरी अंतर्दृष्टि उनके काव्य में दिखाई पड़ती है।

तुलसीदास संस्कृत के श्रेष्ठ ज्ञाता थे। उनका अवधी और ब्रज दोनों भाषाओं पर समान अधिकार था। उन्होंने *रामचरितमानस* की रचना अवधी में और *विनयपत्रिका* तथा *कवितावली* की रचना ब्रजभाषा में की। काशी में उनका देहावसान हुआ।

0901CH09

प्रस्तुत अंश 'रामचरितमानस' के 'बालकांड' से लिया गया है। सीता स्वयंवर में श्रीराम द्वारा शिव-धनुष भंग का समाचार जब मुनि परशुराम को मिलता है तो वे आक्रोशित होकर वहाँ आते हैं। शिव-धनुष को खंडित देखकर वे तीव्र रोष प्रकट करते हैं और सभा में उपस्थित सभी राजाओं पर क्रोधित होते हैं। यहाँ तुलसीदास ने परशुराम के रोषपूर्ण और तेजस्वी रूप का वर्णन किया है। प्रस्तुत अंश में, सभा में उपस्थित राजाओं के भय, विश्वामित्र और जनक की सभा में उपस्थिति, जनक द्वारा सीता-स्वयंवर के बारे में बताने, विश्वामित्र द्वारा राम-लक्ष्मण का परशुराम से परिचय एवं सम्मानपूर्वक अभिवादन के बाद कथा आगे बढ़ती है।

*संदर्भ– *हिंदी साहित्य कोश (भाग-2), नामवाची शब्दावली, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी*

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

देखत भृगुपति बेषु कराला। उठे सकल भय बिकल भुआला॥
पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा॥
जेहि सुभायँ चितवहिं हितु जानी। सो जानइ जनु आइ खुटानी॥
जनक बहोरि आइ सिरु नावा। सीय बोलाइ प्रनामु करावा॥
आसिष दीन्हि सखीं हरषानीं। निज समाज लै गईं सयानीं॥
बिस्वामित्रु मिले पुनि आई। पद सरोज मेले दोउ भाई॥
रामु लखनु दसरथ के ढोटा। दीन्हि असीस देखि भल जोटा॥
रामहि चितइ रहे थकि लोचन। रूप अपार मार मद मोचन॥

बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु काह अति भीर।
पूछत जानि अजान जिमि ब्यापेउ कोपु सरीर॥

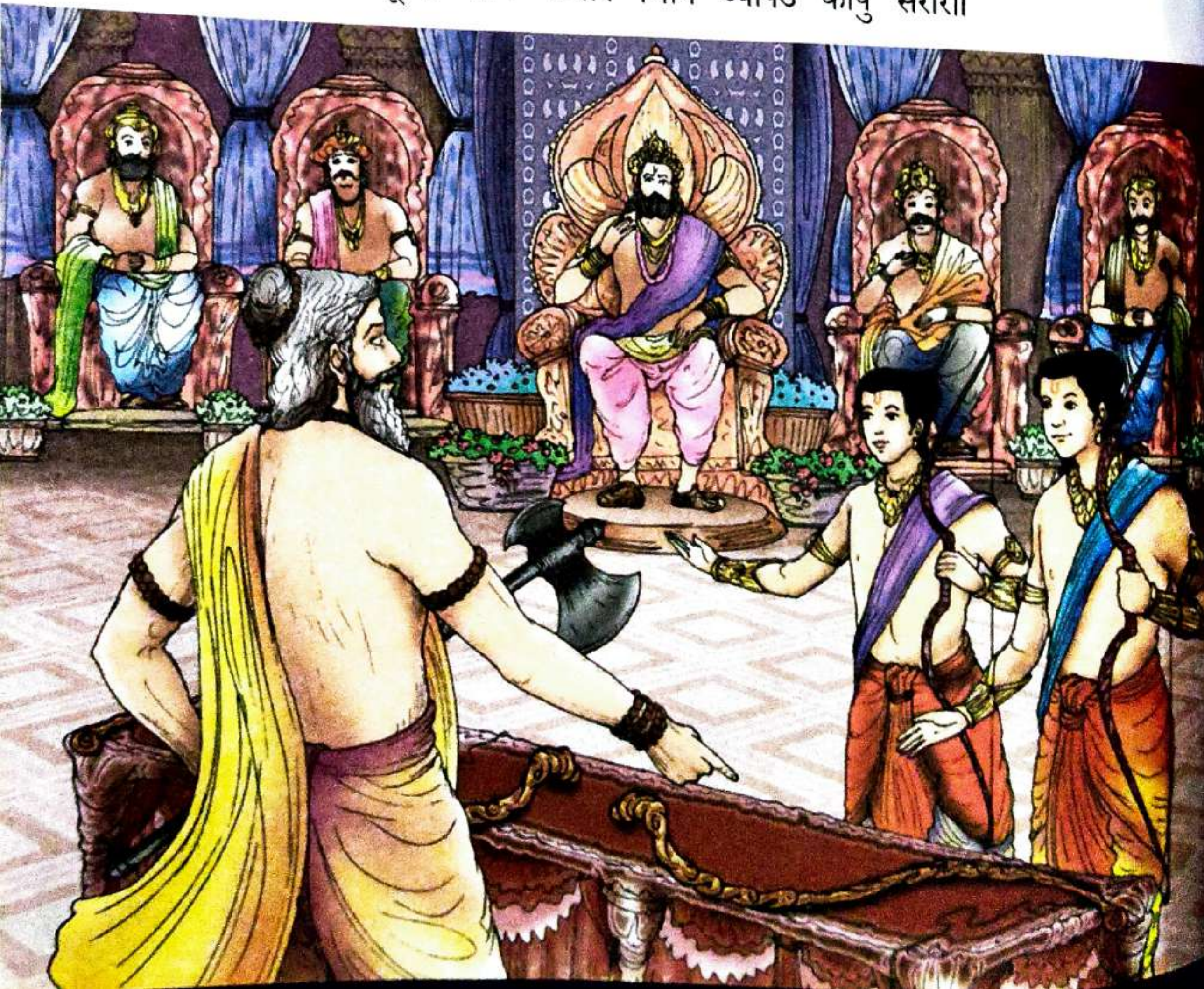

समाचार कहि जनक सुनाए। जेहि कारन महीप सब आए॥
सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देखे चापखंड महि डारे॥
अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा॥
बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू। उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू॥
अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं॥
सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी॥
मन पछिताति सीय महतारी। बिधि अब सँवरी बात बिगारी॥
भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता। अरध निमेष कलप सम बीता॥

सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु।
हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु॥

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई॥
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥
सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने॥
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥

रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार॥

ामचरितमानस में यहाँ से आगे की कथा में परशुराम का आक्रोश, लक्ष्मण और परशुराम के ीच व्यंग्योक्तिपूर्ण संवाद और ऐसी स्थिति में भी राम के धीर-गंभीर शांत स्वरूप का वर्णन है। अंतत: राम के विनय और विश्वामित्र के समझाने पर तथा राम की शक्ति की परीक्षा लेकर रशुराम का आक्रोश शांत होता है।

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद आप प्रश्न-अभ्यास में 'खोजबीन' के अंतर्गत दिए गए लिंक के माध्यम से पढ़ सकते हैं।

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. "पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा।।" यह पंक्ति सभा में उपस्थित लोगों की किस मनःस्थिति को दर्शाती है?
   - (क) आदर और सम्मान
   - (ख) भक्ति और श्रद्धा
   - (ग) भय और शिष्टाचार
   - (घ) प्रेम और सहिष्णुता
2. "जनक बहोरि आइ सिरु नावा। सीय बोलाइ प्रनामु करावा" पंक्ति से राजा जनक के व्यवहार की कौन-सी विशेषता उद्घाटित होती है?
   - (क) संवेदनशीलता
   - (ख) शिष्टता
   - (ग) सहनशीलता
   - (घ) उदासीनता
3. "अति रिस बोले बचन कठोरा।" जनक के प्रति परशुराम के कठोर वचन बोलने का मूल कारण था—
   - (क) उचित आदर-सत्कार न मिलना
   - (ख) जनक द्वारा समाचार छिपाना
   - (ग) शिव-धनुष का खंडित होना
   - (घ) अन्य राजाओं की सभा में उपस्थिति
4. राम का कथन "होइहि केउ एक दास तुम्हारा" उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है?
   - (क) कूटनीति और चतुराई
   - (ख) विनम्रता और मर्यादा

(ग) त्याग और समर्पण

(घ) दृढ़ता और आत्मविश्वास

5. "सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने॥" लक्ष्मण के मुसकराने और उपहास भरे वचनों का क्या कारण था?

(क) वे सभा में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहते थे।

(ख) उन्हें राम के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करना था।

(ग) वे परशुराम की शक्ति से अनभिज्ञ थे।

(घ) वे परशुराम को चुनौती देना चाहते थे।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. "अरध निमेष कलप सम बीता" पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि कविता में यह किसके संदर्भ में कहा गया है और क्यों?
2. "सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥" पंक्ति के आधार पर बताइए कि परशुराम द्वारा दी गई इस चेतावनी का सभा में उपस्थित राज-समाज पर क्या प्रभाव पड़ा होगा? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
3. तुलसीदास ने राम और लक्ष्मण के माध्यम से एक ही परिस्थिति के प्रति दो अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ दिखाई हैं। आपकी दृष्टि में परशुराम के क्रोध को शांत करने के लिए राम का 'विनय' का मार्ग उचित है या लक्ष्मण के 'तर्क' का? अपने उत्तर का उचित कारण और तर्क भी प्रस्तुत कीजिए।
4. 'हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु॥' श्री राम के हृदय में न हर्ष था, न विषाद। यह उनके व्यक्तित्व के किन गुणों को दर्शाता है? उनका भावनात्मक संतुलन इस पूरे पाठ में उन्हें अन्य पात्रों से अलग कैसे स्थापित करता है?

मेरी कल्पना मेरे अनुमान

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी कल्पना और अनुमान के आधार पर दीजिए—

1. कल्पना कीजिए कि आप जनक की सभा में उपस्थित एक राजा हैं। परशुराम जी के आगमन से लेकर उनके गमन तक की कथा अपने शब्दों में लिखिए।
2. "अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं॥" जनक द्वारा डर से चुप रहने पर अन्य राजा मन में प्रसन्न क्यों हुए होंगे?

(संकेत– सोचिए, यह मनुष्य के व्यवहार की किस सच्चाई को उजागर करता है?)

विधा से संवाद

कविता का सौंदर्य

यह कविता तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य *रामचरितमानस* के 'बालकांड' का एक अंश है जहाँ शिव-धनुष के टूटने से क्रोधित परशुराम के रोष भरे वाक्यों का उत्तर लक्ष्मण व्यंग्य वचनों से देते हैं। दोनों के बीच के ये संवाद कविता में नाटकीयता उत्पन्न करते हैं। संवादों के माध्यम से ही पूरी कविता का कथात्मक विकास होता है, संवाद ही चरित्र का निर्माण करते हैं और संवादों से ही भावों में विविधता भी आती है। इस प्रकार यह कविता काव्यात्मक विधा में संवाद-प्रस्तुति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। नीचे कविता के संवादों की कुछ विशेषताएँ दी गई हैं। उन विशेषताओं को दर्शाने वाली पंक्तियों के उदाहरण कविता से ढूँढ़कर लिखिए।

संवादों की विशेषता

- राम की विनम्रता
- परशुराम का रौद्र रूप
- लक्ष्मण का प्रत्युत्तर
- पौराणिक संदर्भ
- नाटकीयता

भाव-पहचान एवं विश्लेषण

- आपने पढ़ा कि राजा जनक की सभा में उपस्थित विभिन्न पात्रों की मनःस्थिति अलग-अलग है। नीचे दिए गए भावों/मनःस्थिति को दर्शाने वाली पंक्तियों को कविता से चिह्नित कीजिए और बताइए कि यह भाव किस पात्र से संबंधित है और उसकी इस मनःस्थिति का कारण क्या है? आपकी सहायता के लिए एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

चिंता, क्रोध, व्यग्रता, भय, संयम/विनम्रता, ईर्ष्या/कुटिलता

भाव/मनःस्थिति	संबंधित पंक्ति	संबंधित पात्र	मनःस्थिति का कारण
चिंता	बिधि अब सँवरी बात बिगारी	सीता की माता सुनयना	पुत्री सीता के भविष्य (विवाह) के प्रति आशंकित और चिंतित

- "अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं।"

परशुराम के पूछने पर जनक का मौन भयजनित है या विवेकपूर्ण निर्णय? संवाद की स्थिति के आधार पर विश्लेषण कीजिए।

विश्लेषण कैसे करें

1. *संदर्भ स्पष्ट कीजिए— आरंभ में यह बताइए कि यह पंक्ति/घटना किस स्थिति में आई है, उससे पहले क्या घट चुका था।*
2. *विश्लेषण में घटना का वर्णन कम, उसका कारण और प्रभाव अधिक लिखना होता है— केवल क्या हुआ नहीं, बल्कि क्यों हुआ लिखिए।*
3. *कारण ⟶ भाव ⟶ परिणाम का क्रम बनाइए।*
4. *निष्कर्ष दीजिए— अंत में 1-2 पंक्तियों में 'अपना' स्पष्ट निष्कर्ष लिखिए जैसे– 'इससे स्पष्ट होता है कि…' या 'यह पंक्ति संकेत देती है कि…'*
5. *संक्षेप में क्या, क्यों, कैसे के आधार पर विश्लेषण कीजिए और निष्कर्ष लिखिए।*

काव्य-पंक्ति और भाव

"रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम तिपुरारि धनु बिदित सकल संसार॥"

(क) यदि आप इन पंक्तियों को मंच पर बोलते, तो आपके चेहरे पर कौन-सा भाव होता?

(ख) आपने अनुभव किया होगा कि इस कविता में परिस्थितिवश प्रत्येक पात्र एक अलग भाव का प्रतिनिधि बन जाता है। निम्नलिखित पात्रों को आप कौन-कौन से भावों द्वारा प्रदर्शित करेंगे—

- परशुराम
- राजा जनक
- लक्ष्मण
- राम
- सभा में उपस्थित अन्य राजा

विषयों से संवाद

1. सभा में परशुराम के प्रति राम के व्यवहार से उनकी विनम्रता, मर्यादा, धीर और उदात्त चरित्र के संबंध में पता चलता है जो किसी भी कुशल शासक के लिए आवश्यक है। आपको किन-किन परिस्थितियों में इन विशेषताओं का परिचय देना पड़ता है? चर्चा कीजिए और लिखिए।

2. कविता में वर्णित प्रसंग सीता-स्वयंवर की सभा का है। प्राचीन भारतीय समाज में वर-चयन के लिए स्वयंवर की प्रथा प्रचलित थी। इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं। ऐसी किसी एक पौराणिक-ऐतिहासिक आदि घटना/प्रसंग का वर्णन कीजिए जिससे स्वयंवर विधि द्वारा विवाह की जानकारी मिलती है।

सृजन

1. परशुराम के क्रोध को देखकर सीता और उनकी माता सुनयना दोनों चिंतित हैं और सीता के लिए एक-एक पल युग के समान भारी और लंबा प्रतीत हो रहा है। उनकी मनःस्थिति का अनुमान लगाते हुए उस क्षण दोनों के बीच चल रहा मौन संवाद लिखिए।
2. सभा में हो रहे संवाद को दूर बैठी सीता, राजा जनक और अन्य लोग भी सुन रहे थे। अपनी कल्पना और अनुमान के आधार पर लिखिए कि उस समय सीता के मन में किस तरह के भाव उत्पन्न हो रहे होंगे? सीता के दृष्टिकोण से पूरी घटना का विश्लेषण कीजिए।
   (संकेत– लक्ष्मण के प्रत्युत्तर पर चिंता, गर्व, हँसी, भय, शंका इत्यादि)
3. कविता में सभा में उपस्थित राजाओं ने अपनी वीरता, पराक्रम आदि का उल्लेख करते हुए अपना परिचय दिया है। यदि आपको अपना परिचय देना हो तो आप अपना परिचय किस प्रकार देना उचित समझेंगे? अपना परिचय देते हुए कुछ वाक्य लिखिए जिससे आपके व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण बातों का पता चलता हो।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

नीचे दी गई पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए—

- "देखत भृगुपति बेषु कराला।"
- "बोले परसुधरहि अपमाने॥"
- "सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू"

यहाँ परशुराम को विभिन्न नामों से संबोधित किया गया है, जैसे– भृगुपति, परसुधर और भृगुकुलकेतू। आप इस कविता में अनेक विशेषताएँ देख सकते हैं, जैसे– दोहा-चौपाई का क्रम से होना, बिना वक्ता का नाम बताए उनका कथन कह देना, मुहावरों का उपयोग करना आदि। नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और उनके एक-एक उदाहरण दिए गए हैं। एक-एक उदाहरण आप लिखिए।

विशेषता	अर्थ	उदाहरण
अनुप्रास अलंकार	एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति	*अरि करनी करि करिअ लराई*
अतिशयोक्ति अलंकार	बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना	*अरध निमेष कलप सम बीता*
रूपक अलंकार	रूप का आरोपण करना	*पद सरोज मेले दोउ भाई*

बहुभाषिकता

यह कविता अवधी भाषा में लिखी गई है जो कि हिंदी भाषा का ही एक स्वरूप है और उत्तर प्रदेश के अनेक स्थानों पर बोली जाती है। कविता में ऐसे बहुत से शब्द आए हैं, जो अवधी भाषा के हैं। ऐसे शब्दों को पहचान कर उनके खड़ी बोली हिंदी रूप लिखिए। साथ ही आपकी भाषा में इनके लिए कौन-से शब्द प्रयुक्त होते हैं, उन्हें भी लिखिए।

उदाहरण–

अवधी शब्द	खड़ी बोली का शब्द	मेरी भाषा में शब्द
कोही	क्रोधी	
वेषु	वेष	

लोक में भाषा

नीचे कोष्ठक में कविता से कुछ शब्द चुनकर दिए गए हैं। उन शब्दों से संबंधित लोकोक्ति और उनका अर्थ लिखकर स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए। आपकी सहायता के लिए एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

मन राम राजा बात सिरु (सिर)

उदाहरण–

शब्द	लोकोक्ति	अर्थ
मन	मन के जीते जीत है, मन के हारे हार।	आत्मविश्वास, साहस और मनोबल से सफलता निश्चित है।

गद्य-रूप

नीचे लिखी चौपाई को पढ़िए—

"नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥
आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥"

इस चौपाई को हम गद्य-रूप में भी लिख सकते हैं। इसमें राम परशुराम से विनम्रतापूर्वक कहते हैं— हे नाथ! शिव-धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई एक दास होगा आपकी क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते? राम की यह बात सुनकर क्रोधित परशुराम कहते हैं।

अब आप नीचे दी गई चौपाई को गद्य-रूप में लिखिए—

"अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं॥
सुर मुनि नाग नगर नर नारी। सोचहिं सकल त्रास उर भारी॥"

गतिविधियाँ

1. यह कविता संवाद का सुंदर उदाहरण है। तालिका में दिए गए कथनों को पढ़कर बताइए कि कौन-सा कथन किसका हो सकता है। अपनी समझ से सही (✓) का चिह्न लगाइए—

कथन	राम	लक्ष्मण	परशुराम	जनक	सीता की माता (सुनयना)
शिव के धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई दास ही हो सकता है।					
विधाता ने बनी-बनाई बात बिगाड़ दी।					
सेवक वह होता है जो सेवा का काम करे।					
इस कारण ये सब राजा आए हैं।					
बचपन में हमने ऐसी बहुत-सी धनुहियाँ तोड़ डाली हैं।					

क्या आज्ञा है, मुझसे क्यों नहीं कहते?					
कहो जनक, किस कारण यह भीड़ है?					
इसी धनुष पर इतनी ममता क्यों!					

2. *रामचरितमानस* के इस प्रसंग का मंचन लोकनाट्य, रामलीला और कठपुतली कला में बड़ी जीवंतता से किया जा सकता है। कलात्मक तकनीकों (ध्वनि, भाव, संगीत, वेशभूषा) का उपयोग करते हुए कविता को एक दृश्य नाटक के रूप में प्रस्तुत कीजिए।
3. 'कठिन परिस्थितियों में भी सत्य कहने का साहस करना आवश्यक है।' इस विषय पर कक्षा में एक परिचर्चा अथवा वाद-विवाद गतिविधि के माध्यम से अपने विचार साझा कीजिए।

मेरी पहेली

पाठ में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अब अपने समूह में मिलकर ऐसी पहेलियाँ बनाइए जिनके **उत्तर** निम्नलिखित हों—

समाचार धनुष मन नाग नगर

भाषा संगम

"अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक **धनुष** कै तोरा॥"

नीचे 'धनुष' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में **प्रयुक्त** शब्दों की सूची दी गई है।

कमान (हिंदी); धनुः, चापम् (संस्कृत); धणुख (पंजाबी); कमान (क़ौस) (उर्दू); कमान (कश्मीरी); धनुषु, कमानु (सिंधी); धनुष्य (मराठी); धनुष, कामठुं (गुजराती); धनुश (कोंकणी); धनु (नेपाली); धनुक (बांग्ला); धनु (असमिया); लिरुर् (मणिपुरी); धनुष, धनु, कार्मुक (ओड़िआ); धनुस्सु, विल्लु (तेलुगू); विल् (तमिल); धनुस्सुॅ, विल्लुॅ (मलयालम); बिल्लु, धनुष (कन्नड़)

- इनके अतिरिक्त यदि आप धनुष शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

https://shabd.education. gov.in/lexicon.jsp

खोजबीन

बालकांड का यह अंश और गोस्वामी तुलसीदास जी की अन्य रचनाएँ इंटरनेट की सहायता से सुनिए और देखिए—

तुलसीदास– राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

https://www.youtube.com/watch?v=7laq-BLnig4

https://www.youtube.com/watch?v=M7yZx2C0O68

दोहे– कबीर, रहीम, तुलसी

https://www.youtube.com/watch?v=A5v38R3VwaE

https://www.youtube.com/watch?v=cnrjLCkggr4&

गोस्वामी तुलसीदास

https://www.youtube.com/watch?v=oCLrWoky6UI

https://www.youtube.com/watch?v=MJbKZoLLeSs

कवि तुलसीदास और उनकी कविता

https://www.youtube.com/watch?v=rE-iTNN6SsE

शब्द-संपदा

भृगुपति	—	भृगुकुल के स्वामी
कराला	—	भयानक, डरावना
भुआला	—	राजा, महीप, भूपाल
सुभायँ	—	स्वभाव, आदत, सहज प्रकृति
चितवहिं	—	देखना, निरखना
खुटानी	—	पूरी होना, समाप्त होना
बहोरि	—	इकट्ठा करना, फिर, अनंतर, पीछे
आसिष/असीस	—	आशीर्वाद
ढोटा	—	पुत्र, बेटा, बालक
जोटा	—	जोड़ा, गोनी
लोचन	—	आँख, देखने की क्रिया

अनत — अन्यत्र, और कहीं

चापखंड — धनुष का टुकड़ा, धनुष का भाग

रिस — रोष, क्रोध, गुस्सा

बेगि — शीघ्र, जल्दी, वेगपूर्वक

जहँ — जहाँ, जिस स्थान पर, जिस जगह

महि — पृथ्वी, महिमा, महत्त्व

लहि — तक, पर्यंत

त्रास — भय, डर

बिधि — विधि, विधाता, ईश्वर

अरध निमेष — आधा क्षण, आधा पल, आधा पलक झपकना

कलप (कल्प) — काल का एक विभाग, ब्रह्मा का एक दिन (एक हजार महायुग— 4 अरब 32 करोड़ मानव-वर्ष), प्रलय

बिलोके — देखा, अवलोकन किया

भीरु — भयभीत, डरा हुआ

भंजनिहारा — भंग करने वाला, तोड़ने वाला

आयसु — आज्ञा, आदेश

रिसाइ — क्रोध करना, कोप करना

कोही — क्रोधी

सहसबाहु — सहस्रबाहु, बाणासुर, शिव, स्कंद का एक अनुचर

बिलगाउ — अलग होना, अलग करने वाला

बिहाइ — छोड़कर

जैहहिं — जाएँगे

परसु (परशु) — फरसा, कुल्हाड़ी की तरह का एक शस्त्र

परसुधरहिं — परशुराम (फरसा धारण करने वाले)

लरिकाईं — लड़कपन, बचपन में, बाल्यावस्था, चंचलता

भृगुकुलकेतू — भृगुकुल के दीपक, परशुराम के लिए संबोधन

तिपुरारि — त्रिपुरारी, शिव, शंकर

10

0901CH10

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1899 में बंगाल के महिषादल में हुआ। वे मूलतः गढ़ाकोला (उन्नाव), उत्तर प्रदेश के निवासी थे। निराला की औपचारिक शिक्षा नौवीं तक महिषादल में ही हुई। उन्होंने स्वाध्याय से संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी का ज्ञान अर्जित किया।

उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं— *अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता* और *नए पत्ते*। उपन्यास, कहानी, आलोचना और निबंध लेखन में भी उनकी ख्याति अविस्मरणीय है। *निराला रचनावली* के आठ खंडों में उनका संपूर्ण साहित्य प्रकाशित है। दार्शनिकता, विद्रोह, क्रांति, प्रेम की तरलता और प्रकृति का विराट तथा उदात्त चित्र उनकी रचनाओं में उपस्थित है। छायावादी रचनाकारों में उन्होंने सबसे पहले मुक्त छंद का प्रयोग किया। उपेक्षितों और पीड़ितों के प्रति उनकी कविताओं में गहरी सहानुभूति मिलती है। 'निराला' का निधन सन् 1961 में हुआ।

'भारति, जय, विजयकरे!' कविता 'निराला' की देशप्रेम से ओत-प्रोत एक प्रेरणादायक रचना है। कविता के आरंभ में ही कवि 'भारति, जय, विजयकरे!' कहकर भारत को विजयश्री प्राप्त करने की कामना करता है। वह भारतभूमि को 'कनक-शस्य-कमलधरे!' कहकर संबोधित करता है जो भारत की कृषि-परंपरा और श्रम के सौंदर्य को दर्शाता है। कविता में भारत की भौगोलिक सुंदरता का ऐसा चित्र खींचा गया है मानो भारत कोई देवी हो, जिसके चरणों को समुद्र अपने जल से धोता है। नदी, वन, पुष्प, हिमालय, गंगा आदि प्राकृतिक शोभा को भारत के वस्त्राभूषण की तरह प्रस्तुत किया गया है। कवि भारत को एक चेतन सत्ता के रूप में देखता है, जिसकी दिशाओं में 'ओंकार' की गूँज हो रही है और जो अनेक तरह के स्वरों और विचारों से समृद्ध है।

भारति, जय, विजयकरे!

भारति, जय, विजयकरे!
कनक-शस्य-कमलधरे!

लंका पदतल शतदल,
गर्जितोर्मि सागर-जल
धोता शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु-अर्थ-भरे!

तरु-तृण-वन-लता वसन,
अंचल में खचित सुमन;
गंगा ज्योतिर्जल-कण
धवल धार हार गले।

मुकुट शुभ्र हिम-तुषार,
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख-शतरव-मुखरे!

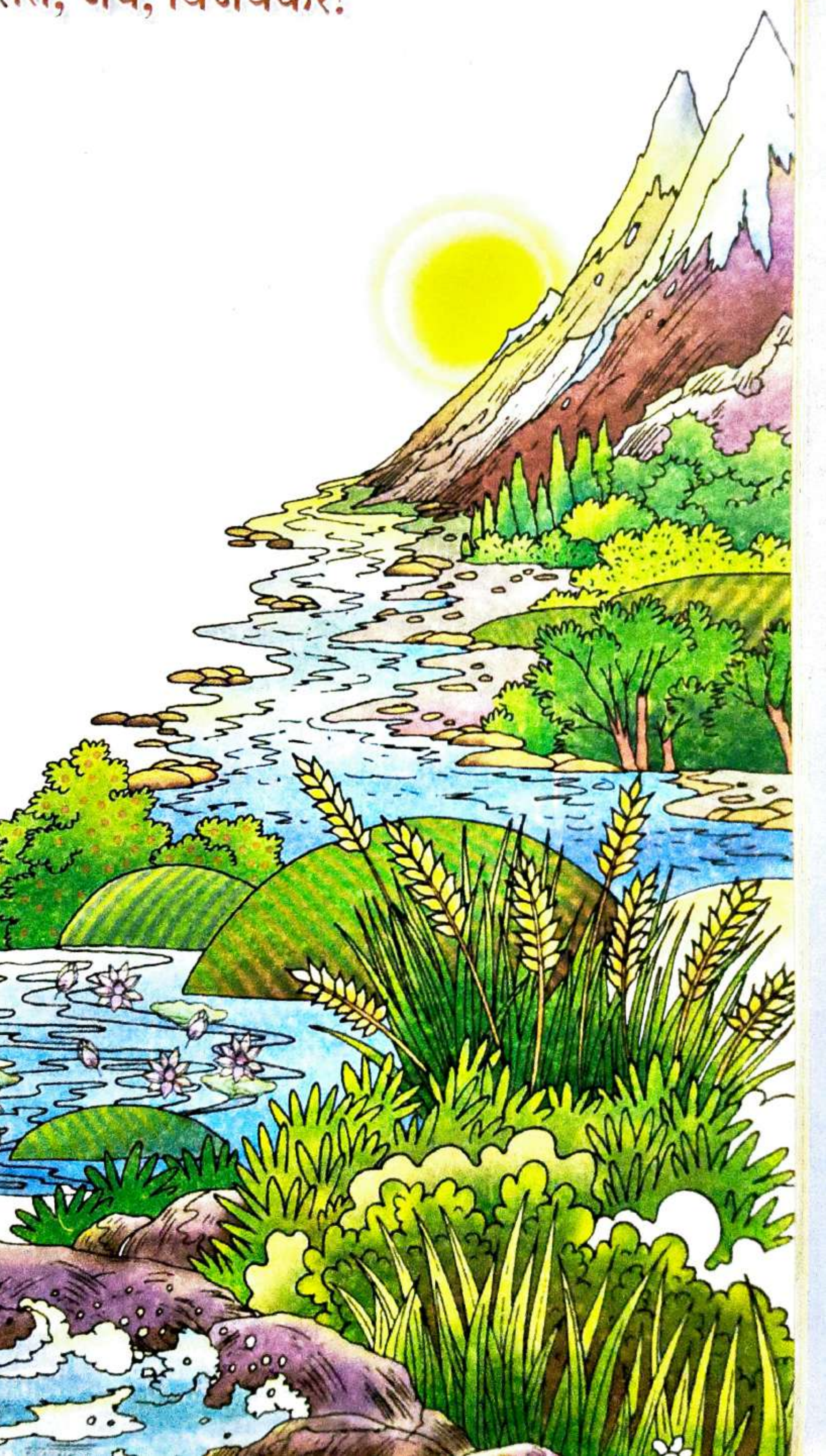

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. "भारति, जय, विजयकरे" कविता में विशेष रूप से—
   (क) भारत की भौगोलिक संरचना की प्रशस्ति की गई है।
   (ख) भारत की सांस्कृतिक विविधता बताई गई है।
   (ग) भारत के ज्ञान, प्रकृति और संपन्नता की प्रशंसा की गई है।
   (घ) भारत के खनिज पदार्थों के बारे में बताया गया है।

2. "कनक-शस्य-कमल धरे" पंक्ति का भावार्थ है—
   (क) भारत की धन-धान्य संपन्नता
   (ख) भारत की नदियों का सौंदर्य
   (ग) भारत के लोक-जीवन की सुंदरता
   (घ) भारत की सैन्य शक्ति और औद्योगिक विकास

3. समस्त विश्व में भारत के महत्व का उद्घोष करने वाली पंक्तियाँ हैं—
   (क) गंगा ज्योतिर्जल-कण/ धवल धार हार गले
   (ख) गर्जितोर्मि सागर-जल/ धोता शुचि चरण युगल
   (ग) भारति, जय, विजयकरे/ कनक-शस्य-कमलधरे!
   (घ) ध्वनित दिशाएँ उदार/ शतमुख-शतरव-मुखरे!

4. कविता की भाषा और शैली किस विशेषता से संपन्न है?
   (क) सरल, बोल-चाल की भाषा
   (ख) संस्कृतनिष्ठ और समासयुक्त
   (ग) सरस और हास्य-व्यंग्यपूर्ण
   (घ) संवादात्मक और विश्लेषणात्मक

5. भारत के वस्त्रों में 'तरु-तृण-वन-लता' और गले में 'गंगा-धारा' को चित्रित कर कवि किस प्रकार की चेतना का संदेश देते हैं?
   (क) पर्यावरणीय और सांस्कृतिक
   (ख) राष्ट्रीयता और देशप्रेम
   (ग) ऐतिहासिक और भौगोलिक
   (घ) सामाजिक और राजनीतिक

अर्थ और भाव

नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ समझते हुए इनका भाव स्पष्ट कीजिए—

(क) "लंका पदतल शतदल,
गर्जितोर्मि सागर-जल
धोता शुचि चरण युगल!"

(ख) "प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख-शतरव-मुखरे!"

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. कविता में कवि की किस भावना की अभिव्यक्ति मिलती है?
2. कविता में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किस प्रकार किया गया है? क्या आप मानते हैं कि प्रकृति का संरक्षण करना भी देशप्रेम का काम है? क्यों?
3. "कनक-शस्य-कमलधरे!" पंक्ति भारतभूमि की किन-किन विशेषताओं की ओर संकेत कर रही है?
4. "मुकुट शुभ्र हिम-तुषार" पंक्ति में हिमालय को भारत का मुकुट बताया गया है, क्यों?

विधा से संवाद

कविता का सौंदर्य

नीचे दी गई पंक्तियों को पढ़िए —

"भारति, जय, विजयकरे!
कनक-शस्य-कमलधरे!"

इन पंक्तियों में कवि ने चित्रात्मक भाषा का प्रयोग करते हुए भारतभूमि का मनोरम चित्र प्रस्तुत किया है। इस कविता की कुछ अन्य विशेषताओं की सूची नीचे दी गई है। कविता में से उन विशेषताओं वाली पंक्तियों को ढूँढ़कर लिखिए—

विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
प्रकृति का मानवीकरण	
आलंकारिक प्रयोग	
समस्त पद/सामासिक पद का प्रयोग	
संस्कृतनिष्ठ भाषा प्रयोग	

विषयों से संवाद

1. स्वतंत्रता-पूर्व लिखी इस कविता में भारत को ज्ञान, कृषि और संस्कृति के प्रतीक/परिचायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान संदर्भ में यदि आपको भारत को एक नए रूप में प्रस्तुत करने का अवसर मिले तो आप भारत की किन विशेषताओं और विविधताओं को सम्मिलित करेंगे?
2. "शतमुख-शतरव-मुखरे!" पंक्ति में भारत के विविध पर्व, उत्सव और रीति-रिवाज किस प्रकार 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना को साकार करते हैं?
3. भारत को सुदृढ़ करने में इसकी प्रकृति, संस्कृति और ज्ञान-परंपरा के महत्व को बताते हुए संक्षिप्त लेख लिखिए।
4. कविता में गंगा को भारत के स्वच्छ और श्वेत हार एवं हिमालय को मुकुट के रूप में अभिव्यक्त किया गया है। वर्तमान संदर्भ में बताइए कि बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन ने हमारी नदियों और हिमालय को किस प्रकार प्रभावित किया है?

विविध रंग भारत के

आप अपने कक्षा-समूह में मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता पर आधारित एक पावरपॉइंट प्रस्तुति/पोस्टर/चार्ट/कोलाज तैयार कीजिए और इसे अपनी कक्षा में दिखाइए। आप भारत के विभिन्न राज्यों पर केंद्रित पावरपॉइंट प्रस्तुति/पोस्टर/चार्ट/कोलाज भी बना सकते हैं।

सृजन

1. मान लीजिए आपको भारत को एक मनुष्य के रूप में कल्पित करते हुए सुसज्जित करने का अवसर मिले तो आप अपने राज्य के किन सांस्कृतिक, पारंपरिक वेशभूषा, आभूषण, चिह्नों, पुष्पों आदि का प्रयोग कर उसकी साज-सज्जा करेंगे?

2. भारत पर आधारित एक डाक टिकट, पोस्टर या पुस्तक के लिए आवरण पृष्ठ बनाइए और बताइए कि आप उसमें किन-किन प्रतीकों को सम्मिलित करेंगे और क्यों?

3. नदी की यात्रा

   गंगा नदी की अपने उद्गम स्रोत से लेकर बंगाल की खाड़ी में विलीन होने तक की पूरी यात्रा के बीच में आने वाली प्राकृतिक, सांस्कृतिक, भाषिक आदि विशेषताओं का वर्णन करते हुए एक रोचक यात्रा-वृत्तांत लिखिए।

   (संकेत– पर्वतीय सौंदर्य से लेकर गंगासागर तक की संस्कृति इत्यादि)

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

बहुभाषी देश हमारा

भारत की एक विशेषता उसकी बहुभाषिकता है। यदि आपको एक सचेत नागरिक के रूप में भारत से अपनी मातृभाषा में संवाद का अवसर मिले तो आप किन विषयों पर और क्या-क्या संवाद करना चाहेंगे? इन संवादों को अपनी मातृभाषा और हिंदी में लिखिए।

(संकेत– समाज, पर्यावरण, संस्कृति आदि।)

मातृभाषा और भाव

- "स्तव कर बहु-अर्थ-भरे"

उपर्युक्त पंक्ति में भारत की प्रशंसा विविध अर्थों में की गई है। आप भी अपनी मातृभाषा में भारत की स्तुति के लिए एक कविता की रचना कीजिए और उसका भावार्थ हिंदी में भी लिखिए।

समास— समस्त पद एवं विग्रह

- "कनक-शस्य-कमलधरे"

उपर्युक्त पंक्ति में 'कनक-शस्य' का अर्थ है— कनक के समान शस्य (सोने जैसी फसलें) और कमलधरे का अर्थ है— हे कमल को धारण करने वाली! ये शब्द समास शब्द कहलाते हैं। 'कनक-शस्य' और 'कमलधरा' समस्त पद/सामासिक पद हैं। कमलधरे संबोधन शब्द है।

समास का अर्थ है संक्षेप। समास में दो या अनेक शब्दों के मेल से एक नए शब्द की रचना होती है। **समास** रचना में प्राय: दो पद (शब्द) होते हैं। पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं। **समास** रचना से बने शब्द को 'समस्त पद' कहते हैं। यदि समास रचना से बने शब्द (समस्त पद) के अंग

अलग-अलग करने हों, तो उस प्रक्रिया को समास विग्रह कहते हैं। आपने 'क्या लिखूँ?' निबंध के अभ्यास में समास और साभासिक पदों के बारे में विस्तार से जाना है।

कविता में से चुनकर कुछ सामासिक पद (शब्द) नीचे दिए गए हैं। उनके समास-विग्रह अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

शतदल ज्योतिर्जल शतमुख सागरजल

अलंकार— समझ और प्रयोग

- "शतमुख-शतरव-मुखरे!"

उपर्युक्त पंक्ति के 'शतमुख' और 'शतरव' में 'श' वर्ण की पुनरावृत्ति हो रही है, इसीलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

- "मुकुट शुभ्र हिम-तुषार"

उपर्युक्त पंक्ति में हिमालय को भारत का मुकुट कहा गया है। वास्तव में हिमालय मुकुट नहीं है, लेकिन कवि ने कल्पना के बल पर उसे मुकुट का रूप दे दिया। इससे भारत की छवि भव्य और दिव्य बन जाती है। यहाँ गुण की अत्यंत समानता के कारण उपमेय में उपमान का अभेद स्थापित किया गया है, इसीलिए यहाँ रूपक अलंकार है।

'रैदास के पद' पाठ में आपने अलंकार के विषय में विस्तार से जाना-समझा है। अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) कविता में जहाँ-जहाँ अनुप्रास अलंकार आया है, उन पंक्तियों को खोजकर लिखिए।

(ख) कविता की उन पंक्तियों को खोजिए जहाँ रूपक अलंकार है। साथ ही यह भी बताइए कि कवि ने किस प्राकृतिक दृश्य या वस्तु को भारत का रूप मानकर चित्रित किया है?

गतिविधियाँ

मिलकर लें शपथ

- "तरु-तृण-वन-लता वसन/ अंचल में खचित सुमन"

वन, लता, पुष्प आदि भारत के अमूल्य प्राकृतिक संसाधन हैं। इनके संरक्षण के लिए सरकार द्वारा बनाए गए अधिनियमों के बारे में सूचना एकत्रित कीजिए और वन संरक्षण के लिए बनाए नियमों पर विचार कीजिए।

भाषा संगम

"कनक-शस्य-कमलधरे"

कविता में आए 'शस्य' शब्द का अर्थ 'उपज' भी होता है। नीचे 'उपज' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

जो उपजा हो, पैदावार, फसल (हिंदी); शस्यम् (संस्कृत); उपज, पैदावार (पंजाबी); पैदावार (उर्दू); पॉदावार (कश्मीरी); उपज, पैदावार (सिंधी); पीक (मराठी); ऊपज, पेदाश (गुजराती); पीक (कोंकणी); उब्जाबाली, उपज (नेपाली); फसल (बांग्ला); शस्य, खेति, फचल, कृषि जात वस्तु (असमिया); महै मरोङ् थाबा पोत्थोक (मणिपुरी); फसल, खेति (ओड़िआ); पंट (तेलुगु); विळैच्चल् (तमिल); विळवुँ (मलयालम); बेळे फसलु (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप 'शस्य' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp

झरोखे से

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की भाँति मैथिलीशरण गुप्त ने भी भारत का मनोरम और ओजस्वी गुणगान किया है। आइए, नीचे उनकी चर्चित कविता 'जय जय भारतमाता' का एक अंश पढ़ते हैं।

जय जय भारतमाता

जय जय भारतमाता!
तेरा बाहर भी घर जैसा रहा प्यार ही पाता।
ऊँचा हिया हिमालय तेरा
उसमें कितना दरद भरा
फिर भी आग दबाकर अपनी
रखता है वह हमें हरा
सौ सोतों से फूट-फूटकर पानी टूटा आता
जय जय भारतमाता!

– मैथिलीशरण गुप्त

(इस कविता को पुस्तकालय से ढूँढ़कर पूरा पढ़िए।)

खोजबीन

- देशप्रेम से संबंधित अन्य कविताएँ पुस्तकालय, इंटरनेट से खोजकर पढ़िए और किसी एक कविता का कक्षा में वाचन भी कीजिए।
- इस कविता की तरह ही संस्कृतनिष्ठ शब्दावली से युक्त निराला की एक अन्य कविता, 'वर दे, वीणावादिनि वर दे!' पुस्तकालय, इंटरनेट से ढूँढ़कर पढ़िए।

शब्द-संपदा

भारति/भारती	—	सरस्वती, वाणी, वाणी की अधिष्ठात्री, भारतमाता
कनक	—	सोना, पलाश, चंपा
शस्य	—	फसल, खेती, अन्न, धान्य, वृक्षों का फल, नई घास, कोमल तृण, सद्गुण
पदतल	—	तलवा, पैरों के नीचे
शतदल	—	कमल
गर्जितोर्मि/गर्जि	—	बादलों का गर्जन, गरजती तरंगों का
शुचि	—	पवित्र, शुद्ध, निर्मल, साफ, निश्छल, निष्कपट, श्वेत, उजला
युगल	—	जोड़ा, युग्म
स्तव	—	प्रशंसा, स्तुति और स्तोत्र, एक पदार्थ
तरु	—	वृक्ष, पेड़
तृण	—	तिनका, घास, खर-पात
लता	—	जमीन या किसी आधार पर फैलने वाला पौधा, वल्लरी, बेल
वसन	—	वस्त्र, आवरण, निवास, मूर्ति, प्रतिमा
अंचल	—	देश का प्रांत-भाग, आँचल, कोना, तट, किनारा, वस्त्र का छोर
खचित	—	चिह्नित, अंकित, जड़ा हुआ, आबद्ध
सुमन	—	पुष्प, फूल, गेहूँ, मनोहर, सुंदर
ज्योतिर्जल/ज्योतिस्	—	प्रकाश, रोशनी, लौ, सूर्य, नक्षत्र, अग्नि
धवल	—	सफेद, श्वेत, स्वच्छ, निर्मल, सुंदर
धार	—	जोर की वर्षा, धारा के रूप में बरसना
शुभ्र	—	उज्ज्वल, चमकीला, सफेद, श्वेतवर्ण, सफेद रंग, चाँदी

हिम	—	शीतल बर्फ, पाला, हिमालय पर्वत, चंदन, चंद्रमा
तुषार	—	बर्फ, हिम, हवा में मिली भाप जो जमकर श्वेत कणों के रूप में पृथ्वी पर गिरती है
प्राण	—	वायु, साँस, बल, जीवन
प्रणव	—	ओंकार, परमेश्वर, ढोल
ओंकार	—	'ओम्' मंत्र या इसका उच्चारण, आरंभ
उदार	—	दानशील, दयालु
शतमुख	—	सौ मुख
शतरव	—	सौ की संख्या में ध्वनि, शब्द शोर, गुँजार
मुखरे/मुखर	—	बजता, शब्द करता हुआ, शोर करने वाला

11

0901CH11

सुभद्रा कुमारी चौहान

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 1904 में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा प्रयागराज में हुई। अपने समय की प्रसिद्ध रचनाकार होने के साथ-साथ वह एक स्वतंत्रता सेनानी भी थीं जिसके कारण उन्हें दो बार जेल भी जाना पड़ा था। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से जनमानस में राष्ट्रीय चेतना जगाई।

उनके लेखन में देशप्रेम, स्त्री-केंद्रित विषयों और स्वाधीनता संग्राम के प्रति गहन प्रतिबद्धता दिखाई देती है। उनकी भाषा की सहजता ने उनकी रचनाओं को व्यापक लोकप्रियता दिलाई। उनकी कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं— *मुकुल, त्रिधारा (कविता संग्रह), बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे-सादे चित्र (कहानी संग्रह), कदंब का पेड़, सभा का खेल (बाल साहित्य)*। सुभद्रा कुमारी चौहान को उनके कविता संग्रह *मुकुल* तथा कहानी संग्रह *बिखरे मोती* के लिए दो बार 'सेकसरिया पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। सन् 1948 में उनकी आकस्मिक मृत्यु हो गई। भारतीय डाक विभाग ने उनके सम्मान में एक डाक टिकट भी जारी किया।

'झाँसी की रानी' सुभद्रा कुमारी चौहान की बहुत प्रसिद्ध कविता है। यह कविता 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि पर लिखी गई है। 1857 की क्रांति भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अविस्मरणीय अध्याय है। यह कविता रानी लक्ष्मीबाई के जीवन-वृत्त, उनके संघर्ष और विद्रोह से हमारा ओजपूर्ण साक्षात्कार कराती है। यह कविता वीरता, उत्साह और देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत है। यह पाठकों में जोश और साहस का संचार करती है तथा अपने देश के प्रति गर्व एवं स्वतंत्रता के लिए समर्पण की भावना जगाती है। कविता की कथात्मक शैली और गेयता इसे और अधिक जीवंत एवं प्रभावशाली बनाती है।

झाँसी की रानी

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फ़िरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के सँग पढ़ती थी वह, नाना के सँग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,
वीर शिवाजी की गाथाएँ
उसको याद ज़बानी थीं।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

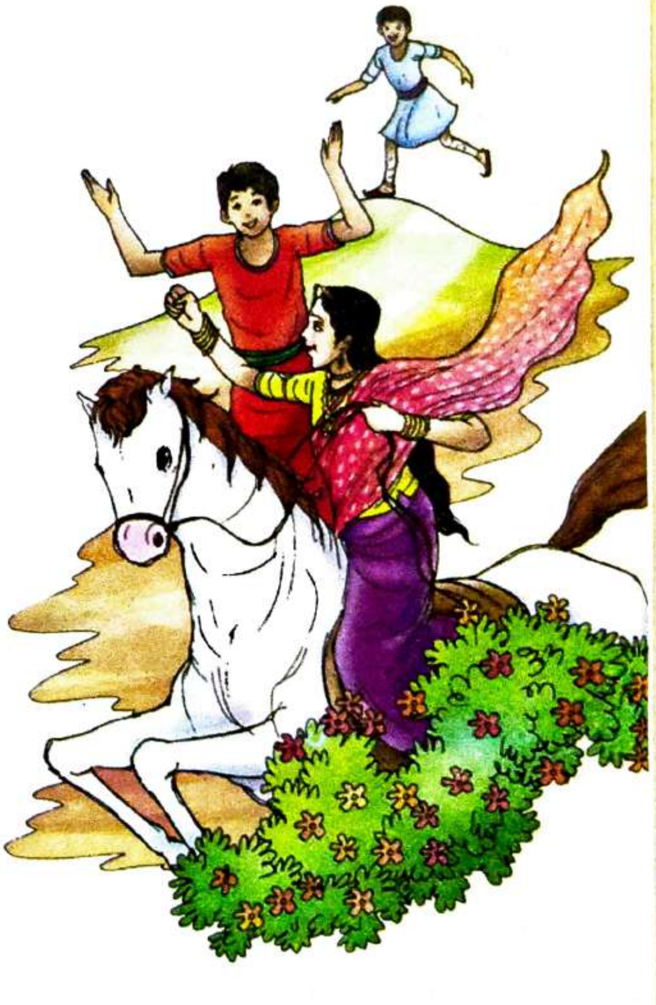

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार,

महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

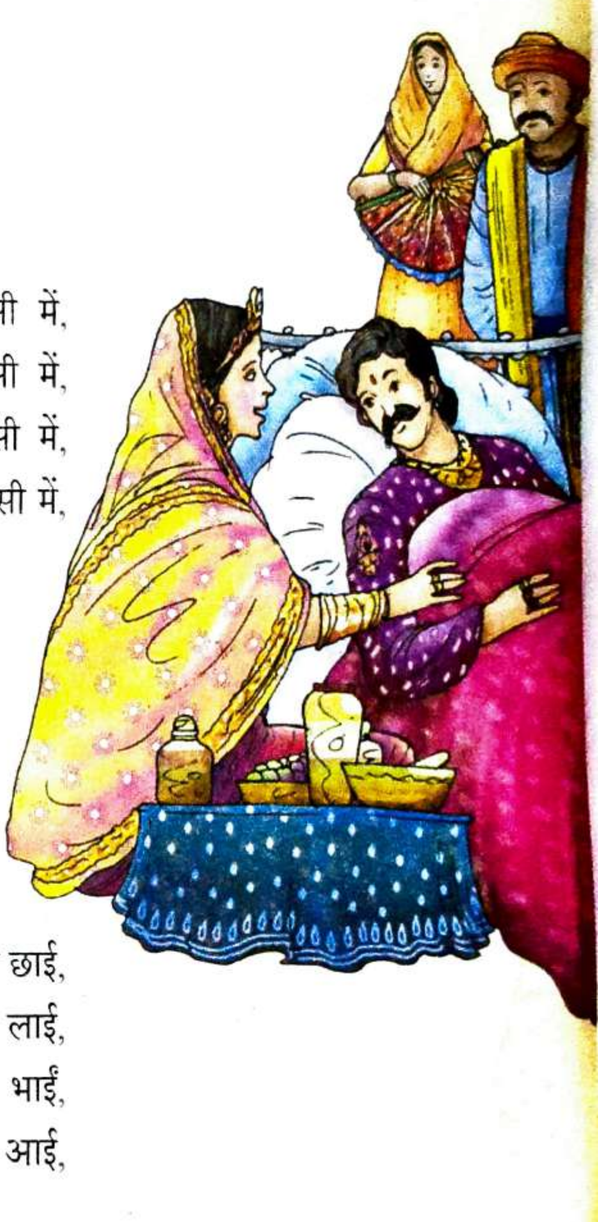

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाईं झाँसी में,
सुभट बुँदेलों की विरुदावलि-सी वह आई झाँसी में,

चित्रा ने अर्जुन को पाया,
शिव से मिली भवानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजयाली छाई,
किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाईं,
रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई,

निःसंतान मरे राजाजी
रानी शोक-समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,
अश्रुपूर्ण रानी ने देखा
झाँसी हुई बिरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

अनुनय-विनय नहीं सुनता है, विकट फ़िरंगी की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया,
राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया,
रानी दासी बनी, बनी यह
दासी अब महरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

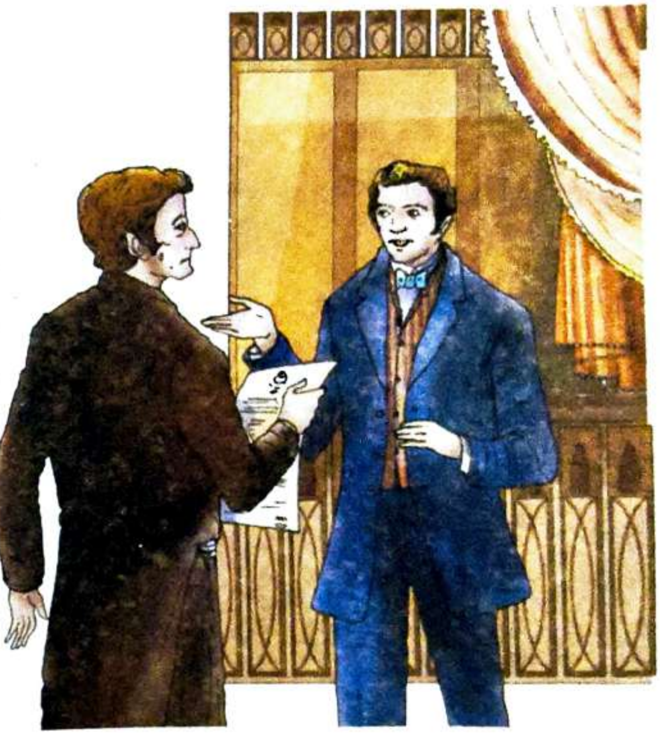

छिनी राजधानी देहली की, लिया लखनऊ बातों-बात,
कैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदैपूर, तंजोर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात,
जब कि सिंध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात,
बंगाले, मद्रास आदि की
भी तो यही कहानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

रानी रोईं रनिवासों में बेगम ग़म से थीं बेजार
उनके गहने-कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाजार,
सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेजों के अखबार,
'नागपूर के जेवर ले लो' 'लखनऊ के लो नौलख हार',
यों परदे की इज़्ज़त पर-
देशी के हाथ बिकानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

कुटियों में थी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था, अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण-चंडी का कर दिया प्रकट आह्वान,
हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो
सोई ज्योति जगानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थीं,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,
जबलपुर, कोल्हापुर में भी
कुछ हलचल उकसानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम
नाना धुंधूपंत, ताँतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम,
अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास-गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम,

लेकिन आज जुर्म कहलाती
उनकी जो कुरबानी थी।
बुंदेले हरबालों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

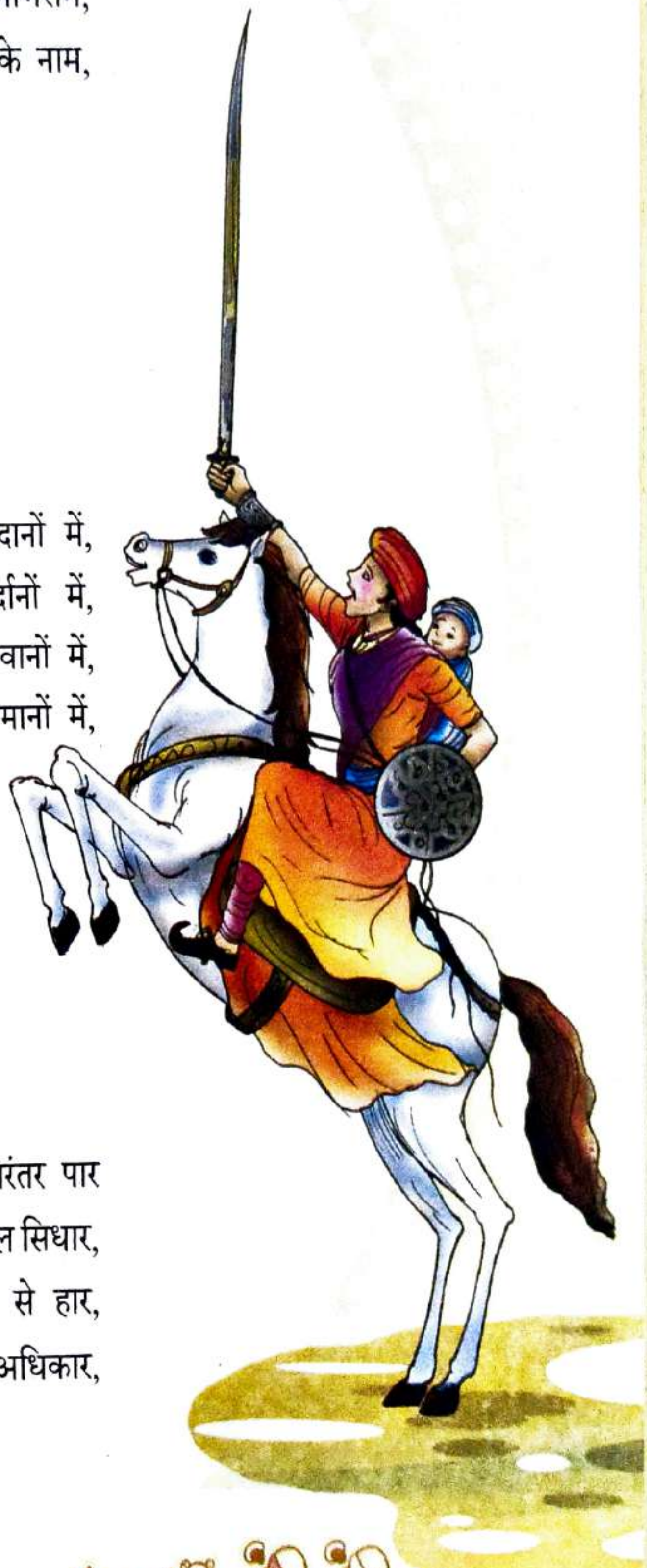

इनकी गाथा छोड़ चलें हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वॉकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व असमानों में,

जख्मी होकर वॉकर भागा,
उसे अजब हैरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना-तट पर अंग्रेजों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार,

अंग्रेजों के मित्र सिंधिया
ने छोड़ी रजधानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

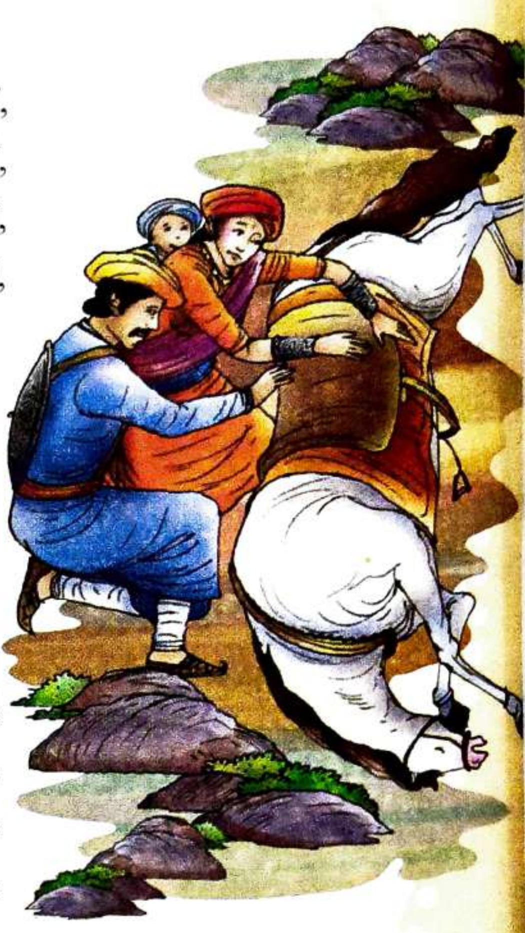

विजय मिली, पर अंग्रेजों की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सन्मुख था, उसने मुँह की खाई थी,
काना और मंदरा सखियाँ रानी के सँग आई थीं,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी,
पर, पीछे ह्यू रोज आ गया,
हाय! घिरी अब रानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किंतु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार पर वार,
घायल होकर गिरी सिंहनी
उसे वीर-गति पानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।।

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी,

दिखा गई पथ, सिखा गई
हमको जो सीख सिखानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारत वासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी,

तेरा स्मारक तू ही होगी,
तू खुद अमिट निशानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी॥

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. 'झाँसी की रानी' कविता की पंक्ति "बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी" में 'नई जवानी' शब्द किस भाव को व्यक्त करता है?
   - (क) देश का स्वाभिमान
   - (ख) विद्रोह की चिंगारी
   - (ग) स्वाधीनता का भय
   - (घ) भारत की युवावस्था
2. लक्ष्मीबाई को 'छबीली' कहना उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है?
   - (क) विनम्रता
   - (ख) शोभायुक्त
   - (ग) सहिष्णुता
   - (घ) कठोरता
3. "बुझा दीप झाँसी का" पंक्ति का भावार्थ है—
   - (क) अंग्रेजों का झाँसी पर अधिकार हो जाना
   - (ख) झाँसी राज्य की उम्मीदों का नष्ट हो जाना
   - (ग) राजा की आकस्मिक मृत्यु होना
   - (घ) रानी के जीवन में उदासी होना
4. "इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम" पंक्ति में स्वतंत्रता आंदोलन की किस ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया गया है?
   - (क) असहयोग आंदोलन
   - (ख) भारत छोड़ो आंदोलन
   - (ग) 1857 की क्रांति
   - (घ) सविनय अवज्ञा आंदोलन

5. "व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया" पंक्ति में 'यह' शब्द किसके लिए कहा गया है?
   (क) नवाबों के लिए
   (ख) जनरल डलहौजी के लिए
   (ग) लेफ्टिनेंट वॉकर के लिए
   (घ) ब्रिटिश राज के लिए

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. 'झाँसी की रानी' कविता के आधार पर बताइए कि लक्ष्मीबाई के प्रिय खेल कौन-कौन से थे? उनका बचपन दूसरों से किस प्रकार भिन्न था?
2. "किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई" पंक्ति के माध्यम से किस घटना की ओर संकेत किया गया है?
3. "महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी" पंक्ति समाज के विभिन्न वर्गों की एकता को दर्शाती है, इस एकता का स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में क्या महत्व है?
4. "सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेजों के अखबार" पंक्ति में 'नीलाम छापते' शब्द किसकी ओर संकेत करता है? यह भी बताइए कि किसकी नीलामी की जाती थी और क्यों?
5. "अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी" पंक्ति में 'अवतारी' शब्द व्यक्ति के विशेष गुणों की ओर इंगित कर रहा है। कविता के आधार पर बताइए कि लक्ष्मीबाई के किन गुणों के कारण उनको 'अवतारी' कहा गया है?

विधा से संवाद

कविता में कहानी

यह कविता लक्ष्मीबाई के जीवन की घटनाओं पर आधारित है और अपनी संरचना में एक कथात्मक कविता है। कथात्मक कविता ऐसी कविता को कहते हैं जिसमें कविता और कहानी के तत्व परस्पर जुड़े होते हैं तथा घटनाओं का एक क्रम होता है। इस कविता में भी लक्ष्मीबाई के बचपन से लेकर वीरगति प्राप्त होने तक की कथा क्रम से देखने को मिलती है। पाठ की संरचना को समझते हुए इसमें वर्णित प्रमुख घटनाओं को समय-रेखा (टाइमलाइन) पर दर्शाएँ।

(संकेत– लक्ष्मीबाई का बचपन, विवाह, अन्य घटनाएँ आदि।)

विषयों से संवाद

साझा साथ/साझा संघर्ष

1. "लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया", ब्रिटिश राज किस नीति के कारण 'लावारिस का वारिस' बन जाता था? अपने इतिहास के शिक्षक से पता लगाकर उस नीति के विषय में लिखिए।
2. इस कविता में लक्ष्मीबाई की जीवन-गाथा के साथ-साथ अनेक वीरों के त्याग और बलिदान का भी उल्लेख है। उनकी सूची बनाइए तथा शिक्षक की सहायता से 1857 की क्रांति में उनके योगदान के विषय में लिखिए।
3. यह कविता जिस समय और परिवेश में लिखी गई है, उसमें युद्ध और अन्य साहसिक कार्य करना सामान्यत: पुरुषों का क्षेत्र माना जाता था। वर्तमान में लगभग हर क्षेत्र में महिलाएँ कार्य कर रही हैं। नीचे कुछ ऐसे ही कार्यक्षेत्र दिए गए हैं। इन क्षेत्रों में काम करने वाली स्त्रियों के नाम और उनके विषय में लिखिए। आप चाहें तो इसमें अपनी समझ के अनुसार कुछ और कार्यक्षेत्र भी जोड़ सकते हैं।

कार्यक्षेत्र
1. दमकल केंद्र (फायर ब्रिगेड)
2. रेलगाड़ी चालक
3. खेल के विभिन्न क्षेत्र
4. व्यापार और प्रबंधन
5. विज्ञान और तकनीक

4. कविता में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित अनके स्थानों के नाम आए हैं। अपने शिक्षक की सहायता से दिए गए मानचित्र में उन स्थानों/नगरों को चिह्नित करके नाम लिखिए।

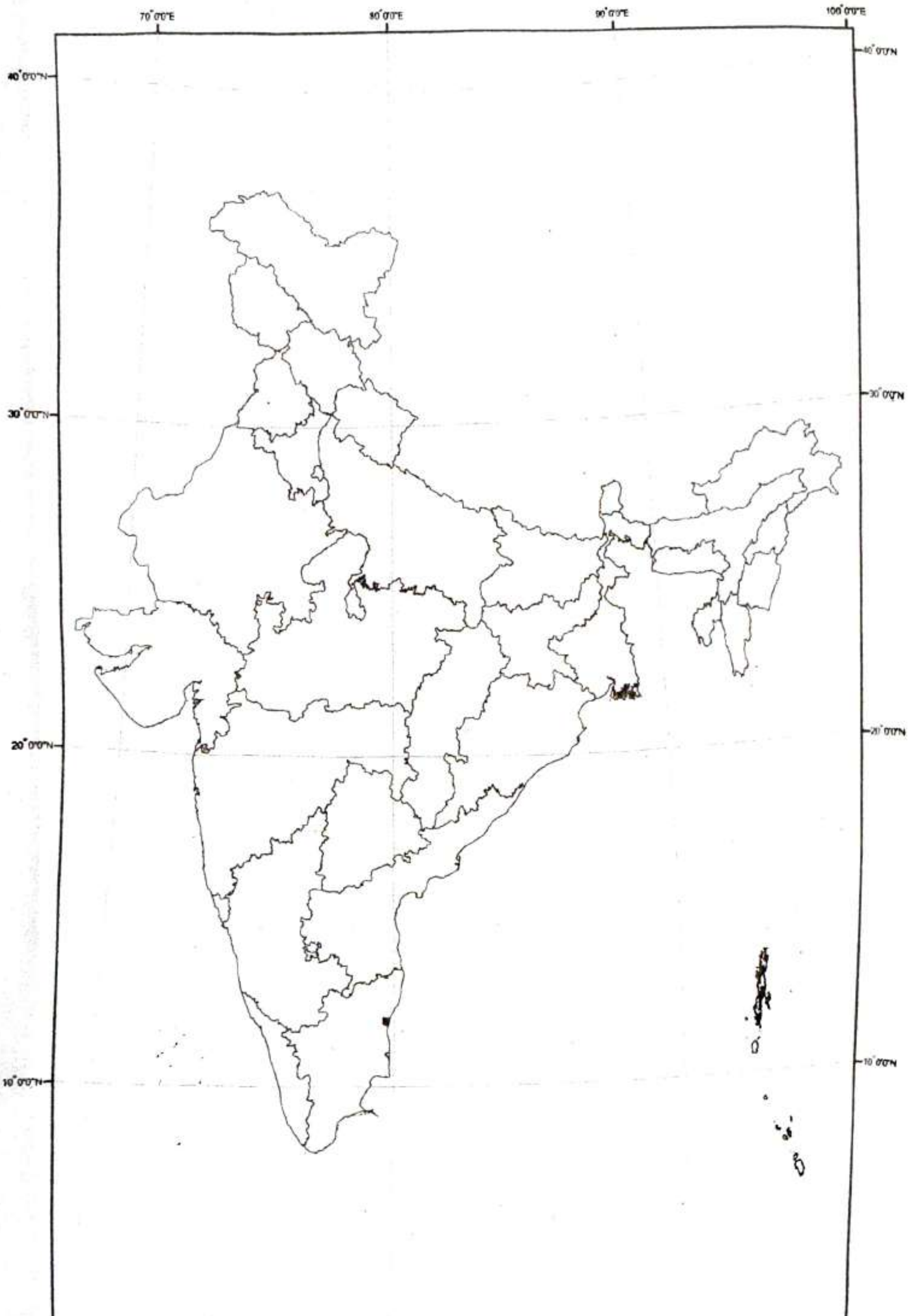

स्रोत— https://surveyofindia.gov.in/UserFiles/files/1_16-state%20boundary.pdf

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

शब्द एक अर्थ अनेक

1. "कानपूर के **नाना** की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी"

उपर्युक्त पंक्ति में रेखांकित शब्द पर ध्यान दीजिए। कविता में 'नाना' शब्द 'नाना धुंधूपंत' के लिए प्रयुक्त हुआ है। लेकिन इस शब्द का प्रयोग संदर्भ के अनुसार अन्य अर्थों में भी होता है। जैसे– माता के पिता के लिए तथा अनेक के अर्थ में। इस प्रकार अनेकार्थी शब्द वह शब्द है जिसके एक से अधिक अर्थ होते हैं। नीचे तालिका में दी गई कविता की पंक्तियों में रेखांकित शब्द अनेकार्थी शब्द हैं। कविता के संदर्भ में उनके सही अर्थ पर घेरा लगाइए।

काव्य-पंक्ति	अर्थ
• तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाईं	नदी का किनारा, बाण, सीसा
• रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई	शास्त्र में लिखी व्यवस्था, प्रणाली, विधाता, तरीका
• रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व असमानों में	युद्ध, संशय, युग्म
• हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी	किसी पदार्थ का गोल पिंड, रस्सी/सूत/बर्फ का गोला, तोप से दागने वाले गोले, नारियल
• मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी	आभा, गति, तेज चाकू (धार)

2. "**कानपूर** के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी"

"मेरठ, **कानपुर**, पटना ने भारी धूम मचाई थी"

उपर्युक्त पंक्तियों में रेखांकित शब्दों की वर्तनी पर ध्यान दीजिए। दोनों शब्दों की वर्तनी में थोड़ी भिन्नता है। कई बार रचनाकार कविता की लय, अर्थ की लय इत्यादि को ध्यान में रखते हुए भाषा के स्तर पर इस प्रकार का प्रयोग करते रहे हैं। इस कविता में अन्य शब्दों के भी ऐसे प्रयोग मिलते हैं, उन्हें ढूँढ़कर लिखिए और कक्षा में चर्चा कीजिए।

इसी पाठ्यपुस्तक की अन्य कविताओं में भी आपने ऐसा प्रयोग देखा होगा। जहाँ किसी शब्द की मानक वर्तनी से भिन्न वर्तनी का प्रयोग किया गया है। अपने शिक्षक के साथ इस विषय पर चर्चा कीजिए। चर्चा से उभरे बिंदुओं को लिखकर उन पर अपने शिक्षक के साथ पुन: चर्चा कीजिए कि ऐसे प्रयोग क्यों किए गए हैं?

मुहावरे

- " दूर फ़िरंगी को करने की सबने **मन में ठानी थी**"

उपर्युक्त पंक्ति में 'दृढ़ निश्चय करने' के अर्थ को व्यक्त करने के लिए 'मन में ठान लेना' वाक्यांश का प्रयोग हुआ है जो एक मुहावरा है। 'मुहावरे' ऐसे वाक्यांश होते हैं जो अपने शाब्दिक अर्थ से भिन्न एक विशेष और लाक्षणिक अर्थ व्यक्त करते हैं। इनके प्रयोग से भाषा में सौंदर्य और प्रभाव उत्पन्न होता है।

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। उन पंक्तियों में आए मुहावरे ढूँढ़कर लिखिए और उन मुहावरों का प्रयोग करते हुए नए वाक्य भी बनाइए। आपकी सुविधा के लिए एक उदाहरण दिया गया है।

	काव्य पंक्ति	प्रयुक्त मुहावरा	नया वाक्य
1.	अबके जनरल स्मिथ सन्मुख था, उसने मुँह की खाई थी	मुँह की खाना	मोहन ने सोचा था कि वह आसानी से जीत जाएगा लेकिन अंत में उसे मुँह की खानी पड़ी।
2.	डलहौजी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया		
3.	राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया		
4.	हुआ यज्ञ प्रारंभ उन्हें तो/सोई ज्योति जगानी थी		
5.	मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी		

सृजन

1. लक्ष्मीबाई की सखियों काना तथा मंदरा की ओर से लक्ष्मीबाई को एक पत्र लिखिए जिसमें काना तथा मंदरा द्वारा ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध युद्ध की रणनीति पर चर्चा की गई हो।
2. युद्धपूर्व रात्रि में झाँसी की रानी के मन में अगले दिन की संभावनाओं को लेकर कई तरह के भाव और विचार उठ रहे होंगे। आपके जीवन में भी कई ऐसे क्षण आए होंगे जब आपने मानसिक ऊहापोह का अनुभव किया होगा। ऐसी किसी घटना के विषय में अपनी डायरी में लिखिए, जैसे– परीक्षा के एक दिन पूर्व की स्थिति या नौंवी कक्षा में पहला दिन आदि।

गतिविधियाँ

- **शौर्य के समाचार**

  यह कविता रानी लक्ष्मीबाई के जीवन की घटनाओं, उनकी वीरता और पराक्रम से हमारा साक्षात्कार कराती है। कविता में वर्णित घटनाओं को एक समाचार-वाचक की तरह समाचार के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

  (संकेत– "आज झाँसी की रणभूमि पर रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी अद्भुत वीरता और शौर्य का परिचय दिया...।")

- **'हरबोलों' और हमारी कहानी**

  "बुंदेले **हरबोलों** के मुँह हमने सुनी कहानी थी।"

'हरबोला' बुंदेलखंड क्षेत्र में रहने वाले लोकगायकों का एक समुदाय है जिन्होंने रानी लक्ष्मीबाई की वीरतापूर्ण गाथा को अपने गीतों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का काम किया। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में लोकगायकों की एक लंबी और समृद्ध परंपरा रही है। इनके द्वारा गाए जाने वाले गीत सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मूल्यों को संरक्षित करने का एक जीवंत माध्यम हैं। आपके क्षेत्र में अथवा आपकी भाषा में भी ऐसे लोकगायक और उनके द्वारा गाए जाने वाले देशभक्तिपूर्ण गीत अवश्य प्रचलित होंगे। ऐसे गीतों का एक संकलन तैयार कीजिए और कक्षा में साझा कीजिए।

भाषा संगम

"कानपूर के नाना की मुँहबोली **बहन** 'छबीली' थी।"

नीचे 'बहन' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

बहन (हिंदी); भगिनी, स्वसृ: (संस्कृत); भैंण (पंजाबी); बहन, हमशीरा (उर्दू); बैनी (कश्मीरी); भेण (सिंधी); बहीण (मराठी); बहेन (गुजराती); भयण (कोंकणी); बैनी, दीदी (नेपाली); बोन, भगिनी (बांग्ला); भनी, बाइ, बाइदेउ (असमिया); मचन, मनाओ (मणिपुरी); भउणी (ओड़िआ); अक्कॅ, चेल्लेलु (तेलुगू); तंगै, अक्का (तमिल); सहोदरि, पेङ्ङळ् (मलयालम); सोदरि, अक्क, तंगि (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप 'बहन' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp

झरोखे से

कविता में लक्ष्मीबाई की दो सखियों 'काना' और 'मंदरा' का उल्लेख मिलता है जो युद्धक्षेत्र में अंत तक लक्ष्मीबाई के साथ रहीं। लक्ष्मीबाई की सहेलियों में ऐसी ही एक और वीरांगना का नाम आता है, जिनका नाम था 'झलकारी बाई'। इन्होंने भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बहुत ही वीरता के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। नीचे दिए गए लेख को पढ़कर आप 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान के विषय में जान सकते हैं।

झलकारी बाई

इतिहास के पन्नों में लुप्त, यह एक महान योद्धा की कहानी है जिसने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बहादुरी से लड़ाई लड़ी थी। एक सामान्य परिवार से ताल्लुक रखने वाली झलकारी बाई केवल अपनी दृढ़ता और साहस से प्रेरित थीं जो आगे चलकर एक आदरणीय योद्धा बनीं।

झलकारी बाई का जन्म 22 नवंबर 1830 को झाँसी के निकट भोजला गाँव में हुआ था। वह बड़ी होकर एक सैनिक और रानी लक्ष्मीबाई की विश्वसनीय सलाहकारों में से एक बन गईं। उन्होंने बहुत कम उम्र में ही घुड़सवारी, अस्त्र-शस्त्र की कला और एक योद्धा की तरह लड़ना सीख लिया था। उन्होंने अपने पति पूरन कोरी से तीरंदाजी, कुश्ती और निशानेबाजी भी सीखी। पूरन कोरी रानी लक्ष्मीबाई के पति राजा गंगाधर राव की सेना में एक सैनिक थे।

झलकारी बाई अकसर अपने पति के साथ शाही महल जाया करती थीं। रानी लक्ष्मीबाई को उनकी बहादुरी के बारे में पता चलने के बाद, वे उनकी अच्छी सहेली बन गईं। झलकारी बाई का शारीरिक गठन और उनका चेहरा रानी लक्ष्मीबाई से मिलता-जुलता था।

जल्द ही, झलकारी बाई को रानी लक्ष्मीबाई की 'दुर्गा दल' नामक महिला सेना में पद मिल गया और वे अकसर रानी की तरफ से महत्वपूर्ण निर्णय लिया करती थीं।

राजा गंगाधर राव के निधन के बाद, अंग्रेजों को उनका उत्तराधिकारी स्वीकार्य नहीं था, परंतु अंग्रेजों के विरोध के बावजूद, रानी लक्ष्मीबाई ने शासन की बागडोर संभालने का फैसला किया। लक्ष्मीबाई ने निकट भविष्य में होने वाली लड़ाई के लिए तैयारियाँ शुरू कर दीं। 1857 में, सिपाहियों का विद्रोह बढ़ गया और उत्तरी एवं मध्य भारत के बड़े हिस्सों में फैल गया। वे सिपाही रानी लक्ष्मी बाई का समर्थन करने के लिए एकत्र हुए। झलकारी बाई को सेना की महिला टुकड़ी का नेतृत्व करने की जिम्मेदारी सौंपी गई।

1858 में जब जनरल सर ह्यू रोज की कमान में अंग्रेजी सेना ने झाँसी के किले पर हमला किया और किले को घेर लिया तो झलकारी बाई और पूरन कोरी दोनों ने उसका कड़ा प्रतिरोध किया। झलकारी बाई ने जमकर लड़ाई लड़ी और रानी को अपने बच्चे के साथ महल छोड़ने का सुझाव दिया।

झलकारी बाई ने स्वयं रानी लक्ष्मीबाई का वेश धारण किया, सेना की कमान संभाली और अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी। उनकी सरूपता ने अंग्रेजों को भ्रमित किए रखा और उनकी यह चाल लंबे समय तक काम करती रही। झलकारी बाई की असली पहचान के बारे में अंग्रेज अनिश्चित थे और उनकी वजह से ही रानी लक्ष्मीबाई अपने बेटे के साथ अपने महल से भाग सकीं।

हालाँकि उसी लड़ाई में, पूरन कोरी अंग्रेजों से लड़ते हुए मारे गए और जब झलकारी बाई ने यह सुना तो वह क्रोधित हो गईं। उन्होंने कई अंग्रेज सैनिकों को मार डाला और उनसे जमकर लड़ाई लड़ी।

झलकारी बाई की यह कहानी बुंदेलखंड की लोक स्मृति का एक हिस्सा है। आज तक, उनकी स्मृति लोगों के मन में जीवित है और उनके बहादुर करतब वहाँ की लोककथाओं में बार-बार उभर कर सामने आते हैं। उनके सम्मान में हर साल झलकारी बाई जयंती मनाई जाती है। 'अमर शहीद' झलकारी बाई 1890 तक जीवित रहीं और वे अपने समय की शौर्य की प्रतिमूर्ति बन गईं।

साभार : https://indianculture.gov.in/hi/node/2790247

खोजबीन

नीचे दी गई इंटरनेट कड़ियों तथा पुस्तकों के माध्यम से आप लक्ष्मीबाई तथा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की अन्य वीरांगनाओं और राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार से सम्मानित बालिका कांति के अदम्य साहस के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं—

https://www.naidunia.com/chhattisgarh/ambikapur-national-bravery-award-sevenyearold-kanti-of-chhattisgarh-who-saves-her-sister-from-elephants-will-get-national-bravery-award-4677447

https://youtu.be/nyoqcOrlWPw?si=JT63xysbj_qgstCC - NCERT OFFICIAL

'भारत की महान नारियाँ' शृंखला की पुस्तकें, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

शब्द-संपदा

फ़िरंगी	—	अंग्रेज, विलायती
मर्दानी/मर्दाना	—	बहादुर, पुरुषोचित
छबीली/छबीला	—	तेजस्वी, सुंदर, छबिवाली, सजीली
बरछी	—	छोटा भाला
ढाल	—	तलवार, भाले आदि के आघात को रोकने का लोहे का बना कछुए की पीठ जैसा एक साधन
गाथाएँ/गाथा	—	कथा, प्रशंसागीत
अवतार	—	उतरना, नीचे आना, किसी देवता या ईश्वर का मनुष्यादि के रूप में जन्म लेना
नाना	—	माता का पिता, मातामह, अनेक प्रकार के, कई तरह के, विविध, अनेक ,बहुत
दुर्ग	—	गढ़, किला, कठिन या तंग रास्ता
सुभट	—	रणकुशल योद्धा
विरुदावलि/विरुद	—	विस्तृत यशोगान, कीर्ति-गाथा, वह कविता आदि जिसमें किसी के यश आदि का वर्णन किया गया हो, प्रशंसासूचक पदवी
विधि	—	सृष्टि की रचना करने वाला, कार्य करने का ढंग, संगति, मेल, प्रयोग, शास्त्रसम्मत, व्यवस्था, धर्मग्रंथ, समय
बिरानी/बिराना	—	पराया
बिसात	—	फैलाव, हैसियत, शक्ति, सामर्थ्य, पूंजी
निपात	—	गिरना, चलाना, फेंकना, पतन, विनाश
बेजार	—	दुखी, ऊबा हुआ
सन्मुख	—	सम्मुख, जो सामने हो, भिड़ने वाला, अनुकूल
कृतज्ञ	—	उपकार मानने वाला, एहसानमंद
अविनाशी	—	नाशरहित, अक्षय, नित्य
मदमाती/मदमाता	—	मस्त, मदमत्त
स्मारक	—	किसी की स्मृति-रक्षा के अभिप्राय से संस्थापित संस्था, भवन, स्तंभ आदि, याद दिलाने वाला

12

0901CH12

भवानीप्रसाद मिश्र

भवानीप्रसाद मिश्र का जन्म सन् 1913 में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद (अब नर्मदापुरम) में हुआ था। साहित्य के साथ-साथ स्वाधीनता आंदोलन में जिन कवियों की सक्रिय भागीदारी थी, उनमें ये प्रमुख हैं। उनकी मुख्य रचनाएँ— *गीत-फ़रोश, खुशबू के शिलालेख, चकित है दुख, अँधेरी कविताएँ, बुनी हुई रस्सी, कवितांतर, शतदल, गांधी-पंचशती, त्रिकाल संध्या* आदि हैं। *बुनी हुई रस्सी* (कविता संग्रह) पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है।

भवानीप्रसाद मिश्र ने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति में कार्य किया और सन् 1952–55 तक हैदराबाद से प्रकाशित हिंदी की लोकप्रिय साहित्यिक पत्रिका *कल्पना* का संपादन भी किया। सन् 1955–58 के बीच वे आकाशवाणी के हिंदी कार्यक्रमों से संबद्ध रहे। उन्होंने *संपूर्ण गांधी वाङ्मय* का भी संपादन किया। सन् 1985 में उनका निधन हो गया।

भवानीप्रसाद मिश्र ने सन् 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में सक्रिय रूप से भाग लिया जिसके चलते ब्रिटिश सरकार ने उन्हें तीन वर्ष के लिए कारावास का दंड दिया। 1942 के स्वाधीनता आंदोलन के समय जेल में रहते हुए ही उन्होंने 'घर की याद' कविता लिखी। परिवार की स्मृति ही इस कविता की केंद्रीय संवेदना है। कारावास के समय घर को याद करते हुए कवि की स्मृति में उनके परिजन एक-एक करके सम्मिलित होते चले जाते हैं। कवि सावन के बादल द्वारा परिवार को संदेश भेज रहा है और उससे आग्रह करता है कि वह उन्हें जेल के कष्टों के विषय में न बताए और सांत्वना दे।

घर की याद

आज पानी गिर रहा है,
बहुत पानी गिर रहा है,
रात-भर गिरता रहा है,
प्राण मन घिरता रहा है,

अब सबेरा हो गया है,
कब सबेरा हो गया है,
ठीक से मैंने न जाना,
बहुत सोकर सिर्फ माना—

क्योंकि बादल की अँधेरी,
है अभी तक भी घनेरी,
अभी तक चुपचाप है सब,
रातवाली छाप है सब,

गिर रहा पानी झरा-झर,
हिल रहे पत्ते हरा-हर,
बह रही है हवा सर-सर,
काँपते हैं प्राण थर-थर,

बहुत पानी गिर रहा है,
घर नजर में तिर रहा है,
घर कि मुझसे दूर है जो,
घर खुशी का पूर है जो,

घर कि घर में चार भाई,
मायके में बहिन आई,
बहिन आई बाप के घर,
हाय रे परिताप के घर!

आज का दिन दिन नहीं है,
क्योंकि इसका छिन नहीं है,
एक छिन सौ बरस है रे,
हाय कैसा तरस है रे,

घर कि घर में सब जुड़े हैं,
सब कि इतने कब जुड़े हैं,
चार भाई चार बहिनें
भुजा भाई प्यार बहिनें,

और माँ बिन-पढ़ी मेरी,
दुख में वह गढ़ी मेरी,
माँ कि जिसकी गोद में सिर,
रख लिया तो दुख नहीं फिर,

माँ कि जिसकी स्नेह-धारा
का यहाँ तक भी पसारा,
उसे लिखना नहीं आता,
जो कि उसका पत्र पाता।

और पानी गिर रहा है,
घर चतुर्दिक् घिर रहा है,
पिताजी भोले बहादुर,
वज्र-भुज नवनीत-सा उर,

पिताजी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
जो अभी भी दौड़ जाएँ,
जो अभी भी खिलखिलाएँ,

मौत के आगे न हिचकें,
शेर के आगे न बिचकें,
बोल में बादल गरजता,
काम में झंझा लरजता,

आज गीता-पाठ करके,
दंड दो सौ साठ करके,
खूब मुगदर हिला लेकर,
मूठ उनकी मिला लेकर,

जब कि नीचे आए होंगे,
नैन जल से छाए होंगे,
हाय, पानी गिर रहा है,
घर नजर में तिर रहा है,

चार भाई चार बहिनें,
भुजा भाई प्यार बहिनें,
खेलते या खड़े होंगे,
नजर उनको पड़े होंगे।

पिताजी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,
रो पड़े होंगे बराबर,
पाँचवें का नाम लेकर,

पाँचवाँ मैं हूँ अभागा,
जिसे सोने पर सुहागा,
पिताजी कहते रहे हैं,
प्यार में बहते रहे हैं,

आज उनके स्वर्ण बेटे,
लगे होंगे उन्हें हेटे,
क्योंकि मैं उन पर सुहागा
बँधा बैठा हूँ अभागा,

और माँ ने कहा होगा,
दुख कितना बहा होगा
आँख में किसलिए पानी,
वहाँ अच्छा है भवानी,

वह तुम्हारा मन समझकर,
और अपनापन समझकर,
गया है सो ठीक ही है
यह तुम्हारी लीक ही है,

पाँव जो पीछे हटाता,
कोख को मेरी लजाता,
इस तरह होओ न कच्चे,
रो पड़ेंगे और बच्चे,

पिताजी ने कहा होगा,
हाय, कितना सहा होगा,
कहाँ, मैं रोता कहाँ हूँ,
धीर मैं खोता, कहाँ हूँ,

गिर रहा है आज पानी,
याद आता है भवानी,
उसे थी बरसात प्यारी,
रात दिन की झड़ी झारी,

खुले सिर नंगे बदन वह,
घूमता फिरता मगन वह,
बड़े बाड़े में कि जाता,
बीज लौकी का लगाता,

तुझे बतलाता कि बेला
ने फलानी फूल झेला,
तू कि उसके साथ जाती,
आज इससे याद आती,

मैं न रोऊँगा — कहा होगा,
और फिर पानी बहा होगा,
दृश्य उसके बाद का रे,
पाँचवें की याद का रे,

भाई पागल, बहिन पागल,
और अम्मा ठीक बादल,
और भौजी और सरला,
सहज पानी सहज तरला,

शर्म से रो भी न पाएँ,
खूब भीतर छटपटाएँ,
आज ऐसा कुछ हुआ होगा
आज सबका मन चुआ होगा।

अभी पानी थम गया है,
मन निहायत नम गया है,
एक-से बादल जमे हैं,
गगन-भर फैले रमे हैं,

ढेर है उनका, न फाँकें,
जो कि किरनें झुकें-झाँकें,
लग रहे हैं वे मुझे यों,
माँ कि आँगन लीप दे ज्यों;

गगन-आँगन की लुनाई
दिशा के मन में समाई
दश-दिशा चुपचाप है रे,
स्वस्थ की लय छाप है रे

झाड़ आँखें बंद करके
साँस सुस्थिर मंद करके,
हिले बिन चुपके खड़े हैं,
क्षितिज पर जैसे जड़े हैं

एक पंछी बोलता है,
घाव उर के खोलता है,
आदमी के उर बिचारे,
किसलिए इतनी तृषा रे,

तू जरा-सा दुख कितना,
सह सकेगा क्या कि इतना,
और इस पर बस नहीं है,
बस बिना कुछ रस नहीं है,

हवा आई उड़ चला तू,
लहर आई मुड़ चला तू,
लगा झटका टूट बैठा,
गिरा नीचे फूट बैठा,

तू कि प्रिय से दूर होकर,
बह चला रे पूर होकर,
दुख भर क्या पास तेरे,
अश्रु सिंचित हास तेरे!

पिताजी का वेश मुझको,
दे रहा है क्लेश मुझको,
देह एक पहाड़ जैसे,
मन कि बड़ का झाड़ जैसे,

एक पत्ता टूट जाए,
बस कि धारा फूट जाए,
एक हल्की चोट लग ले,
दूध की नद्‌दी उमग ले,

एक टहनी कम न हो ले,
कम कहाँ कि ख़म न हो ले,
ध्यान कितना फिक्र कितनी,
डाल जितनी जड़ें उतनी!

इस तरह का हाल उनका,
इस तरह का ख्याल उनका,
हवा, उनको धीर देना,
यह नहीं जी चीर देना,

हे सजीले हरे सावन,
हे कि मेरे पुण्य पावन,
तुम बरस लो वे न बरसें,
पाँचवें को वे न तरसें,

मैं मजे में हूँ सही है,
घर नहीं हूँ बस यही है,
किंतु यह बस बड़ा बस है,
इसी बस से सब विरस है,

किंतु उनसे यह न कहना,
उन्हें देते धीर रहना,
उन्हें कहना लिख रहा हूँ,
उन्हें कहना पढ़ रहा हूँ,

काम करता हूँ कि कहना,
नाम करता हूँ कि कहना,
चाहते हैं लोग, कहना
मत करो कुछ शोक, कहना,

और कहना मस्त हूँ मैं,
कातने में व्यस्त हूँ मैं,
वजन सत्तर सेर मेरा,
और भोजन ढेर मेरा,

कूदता हूँ, खेलता हूँ,
दुख डटकर ठेलता हूँ,
और कहना मस्त हूँ मैं,
यों न कहना अस्त हूँ मैं,

हाय रे, ऐसा न कहना,
है कि जो वैसा न कहना,
कह न देना जागता हूँ,
आदमी से भागता हूँ,

कह न देना मौन हूँ मैं,
खुद न समझूँ कौन हूँ मैं,
देखना कुछ बक न देना,
उन्हें कोई शक न देना,

हे सजीले हरे सावन,
हे कि मेरे पुण्य पावन,
तुम बरस लो वे न बरसें,
पाँचवें को वे न तरसें।

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. भवानीप्रसाद मिश्र ने यह कविता कहाँ और क्यों लिखी?
   - (क) विदेश से मित्र के लिए
   - (ख) युद्धभूमि से जनता के लिए
   - (ग) जेल से परिवार के लिए
   - (घ) यात्रा से किसी संबंधी के लिए
2. लगातार बरसता पानी कवि के मन की किस भावना का परिचायक है?
   - (क) उत्साह और आवेग
   - (ख) भय और क्रोध
   - (ग) साहस और उमंग
   - (घ) चिंता और बेचैनी
3. कविता में माँ की कैसी छवि उभरती है?
   - (क) कमजोर और निष्क्रिय
   - (ख) स्नेहमयी और दृढ़
   - (ग) शिक्षित और अनुशासनप्रिय
   - (घ) सरल और उदासीन
4. "वज्र-भुज नवनीत-सा उर" पंक्ति के माध्यम से पिता के व्यक्तित्व की कैसी छवि प्रस्तुत की गई है?
   - (क) कर्मठ और सृजनशील
   - (ख) साहसी और पराक्रमी

(ग) दृढ़ और संवेदनशील

(घ) प्रसन्नचित्त और सक्रिय

5. "एक पत्ता टूट जाए, बस कि धारा फूट जाए" पंक्ति किस ओर संकेत करती है?

(क) पिता की कठोरता

(ख) पिता की भावुकता

(ग) वर्षा की तीव्रता

(घ) पिता की निर्बलता

6. "बहिन आई बाप के घर, हाय रे परिताप के घर" पंक्ति में 'परिताप' शब्द से क्या संकेत मिलता है?

(क) घर का समृद्ध होना

(ख) घर की सजावट

(ग) घर में दुख का वातावरण

(घ) घर की शांति

7. "और कहना मस्त हूँ मैं" पंक्ति में कवि का ऐसा कहना किस बात की ओर संकेत करता है?

(क) कवि अपने जीवन में बहुत खुश है।

(ख) अपने दुख को परिजनों से छिपाना चाहता है।

(ग) घर के लोगों के प्रति उदासीन है।

(घ) कवि प्राकृतिक सौंदर्य से अभिभूत है।

8. इस कविता में किस बात को प्रमुखता से वर्णित किया गया है?

(क) घर की शांति और सुरक्षा

(ख) घर के सदस्यों के बीच का संबंध

(ग) घर के निर्माण की प्रक्रिया

(घ) घर की याद और अकेलेपन की पीड़ा

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. कविता में वर्णित पिता के व्यक्तित्व की उन विशेषताओं का वर्णन कीजिए जिनसे उनका बहुआयामी रूप सामने आता है।

2. "दुख डटकर ठेलता हूँ" यह कथन मनुष्य के संघर्षशील स्वभाव को उजागर करता है। कविता के आधार पर बताइए कि कठिन परिस्थितियों में कवि किस प्रकार धैर्य, साहस और त्याग का परिचय देता है?

3. कविता में बार-बार वर्षा का वर्णन कवि के भावों को किस प्रकार व्यक्त करता है?

4. कविता से उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए और भाव स्पष्ट कीजिए जिनसे माँ की भावनात्मक मजबूती का परिचय मिलता है।
5. कविता का कौन-सा अंश आपको सबसे अधिक भावनात्मक और प्रभावी लगता है और क्यों?

विधा से संवाद

कविता का सौंदर्य

"गिर रहा पानी झरा-झर, हिल रहे पत्ते हरा-हर,
बह रही है हवा सर-सर, काँपते हैं प्राण थर-थर"

उपर्युक्त पंक्तियों में रेखांकित शब्दों को ध्यानपूर्वक पढ़िए। यहाँ शब्दों का चयन और संयोजन इस प्रकार किया गया है कि कविता में ध्वन्यात्मकता और नाद सौंदर्य की सृष्टि हुई है। शब्दों के ऐसे प्रयोग से कविता आकर्षक बनती है। कविता में ऐसी अनेक विशेषताएँ हैं जो इसे जीवंत और प्रभावपूर्ण बनाती हैं। ऐसी कुछ विशेषताओं की सूची नीचे दी गई है। कविता से ऐसी विशेषताओं वाली पंक्तियों को ढूँढ़कर लिखिए।

विशेषताएँ

- स्मृति और दृश्य बिंब
- लोकभाषा की सहजता
- पंक्तियों का दोहराव
- आलंकारिक प्रयोग
- प्राकृतिक दृश्यों और भावों का संयोजन
- संबोधनात्मकता

कविता की संरचना

'घर की याद' कवि के भीतर उठते भावों की यात्रा है। कविता में प्रकृति के माध्यम से व्यक्त इस यात्रा के प्रमुख चरणों का वर्णन करें।

(संकेत– *पानी का गिरना, सबेरा होना*)

विषयों से संवाद

1. कविता में चित्रित 'घर' एक भौतिक स्थान से बढ़कर भावनाओं और संबंधों के केंद्र के रूप में चित्रित हुआ है। वर्तमान में एकल परिवारों के बढ़ते चलन के संदर्भ में संयुक्त परिवार और

एकल परिवार की तुलना कीजिए और कारण सहित लिखिए कि दोनों की कौन-कौन-सी बातें आपको पसंद हैं और कौन-कौन-सी नापसंद?

2. कविता में बार-बार पानी गिरने का वर्णन है। लगातार बारिश होती रहे तो ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में किस प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं?
3. कविता में सावन के बादल का प्रयोग एक संचार माध्यम के रूप में किया गया है जिसके द्वारा कवि अपने परिवार तक संदेश भेज रहा है। कक्षा में संचार के नए-पुराने माध्यमों में अंतर बताते हुए चर्चा कीजिए और लिखिए।
4. भवानीप्रसाद मिश्र ने यह कविता स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कारावास में लिखी थी। अपने शिक्षक और पुस्तकालय की सहायता से 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम' विषय पर लेख लिखिए।

सृजन

1. कल्पना कीजिए कि कवि की माँ को पत्र लिखना आता है। कविता में वर्णित उनकी छवि और अनुमान के आधार पर लिखिए कि वे कवि के लिए पत्र में क्या-क्या लिखतीं?
2. कविता में माँ और पिताजी के बीच कवि के विषय में की जाने वाली बातचीत का वर्णन है। उनकी इस बातचीत को संवाद-लेखन के रूप में प्रस्तुत कीजिए।
3. इस कविता में कवि ने सावन के बादल को संदेशवाहक बनाया है। अगर आपको किसी प्राकृतिक उपादान के माध्यम से अपने घर, मित्र या किसी संबंधी व्यक्ति को कोई संदेश भेजना हो तो आप किसे चुनेंगे और क्यों?

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

1. "आज सबका मन चुआ होगा।"

उपर्युक्त पंक्ति में रेखांकित शब्द कवि की क्षेत्रीय/स्थानीय भाषा का शब्द है। कविता में स्थानीय भाषा के शब्दों का सहज प्रयोग हुआ है। कविता से कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई है। उनमें रेखांकित शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनसे नए वाक्य बनाइए।

- एक छिन सौ बरस है रे
- तुझे बतलाता कि बेला/ने फलानी फूल झेला
- और भौजी और सरला, सहज पानी सहज तरला
- मन कि बड़ का झाड़ जैसे

2. नीचे दी गई कविता की पंक्तियों में आए शब्दों की व्याकरणिक पहचान लिखिए। आपकी सहायता के लिए एक उदाहरण नीचे दिया गया है।

(क) "बहुत पानी गिर रहा है"

- 'पानी' शब्द है — संज्ञा
- 'बहुत' शब्द है — विशेषण
- 'गिर रहा है' है — क्रिया

(ख) "पिताजी जिनको बुढ़ापा, एक क्षण भी नहीं व्यापा"

- 'बुढ़ापा' शब्द है —
- 'व्यापा' शब्द है —
- 'जिनको' शब्द है —

(ग) "खुले सिर नंगे बदन वह, घूमता फिरता मगन वह"

- 'खुले' शब्द है —
- 'वह' शब्द है —
- 'बदन' शब्द है —
- 'फिरता' शब्द है —

(घ) "एक पत्ता टूट जाए, बस कि धारा फूट जाए"

- 'एक' शब्द है —
- 'फूट जाए' है —
- 'पत्ता' शब्द है —

(ङ) "हे सजीले हरे सावन, हे कि मेरे पुण्य पावन"

- 'सजीले' शब्द है —
- 'मेरे' शब्द है —
- 'सावन' शब्द है —

गतिविधियाँ

1. कवि ने कविता में अपने परिवार का उल्लेख किया है। आप भी अपना एक परिवार-वृक्ष तैयार कीजिए और प्रत्येक सदस्य के व्यक्तित्व के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखिए।
2. कविता में प्रयुक्त ध्वनि आधारित शब्द (जैसे– झरा-झर, थर-थर, सर-सर) को पढ़कर एक छोटी-सी ऑडियो रिकॉर्डिंग या मौखिक पाठ तैयार कीजिए। बताइए कि ये शब्द कविता में कैसे वातावरण का निर्माण करते हैं?

भाषा संगम

"**घर** कि घर में सब जुड़े हैं"

नीचे 'घर' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

मकान, गृह, निवास (हिंदी); गृहम् (संस्कृत); घर (पंजाबी); घर (उर्दू); गॅरु (कश्मीरी); घरु (सिंधी); घर (मराठी); घर (गुजराती); घर (कोंकणी); घर, आवास (नेपाली); घर, बाड़ी (बांग्ला); घर (असमिया); युम (मणिपुरी); घर, गृह, आलय, आबास (ओड़िआ); इल्लु (तेलुगु); वीडु, इल्लम् (तमिल); वीडु, इल्लम (मलयालम); गृह, मनॆ (कन्नड़)।

- इनके अतिरिक्त यदि आप 'घर' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।
- उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp

खोजबीन

- शिक्षक की सहायता से ऐसी किसी अन्य कविता अथवा कहानी के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए जिसमें घर, परिवार की याद जैसी भावनाएँ चित्रित हों। साथ ही पुस्तकालय अथवा इंटरनेट की सहायता से उस रचना को कक्षा में पढ़कर एक संक्षिप्त प्रस्तुति दीजिए।
- 'घर की याद' कविता में कवि सावन के बादलों को दूत बनाकर अपने परिवार के पास संदेश ले जाने का आग्रह करता है। प्रकृति के उपादानों की कल्पना संदेशवाहक के रूप में करने के अनेक उदाहरण साहित्य में मिलते हैं। शिक्षक, पुस्तकालय और इंटरनेट की सहायता से ऐसी कुछ रचनाओं के बारे में पता लगाइए और बताइए कि इनमें प्रकृति के किन उपादानों को संदेशवाहक बनाया गया है?

शब्द-संपदा

घनेरा/घना — गाढ़ा, गुंजान, जिसके अवयव पास-पास सटे हों

तिर/तिरना/तरना — तैरना, उतराना, पार होना

परिताप — अत्यधिक दुख, शोक, भय, बहुत गर्मी, अत्यधिक ताप

चतुर्दिक् — चारों ओर, चौखूँट

वज्र — बहुत कठोर, जिस पर किसी का प्रभाव न पड़े

नवनीत — ताजा मक्खन

उर — हृदय, श्रेष्ठ, उत्तम, मन

झंझा — तेज हवा, आँधी-पानी, खोई हुई वस्तु, झंकार

लरजता/लरजना — काँपना, हिलना-डुलना, दहल जाना, भयभीत

मूठ — मुट्ठी-भर चीज, कब्जा, मुट्ठी, दस्ता

अभागा — भाग्यहीन

धीर — जिसका चित्त विकारजनक कारणों के रहते हुए भी विचलित न हो, दृढ़, गंभीर

झारी — पानी परसने, हाथ मुँह धुलाने आदि के लिए काम में लाया जाने वाला टोटीदार बर्तन

बेला — एक सुगंधित फूल, मोगरा, कटोरा

फलानी/फलाना/फलाँ — कोई आदिष्ट (व्यक्ति या वस्तु), अमुक

निहायत — बहुत ज्यादा, अत्यधिक

लुनाई — सुंदरता, सलोनापन, फसल काटने की क्रिया

क्षितिज — वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिले दिखाई देते हैं, वृक्ष

तृषा — तीव्र इच्छा, अभिलाषा, लोभ, प्यास

अश्रु — आँसू

हास — हँसने की क्रिया, प्रसन्नता, खुशी, चौंध पैदा करने वाली सफेदी

क्लेश — दुख, पीड़ा, क्रोध, राग, द्वेष

बड़ — बरगद, वट

उमग — उल्लास, मौज, जोश, आकांक्षा

ख़म — झुका हुआ, टेढ़ा, वक्र, घुमाव, टेढ़ापन

विरस — नीरस, अप्रिय, जी उबाने वाला, कष्टकर

कातने/कातना — चरखे या तकली पर रुई या ऊन से धागा निकालना, सन से सुतली बनाना

अस्त — डूबा हुआ, फेंका हुआ, समाप्त, (सूर्य-चंद्र का) डूबना, अदृश्य होना, पतन, अंत

साथ-साथ पढ़ें

तब याद तुम्हारी आती है

जब बहुत सुबह चिड़ियाँ उठकर, कुछ गीत खुशी के गाती हैं।
कलियाँ दरवाजे खोल-खोल, जब दुनिया पर मुसकाती हैं।।
जब ठंडी-ठंडी हवा कहीं से, मस्ती ढोकर लाती है।
हे जग के सिरजनहार प्रभो! तब याद तुम्हारी आती है।।

चुपचाप चमकते तारों की, महफिल जब रात सजाती है।
जब चाँद शान से उठता है, दिल की दुनिया जग जाती है।।
कुछ पता नहीं, लेकिन जरूर, वह संदेशा कुछ पाती है।
हे जग के सिरजनहार प्रभो! तब याद तुम्हारी आती है!!

– रामनरेश त्रिपाठी

राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय
आपका डिजिटल पुस्तकालय!
असंख्य वृत्तांत प्राप्त करने
के लिए स्कैन एवं डाउनलोड करें।

0901

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5729-873-5